॥ श्रीः ॥

कविकेशवदासप्रणीत–

रामचन्द्रिका.

जानकीप्रसादकृत टीकासहित ।

जिसमें

श्रीरामचन्द्रादि चारों भ्राताओंकी कथा बालकीलासे जानकीविवाह, रावण वध तथा अश्वमेध पर्यंत अति मनोहर काव्यरचना छन्द बद्ध भाषामें वर्णित है।

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्–यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकाशित किया।

आषाढ संवत् १९६४, शके १८२९.

श्रीरामचन्द्राय नमः ।
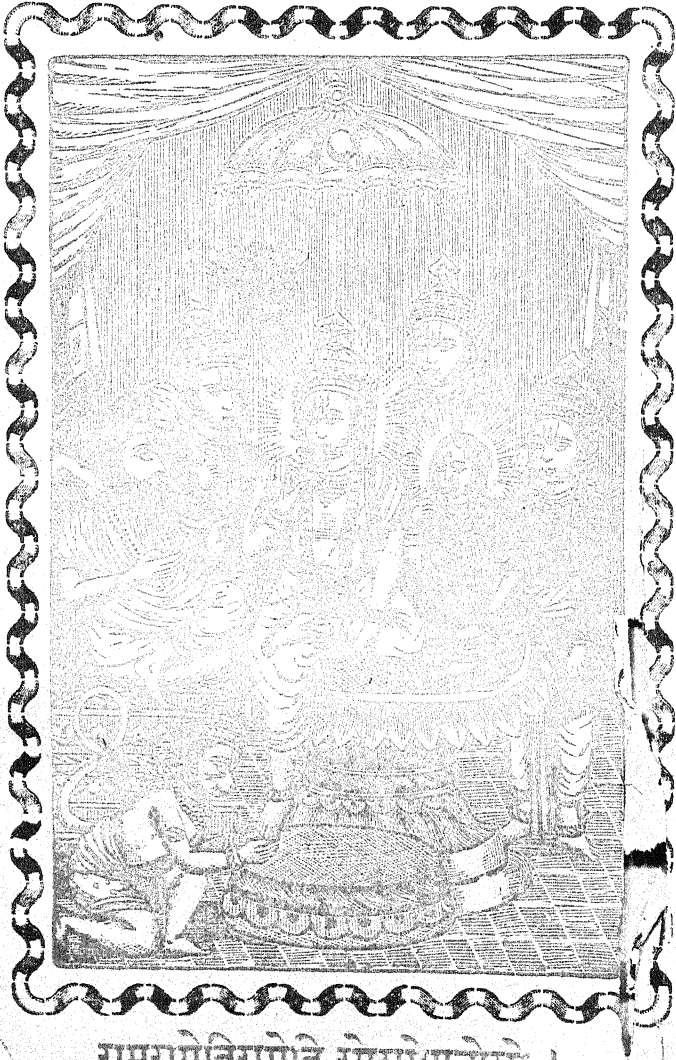
रामरामेतिरामेति रमेरामेमनोरमे ।
सहस्रनामतत्तुल्यं रामनामवरानने ॥

भूमिका।
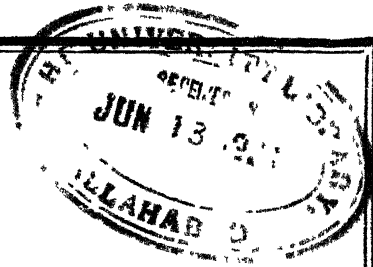
जैसे कि, हिन्दी रसिक हरिभक्तिपरायण सुजन जन रामायणादि रामचरित्र पढ़कर अपार आनंद भोगते हैं वैसेही यह रामचन्द्रिकाभी हरिचरित्रका अपार समुद्र लहरारहा है इसकी एकही लहर लेनेसे आनंदही नहीं बरन् भुक्ति और मुक्तिभी मिलती है, रामचरणमें अनुराग बढ़कर पुरुष अतुल कीर्तिका भागी होता है यद्यपि केशवदासकी कविता बहुत कठिन और ललित है (जैसे कि–देनो न चाहै विदाई नरेश तो पूछत केशवकी कविताई) तथापि इसकी टीका ऐसी मनोविलास बुद्धिप्रकाश लोक रंजनार्थ परम उत्कृष्ट हुई है कि, बारहखडी जाननेवालाभी उत्तम रीतिसे पठनका फल प्राप्त कर सकताहै इसमें रामचन्द्रजीका अपूर्व चरित्र सर्वत्र यथाक्रम वर्णितहै इसके सिवाय काव्यनिरूपणभी ऐसा उत्तमहै कि, लोक देखनेसेही सन्तुष्ट होंगे अधिक प्रशंसा व्यर्थ है. आशा है कि, सूर्य्यकी किरणों सदृश इसकी प्रतियेंभी सारे संसारमें गुणग्राहकोंके पास शीघ्र फैल जायँगी और वे अपने विशालनेत्रोंसे इसका अवलोकन पठन स्वाद सदासर्वदा हृदयकमलमें धारण करैंगे.

आपका कृपापात्र–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

॥ श्रीः ॥

अथ रामचन्द्रिका-सटीककी-

विषयानुक्रमणिका।

सं. प्र.	विषय.	पृष्ठांक.
१	यहि पहिले परकाशमें, मङ्गल चरण विशेषि। ग्रन्थारम्भरु आदिकी, कथा लहहिं बुध लेखि ॥	१-२०
२	या द्वितीय परकाशमें, मुनिआगमन प्रकाश। राजासों रचना वचन, राघव चलन विलास ॥	२१-२६
३	कथा तृतीय प्रकाशमें, वन वर्णन शुभ जानि। रक्षण यज्ञ मुनीशको, श्रवण स्वयंवर मानि ॥	२७-३४
४	कथा चतुर्थ प्रकाशमें, बाणासुर सम्बाद। रावणसों अरु धनुषसों, दशमुख बाण विषाद ॥	३९-४०
५	यह प्रकाश पञ्चम कथा, राम गवन मिथिलादि। उद्धारण गौतम घरनि, स्तुति अरुणोदय आदि	४१-५३
६	छठे प्रकाश कथा रुचिर, दशरथ आगमजानि। लगनोत्सव श्रीरामको, व्याह विधान बखानि ॥	५३-६७
७	या प्रकाश सप्तम कथा, परशुराम सम्वाद। रघुवरसों अरु रोष त्यहि, भञ्जन मान विषाद ॥	६७-८०
८	यह प्रकाश अष्टम कथा, अवध प्रवेश बखानि। सीतावरण्यो दशरथहि, और बन्धुजन मानि ॥	८०-८४
९	यह प्रकाश नवमें कथा, राम गमन वनजानि। जनक नन्दिनीको सुकृत, वर्णन रूप बखानि ॥	८४-९५
१०	यह प्रकाश दशमें कथा, आवन भरत सुनाम। राज मरण अरु तासुको, बसिबो नन्दीग्राम ॥	९५-१०२
११	एकादशे प्रकाशमें, पञ्चवटीको वास। शूर्पणखाके रूपको, रघुपति करि हैं नाश ॥	१०२-१११
१२	या द्वादश प्रकाश खर दूषण त्रिशिरा नाश।	

श्रीगणेशाय नमः ।

कवि केशवदासकृत-

रामचन्द्रिका-सटीक ।

जानकीप्रसाद टीकाकारकृत मंगलाचरण ।

कवित्त ॥ कुंडलित शुंडगण्ड गुंजत मलिंद झुंड वंदन विराजे मुंड अद्भुत गतिको । बालशशि भाल तीनि लोचन विशाल राजैं फणिगणमाल शुभ सदनै सुमतिको ॥ ध्यावत विनाही श्रम लावत न बार नर पावत अपार मोदभार धन पतिको । पाप गण मंदनकों विघन निकंदनकों आठों यामैं वंदन करत गण-पतिको ॥ १ ॥ सवैया ॥ जिनको अवलोकतहां मन रंजन कंजनकी रुचि दूरि वहैये । मधुपालिन मालिनकी द्युतिशालिन आलिन दासनके मन ठैये । निधि-सिद्धि अशेषके धाम सदा सुख पूरन पूरन पुण्यन पैये । पगवंदनकै गिरिजा-पतिके रघुनन्दन रामकि कीरति गैये ॥ २ ॥ कवित्त ॥ तीन्योंरूप तेरेई प्रभाव-नि त्रिदेव उतपाति प्रतिपाल भले निजमति कीजिये । नारद गणेश व्यास वालमीकि शेषआदि तव कृत पूरो लोक लोक यश लीजिये । सागर अपार हौं चहत पैरि पार जायो जग उपहासके प्रकाश भयभीजिये । शारदा भवानी कहौं जोरि युगपानी जन जानकीप्रसाद पै कृपाकि कोर दीजिये ॥ ३ ॥ दोहा ॥ उत वर्णन रघुवर सुयश, इत ममप्रण प्रतिपाल ॥ ताते पवनकुमारको, करौं भरोस विशाल ॥ ४ ॥ बारबार वंदन करौं, गुरुचरणन सुखपाइ ॥ निजशिक्षा अंजनहृदय, दियो अदृष्ट दिखाइ ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ दामिनीसी दमकति पीतपट भाँति हीराहार बक पाँतिको प्रकाश धरियतुहै । जुगुनूसे भूषण जवाहिर जगत सुनि शब्दमयूरहु साधुमोद भरियतु है । जानकीप्रसाद जग हारित करन मीठे बैनरस वैरीज्यों जवासे जरियतु है । राजसभा विपद विराजें छविधाम नित राम-घनश्यामको प्रणाम करियतुहै ॥ ६ ॥ षट्पद-परम प्रीति सिय जासमंगटा-

मिनि समसोहै । शीश मुकुट बहुरंग अंगसुर धनुछबि रोहै । क्रोधनिहँसनिसुबैन बारि जगहित बरसावहिं । निरखि संतजन मोर जोर जय शोर मचावहिं । मन चतुरकिसान विचारिकरि नहिं उपाय देख्योबियो ॥ घनश्याम राम उरआनि-करि स्वमतिशालि सिंचन कियो ॥ ७ ॥ दोहा ॥ तापरिपाकअघायमन, चंचल-तानिबिहाइ । रामचन्द्रिकाको तिलक, लाग्योकरन बनाइ ॥ ८ ॥ कठिनाई तम ग्रंथगृह, थलथल विविध विहारु ॥ तिलक दीप बिनु अबुधक्यों, लखैं पदारथ चारु ॥ ९ ॥ तासों सुमति विचारि चित, कीन्हें तिलक अपार ॥ देखि रीति तिनकी करचों, हौं निजमति अनुसार ॥ १० ॥ घनाक्षरी कवित्त ॥ मेदिनी अमर अभिधान चिंतामणि गनि हारावली आदिको समत उर धारिकै । वाल्मीकि आदि कविताकी मतिभीनो दीनो ज्योतिष प्रमाणकहुँ जुगुति निहा-रिकै ॥ ग्रंथगुरुताके भय सकल न लीन्हों कीन्हों अरथ उकुति पद कठिन ठिहा-रिकै । रामचंद्रजूके चरणनि चित राखि रामचंद्र चंद्रिकाको कीन्हों तिलक बिचारिकै ॥ ११ ॥ चंचलाछंद ॥ नयनसूरजवाजिसिद्धिनिशीश संवतचारु । शुक्रसंयुतशुक्लपक्ष सुरेशपूजितवारु ॥ चारुदिक् तिथि हस्त तार वरिष्ठयोग नवीन । राम भक्ति प्रकाशिका अवतार तादिनकीन ॥ १२ ॥ सोरठा ॥ राव णादि मतिहीन, राम सीय प्रति कटुवचन ॥ तहाँ अर्थ मृदु कीन, जानि प्रभाव सरस्वती ॥ १३ ॥ दोहा ॥ शब्दलग्यो संबंधमें, रह्यो छंदमें शेष ॥ ताहि मिलायो आनिकै, यों कहुँकथा विशेष ॥ १४ ॥ कहुँ पूरब परकथनको, लख्यो विरोध विचारि ॥ तहाँ निवारणको कियो, निजमतिकी अनुहारि ॥ १५ ॥ जहाँ केर पर्याय पद, अर्थ बोध नहिं होहि ॥ तहाँ तासु इति अंतदै, लिख्यो दूसरो जोहि ॥ १६ ॥ जहाँ विरोधाभासहै अर्थ विरोध प्रकाश ॥ लिख्यो अर्थ अविरोधही, तासों सहित हुलास ॥ १७ ॥ कठिन शब्द को अर्थ जहँ, एक-ठौर नहिं देखि ॥ तहाँ दूसरे ठौर में, जानब लिख्यो विशेषि ॥ १८ ॥

ग्रन्थारम्भः ।

मू०-बालक मृणालनि ज्यों तोरि डारै सब काल कठिन कराल त्यों अकाल दीह दुखको । विपति हरत हठि पद्मिनी के पातसम पंक ज्यों पताल पेलि पठवै कलुषको ॥ दूरिकै कलंक अंकभवशीश शशिसम राखतहैं केशोदास दासके

वपुषको ॥ साँकरे की साँकरन सनमुख होतेही तो दशमुख मुख जोवै गजमुख मुखको ॥ १ ॥

टी०–बालक पाँच वर्षको हाथीको जैसे मृणाल पौनारोंको सब कालमें तोरि डारत है तैसे गणेश कठिन औ कराल भयानक औ अकाल कहे असमयको जो दीह कहे बडो पुत्र मरणादि दासनको दुःख है ताको तोरत हैं औ जैसे बालक पद्मिनी कमलिनीके पातको हरत तोरत है तैसे ये विपत्ति दरिद्रादिको हरत हैं औ बालक जैसे पग सों दाबि पङ्क कहे कीचको पेलिकै पातालको पठावत हैं तैसे ये कलुष जे पाप हैं तिनको पठावत हैं इहां गजराजको त्यागकरि बालक सम यासों कह्यो कि पद्मिनी पत्रादि तोरनमें बालकको उत्साह रहत है तैसे गणेशजूको विपत्यादि विदारणमें बडो उत्साह रहत है कौतुकही विदारतहैं औ गणेशजू दासनके कलङ्कको अङ्ककहे चिह्नको दूरि करिकै जैसे भव महादेवके शीशको शशि है कलङ्क रहित ताही विधि दासनके वपुष शरीरको राखत हैं औ जनके सन्मुख होतेही साँकर राजभयादि ताकी साँकर बंधन जंजीरन कही नहीं रहति ऐसे जे गजमुख गणेश हैं तिनके मुखको दशमुख जे ब्रह्मा विष्णु महेश हैं तिनके मुख जोवे कहे निरखत हैं स्तुति करत हैं अथवा दशमुख जे दशौं दिशा हैं तिनके जे मुख हैं अर्थ यह दशौं दिशनके प्राणी स्तुति करतहैं ॥ "पञ्चवर्षोगजोबाल-इत्यभिधानचिंतामणिः" तौ इहाँ स्तुतिसों अभिकांक्षितवस्तुको मांगिबो सूचित भयो तासों आशीर्वादात्मक मंगल है दूसरो अर्थ जो ग्रंथ कविलोग करत हैं ताकी कथा प्रथम संक्षेपसों कहतहैं सो युक्तिसों याही मंगलाचरणमें कह्यो है बालक या पदते श्रीरामचंद्रको जन्मसूचित भयो औ सबको कालरूप जो सुबाहु ताडकादि हैं तिन्हें मृणालन पौनारिनके समान सहजही तोरि डारत भये मारत भये औ कठिन औ कराल कहे भयानक ऐसा जो धनुष है औ अकाल कहे कुसमयको जो दीह बडो दुःख है व्याह कृत उत्सवमें परशुरामकृत दुःख गर्वगति समेत तिनहुँ-नको त्यों कहे ताही प्रकार ते मृणालन बहुवचन है तासों ताडकादि वध धनुभंग परशुरामगतिभंग सर्वत्र समता कियो ॥ इति बालकाण्ड कथा ॥ औ राज्य-त्यागरूप जो विपत्तिहै ताको हठिकै हरत कहे ग्रहण करत भये भरतादिको कह्यो न मान्यो आप पद्मिनी कमलिनीके पातकहे पुष्पपत्र सम सुकुमार हैं ॥

इति अयोध्याकाण्ड कथा ॥ औ पङ्क ज्यों कहे पङ्कके सदृश नीच ऐसा जो विराध है ताको पेलिकै पातालको पठावत भये वाल्मीकीय रामायणमें लिख्यो है कि काहूअस्त्रशस्त्रसों न मरै तब रामचंद्रजीवतही गाडि लियो ताही प्रकार कलुष पापरूप जे खर दूषणादिहैं तिनहुँनको मारचो ॥ इति आरण्यकाण्ड कथा ॥ औ कुलङ्कको है अङ्क चिह्नजाके ऐसा जो बंधुपत्नी भोगी वालि है ताको दूरि करत मारत भये औ दास जो सुग्रीव है ताको भव महादेवके शीशके शशिके सम राखत भये जैसे भवशीश शशिको राहुको भय नहीं रहत तैसे शत्रुभय रहित सुग्रीवको कियो अथवा महादेवके माथेमें द्वितीयाको चन्द्रमा है यासों या जनायो कि भवसंसारको राज्य पाइ सुग्रीव की और बढती हैहै ॥ इति किष्किन्धाकाण्ड कथा ॥ तथा याही पदमें सुन्दरौकाण्ड है ॥ केशव जे रामचंद्र हैं तिनके दासजे सुग्रीवहैं तिनके दासजे हनुमान हैं ताके वपुष शरीरको भवशीश शशिसम राखत भये कि लङ्कामें प्रकाशित करते भये कलङ्क रूपजे सिंहिका अक्षकुमारादिहैं तिनको दूरि करिकै कहे मारिकै ॥ इति सुन्दरकाण्ड कथा ॥ औ रामचन्द्रके सन्मुख होत ही विभीषणके साँकर कष्टकी जो साँकर जंजीर रही सो न कहे न रहत भई रामचंद्रके दर्शनहीं सो विभीषणको दुःख दूरिभयो तब दशमुख जो ब्रह्मा विष्णु महेश हैं ते बिभीषणको मुख जोवत भये कि धन्य हैं विभीषण जाको रामचन्द्र अंगीकार करचो औ गजमुखजे गणेश हैं तिन मुख कहे आदि दै और देवता हैं ते को कहे कहाँ हैं अर्थ यह गणेशादि देवता तौ जोवतही भये औ साँकर जे यमादिक हैं तिनको साँकर कहे कष्ट देवैया ऐसा जो रावण है सो रामचन्द्रके सन्मुख होतही न रहत भयो गजमुख जे गणेश हैं तिनको मुख कहे श्रेष्ठ ऐसे जे रामचंद्र हैं तिनके मुखको जोवत भयो अर्थ यह उनके लोकको प्राप्त भयो अथवा मुख जो वै कहे मुखमें लीन होत भयो तुलसीकृत रामायणमें लिख्यो है कि "तासुतेजप्रभुवदनसमाना । सुरनरसबनअचम्भौमाना" ॥ इति युद्धकाण्ड कथा ॥ औ साँकर जो रावण है ताके साँकर जो रामचन्द्र हैं तिन्हैं अयोध्याके सन्मुख होत ही दशमुख जे ब्रह्मा विष्णु महेश हैं ते मुख कहे मुख्य औ गजमुख जे गणेश हैं ते रामचन्द्रको मुख जोवै कहे स्तुति करतहैं अथवा दशमुख कहे दशौंदिशाके मुख औ गजमुख मुख कहे हाथिनमें मुख्य ते मुख जोवै कहे रामचन्द्रको मुख नि[illegible]ारतहैं ॥ इति उत्तरकाण्ड कथा ॥ कोऊ कहै कि एक पदमें कैयो फेरि अर्थ कियो सो [illegible]क्षेपकथा है तासों दूषण नहीं है याही विधि रामायणादिक तिलककारसे

अर्थ कियो है याहूपर कोऊ हठकरै ताकारण द्वितीय प्रकारसों अर्थ बालक जो है शिशु सो जैसे बालखेलमें मृणालनको विनही श्रम तोरिडारै कहे तोरिडारतहै इहाँ बालक पदमें जातिमें एक वचन है त्यों कहे ताहीविधि कठिन अतिकठोर औ भयानक ऐसा जो शंभु धनुष है ताको बाल अवस्थामें बालखेल सम रामचन्द्र तोरचो त्यहीमुख कहे आदिदै ताडकावधादि सीय विवाहादिजे बालकांडकी संपूर्ण कथा हैं तिनको इहाँ मुखपदक्रमकी आदि मों नहीं है श्रेष्ठतामो है औ अकाल कहे कुसमयको जो दीह दुःख है अर्थ रामराज्याभिषेकमें कैकेयीको वर मांगिबो राम वनगमन दशरथ मरण भरतको ब्रतकरि नंदिग्राममें वसन या प्रकारको जो अकाल दुःख है त्यहि मुख जे चित्रकूट गमनादि अयोध्याकांड कथा है तिनको औ विराध खर दूषणादि राक्षसनको मारिकै ऋषि लोगनकी विपत्तिको सहजही पद्मिनीके पातसम हरत कहे दूरिकरत पंकरत पंक जे पापहैं तिनको जैसे पेलिकै पतालको पठवै कहै पठै देत हैं अर्थ अपने दासनके जैसे पातक नाश करतहैं ताहीविधि कलुषकहे पापरूप बंधुपत्नी भोगी जो वालिहै ताको पठायो अर्थ मारचो तिनमुख जे आरण्यकांड औ किष्किन्धाकाण्डकी कथाहैं तिनको ऋषिनकी विपत्ति हरणादि आरण्यकाण्ड कथा जानो आदिपदते सीयहरणादि जानो औ वालिवधादि किष्किन्धाकाण्ड कथा जानो आदि पदते सप्तताल वेधन सुग्रीव राज्याभिषेकादि जानो औक जो है अग्नि तासों लंकके जे अंककहे ध्वजादि चिह्नहैं तिन्हें दूरिकै कहे विध्वंस करिकै जारिकै इति अर्थ हनुमानके करसों लंकाजारिकै दास जो विभीषण है ताके वपुषको आजु पर्यंत राखतहै रक्षाकरतहै अर्थ रावणादिको मारि जो विभीषणको लंकाको राज्यदियो तामें आजुलों रक्षा करत हैं तिनमुखकथनको हनुमान्के करसों लंकादाहादि सुन्दरकाण्डकी कथा जानो औ रावणादिको बधकरि बिभीषणको राज्यदानादि लंकाकाण्ड कथाजानौ औ भरतको जो साँकर कहे नंदिग्राममें यतीवेष बसिबे को कष्ट है ताहीकी जो साँकर कहे बंधन जंजीर है ताको जो नशन कहे नाश करिबोहै अर्थ रामचन्द्र आइकै भरत यतीवेषको क्लेश दूरि करचो है तेहिमुखकस है आदिदै औज कहे यज्ञ मुख कहे आदिदै अर्थ अश्वमेधादि जे मुख कहे मुख्य कथा हैं तिनको याग कहे गीत है अर्थ कथन है ताको जे जोवै कहे देखत हैं. अर्थ इन कथनसों युक्त रामचंद्रिकाको जे पढतहैं तेही कहे निश्चय करिकै दशमुख मुख होत हैं अर्थ वक्तृत्व करिकै दशमुखके

सदृश जिनको एक मुख होतहै अर्थ बडे वक्ता होतहैं " मयूरेग्नौचपुंसिस्यात्मुख-शीर्षजलेषुकम् " इति मेदिनी ॥ " गंगीतंगातुगीताचगौश्चधेनुःसरस्वतीत्येकाक्षरी यजनेयः समाख्यातः " इत्येकाक्षरी ॥ १ ॥

मू०—बानी जगरानीकी उदारताबखानी जाइ ऐसीमति कहौधौं उदार कौनकी भई । देवता प्रसिद्ध सिद्ध ऋषि राज तपवृद्ध कहिकहि हारेसब कहिन कहूँलई ॥ भावी भूत वर्त्तमान जगत बखानतहै केशोदास केहूं न बखानी काहूपै गई ॥ वर्णैपति चारिमुख पूतवर्णै पाँच मुख नाती बर्णै षट मुख तदपि नईनई ॥ २ ॥

टीका—जगरानी कहे जगमें श्रेष्ठ ऐसी जेवाणी सरस्वती हैं तिनकी उदारता बडाई जासों बखानी जाइ कहौ ऐसी मति बुद्धि उदारबडी कौने प्राणी की भई है अर्थ काहूकी नहीं भई देवता बृहस्पति आदि औ प्रसिद्ध जे सिद्ध देवयोनि विशेष हैं अथवा भृगु आदि ऋषिराज वाल्मीकादि अथवा सिद्ध जे ऋषिराज हैं तप वृद्ध लोमश मार्कंडेय आदि जाकी उदारताको कहि कहि कहे वर्णि वर्णिके सब हारे हैं कहिके सब उदारता काहू न लई कहे न पायी अर्थ उदारताको अन्त न पायो हारे यासों कह्यो कि अब नहीं बखानत औ भावी कहे जे ह्वैहैं औ भूत जे ह्वैगये वर्तमान जेहैं जगत् कहे जगत्‌के प्राणी ते बखानत हैं सो केशवदास कहते हैं कि केहूं कहे काहू प्रकार सों काहू प्राणीसों उदारता न बखानी गई औ पति जे ब्रह्मा हैं ते चारि मुखसों औ पूत महादेव पांचमुखसों नाती स्वामिकार्त्तिक षण्मुख सों वर्णतहैं ताहू पर नई नई कहे नवीन नवीन रहति है अर्थ यह कि यहि प्रकार मुख वृद्धि सों वर्णत हैं परंतु इनको वर्णन जाकी उदारताको छुइ नहीं सकत अथवा ज्यहिवाणीके पति चारिमुख औ पूतके पांच मुख नातीको षण्मुख वर्णन करत हैं यासों या जनायो किचारिमुख सों संपूर्ण जगत उत्पत्तिके कर्ता पंचमुखसों नाशकर्त्ता षण्मुखसों देवतनके रक्षक ऐसे पति पुत्र नाती हैं जाके यासों बडी बडाई जनायो औ ताहूपर नवीन नवीन होति जातिहै २ और अर्थ जामतिसो वाणी जो सरस्वती है तासों जगरानी सीता जू की उदारता बखानी जाइ ऐसी मति वाणीकी कौनकी कीन्हीं भई है अर्थ कौने

ऐसी मति वाणीको दीन्हीं औजवाणी के पति पुत्रादि चतुरादि मुखसों वर्णत हैं और अर्थ एकही है अथवा सरस्वती की उक्ति है कि वाणी जो मैंहों तासों जगरानी सीताजूकी उदारता बखानी जाइ कहे जाति हैं कोहसों अर्थ यह कि मोसों नहीं बखानी जाती काहे ते कि ऐसी कौनकी उदारमति भई है कि जो बखाने काहेते कि देवतादि औ मेरे पति पुत्रादि सब बखानत हैं ताहू पर नई नई रहति है ऐसी सरस्वती को अथवा सीताजूको नमस्कार करत हौं इति शेषः यामें नमस्कारात्मक मंगल है ॥ २ ॥

मू०—अन्यच्च ॥ पूरण पुराण अरु पुरुष पुराण परिपूरण बतावैं न बतावैं और उक्तिको ॥ दरशन देत जिन्हें दरशन समुझै न नेति नेति कहै वेद छाँडि भेद युक्तिको ॥ योनि यह केशोदास अनुदिन राम राम रटत रहत न डरत पुन-रुक्तिको । रूप देहि अणिमाहि गुणदेहि गरिमाहि भक्तिदेहि महिमाहि नाम देहि मुक्तिको ॥ ३ ॥

टी०—जिन रामचंद्र को पूर्णकहे संपूर्ण अठारहौं पुराण अथवा पूरण कहे जे कछु वस्तु चाहत नहीं शुकादि पुराण स्कंदादि औ पुरुषपुराण लोमश मार्कं-डेय आदि ते परिपूर्ण कहे सर्वत्र व्याप्त बतावत हैं और उक्ति कहे कथाको नहीं बतावत अर्थ कि और तर्क नहीं करत श्रीरामचंद्रजी जाकोदर्शन देतहैं ताको फेरि दर्शनकी समुझ ज्ञान नहीं रहति अर्थ जाको रामचंद्र को दर्शन होतहै सो तिनमें लीन है जात हैं सायुज्य मुक्तिको प्राप्त होतहै अथवा और दर्शन स्त्री पुत्रादिकी समुझ नहीं रहनि अर्थ संसार को बंधन मोह छूटिजात है रामरूपही ध्यानमें निरखत हैं औ वेद जिनको अनेक भेदसों गान करि नेति नेति कहे ना इति ना इति कहे याही प्रकारको है सो न कहे नहीं हम जानत या प्रकार सबभेदकी युक्तिको छोडि कहत है अर्थ यह कि जिनको प्रमाण वेदऊ नहीं जानत रूप जो रामचंद्र को है सो अणिमा सिद्धिको देतहै औ गुण जेहैं ते गरिमा सिद्धिको देतहैं औ भुक्तिमहिमा सिद्धिको देतिहै औ नाम मुक्तिको देतहै यह जानिकै काव्यरीतिमें एकई वस्तु को द्वै बारकहौं तौ पुनरुक्ति दूषण होतहै ताको भय छोडिकै मुक्ति की इच्छा करि अनुदिन रोज रोज राम

नामको रटनहौं ॥ "अर्थी दोषं नपश्यतीतिप्रमाणात्" ॥ और अर्थ रामनामको पुराणादि परिपूर्ण कहे भुक्ति मुक्त्यादि सब वस्तुसों पूरित अथवा सर्वत्र व्याप्त बखानत हैं सर्वत्र रहतहैं जहां चाहिये तहाँ लीजिये सब स्थानमें मिलत हैं औ जिनको दर्शन कहे षट्शास्त्र तिनकी समुझ नहीं है तिनको रामचंद्र दर्शन देतहैं अति मूर्ख वाल्मीकादि नामहींके जपसों रामचन्द्रको दर्शन पायो अथवा दर्शन ज्ञान देतहैं नेति नेति कहे नाइति नाइति कि संपूर्णार्थ इनहीं से कहे की वाल्मीकि से हीन गणिका यमनादि अनेकन पतितनको राम नामै सिद्धताको प्राप्त कीनहै जाति कुल विद्याके भेदकी युक्तिको छाँडिकै कछू जाति कुल विद्या परनहीं है जोई नामोच्चारण करै सोई सिद्धहोइ या प्रकार वेदकहतहैं अथवा प्रथमहीं को अर्थ जानो जा नामके माहात्म्यको वेद नहीं जानत फेरि नाम कैसांहै रूपसौंदर्य औ अणिमासिद्धि औ अनेक गुण औ गरिमा सिद्धि औ महिमा सिद्धि औ नाम कहे यश औ मुक्ति को देतहै तौ सौन्दर्य्यादि जे दृष्टफल हैं ते जहाँ देखिये तहाँ राम नामहीके प्रभाव सों जानियों औ मुक्ति अदृष्ट फल है ताके अर्थ अंत्य अवस्था में सब राम नाम कहावतहै यह सनातन रीति चली आवतिहै तासों जानियतहै कि मुक्तिका दाता रामनाम छोडि दूसरो नहीं है अथवा रूप जो है वेष तामें अणिमादि सिद्धि देतहैं जैसा सूक्ष्म रूप चाहै तैसो धरैं औ गुणन में गरिमा सिद्धि देतहैं राम नामके जप प्रभावते सबगुण विद्यादि गरू होतहैं औ भक्तिमें महिमा सिद्धि बडाई देतहै जो रामनाम जपतहै सो बडो भक्त कहावत है औ नाममें मुक्तिको देत है अर्थ राम भक्तन प्राणिन की मुक्ति जीवन में सब नाम गणतहैं अथवा नाम यश औ मुक्तिको देतहै सो यह कहे ऐसो प्रभाव जानिकै केशवदास जो है सो पुनरुक्ति भय छाँडिकै अनुदिन रामनामको रटत है या ग्रंथमें रामनाम वस्तु है ताका निर्देश कथनमात्र है तासों वस्तु निर्देशात्मक मंगलहै ॥ ३ ॥

मू०-सुगीतछंद ॥ सनाढ्य जाति गुनाढ्य हैं जग सिद्ध शुद्धस्वभाव । कृष्णदत्त प्रसिद्ध हैं महिमिश्र पंडितराव ॥ गणेशसो सुत पाइयो बुधकाशिनाथअगाध । अशेषशास्त्र विचारिकै जिनजानियो मतसाध ॥ ४ ॥ दोहा ॥ उपज्यो त्यहि कुल मंदमति, शठकवि केशवदास ॥ रामचन्द्रकी चन्द्रिका,

भाषाकरी प्रकाश ॥५॥ सोरहसै अट्ठावन, कार्तिकशुदि बुध वार ॥ रामचन्द्रकी चन्द्रिका, तब लीन्हों अवतार ॥६॥ बालमीकि मुनि स्वप्नमें, दीन्हों दरशन चारु ॥ केशव तिनसों यों कह्यो, क्यों पाऊं सुखसारु ॥७॥ मुनिश्रीछंद सिद्धिऋद्धिः॥८॥ सारछंद ॥ रामनाम सत्यधाम ॥९॥ और नामकोन काम १०॥

टीका-गुनाढ्यगुणन सों पूरित औ साधु मत उत्तम मत छंद उपजाति है जा छंदमें और और द्वै आदि छंदके चरण होइ सो छंद उपजाति कहावति है ॥४॥ ॥५॥ जो मैं तिथि नहीं कह्यो सो वार पदते सात वार हैं तासों सप्तमी तिथि सब कहतेहैं परंतु ज्योतिषके ग्रंथ ग्रहलाघवादिके मतसों कल्पांत अहर्गण किये बुधवार पंचमी और द्वादशी को आवत है सो द्वादशी भद्रा तिथी है और बुधे भद्रा सिद्धियोग होतहै और कार्तिक शुदी एकादशीको विष्णु जागतेहैं विष्णुके जागेके उपरांत ग्रंथारम्भ करचो तौ चैत्रादि मास गणनासों कार्तिक पर्यंत आठ औ रविवारादि वार गणना सों बुध पर्यंत चारिजोरि द्वादशी तिथि जानो ॥६॥ सुखसार मुक्ति चौबीसयें प्रकाश में रामचंद्र कह्यो है कि जगछूटे सुखयोग तासों जानो ॥ ७ ॥ तीनि छंदकी अन्वय एकहै सिद्धि जो आठ अणिमादिक हैं और सिद्धि संपत औ सत्यको धाम ऐसो जो रामनाम है तासों सुखसार पै हौ सुखसार देबे को और नामको काम नहीं है तौ सिद्धिको धामकहि ऐहिक सुखप्रद जनायो औ सत्यको धामकहि सत्यही ब्रह्महै तासों ब्रह्मरूप प्रद जनायो अर्थ जीवत में या लोकमें सुखद है औ अंतमें ब्रह्मपदप्रदहै ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

मू०केशव-रमणछंद ॥ दुखक्यौंटरिहैं ॥ मुनि-हरिजुहरि हैं ॥ ११ ॥ मुनि-तरनिजाछंद ॥ बरणिबेबरणसो ॥ जगत को शरणसो ॥ १२ ॥ प्रियाछंद ॥ सुखकंद है रघुनंदजू ॥ जग यों कहै जगबंदजू ॥ १३ ॥ सोमराजीछंद ॥ गुनो एकरूपी सुनो वेदगावैं ॥ महादेव जाको सदा चित्तलावैं ॥ १४ ॥ कुमारललिताछंद ॥ विरंचि गुणदेखै ॥ गिरागुणनीलेखै ॥ अनंतमुखगावै विशेहीनपावै ॥ १५ ॥

टीका—केशव पूंछ्यो कि लोभ मोहादि कृत जो दुःख हैं सो कैसे टरिहैं तब मुनि कह्यो कि, जब तू रामनाम ग्रहण करिहै तब रामचन्द्र हरि हैं छोडाइ हैं इहां हरिशब्द यासों कह्यो कि 'हरतिदुःखमिति' हरिः अर्थ दुःख हरिबो उनके नामहींको अर्थ है ॥ ११ ॥ दुःख छोडाई रामचंद्र मुक्ति देहैं या निश्चय के अर्थ रामचंद्रको ईश्वरत्व केशवको मुंनि चारिछंदमें देखावत हैं जो जगत्को शरण रक्षक है सो बरण रूप राम रूप अथवा रामनामांक तुम करिकै वर्णिवे है अर्थ रामचंद्र को रूप अथवा राम नाम वर्णन करो ॥ १२ ॥ सब जग कहत है कि रघुनन्दन जे रामचन्द्र हैं ते सुखके कंद कहे मूलहैं इनहीं के आश्रित सब सुख है औ जग वंद्यहै सब जग जिनको वंदना करत है सुखकंद कहि या जनायो कि सुखसार रामचंद्रही सों पाइ है और देव देवेको समर्थ नहीं हैं ॥ १३ ॥ जिन रामचंद्रको वेद जो हैं सो एकरूपी कहे जो सदा एकरूप रहतहैं ब्रह्मज्योति जासों गुन्यो कहे ठहरायोहै सो गान करत हैं सो हम वेद वाक्य सों सुन्यो है अथवा एककहे जिन सम दूसरो नहींहै औ रूपीकहे अनेक रूपसों सर्वत्र व्याप्त हैं फिरि कैसे हैं जिनको महादेव सदा ध्यावते हैं ॥ १४ ॥ यामें रामचंद्रके गुणनको माहात्म्य है अनंत शेष विशेष निर्णय ॥ १५ ॥

मू०—नगस्वरूपिणीछंद ॥ भलोबुरोनतूगुनै। वृथाकथाकहैसुनै॥ नरामदेवगाइहै । न देवलोक पाइहै ॥ १६ ॥ षटपद॥ बोलिनबोल्यो बोल दयो फिर ताहि न दीन्हों । मारिनमारयो शत्रुक्रोधमनवृथानकीन्हों ॥ जुरिन मुरे संग्राम लोककीलीक न लोपी । दान सत्य सन्मान सुयश दिशि विदिशा ओपी॥ मनलोभ मोहमदकामवश भये न केशवदास भणि । सोइ परब्रह्म श्रीरामहै अवतारी अवतार मणि ॥ १७ ॥ दोहा ॥ मुनिपति यहउपदेशदै, जबहीं भयो अदृष्ट ॥ केशवदास तहीं करयो, रामचन्द्रजू इष्ट ॥ १८ ॥

टी०—तू अनेक कथा वृथा कह्यो सुनो करत है आपनो भलो बुरो नहीं गुनतो विचारतो जबलौं जैसो पूर्व कहि आये ऐसे रामदेव को न गाइ है तबलौं अनेक कथन सों देवलोक न पैहै इहाँ देवलोक वैकुंठ जानो वैकुंठ देवेकी शक्ति

रामचन्द्रही में है और देव नहीं देसकत कहूं न रामलोक पाइ है पाठ है तौ रामलोक वैकुंठ ॥ १६ ॥ प्रथम ईशत्व वर्णन करयो अब यामें रामचंद्रको स्वभाव गुण वरण्यो है रामचन्द्रजू जो बोले सो फेरि नहीं बोले अर्थ जो एक बात कह्यो सोई करयो है फेरि बदलि कै और बातनहीं कह्यो वन गमनादि वचन ते जानो औ जाको दान दियो ताको फेरि वही दीन्हों अर्थ एकही वार ऐसो दियो जामें वाके फेरि माँगिबेकी इच्छा नहीं रही विभीषणादि को लंकादानादि ते जानो और शत्रुको एकही वार ऐसा मारिकै नाश कियो जामें फेरि नहीं मारिवे पर्‍यो खरदूषणादि वधते जानो औ संग्राम में जुरिकै नहीं मुरे खरदूषण रावणादि के युद्धते जानो औ लोक की लीक मर्यादा को लोप नहीं कियो रावण के वधसों ब्रह्मदोष मानि अश्वमेध करणादि सों जानो औ दान औ सत्य औ सन्मान के सुयश करिकै दिशा औ विदिशा ओपी हैं अर्थ जिनको सुयश दिशि विदिशन में छाइ रह्यो है औ जिनको मन लोभ औ मोह औ मद औ काम के वश नहीं भयो राज्य त्यागादि सों लाभ विवशजानी माता पिताको दुःखितहुए देखि वन गमन करनादि सो मोह विवश जानो औ अगस्त्यादि ऋषिनके यथोचित सत्कार सों मद विवश जानी एक पत्नी व्रतसो काम विवश जानो जाके ऐसे स्वभाव गुणहैं सोई श्रीराम वाराहादि अवतारन में मुनिश्रेष्ठ अवतारी कहे अवतारको धरे साक्षात्परब्रह्म है अथवा श्रीराम अवतारी कहे अनेक अवतारन को धरत हैं औ परब्रह्म हैं ॥ १७ ॥ अदृष्ट अंतर्द्धान इष्ट-पूज्य देवता ॥ १८ ॥

मू०—गाहाछंद॥ रामचन्द्र पदपद्मं वृन्दारक वंदाभिवंदनीयं॥ केशवमतिभूतनया लोचनंचंचरीकायते ॥ १९ ॥ चतुष्पदीः छंद॥ जिनको यशहंसा जगत प्रशंसा मुनिजन मानसरंता । लोचन अनुरूपनि श्याम स्वरूपनि अंजन अंजित संता ॥ कालत्रयदर्शी निर्गुणपर्शी होत विलम्ब न लागै । तिनके गुण कहिहौं सब सुख लहिहौं पाप पुरातन भागै ॥ २० ॥

टी०—वृंदारक जे देवताहैं तिनके वृंदसमूह तिन करिकै अभिवंदनीय अर्थ जिनको अनेक देवता बन्दना करतहैं ऐसे जे रामचंद्र के पदपद्म पदकमल हैं तिन प्रति केशवदास की मतिरूपी जो भूतनया सीता हैं ताके लोचन चंचरीकाय ते कहे चंचरीक भ्रमरके ऐसे आचरण करत हैं अर्थ जब मुनि की आज्ञा सों राम-

चंद्र को इष्टदेवता करयो तब सीता सम सदा रामनिकट वर्तिनी हमारी मति के लोचन कमलमें भ्रमर सदृश रामचन्द्र चरण में अनेक कौतुक करने लगे ॥१९॥ मानस मानसर औ मन आय आपने लोचननके अनुरूप कहे योग्य और के लोचनके योग्य कज्जलादि अंजन है संतन के लोचननके योग्य रामरूपही है ऐसे जे जिन रामचंद्र के अनेक प्रतिबिंब श्यामस्वरूप रूपी अंजन हैं तिनकरि जे संत अंजित हैं अर्थ रामचन्द्र के प्रतिबिंब रूपनको जे संत जन ध्यानमें आनत हैं अथवा श्याम स्वरूपनि कहे श्यामरूपता रूपी जो अंजन है ता करिकै. जे संत अंजित हैं तिन संतानको त्रिकालदर्शी औ निर्गुण पर्शी नेत्रन करि ज्योति स्पर्श करै या अर्थ ब्रह्मज्योति के द्रष्टा होत बेर नहीं लागति जे रामचंद्रको ध्यान करत हैं ते त्रिकालदर्शी होत हैं औ ब्रह्मज्योति को देखत हैं इति भावार्थः॥ अथवा निर्गुणपर्शी होत कहे निर्गुणज्योति में मिलिजात बेर नहीं लागति अथवा निर्गुणते पर अन्य विष्णुकी श्रीशोभा होत बेर नहीं लागति पुरातन पूर्व कृत ॥ २० ॥

मू०--दो०-जागति जाकी ज्योति जग; एकरूपस्वच्छंद ॥ रामचंद्रकी चन्द्रिका, वरणतहों बहुछंद ॥२१॥ रोलाछंद ॥ शुभ सूरजकुल कलशनृपति दशरथ भये भूपति ॥ तिनके सुतभये चारि चतुर चितचारु चारुमति ॥ रामचन्द्र भुवचन्द्र भरत भारत भुवभूषण । लक्ष्मण अरु शत्रुघ्न दीहदानव दलदूषण ॥ २२ ॥ घत्ताछन्द ॥ सरयूसरितातट नगर बसै अवध नाम यश धामघर ॥ अघओघ विनाशी सब पुरवासी अमरलोक मानहु नगर ॥ २३ ॥

टी०–ज्योति ब्रह्मज्योति अथवा अंगछबि औ बहु छंद कहे अनेक रंगतौ जा रामरूपी चन्द्रकी ज्योति तौ एक रूप है ताकी चन्द्रिका अनेक रंगहै वो आश्चर्य है यह युक्ति है औ अर्थ यह कि बहुत छंद जे दोदाहि हैं तिनसों युक्त ॥ २१ ॥ सूर्य कुलके कलश जे नृपति अजादि हैं तिनमें दशरथ भूपति राजा भये भारत भरतखंड ॥ २२ ॥ यश को धाम कहे घर है धरा पृथ्वी जाकी अयोध्यापुरी के वासी देवतन सरिस अघपापन के ओघ समूहन के विनाशी हैं तासों देवलोक सम है ॥ २३ ॥

मू०—छप्पै ॥ गाधिराजको पुत्र साधिसब मित्र शत्रुबल । दान कृपान विधान वश्य कीन्हों भुवमन्डल ॥ कैमन अपने हाथ जीति जग इन्द्रियगन अति । तपबल याही देह भये क्षत्रिय ते ऋषि पति ॥ तेहि पुर प्रसिद्ध केशव सुमति काल अतीतागतनिगुनि । तहँ अद्भुत गति पशु धारियो विश्वामित्र पुनि ॥ २४ ॥ प्रज्झटिकाछन्द ॥ पुनि आये सरयू सरित तीर तहँ देखे उज्ज्वल अमलनीर । नव निरखि निरखि द्युति गति गँभीर । कछु बरणन लागे सुमति धीर ॥ २५ ॥ अति निपट कुटिल गति यदपि आय । वहु देत शुद्ध गति छुवत आय ॥ कछु आपुन अध अध गति चलन्ति । झलपति तन को ऊरध फलन्ति ॥ २६ ॥ मदमत्त यदपि मातंग संग । अति तदपि पतित पावन तरंग बहु न्हाइ न्हाइ जेहि जल सनेह ॥ सब जात स्वर्ग शूकर सुदेह ॥ २७ ॥

टी०—त्रिकाल दरशीत्व ते जेतो कालवीते रामचन्द्रको अवतार होनो रहै सो कालअतीतकहे वीतो गुनिकै औ जा कालमें रामचन्द्रजू यज्ञरक्षा करनलायक भये सो काल आगत आयो गुनिकै ॥ २४ ॥ २५ ॥ दुवौछंदन में विरोधाभास है आप कहे अपना औ आप कहे जल के छुवतही शुद्धगति मुक्ति देत है अथवा जाके जलको कहूँ अनतहूँ छुवौ तौ शुद्धगति देतहै ऊरधपदते स्वर्ग जानों ॥ २६ ॥ मद मदिरा सों मत्त यद्यपि मातंग चाण्डालनको संग है विरुद्धार्थः॥ "मातंगःश्वपचीहस्तीत्यभिधानचिंतामणिः" ॥ औ मत्तगज जामें स्नान करते हैं इत्यविरोधः पतितपावन कहे पतितन को पवित्र कर्ता स्नेह सों ताके जलमें न्हाइन्हाइकै शूकरपर्यंत बहु प्राणी सुंदर देह को धरि सब स्वर्ग जातेहैं अथवा सनेह कहे अप्सरादिकनके इति शेषः ॥ स्नेहसहित अर्थ अप्सरादि स्नेह सहित ताको स्वर्ग लैजाती है अथवा तेहिके जलके स्नेहहूँ सों कहूं होइ सरयू जलमें स्नेह करै स्वर्ग जाइ कहूं सदेहपात है देह सहित स्वर्ग जाइ अर्थ याही

देहमें देवरूप ताको प्राप्त ह्वै जातहै जिनको देहत्यागहू को कष्ट नहीं होत इति भावार्थः अथवा शूकर देह सहित जे जीव हैं ते स्वर्ग जातहै और देहधारी तौ जातेही हैं ॥ २७ ॥

मू०–नवपदीछंद ॥ जहँ तहँ लसत महामदमत्त । वर वारन वारन दलदत्त । अंग अंग चरचे अति चंदन । मुंडन भुरके देखिय वंदन ॥ २८ ॥ दोहा ॥ दीह दीह दिग्गजन के, केशव मनहुँ कुमार ॥ दीन्हीं राजा दशरथहि, दिगपाल न उपहार ॥ २९ ॥ अरिल्लछंद ॥ देखि बाग अनुराग उपज्जिय । बोलत कलध्वनि कोकिल सज्जिय ॥ राजति रति-की सखी सुवेषनि । मनहुँ बहति मनमथ संदेशनि ॥ ३० ॥

टी०–ग्रामबाहर जहाँ तहाँ महावत हाथिनको फेरतहैं तिन का वर्णन है सुभावीक्ति है अथवा स्थान पर बँधे हैं वारन हाथी तिनके दल चमू को अकेलेई दलि डारत हैं यासों अतिबली जानो अथवा बार कहे बेर नहीं लागति शत्रुदलको दलि डारत हैं भुरके लगाये चन्दन रोरी ॥२८ ॥ दिक्पाल इन्द्रादि उपाहार भेंट ॥ २९ ॥ कल अव्यक्त मधुर ॥ ३० ॥

मू०–फूलि फूलि तरु फूल बढ़ावत । मोदत महामोद उपजावत । उड़त परागन चित्त उठावत । भ्रमर भ्रमत नहिं जीव भ्रमावत ॥ ३१ ॥ पादाकुलकछंद ॥ शुभ सर शोभै मुनिमन लोभै । सरसिज फूले अलि रस भूले ॥ जल चर डोलैं बहुखग बोलैं । बरणि न जाहीं उर अरु झाहीं ॥ ॥ ३२ ॥ चतुष्पदीछंद ॥ देखीबनवारी चंचलभारी तदपि तपोधन मानी । अति तपमय लेखी गृहथितपेखी जगत दिगंबर जानी ॥ जग यदपि दिगंबरपुष्पवती नर निरखि निरखि मन मोहै । पुनि पुष्पवती तन अति अति पावनगर्भ सहित सब सोहै ॥ ३३ ॥

टी०-मोदतकहे सुगंधको पराग्त ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ द्वैछंदको अन्वय एक है वनवारी कहे उपवन औ श्लेषते वनकी वारी कुमारी कुमारीपक्ष विरोध है वाटिका पक्ष शुद्धार्थ है विरोधाभास अलंकार है चंचल स्वभाव चंचल औ वायु योगसों चंचलहै पत्तजाभारी कहे गरूहे देह जाकी और दीर्घवृक्षयुक्त तपोधन तपस्विनी औ तपस्वी सम शीत घाम तोय दुःख महनिहै गृहघर और परिखाछार दिवालीति दिगंबर वस्त्र रहित दुवौ पक्ष में पुष्पवती रजो धर्मिणी औ प्रफुल्लित तन अति कहे स्थूलकाय औ वहुत भूमि में विस्तार है जाको अति पावन पवित्र अति दुवौ पक्ष में गर्व सहित गुर्विनी औ फलगर्भ सहित यासों सदा फलोत्पत्ति जनायो रति रस सुरत औ प्रीति जग जन लीना अनेक पुरुष भोगिनी परकीयाइति । औ जगके जनन करिकै युक्त अर्थ अति सुख पाइ जग जन बैठत हैं जामें प्रवीना दोष रहित औ सर्वोत्तमा नवीनापाठ होइ तौ नवोढा औ नूतनयनि आपनो पुरुष औ राजा सौंपीपति की औ स्त्रीं औ राजपत्नी ॥ ३३ ॥

मू०-पुनिगर्भ संयोगी रति रस भोगी जगजनलीन कहावै।
गुणि जग जललीना नगरप्रवीना अति पतिके चित भावै।
अति पतिहि रमावै चित्त भ्रमावै सोतिन प्रेम बढ़ावै। अब
योंदिनरातिन अद्भुतभाँतिन कविकुल कीरतिगावै ॥ ३४ ॥
हाकलिकाछंद ॥ संग लिये ऋषि शिष्यन घने पावक
सेतपतेजनिसने ॥ देखत सरिता उपवनभले। देखन अवधिपुरी कहँ चले ॥ ३५ ॥ मधुभारछंद ॥ ऊंचे अवास।
बहु ध्वज प्रकाश ॥ शोभा विलास। शोभै प्रकाश ॥ ३६ ॥
आभीरछन्द ॥ अति सुन्दर अति साधु। थिर न रहत पल
आधु। परम तपोमय मानि। दण्ड धारिनी जानि ॥ ३७ ॥
हरिगीत छन्द ॥ शुभद्रोण गिरिगण शिखर ऊपर उदित
औषधिसी गनौ। बहु वायु वश वारिद बहोरहि अरुझि
दामिनि द्युतिमनौ ॥ अति किधौं रुचिर प्रताप पावक

प्रगट सुरपुर की चली। यह किधौं सरित सुदेश मेरी करो दिवि खेलित भली ॥ ३८ ॥

टी०-उपवन वाटिका ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ अवास पर ॥ ३६ ॥ दंडधारिणी हैं दंडिन के ब्रत को धरे हैं दंडी दंड धरे रहते हैं ये दंड कहे ध्वजदंड धरे हैं कैसो है ध्वजा औ दंडी अति सुंदर हैं सुवस्त्र रचित औ तपतेज करिः भव्यरूपहै साधु-राग द्वेषरहित दुवौहैं थिरनरहत वायुयोगसों चंचलरहती हैं औ अनेक तीर्थनमें फिरचो करतहै औ परमतपोमय है सदा शीत घाम तोयसहती हैं औ प्राणाया-मादि अनेकतप करत हैं औ अर्थ विरोधाभास है विरोधार्थ अतिसाधु हैं औ पल आधु थिर नहीं रहती तौ साधुविषे चंचलता विरोध है औ परम तपोमय कहे बडे तपको करती है औ दंडधारिणी हैं दंडकहे राजदंड डांड इति धारण करता है लेता है तो तपस्वीको दंडलेवो विरोधहै अविरुद्धार्थ प्रथमको ते जानो ॥३७॥ द्रोणगिरि सदृश मंदिर है शिखर अग्रभाग औषधि सरिस करचो तासों अरुण पताका वर्णन जानो औ की दामिनी बिजुलीकी द्युतिहै अरुझि रही है तिनको बारिदके वश्यहै अर्थ बारिद की आज्ञासों वायुवह कहे अनेक प्रकारसों बहोरत है मेघनके पास लैजायो चहतहै यासों मंदिरनकी अति उच्चता जनायो प्रताप पावक रघुवंशिन को इतिशेषः॥ या प्रकार अरुणपताका पंक्तिको वर्णन करि यह पदसों दूसरी श्वेतपताका पंक्तिको अवलोकि वर्णन लगे सो जानो मेरीकरी कहे बनाई विश्वामित्र सृष्टिकरन लागे हैं तब नदी बनायोहै सो आकाशमें हैं पुराणोक्त है कवि प्रियाहूमें कह्योहै कि, ऊँचे ऊँचे अटनिपताका अति ऊँची जनु कौशिक की कीन्हीं गंगा खलैंये तरल तर। अथवा मेरीकहेहमारी 'भगिनीभगिनीतिशेषः'। दिवि कहे दिव्यरूप कहे खेलतिहै आकाशमें कौशिकी नदीहै सो विश्वामित्रकी भगिनीहै ॥ ३८ ॥

दोहा ॥ जातिजीतिकीरतिलई, शत्रुनकी बहुभाँति ॥ पुर पर बाँधी शोभिजै, मानो तिनकी पाँति ॥ ३९ ॥ त्रिभं-गी छन्द ॥ सम सब घर शोभैं मुनि मन लोभैं रिपुगण छोभैं देखि सबैं। बहु दुंदुभि बाजैं जनु घन गाजैं दिग्गज लाजैं सुनत जबैं ॥ जहँतहँ श्रुति पढ़हीं विघन न बढ़हीं जैजस

मढहीं सकल दिशा। सबई सब विधि छम बसत यथा क्रम देवपुरी सम दिवस निशा ॥ ४० ॥

टी०—ताहीश्वेतपताका पंक्तिमें फेरि तर्क है ॥ ३९ ॥ द्वै छंदको अन्वय एकहै क्षोभैहैं डरतहैं हम समर्थ रातिउ दिन देवपुरी सम है यामें श्लेषार्थ हूहै कैसी देवपुरी औ अयोध्या है सम बराबरि है दिनराति जामें घटत बढत नहीं छह महीना उत्तरायण दिन रहत है दक्षिणायन राति रहति है औ समहै तुल्य आनंद दायक है रातिउ दिन जामें रात्रिहूको चौरादिको भय नाहीं होत और अर्थ दुवोपक्षएकही है ॥ ४० ॥

मू०—कविकुल विद्याधर सकल कलाधर राजराजबरवेष बने। गणपति सुखदायक पशुपति लायक शूर सहायक कौन गने ॥ सेनापति बुधजन मंगल गुरु गण धर्मराज मन बुद्धि घनी। बहु शुभ मनसाकर करुणामय अरु सुरतरंगिनी शोभसनी ॥ ४१ ॥

टी०—फेरि कैसी है देवपुरी कवि शुक औ कुल कहे समूह विद्याधरनके विद्याधर देवयोनि विशेष हैं औ सकल कलाधर चंद्रमा औ राजराज कुबेर ये सब पवरद कहे सुंदरवेष कहे रूपसों बनेहैं औ सुखदायक जो गणपति गणेश हैं औ लायक कहे श्रेष्ठ पशुपति महादेव हैं औ सूर कहे सूर्य्य और जे इन्द्र सहायक कामादि हैं तिन्हें को गनै अर्थ की अनेक हैं सेनापति स्वामिकार्तिक औ बुधजन चन्द्र पुत्रजन पद इहाँ स्वरूपको वाची है औ मंगल भौम औ गुरु बृहस्पति औ गणकहै गणदेवता ॥ "आदित्यविश्ववसवस्तुषिताभास्वरानिलाः। महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः। इत्यमरः" औ मनमें बुद्धिहै घनी जिनके ऐसे धर्मराज कहे यमराज हैं बहु शुभयुक्त हैं मनसाकर कहे कल्पवृक्ष औ करुणामय कहे विष्णु औ सुरतरंगिनी आकाशगंगा इन सबकी शोभा सों सनीहै अर्थ ये सब वसत है यामें अयोध्या कैसी है कवि काव्यकर्त्ता वाल्मीकि सदृश औ विद्या चतुर्दश ॥ "अंगानि वेदाश्चत्वारो मीमांसान्यायविस्तरः ॥ पुराणं धर्मशास्त्रं च विद्याश्चैताश्चतुर्दशः" इति। मनुः ॥ अथवा धनुर्विद्यादि तिनके धर्ता औ सकल कहे चौंसठिहू कलानके धर्ता औ राजराज कहे बडे राजा ते वरवेषसों बनेहैं अनेक राजा राजादशरथकी सेवामें हाजिर

पुरीमें वसे रहतहैं औ सुखदायक गणपति कहे यूथप औ लायक श्रेष्ठ पशुपति गोपालादि अथवा गजादि औ सहायक कहे जे सबकी सहाय करत हैं ऐसे जे शूर योद्धा हैं तिन्हैं को गनै बहुत हैं औ सेनापति चमूनाथ बुधजन पंडित औ मंगल पाठी औ गुरुगण वसिष्ठादि अथवा मंगल कर्ता जे गुरुगण वसिष्ठादिहैं औ मनमें बुद्धि है घनी जाके ऐसो धर्मराज कहे न्यायदर्शी है कोतवालेति औ बहुत प्राणी शुभ जो मनसा मनोभिलाष है ताके करनहार हैं अर्थ मनोरथके दाता हैं औ बहुत करुणामय कहे दयाशील हैं. औ सुरतरंगिनी सरयू इनकी शोभा सों सनी है अर्थ इन सबसों युक्त है ॥ ४१ ॥

मू ०-हीरकछन्द ॥ पंडितगण मंडितगुण दंडित मति देखिये । क्षत्रिय बर धर्म प्रवर क्रुद्ध समर लेखिये ॥ वैश्य सहित सत्य रहित पाप प्रगट मानिये । शूद्र सकति विप्र भगति जीव जगत जानिये ॥ ४२ ॥

टी०-पंडित पदते ब्राह्मण जानौ ते अनेक गुण जे शास्त्रादि हैं तिनसों पंडित युक्त हैं औ दंडित हैं सक्षितहै मति जिनकी अर्थ सत् मति सों युक्तहैं औ क्षत्रिय क्षत्र धर्म करिकै प्रवर बली हैं औ समरहींमें क्रोधकरत हैं औ वैश्य बनिया सत्य सों युक्त हैं औ पापसों रहित हैं औ शूद्रन के जीवमें ब्राह्मण की भक्तिज्ञ गति है ताही में तिनकी शक्तिबल जानियतहैं अर्थ शूद्र-भक्ति युक्त ब्राह्मणकी सेवा करत हैं अथवा शूद्रनके जीवमें शक्ति कहे देवी औ विप्रकी भक्ति जगतिहै शूद्रनको देवी औ ब्राह्मणनकी उपासना उचितहै या प्रकार आपने अपने धर्म सों युक्त चारौं वर्ण बसत हैं यामें ॥ ४२ ॥

मू ०-सिंहविलोकित छंद ॥ अति मुनितन मन तहँ मोहि रह्यो । कछु बुधिबल वचन न जाइ कह्यो ॥ पशु पक्षि नारि नर निरखि तबै । दिन रामचन्द्र गुण गनत सबै ॥ ४३ ॥ मरहट्टाछन्द ॥ अतिउच्च अगारनि बनी पगारनि जनु चिंतामणि नारि । बहुशत मख धूपनिधूपित अंगनि हरिकीसी अनुहारि । चित्रीबहु चित्रनि परम विचित्रनि

केशवदास निहारि। जनु विश्वरूप को अमल आरसी रची विरंचि विचारि ॥ ४४ ॥ सोरठा ॥ जगयशवन्तविशाल, राजादशरथकी पुरी ॥ चंद्रसहित सबकाल, भालथली जनु ईशकी ॥ ४५ ॥

टी०–दिनकहे दिनमति ॥ ४३ ॥ बहुत जे अतिउच्च अपार घरहैं बहु पदको संबंध सर्वत्र है तिनकी जे बनी पगार परिखा हैं छार देवालीति कहूं शिखंदी कहतहैं तिनमें लगी अनेक पुर कौतुक देखिवेको चिंतामणि सदृश नारी स्त्री ठाढी हैं चिंतामणि सदृश जिनको देखि मनोभिलाष पूरे होत हैं या प्रकारके स्त्रीभवन हैं औ बहुत घरसत कहे उत्तम जे मख यज्ञहैं तिनके धूपन कहे धुमन करिकै धूपित अंगनिसों युक्त हैं ते हरिविष्णुके अनुहारि हैं अर्थ श्यामरूप हैं ऐसे यज्ञशाला हैं औ बहुत घर परम विचित्र कहे अद्भुत चित्रनिसों चित्रित हैं तिन्हैं मानो विरश्चि ब्रह्मा विचारि एकाग्र चित्त करिकै विश्वरूप जो संसार है अथवा विराट्‌रूप ताकी आरसी ऐना बनायो है जैसे ऐनामें बिम्ब सदृश प्रतिबिम्ब देखि परतहै तैसे संसारमें जो वस्तु हैं सो सब मंदिरनमें चित्रित हैं ऐसे चित्रशाला हैं पुरीमें पैठि तिन्हैं विश्वामित्र निहारि कहे देखत भये ॥ ४४॥ जगमें विशाल सुंदर औ यशवंत कहें यशयुक्त जो राजा दशरथकी पुरी है सो सबकाल चन्द्रमा सहित मानो ईश महादेवकी भालथली है चन्द्र सरिस यश है विशाल दुवौ हैं यासों सदा निष्कलंक यश युक्त पुरीको जनायो ॥ ४५ ॥

मू०–कुंडलिया ॥ पंडितअति सिगरीपुरी, मनहु गिराग ति गूढ़। सिंहनि युत जनु चंडिका, मोहति मूढ अमूढ़॥ मोहति मूढ अमूढ़, देव सँग दितिसों सोहै। सब शृंगार सँदेह, मनोरति मन्मथ मोहै॥ सब शृंगार सदेह सकल सुख सुखमा मंडित। मनो शची विधिरची विविधि विधि वरणत पंडित ॥ ४६ ॥

टी०–सिगरी पुरी अति पंडित है अर्थ पुरीके निवासी जनसब पंडित हैं यासों मानों गति कहे दशा है गूढ जाकी अर्थरूप पुरी है आपनी दशाको छपाये मानो गिरा सरस्वतीहैं गिराहूके आसतजन अतिपंडित होतहैं अथवा

मनहूँको औ गिराकहें वचननहूँकी गति है गूढजाकी कथं जाकीदशाको अंत-मन वचन नहीं पावत चंडिकाको सिंहवाहन है औ विकराल रूपदेखि मूढ औ अमूढके भयसे मोह होत है पुरी पुरुष सिंहन सों युक्त है औ अति विचित्र शोभा निरखि मूढ अमूढ के आनंदसे मोह होत है अदितिके देवता पुत्र हैं तासों संगमें देव रहत हैं इहाँ अदिति पदकी अकार को लोपहै भाषाके कविन को नियम है कहूं अकारादि पदकी अकारको लोपकरि डारत हैं यथा विहारी कृतसप्तशतिकायां । "अधिकअँधेरो जगकरै, मिलिमावस रविचंद" अथवा दिति दैत्यमाता सम है जैसे दितिसों बडेवीर दैत्यभये हैं तैसे अयोध्याहूमें अनेक वीर उत्पन्न होतहैं रतिमन्मथ कामकी स्त्रीहै तासों मनको मोहति है पुरी शोभा-सों कामहूको मन मोहति है तासों अति शोभा युक्त जानौ शची इन्द्राणिहूं राज्यादि सबसुख औ सब सुखमा शोभासों मंडित है औ अनेक विधिसों पंडित वर्णन करत है ऐसी पुरीहू है अथवा सुखमासों मंडित युक्त सकल जे सुख हैं तिनसों शची कहे संचित पूँजी भूत मानौ विधातैं रच्यो है अर्थ पूर्ण सुख औ पूर्ण शोभा एकत्र करि ताहीको पुरी बनायो है ॥ ४६ ॥

मू०-काव्यछंद ॥ मूलनहींकोजहांअधोगतिकेशवगाइय। होमहुताशनधूमनगरएकैमलिनाइय ॥ दुर्गतिदुर्गनहीं जोकुटिलगतिसरितनहीमें । श्रीफलकोअभिलाषप्रगटकवि कलके जीमें ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ अतिचंचलजहँचलदलै, विधवाबनी न नारि ॥ मनमोह्योऋषिराजको, अद्भुतनगर निहारि ॥ ४८ ॥ सोरठा ॥ नागरनगरअपार, महामोहतम मित्रसे। तृष्णालताकुठार, लोभसमुद्रअगस्त्यसे ॥ ४९ ॥ दोहा ॥ विश्वामित्रपवित्रमुनि, केशवबुद्धिउदार ॥ देखत शोभानगरकी, गये राजदरबार ॥ ५० ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्र चंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांविश्वामित्रस्याऽयो-ध्यागमनंनामप्रथमःप्रकाशः ॥ १ ॥

टी०—मूलजर अधोगति नर्क औ नीचेको गति गमन हुताशन अग्नि दुर्गति नर्क औ दुष्कारि कहेगति जिनमें कुटिलता इति श्री फलद्रव्य औ विल्वफल कूचनकी उपमा देवको परिसंख्यालंकार है ॥ ४७ ॥ चलदल पीपर वृक्षवनी वाटिका सोइ विधवाहै याहूमें परिसंख्या है ॥ ४८ ॥ नागर प्रवीण मित्र सूर्य जो सदा सब वस्तु पाइवेकी इच्छाहै सो तृष्णा जानो औ जो कछू वस्तु देखि सुनिकै इच्छा चलै सो लोभ जानो ॥ ४९ ॥ ५० ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसाद निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां प्रथमःप्रकाशः ॥ १ ॥

मू०—दोहा ॥ या द्वितीय प्रकाशमें, मुनि आगमन प्रकाश ॥ राजासों रचना वचन, राघव चलन विलास ॥ १ ॥ हंस छंद ॥ आवत जात राजके लोग । मूरति धारी मानहुँ भोग ॥ २ ॥ मालतीछंद ॥ तहँदरबारी । सबसुखकारी ॥ कृतयुग कैसे । जनुजन वैसे ॥ ३ ॥ दोहा ॥ महिष मेष मृग वृषभ कहुँ, भिरत मल्ल गजराज ॥ लरत कहूँ, पायक नटत, बहु नर्त्तक नटराज ॥ ४ ॥ समानिका छंद ॥ देखि देखिकै सभा । विप्र मोहियो प्रभा ॥ राजमंडली लसै । देवलोकको हँसै ॥ ५ ॥ मल्लिकाछंद ॥ देशदेशके नरेश । शोभिजैसबैसुवेश ॥ जानियेनआदिअंत । कौनदासकौन संत ॥ ६ ॥ दोहा ॥ शोभितबैठे तेहिसभा, सातद्वीपके भूप ॥ तहँराजादशरथलसै, देवदेव अनुरूप ॥ ७ ॥ देखि तिन्हैंतबदूरितें, गुदरानो प्रतिहार ॥ आयेविश्वामित्रजू, जनु दूजोकरतार ॥ ८ ॥ उठिदौरेनृपसुनतहीं, जाइगहेतबपाइ ॥ लै आयेभीतरभवन, ज्यौंसुरगुरुसुरराइ ॥ ९ ॥ सोरठा ॥ सभामध्यबैताल, ताहिसमयसोपढ़िउठचो ॥ केशवबुद्धिविशाल, सुंदरसूरोभूपसो ॥ १० ॥

टी०-॥ १ ॥ २ ॥ कृतयुग सत्ययुग ॥ ३ ॥ मल्ल बाहु युद्धकर पायक पट्टवाज नटतकहे नाचत हैं नर्तक नृत्यकारी ॥ ४ ॥ ५ ॥ जहाँ सिंहासनमें राजा दशरथ बैठे हैं सो आदिहै तहाँते जहाँ पर्यंत दरबारी बैठे हैं सो अंत है सो आदिते अंततक दरबारिनमें कौन दास कहे सेवकहै औ कौन संतकहे स्वामीहै यह नहीं जानियत अर्थ सब दरबारी राजसाज सँवारे हैं । "सद्विद्यमाने सत्ये च प्रशस्तार्चितसाधुषु" इत्यभिधानचिंतामणिः ॥ इहाँ अर्चितपदको पर्य्याय स्वामीजानो ॥ ६ ॥ देवदेव इंद्र ॥ ७ ॥ गुदरानो जाहिर कियो करतार ब्रह्मा ॥ ८ ॥ ९ ॥ बेताल भाट ॥ १० ॥

मू०-बैतालाघनाक्षरी ॥ विधके समानहैंविमानीकृतराजहंस, विविधविबुधयुतमेरुसो अचलहै । दीपातिदीपतिअतिसातौंदीपदीपियतु, दूसरोदिलीपसोसुदक्षिणाकोबलहै । सागरउजागरकीबहुवाहिनीकोपति, छनदानप्रियकिधौंसूरजअमलहै । सबविधिसमरथराजैराजादशरथ भगीरथपथगामीगंगाकैसोजलहै ॥ ११ ॥ दोहा ॥ यद्यपिईंधनजरिगये, अरिगणकेशवदास ॥ तदपिप्रतापानलनके, पलपल बढ़त प्रकाश ॥ १२ ॥ तोमरछन्द ॥ बहुभाँतिपूजिसुराई । करजोरिकैपरेपाई ॥ हँसिकेकरचोऋषिमित्र । अबबैठराजपवित्र ॥ १३ ॥ मुनिसुनिदानमानसहंस । रघुवंशके अवतंस ॥ मनमाँहजोअतिनेहु । यकबातमाँगेदेहु ॥ १४ ॥

टीका-बिमानी कृत कहे वाहनी कृतहैं राजहंस जिन करिकै ब्रह्माको हंसवाहन है और राजा विमानीकृत कहे मानरहित कियेहैं राजनकेहंस जीवजिनकरिकै अथवा विमानीकृत वाहनीकृतहैं राजनके हंसजीव जिन करिकै अर्थ--शत्रु भयसों मित्र प्रेम सों मनमें चढाये रहत है विबुध देवता औ पंडित दिलीप की स्त्रीको सुदक्षिणा नाम रह्यो ताके पातिव्रत को बल रह्यो औ सुष्ठु जो दक्षिणा दानद्रव्यहै वाहिनी नदी औ चमूक्षण दारा त्रिनहो हे प्रिय ! जाकी सूरजके अमलमें अर्थ सूर्यके प्रकाशमें रात्रिको नाश होत है अथवा क्षणनदान कहे जलांजलि

दान औ क्षणक्षण प्रतिहै दानही प्रिय जिनको क्षणक्षण में दानदीवो करत हैं गंगाजल सगर के सुतन के तारिबेको भागीरथके पीछे पीछे आयो है औ राजा कुल पंथ गामी हैं श्लेष धर्मोपमा हैं कोउ परंपरित रूपक कहत हैं ॥ ११॥१२॥ ऋषिनमें मित्र सूर्यसम हैं ॥ १३ ॥ दानरूपी जो मानस मानसर है ताके तुम हंस हौ अर्थ दानहीं में है विहार जिनको बडेदाता हौ अवतंस कर्ण-भूषण ॥ १४ ॥

मू०—राजा—अमृतगतिछंद ॥ सुमितमहामुनिसुनिये । तनमनधनसबगुनिये ॥ मनमहँहोइसोकहिये । धनिसोजोआ पुनलहिये ॥ १५ ॥ ऋषिदोधकछंद ॥ रामभयेजबनेवन माहीं । राक्षसवैरकरैंबहुधाहीं ॥ रामकुमारहमैंनृपदीजै । तौ परिपूरणयज्ञकरीजै ॥१६॥ तोटकछंद ॥ यहबातसुनीनृपनाथ जबै । शरसेलगेआखरचित्तसबै ॥ मुखतेकछुबातनजाइक ही । अपराधविनाऋषिदेहदही ॥ १७ ॥ राजा—अतिकोम लकैसबबालकता ॥ बहुदुष्कराक्षसघालकता ॥ हमहींच लिहैंऋषिसंगअबै । सजिसैनचलैचतुरंगसबै ॥ १८ ॥ वि-श्वामित्र—षट्पद ॥ जिनहाथनहठिहरषि हनतहरिणी-रिपुनन्दनि ॥ तिननकरतसंहारकहाँमदमत्तगयन्दनि॥जिनबे धतसुखलक्षलक्षनृपकुँवरकुँवरमनि । तिनबाणनिवाराहबा घमारतनहिंसिंहनि । नृपनाथनाथदशरथसुनियअकथक थायहमानिये । मृगराजराजकुलकलशअबबालकवृद्धन जानिये ॥ १९ ॥

टीका—जो वस्तु आप लहिये लीजिये सो धन्यहै ॥ १५ ॥ रामपरशुराम ॥ ॥ १६ ॥ १७ ॥ हाथी घोडा रथ पियादा चारों सैनाके अंग हैं ॥ १८ ॥ हरिणीके साहचर्यते रिपुपद ते हरिणी रिपु कहे सिंहजानौ जिन हाथन सिंह हरिणी मारत हैं तिन सों कहा गजनको नहीं मारत अर्थ गजहू मारत है औ कुँवरन में मणिश्रेष्ठ ऐसे नृपकुँवर जिन बाणनि सुख कहे सहजेही लक्ष कहे

लाखन लक्ष निशाना बेधत हैं तिनसों बाराह बाघसिंहनहूंको नहीं मारत अर्थ मारत हैं हे नृपनाथ! यह कथा अकथ कहे अतर्क मानौ निश्चय इति। अथवा अकथकहे अद्भुत जो यह कथा है ताकी मानिबेकहे निश्चय मानौ आशय यह रामचन्द्र राक्षसनको वध करिहैं यामें संदेह ना करौ ॥ १९ ॥

सुंदरीछंद ॥ राजनमें तुमराजबड़ेअति । मैंमुखमाँगों सोदेहुमहामति ॥ देवसहायकहौंनृपनायक । हैयहकारज रामहिंलायक ॥ २० ॥ राजा—मैंजोकह्योऋषिदेनसोलीजिय । काजकरोहठभूलिनकीजिय ॥ प्राणदियेधनजाहिंदियेसब । केशवरामनजाहिंदियेअब ॥ २१ ॥ ऋषिराजतज्यों धनधामतज्योंसब । नारितजी सुतशोचतज्योंतब ॥ आपन-पौजोतज्यौंजगवंदहैं । सत्यनएकतज्यौहरिचंदहैं ॥ २२ ॥

टी०—॥ २० ॥ २१ ॥ एकसमय इन्द्र नारदसों हरिश्चन्द्रके सत्यप्रतापादिको माहात्म्य सुनि इंद्रासन लेबेको भयमानि दुःखितभयेहैं तब ब्रह्मादि देवन इंद्रको धीरजदैकै हरिश्चंद्रके सत्वभंगकरिबेकेलिये नारदको विश्वामित्रकेपासपठायो विश्वामित्र नारद मुखसों देवनकी आज्ञासुनि काहूकामरूपी राक्षसको बोलाइ कह्यो कि तू शूकर रूपह्वै अयोध्या में जाइ राजा हरिश्चंद्र को मृगया मिष हमारे आश्रम में ल्याउ राक्षस गोकियो विश्वामित्रके आश्रममें राजाको ल्याइ लुप्त भयो आश्चर्य युक्त ह्वै राजा आश्रम नदी में न्हाइ कपट द्विजरूपधारि विश्वामित्र को सब पृथिवी औ सर्वस्वदान कर्‌यो है फेरि विश्वामित्र कह्यो है कि शतभार सुवर्ण दक्षिणा देउ तौ सर्वस्वलेउ नाहिं तौ सत्यको छोडो तब काशीमें जाइकै मदना नामस्त्री औ रोहिताश्व नामा पुत्रको देवशर्मा ब्राह्मणके हाथ साठिभार सुवण को बेंच्यो है औ चालिस भार सुवर्ण को कालसेन चांडाल के हाथ अपना बिकाई सौभार सुवर्ण विश्वामित्र को दियो फेरि चांडालकी आज्ञाते श्मशान घाटपर उचित द्रव्यलेबेको बैठेहैं कछू दिनमें पुष्प तोरत में रोहिताश्व को सर्प काट्यो मर्‌यौ ताको लै मदना बहाइबे को गई तहाँ चांडालको उचित पंचमुद्रा लैहि कै बहावन दियोहै या प्रकार सुतको शोच छोंड्यौ सत्यपाल्यो यह संक्षेप कथा लिख्यो है विशेष सो हरिश्चंद्रोपाख्यान पुराणनमें प्रसिद्ध है ॥ २२ ॥

मू०–राजवहैवहसाजवहैपुर । नामवहैवहधामवहैगुर ॥
झूँठेसोंझूँठई बांधतहैंमन । छोंड़तहैंनृपसत्यसनातन ॥२३॥
॥ दोहा ॥ जान्योविश्वामित्रके, कोपबढ्योउरआइ । राजा-
दशरथसों कह्यो, वचनवशिष्ठ बनाइ ॥ २४ ॥ षटपद ॥
इनहींकेतपतेजयज्ञकीरक्षाकरिहैं । इनहींकेतपतेज सकलरा-
क्षसबलहरिहैं ॥ इनहींकेतपतेजवढिहै तनतूरण । इनहींकेतप
तेज होहिंगेमंगलपूरण । कहिकेशवजैयुतआइहैंइनहीकेतपते-
ज घर । नृपबेगिराम लक्ष्मण दुवौसौंपौंविश्वामित्रकर ॥२५॥

टी०–साजछत्र चामर चमू आदि नाम यश गुरु वशिष्ठ झूँठे जे पुत्रादि हैं तिनसों झूँठई कहे वृथाही मनको बांधतहौ लगावतहौ अथवा झूँठेसों कहे झूँठे न सहित है अर्थ पुत्रादि झूँठे माया के प्रपंच हैं तिनसों मिलिकै झूठइ जो झुठाई है तासों मनको बांधत हौ अर्थ की ना बांधौ अथवा झूँठेकी सो कहे झूठेकी तरह जैसे झूँठाप्राणी झुठाइमें मनलगावतहै तैसे तुमहूं लगावतहौ औ सनातन कहे परंपराको सत्य छॉडत हौ देनकहि अब नहीं देत सो ना चाहिये ॥ २३ ॥ २४ ॥ तेजप्रताप तूरन जलदी मंगल विवाहादि ॥ २५ ॥

मू०–सोरठा ॥ ॥राजाऔरनमित्र, जानहुँ विश्वामित्रसे ॥
जिनकोअमितचरित्र, रामचन्द्रमय मानिये ॥२६॥ दोहा ॥
नृपपैवचनवशिष्ठको, कैसेमेटयोजाइ ॥ सोंप्यो विश्वामित्र
कर, रामचन्द्रअकुलाइ ॥ २७ ॥ पंकजवाटिकाछंद ॥ राम-
चलत नृपके युगलोचन । वारिभरितभये वारिदरोचन ॥
पायनपरिऋषिकेसजिमौनहिं । केशवउठिगयेभीतरभौनहिं ॥
॥ २८ ॥ चामरछन्द ॥ वेदमंत्रतंत्रशोधिअस्त्रशस्त्रदैभले ॥
रामचन्द्रलक्ष्मणैसोविप्रक्षिप्रलैचले ॥ लोभक्षोभमोहगर्वका
मकामनाहई । नींदभूखप्यासत्रासवासनासबेगई ॥ २९ ॥

टी०–राक्षसवधमें अमित कहे संपूर्ण जो चरित्र हैं सो राम-चन्द्रमय कहे रामचन्द्रचरित्र मय रामचन्द्र चरित स्वरूपति जिनको विश्वामित्रहीको चरित्र-

मानौ अर्थ जो राक्षसवधमें वा वेधनादिकृत रामचन्द्र करि हैं सो कृत रामचन्द्र द्वार ह्वै विश्वामित्रही करि हैं आशय यह कि यामें कछू श्रम रामचन्द्र को नहीं है ये केवल तुम्हारे पुत्रको यश दियो चाहत हैं याते इन सम मित्र दूसरो न जानौ अथवा रामचन्द्रमय कहे रामचन्द्र प्रति समर्पित मानिये अर्थ जो करत है सो रामचन्द्र को समर्पण करत हैं ॥ २६ ॥ २७ ॥ वारि जलसों भरित रोचनकों वारिद मेघ भये अरुण रंग ह्वै आंशुनकी वर्षा करन लागे ॥ २८ ॥ वेदके मंत्र औ तन्त्र शास्त्र के मन्त्र शोधि शोधि कै दियो अथवा वेदके मंत्र दिये बलातिबला विद्या दियो है सो वाल्मीकीयरामायणमें लिख्यौ है औ तंत्रशास्त्रके मंत्रनसों शोधिकै मंत्रि करिकै अस्त्रशस्त्र दिये क्षिप्र कहे जल्दी तिन विद्यानके प्रभाव सों लोभादिक वासना दूरि भई यथा । रघुवंशे । " तौ बलातिबलयोः प्रभावतो विद्ययोः पथि मुनिप्रदिष्टयोः । मम्लतुर्न मणिकुट्टिमोंजितो मातृपार्श्वपरिवर्त्ति नाविव " ॥ २९॥

मू०—निशिपालिकाछन्द ॥ कामवनरामसबबासतरुदेखियो । नैनसुखदैनमनमैनमलैलेखियो । ईशजहँकामतनुकैअतनुडारियो । छोडिवहयज्ञथलकेशवनिहारियो॥३०॥ दोहा ॥ रामचंद्रलक्ष्मणसहित, तनमन अतिसुखपाइ ॥ देख्यो विश्वामित्रको, परमतपोवनजाइ ॥ ३१ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणि-श्रीरामचन्द्रचन्द्रिकाया-मिंद्रजिद्विरचितायां रामचन्द्रलक्ष्मणयोर्विश्वामित्रतपोवनगमनं नाम द्वितीयः प्रकाशः ॥ २ ॥

टी०—जा वनमें महादेव कामको जारयो है ताको कामवन नाम है अथवा कामवन कहे अभिलाषको दाता वनतवनमें रामचन्द्र सब वास कहे ऋषिन के वास कुटीति औ तरुवृक्ष देख्यो अथवा वासतरु सुगंधयुक्त तरुमैनमय कहे काम स्वरूपता बनमें ईश महादेव जहाँ जा स्थान में काम को जारयो है ता स्थानको देखि छोडिकै विश्वामित्र को यज्ञ थल जाइकै देख्यो ॥ ३० ॥ ३१ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसाद निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां द्वितीयःप्रकाशः ॥ २ ॥

मू०—॥ दोहा ॥ कथातृतीयप्रकाशमें, वनवर्णनशुभजानि ॥ रक्षणयज्ञमुनीशको, श्रवणस्वयंवरमानि ॥ १ ॥ षट्पद ॥ तरुतालीसतमालतालहिंतालमनोहर । मंजुलबंजुलतिलकलकुचकुलनारिकेरवर ॥ एलाललितलवंगसंगपुंगीफलसोहैं । सारीशुककुलकलितचित्तकोकिलअलिमोहैं ॥ शुभराजहंसकलहंसकुलनाचतमत्तमयूरगन । अतिप्रफुलितफलितसदारहैकेशवदासविचित्रवन॥२॥सुप्रियाछंद॥ कहुँद्विजगणमिलिसुखश्रुतिपढहीं । कहुँहरिहरिहरहररटरटहीं ॥ कहुँमृगपतिमृगशिशुपयपियहीं । कहुँमुनिगणचितवतहरिहियहीं॥३॥नराचछंद ॥ बिचारमानब्रह्मदेवअर्चमानमानिये । अदीयमानदुःखसुःखदीयमानजानिये ॥ अदंडमानदीनगर्वदंडमानभेदवै । अपठ्ठमानपापग्रन्थपठ्ठमानवेदवै ॥ ४ ॥

टी०—तालीश वृक्ष विशेष हिंताल खजुरिवंजुल अशोक लकुच वडहर ॥ १ ॥ मृगपति पदते सिंहकी स्त्री पुरुष जातिमात्र जानौ अर्थ सिंहिनीन को पय दूध मृग बालक पियत हैं यासों यां जनायो कि जहाँ सहजहूं वैर नहीं है कृत्रिमकी कहावत ह औ कहूतेई मृग शिशु मुनिन के हियको हरिकै मुनिन की ओर चितवत हैं यासों मृग बालकन की अति सुन्दरता जानो ॥ २ ॥ ३ ॥ जहाँ सदा ब्रह्म जो वेद है सोई विचार्यमान है विचारयो जात है अथवा परब्रह्म देव पदते यहां विष्णु जानौ अथवा सदेवयासों या जनायो कि सुदेव सेवामें सब रहत हैं कोऊ कुदेव यक्षिणी आदि की सेवा नहीं करत औ दुःख अदीयमान है कोऊ काहू को दुःख नेंहा देत सुख दीयमान है दीन अदंडमान है दीन को कोऊ दंड ताडन नहीं करत औ वै कहे निश्चय करत औ वै कहे निश्चय करि गर्व औ भेददंडमान है पाप ग्रंथ मारन मोहनादिके ग्रंथ अपठमान हैं कोऊ नहीं पढत ॥ ४ ॥

मू०—विशेषकछंद ॥ साधुकथाकथियेतहँकेशवदासजहां । विग्रहकेबलहैमनकोदिनमानतहां ॥ पावनवाससदाऋषिको सुखकोबरषै । कोबरनैकविताहिविलोकतजीहरषै ॥ ५ ॥

चंचला ॥ रक्षिवेकोयज्ञकुलबैठेवीरसावधान । होंनलागेहोमकेजहांतहांसबैविधान ॥ भीमभाँतिताडुकासोभंगलागिकनेआइ । वाननानिरामपैननारिजानिछाँडिजाइ ॥ ६ ॥ ऋषि-सोरठा ॥ कर्मकरतियहघोर, विप्रनकोदशहूदिशा । मत्तसहसगजजोर, नारीजानिनछाँडिये ॥ ७ ॥ राम-शशिवदना ॥ सुनुमुनिराई जगसुखदाई । कहिअबसोई । जेहि यशहोई ॥ ८ ॥ ऋषि-कुंडलिया ॥ सुताविरोचनकीदुतीदीरघजिह्वानाम । सुरनायकह्वैसंहरीपरमपापिनीवाम ॥ परमपापिनीबामबहुरिउपजीकविमाता । नारायणसोहतीचक्रचिंतामणिदाता ॥ नारायणसोहतीसकलद्विजदूषणसंयुत । त्योंअबात्रिभुवननाथताडुकातारहुसहसुत ॥ ९ ॥

टीका-साधु कथा उत्तम कथा विष्णुविषयकीनी आदि अथवा साधु जे संतजन हैं नारदादि तिनकी कथा तहाँ तेहि आश्रम में मुनि जनन करि कै कथिये कथन करियतहैं औ जहाँ केवल मनही को निग्रहहै मनइंद्रिन को राजा है मनके निग्रहसों सब इन्द्रिनको निग्रह जानो औ तहां मानदिनहीं के है और काहूके नाहीं है दिनपक्ष में मानप्रमाण दिन मान कैतो है यह पूछिवे की रीति लोकमें प्रसिद्ध है अन्यत्र मानगर्व परिसंख्यालंकार है अथवा दिनही को मान आदर है यज्ञादिसत्कर्म दिनही में होत हैं तासो ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ विरोचन बलिके पिताकी सुता दीरघजिह्वानामा पापिनी रही ताको सुरनायक इंद्र मारचो है औ फेरि अति पापिनी कविजे शुक्र हैं तिनकी माता भई ताको नारायण मारचो है एक समय देवनके युद्ध में हारिकै दैत्य ब्राह्मणके शरणमें बचिवो जानिकै शुक्र माताके शरण जाइ लुकाने तहां शत्रुको रक्षक जानि इंद्रकी आज्ञा सों विष्णु शुक्र माता को शिर चक्रसे खंडन करि दैत्यनको मारचो है ताही कोपसों भृगुमुनि जाइ विष्णुके उरमें लात मारचो है औ आपने पुत्र शुक्र को दैत्यगुरु कियो है यह कथा पुराणनमें प्रसिद्धहैं कैसे हैं नारायण चिन्तामणि के दाता हैं अथवा चिंतामणि सरिस दाताहैं सकल द्विज दूषण संयुत ताडुका को विशेषण है औ सहसुत कहे मारीच सहित यासों या जनायो इन्द्र विष्णुहू दुष्टस्त्री वध कियो है ॥ ९ ॥

मू०—॥ दोहा ॥ द्विजदोपीनविचारिये, कहापुरुषकह नारि ॥ रामविरामनकीजिये, वामताडुकातारि ॥ १० ॥ मरहट्टाछंद ॥ यहसुनिगुरुवानीधनुगुनतानीजानीद्विजदुख दानि । ताडुकासँहारीदारुणभारीनारीअतिबलजानि ॥ मारीचबिडारयोजलधिउतारयो मारयोसबलसुबाहु ॥ देव निगुनपर्ष्योंपुष्पनिवर्ष्योंहर्ष्योंअतिसुरनाहु ॥ ११ ॥ दोहा ॥ पूरणयज्ञभयोजहीं, जान्योविश्वामित्र ॥ धनुषयज्ञकीशुभ कथा, लागेसुननविचित्र ॥ १२ ॥

टीका—विराम कहे बेर ॥ १० ॥ ताडुकादि वध मों गुणनकी परीक्षा कियो कि ये गुण विष्णुही में हैं तासों विष्णु को अवतार भयो अब रावण वध ह्वै है यह जानि इंद्र हर्षित भये ॥ ११ ॥ १२ ॥

मू०—॥ चंचरीछंद ॥ आइयोंतोहिकालब्राह्मणयज्ञको थलदेखिकै । ताहिपूंछतबोलिकैऋषिभाँतिभाँतिविशेषिकै ॥ संगसुंदररामलक्ष्मणदेखिदेखिसोहर्षई । बैठिकैसोइराज मंडलवर्णईसुखवर्षई ॥ १३ ॥ ब्राह्मण ॥ शार्दूलविक्रीडि- तछंद ॥ सीताशोभनव्याहउत्सवसभासंभारसंभावना तत्त- त्कार्यसमग्रव्यग्रमिथिलावासीजनाशोभना ॥ राजाराजपुरो- हितादिसुहृदोमंत्रीमहामंत्रदानानादेशसमागतानृपगणा पू- जापराःसर्वदा ॥ १४ ॥

टीका—जनकपुरको ब्राह्मण सीयस्वयंवर के अर्थ काहू राजाको निमंत्रण लिये जात रह्यो सो यज्ञ को स्थान देखिवे को सुभावही आयो अथवा ऋषिही- को निमंत्रण ल्यायो है अथवा कोउ साधारण पथिक ब्राह्मणहै ताको निकट बोलिकहे बोलाइकै विश्वामित्र भाँति भाँति विशेषसों जनकपुरकी कथा पूंछत हैं सो ब्राह्मण ऋषिकेसंग रामलक्ष्मणको देखि ऋषिकी स्त्रीके वचन सत्य जानि अब सीताको व्याह ह्वै है यह निश्चय करि हर्षित आनंदित होतहै काहेते

पंचमप्रकाशके तृतीयछंदमें ब्राह्मणकहि है कि काहू ऋषिकी स्त्री चित्रमें सीतका ऐसो कोऊ वरुलिखिल्याई जैसो रामचन्द्रको देखियत है ॥ १३ ॥ सीताको जो शोभन कहे सुंदर ब्याह है ताको जो उत्सव सभा कहे कौतुक सभा है स्वयंवर सभा इति । ताके जे अनेक संभार सामग्री हैं अनेक राज सत्कारादि वस्तु तिनकी जो संभावना विचार है तासों राजा जनक औ राजपुरोहित सतानंद तिन्हैं आदि दै और जे सुहृद मित्र हैं औ महामंत्रके देनहार जे मंत्री हैं औ समग्र कहे सम्पूर्ण मिथिलावासी जे शोभन कहे सुबुद्धिजनहैं ते सब तत्तत्कार्य कहे अपने अपने उचित कार्य में व्यग्रकहे आसक्त हैं । संलग्न इति अथवा आकुल हैं "व्यग्रो व्यासक्त आकुले इति मेदिनी" औ सर्वदापूज्य औ पर कहें उत्कृष्ट ऐसे नाना देश अनेकदेशके नृपगण समागत कहे आये हैं ॥ १४ ॥

मू०-दोहा ॥ खण्डपरस[1]कोशोभिजै, सभामध्यकोदंड । मानहुँशेषअशेषधर, धरनहारबरिबंड ॥ १५ ॥ सवैया ॥ शोभतिमंचनकीअवलीगजदंतमईछबिउज्ज्वलछाई । ईशमनौ-वसुधामेंसुधारिसुधाधरमंडलमंडिजोन्हाई । तामहँकेशवदा-सविराजतराजकुमारसबैसुखदाई । देवनसोंजनुदेवसभाशुभ सीयस्वयम्वरदेखनआई ॥ १६ ॥ दोहा ॥ नवतिमंचपंचालिका, करसंकलितअपार । नाचतिहैजनुनृपतिकी, चित्तवृत्तिसुकुमार ॥ १७ ॥ सोरठा ॥ सभामध्यगुणग्राम, बंदीसुतद्वैशोभहीं ॥ सुमतिविमतियहनाम, राजनकोवर्णनकरैं ॥ ॥ १८ ॥ सुमति-दोहा ॥ कोयहनिरखतआपनी, पुलकित बाहुविशाल ॥ सुरभिस्वयंवरजनुकरो, मुकुलितशाखरसाल ॥ १९ ॥

टी०-जामें देशांतरनके राजा लोग आय आय बैठत हैं ऐसे स्वयंवर सभामें चारों ओर मंच कहे मचाननकी अवली पंक्तिबनतिहै ॥ १५ ॥ सोमंचावली सीयस्वयंवरमें गजदंत हाथी दाँतन की बनी है तामें ब्राह्मण उत्प्रेक्षा करते

---

१ महादेव.

हैं कि, ईश जे विधाना हैं ते मानो जुन्हाई सों मंडिकै युक्त करिकै वसुधा पृथ्वी-में सुधाधर चंद्रमा को मंडल कहे परिवेष सुधारि कहे सुधाऱ्यो बनायो है जोत्स्ना-युक्त चंद्रपरिवेष सम कहे मंचावली की अति श्वेतता जनायो ईश बनायो सम-कहे अति रुचिर रचना जनायो औ देव सरिस राजकुमार हैं देवनकामरिसमंचा-वलीजानो ॥ १६ ॥ पंचालिका नृत्यकी जातिविशेष है अपार कर कहे हस्तक मेदसों संकलित युक्त ॥ १७ ॥ १८ ॥ सुरभि कहे वसंतरूपी जो स्वंयवर है त्यहि मानो रसाल आँब की शाखा को मुकुलित बौरयुक्त कऱ्यो है जैसे वसंतमें आँबकी शाखा बौरति है तैसे धनुष उठाइबे को मोद करि बाहु रोमा-ञ्चित भयो अथवा सुरभिरूपी जो है स्वयं कहे अपना त्यहि वर कहे सुंदर रसाल शाख को मुकुलित किये हैं ॥ १९ ॥

मू०-विमति-सोरठा । ज्यहिंयशपरिगलमत्त, चंचरीक चारणाफिरत ॥ दिशिविदिशनअनुरक्त, सोतौमलिकापीडनृप ॥२०॥सुमति-दोहा॥जाकेसुखमुखवासते,वासितहोतदिगंत सोपुनिकहयहकौन नृप, शोभितशोभअनंत ॥ २१ ॥ विम-ति-सोरठा॥राजराजदिगबाम । भाललालोभीसदा॥ अति प्रसिद्धजगनाम । काशमीरकोतिलकयह ॥ २२ ॥

टी०-पांचछंदनमें विमतिके पांचप्रश्नोंकोश्लेषसों उत्तरदियो है मल्लिक नामा जो पर्वत है ताको आपीड कहे शिखा भूषण है अर्थ मल्लिक पर्वतको राजा है । यथाचपद्मपुराणे ।" मल्लिकाख्यो महाशैलो मोक्षदः पश्यनां नृणाम् । यत्रांगे-षु वृणांतोयं श्यामं वा निर्मलम्भवेत् । पातकस्यापहारीदं मया दृष्टं तु तीर्थकम्" ॥ ४ ॥ औ मल्लिका जो चँबेलीहै ताको आपीड शिखा भूषण वेनी मालादि "शिखास्वापीडशेखरौ । इत्यमरः" कैसो है राजा औ मालती माला ज्यहिं के यशरूपी जो परिमल सुगंध है तासों मत्त चंचरीक भ्रमर सदृश जे चारण भाट हैं ते दिशि विदिशन में अनुरक्त संलग्न फिरत हैं अर्थ जाको यश दिशि विदिशन में भाट गावत फिरत हैं औ यश अर्थ सदृश जो परिमल सुगंध है तामें मत्त चारण सदृश जे चंचरीक भ्रमर हैं ते दिशि विदिशन में अनुरक्त फिरत हैं ॥ अर्थ जाके सुगंधमें मत्त ह्वै भ्रमर दिशि विदिशन में उडत फिरत हैं ॥ २० ॥ सुख कहे सहज मुख के वास सुगंध ते ॥ २१ ॥

काश्मीर को तिलक कहे काश्मीर देशको राजा औ काश्मीर कहे केशरिको तिलक कैसोहै राजा औ तिलकराज जे कुबेर हैं तिनकी दिशा उत्तर दिशारूपी जो वाम स्त्री है ताके भालको लाल रक्त जो सुमेरु है सो है लोभी सदा ज्यहि राजाको अर्थ सुमेरु के यह इच्छा रहति है कि इन्द्रको राज छोडि या राजाको राज हमपर होय यासों या जनायो कि राजा रूपगुण करि इन्द्र हूं सों अधिक है अथवा यह राज सुमेरु को सदा लोभीहै इन्द्र को जीति सुमेरु पर राज्य करिबे की इच्छा राखत है औ राजराज दिग सदृश जे वाम स्त्री हैं राजराज दिक सदृश कहे या जनायो जैसे द्रव्यरूप लक्ष्मीसों युक्त उत्तर दिशा है तैसे शोभारूप लक्ष्मी सों युक्त स्त्री हैं तिनके भाल को जो लाल रत्न है शोभा है सदा जातिलकको अर्थ जो तिलक लाल हू की शोभा बढावत है तासों तिलकके निकट रहिबे की भाल लाल के इच्छा रहतिहै आशय यह कि अति भूषणनसों भूषित औ अति सुंदरीहू स्त्रीनकै शोभा बढावत है साधारण नहीं है और अर्थ राजराज कहे राजनको राजा है और दिशारूपी जो वाम स्त्री है ताको भाल को लाल है औ लोभी है सदा कहे याचकनकी याचकता को याचकन को याचिबो सर्वदा जाको भावत है अर्थ वडो दाता है सदा पर सो मैं याचकताकी कहत हैं औ अर्थराजदिग जो उत्तर दिशा है ताके वाम भाग जो पूरव दिशा है ताके भाल को लाल सूर्य ताको सदा लोभी ऐसा जो काश्मीर देश है ताको राजा है अति जाडे सों जा देश वासिन के सदा सूर्योदय की इच्छा रहति है ॥ २२ ॥

मूल ॥ सुमति-दोहा ॥ निजप्रतापदिनचरकरत, लोचन कमलप्रकाश॥ पानखातमुसुकातमृदु, कोयहकेशवदास॥२३॥

टी०-अर्थ यह जाके अंगनमें प्रताप कांतिकी झलक सब लोचन पसारिकै निहारत हैं ॥ २३ ॥

मूल-बिमति-सोरठा ॥ नृपमाणिक्यसुदेश, दक्षिणतिय जियभावती । कटितटसुपटसुवेश, कलकाचीशुभमण्डई ॥ ॥ २४ ॥ सुमति-दोहा ॥ कुण्डलपरसतमिसकहत, कहौ कौनयहराज ॥ शंभुशरासनगुनकरो, करनालम्बितआज ॥ ॥ २५ ॥ बिमतिसोरठा ॥ जानहिं बुद्धिनिधान, मत्स्यराज यहिराजको॥समरसमुद्रसमान, जानतसबअवगाहिकै॥२६॥

सुमति–दोहा ॥ अंगरागरंजितरुचिर, भूषणभूपितदेह ॥ कहतबिदूपकसोंकछू, सोपुनिकोमछनृपयेह ॥ २७ ॥

टी०–नृपमाणिक्य नृपश्रेष्ठ औ उत्तम माणिक्य राजा कैसो है कि सुन्दर है देश द्रविडादि जामें ऐसी जो दक्षिण दिशा रूपी तिय है ताको अति भावत है जा दक्षिण दिशाके कटितट में कहे मध्यभाग में सुन्दरहै पटपद्धति जाको औ कल कहे दुःख रहित ऐसी जो कांची नामा पुरी है ताको मंडत है भूषित करत अर्थ कि याके देश में मध्यभाग में विष्णुकांची शिवकांची पुरी हैं तामें जाको वास है माणिक्य कैसो है कि सुदेश कहे सुंदरी दक्षिण कहे प्रवीण जे तिय स्त्री हैं तिनको अति भावती है फेरि कैसोहै कि सुष्ठु पट वस्त्र युक्त जो कटितट है तामें कल कहे अव्यक्त मधुर स्वरयुक्त जो कांची क्षुद्रघण्टिका है ताको मण्डई कहे भूषित शोभित करै है ॥ २४ ॥ कर्णालंबित करौ कर्ण पर्यंत खैंचो ॥२५॥ मत्स्य नामा जो देश विशेष है मछरीबन्दर करि प्रसिद्ध है ताको यह राजा है औ मत्स्यराज राघव मत्स्य सो जैसे समुद्रको अवगाहि मँझाइकै सब जानत है ऐसे राजा समररूपी समुद्रको मँझाइ कै सब समर भेदको जानतहै अर्थ कि वडो शूर है 'मत्स्योमीनेपुमान्भृम्निदेशे' इति मेदिनी ॥२६॥ विदूषक मसखरा, "हास्यकारी विदूषक इत्यमरः" ॥ २७ ॥

मूल बिमति–सोरठा ॥ चन्दनचित्रतरंग, सिंधुराजयहजानिये ॥ बहुतवाहिनीसंग, मुक्तामालविशालउर ॥ २८॥ दोहा ॥ सिगरेराजसमाजके, कहेगोत्रगुणग्राम ॥ देशसुभावप्रभावअरु, कुलबल विक्रमनाम ॥ २९ ॥ घनाक्षरी ॥ पावकपवनमणिपन्नगपतंगपितृजेते ज्योतिवंतजगज्योतिषिनगायेहैं । असुरप्रसिद्धसिद्धतीरथसहित सिंधु केशवचराचरजेवेदनबतायेहैं । अजरअमर अजअंगीऔ अनंगीसबबरणिसुनावै ऐसेकोनेगुणपायेहैं । सीताकेस्वयंवरकोरूपअवलोकिबेकों भूपनकोरूपधरिबिश्वरूपआये हैं ॥ ३० ॥ सोरठा ॥ कह्यो विमतिवहटेरि, सकलसभाहिसुनाइकै ॥ चहूओरकरफेरि, सबहीकोससुझाइकै ॥ ३१ ॥

गीतिकाछंद ॥ कोइआजुराजसमाजमेंबलशंभुकोधनुकर्षि है ॥ पुनिश्रवणकेपरिमाणतानिसोचित्तमेंअति हर्षि है ॥ वहराजहोइकरंककेशवदाससोसुखपाइहै । नृपकन्यका यह तासुके उर पुष्पमालहिनाइहै ॥ ३२ ॥

टी०—सिंधुराज सिन्धुदेश लहावरकोराजा औ समुद्रचन्दनके चित्रकीतरंगहैं अंगनमें जाके अर्थ चित्रविचित्रचन्दनअंगनमें लाये हैं औ चन्दन वृक्षनसों चित्र-विचित्र हैं तरंगजाकी अनेक चन्दन वृक्ष जाकी तरंगन में बहत हैं ॥ वाहिनी चमू औ नदी मुक्तन की माला पहिरे हैं औ मुक्तनकी माल पंगति समूहति सो है उरमें बदनमें जाके ॥ " सिंधुर्वा मधुदेशाब्धिनदे नासरिति स्त्रियाम् "॥इति मेदिनी ॥ २८ ॥ बलअंग बल विक्रम बुद्धिबल ॥ २९ ॥ पन्नग सर्प शेषादि पतंग पक्षी गरुडादि असुर दैत्य राक्षस बाणासुर रावणादि सिद्धदेवजाति विशेष । अथवा तपस्वी अजर कहे जराबुढाई सो रहित देवता अमर हनुमानादि अजब्रह्मादि अंगी अंगधारी अनंगी कामादि विश्वरूप संसारभरके रूपप्राणी ॥३०॥ ॥ ३१ कर्षि है उठाई है ॥ ३२ ॥

दोहा ॥ नेकशरासनआसनै, तजैनकेशवदास ॥ उद्यमकै थाक्योसबै, राजसमाजप्रकास ॥ ३३ ॥ विमति—सुन्दरी छंद ॥ शक्तिकरीनहिंभक्तिकरीअब । सोननयोपलशीशनयेसब ॥ देख्यो मैं राजकुमारनकेवर । चापचढयोनहिंआप चढेरवर॥३४॥विजय॥दिक्पालनकीभुवपालनकीलोकपालनकीचैनमातुगईकिबै । भांडभयेउठि आसनतेकहिकेशव शम्भुशरासनकोछ्वै । काहूचढ़ायोनकाहूनवायोनकाहूउठायोनआंगुरहूद्वै । स्वारथ भोनभयोपरमारथआयेह्वै वीरचले वनिता ह्वै ॥ ३५ ॥

इति श्रीमत्सकललोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांस्वयंवरसभावर्णनंनामतृतीयः प्रकाशः ॥ ३ ॥

टी०--जो या धनुषको उठाइ है ताको नृपकन्या व्याहार्य पुष्पमाला पहिराइ है ऐसे विमतिके वचन सुनि सब राजसमाज समूह धनुष उठाईबेमें उद्यमकहे उपायकरत भये परन्तु शरासन नेकु आसनकोहू न छोडन भयो अर्थ रंचकहू ना उठ्यो ॥ ३३ ॥ जब धनुष काहूसों न उठ्यो तब क्रोधयुक्त ह्वै विमति कह्यो धनुष उठाइवे में राजकुमारन शक्तिवल नहीं कियो धनुष की भक्ति कियो है काहेकी धनुष बनायो औ श्वलमात्र सबके शीशनवत भये तौ जाकी जो भक्ति करत है ताको शीश नवावत प्रणाम करत हैं तासों आप खर गर्दभमें चढे अर्थ-गर्दभमें चढेप्राणी सब निन्दित भये ॥ ३४ ॥ किनि च्वै गई कहे गर्भ पतन काहे ना भयो ॥ ३५ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननी जनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जानकीप्रसाद निर्मितायां रामभक्ति प्रकाशिकाया तृतीयः प्रकाशः ॥ ३ ॥

दोहा ॥ कथाचतुर्थप्रकाशमें, बाणासुरसम्बाद ॥ रावणसों अरुधनुषसों; दशमुखबाणविषाद ॥ १ ॥ सबहीकोसमुझे उसबन, बलबिक्रमपरिमाण ॥ सभामध्यताहीसमय; आये रावणबाण ॥ २ ॥ डिल्लाछंद ॥ नरनारिसबै । भयभीत तबै ॥ अचरिज्जुयहै ॥ सबदेखिकहै ॥ ३ ॥ दोहा ॥ कैरा कसदशशीशको, दैयतबाहुहजार ॥ कियोसबनिकेचित्त रस, अद्भुतभयसंसार ॥ ४ ॥ रावण-बिजोहाछंद ॥ शंभु कोदंडदै राजपुत्रीकितै ॥ टूकद्वैतीनिकै जाहुँलंकाहिलै ॥ ५ ॥ बिमति-शशिबदनाछंद ॥ दशशिरआवो । धनुषउठावो ॥ कछुबलकीजै । जगयशलीजै ॥ ६ ॥ बाण-गीतिका छंद ॥ दशकंठरेशठछाँड़िदेहठबारबारनबोलिये । अब आजुराजसमाजमेंबलसाजचित्तनडोलिये ॥ गिरिराजतेगुरुजानियेसुरराजकोधनुहाथलै । सुखपायताहिचढ़ायकैघरजाहि रे यश साथलै ॥ ७ ॥

टी०—रावण सों बाणासुर को संवाद है ना उठ्यो तासों दशमुख औ बाणको धनुष सों विषाददुख है ॥ १ ॥ २ ॥ बाण रावण को देखि सब प्राणी आश्चर्य ह्वै शब्द कहत भये ॥ ३ ॥ दशशीशको राक्षस औ हजारबाहुको दैत्य सबनके चित्तमें अद्भुत औ भयरसको संसार रच्यो अर्थ अतिआश्चर्य औ भयसों युक्त कियो दशशिरहजारबाहुदेखि अद्भुतरस भयो भयानकरूप देखि भय रस-भयो ॥ ४ ॥ रावण विमतिसोंकह्यो की शंभु को दंड हमको दै कहे दीजिये औ राजपुत्री कहां है ताको बतावो धनुष तोरि राजपुत्री लै लंकहि जाऊं ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ विमति सों कहत ऐसे सबनके गर्व वचन सुनि रोषकरि बाण बोलत भये राज सभामें बलको साज पराक्रम करु चित्त करिकै नाडोलु अर्थ मनोरथ ना करु अथवा बलकी साज सों अथवा बल औ साज सैन्यादि सों चित्त ना डोलावो मनोरथ ना करौ अर्थ इहां तुम्हारो बल ना चलि है सुरराज महादेव-के गिरिराज ते कैलास ते सुरराज को धनुष गुरू गरु जानो सुरराजपदको संबंध गिरिराजहू में है ॥ ७ ॥

मू०—मंथनाछंद ॥ बाणीकहीबान । कीन्हीनसोकान ॥ अद्यापि आनीन । रेवन्दिकानीन ॥ ८ ॥ वान—मालतीछंद ॥ जोपैजियजोर । तजौसबशोर ॥ शरासनतोरि । लहौसुखकोरि ॥ ९ ॥ रावण—दंडक ॥ वज्रकोअखर्वगर्वगंज्योजेहिपर्वतारि जीत्योहैसुपर्बसर्वभाजेलैलैअंगना । खंडितअखंडआशुकीन्होहैजलेशपाशचन्दनसीचन्द्रिकासोंकीन्हीचंदबंदना ॥ दंडकमेंकीन्होकालकालहूकोमानखंड मानौकोहूकालहीकी कालखंडखंडना । केशवकोदंडवीशदंडऐसेखंडेअबमेरेभुज दंडन की बड़ीहै बिडंबना ॥ १० ॥

टी०—आति गर्वसों बाणकी बाणी कानमें ना कह्यो अर्थ ना सुन्यौ फेरि विमति सों कह्यो कि रे कानीन छुद्रवंदि अद्यापि राजपुत्री को ना ल्यायो ॥ ८ ॥ अर्थ राजपुत्री प्राप्तिरूपी सुख शरासन तोरे बिना न पैहै ॥ ९ ॥ जिन भुजदंडन बज्रको जो अखर्ब बडो गर्व है ताको गंज्यौ विदारयो अर्थ-इंद्रकी रक्षा औ शत्रुबध करिबे में वज्रके अमोघता को गर्बरह्यो सो इनमें निष्फल भयो पर्वतारि

इन्द्रको-इन जीत्यौ तब सर्व सुपर्व देवता अपनी अपनी स्त्रीलैलै भागन भये फेरि अखंड काहूके खंडिवे योग नहीं ऐसो जो जलेश वरुणको पास फांसहै ताको आश जल्दी जिनखंड काहू के खंडिवे योग नहीं ऐसो जो जलेश वरुण-को पास फांस है ताको आशु जलदी जिन खंडन कियो तोरचो औ जिनकी वंदना पूजा चन्दनसी चन्द्रिका सों चन्द्र कह्यो अर्थ अति भय मानी चन्द्रमा जिनको सुखद चांदनी सों सुखदियो युद्ध ना कियो औ कालदण्ड यमराजकी आयुधताके यमराज रक्षा शत्रुवध करिवेको मानगर्व रह्यो ताको खंडनकियो औ काल जे यमराज हैं तिनहीं की खंड खंडना इन ऐसी कियो मानो काल कहे यमके काल ईश्वर कीन्हों अर्थ जैसे यमको काल निर्भय है यमको खंडन करत हैं तैसे कह्यो यासों या जनायो कि मैं इन भुज दंडन सों इन सवको जीत्यौ है केशवकवि को दंड धनुष विसरचो नारी विडंवना निंदा ॥ १० ॥

मू०--बान--तुरंगमछंद ॥ बहुतबदनजाके ॥ विविधिबचन ताके ॥ रावण ॥ बहुभुजयुतजोई । सबलकहियसोई ॥ ॥ ११ ॥ रावण-दोहा ॥ अतिअसारभुजभारहीं,बलीहोहुगे बान ॥ ममबाहुनकोजगतमें, सुनिदशकंठविधान ॥ १२ ॥ सवैया ॥ हौंजबहींजबपूजनजातपितापदपावनपापप्रणासी । देखिफिरोंतबहींतबरावणसातौंरसातलकेजेबिलासी । लैअपनेभुजदंडअखंडकरोंछितिमंडलछत्रप्रभासी । जानैकोकेशवकेतिकबारमैंशेषकेशीशनदीनउसासी ॥ १३ ॥ रावण कमलछंद ॥ तुमप्रबलजोहुते । भुजबलनिसंयुते । पितहिभुवल्यावते । जगतयशपावते ॥ १४ ॥ बान--तोमरछंद ॥ पितुआनिएकेहिओक । दियदक्षिणासबलोक ॥ यहजानिएँ बनदीन । पितुब्रह्मकेरसलीन ॥ १५ ॥

टी०--रावण के वचन में काकोक्ति है ॥ ११ ॥ असार बल रहित ॥ १२ ॥ अखंड संपूर्ण ॥ १३ ॥ १४ ॥ हे रावण ! दीन हमारो पिता ब्रह्म परब्रह्मके रस स्वादमें लीन है तू यह जानि कहे जातु ॥ १५ ॥

सवैया ॥ कैटभसोंनरकासुरसोंपलमेंमधुसोंमुरसोंज्यहि मारयो । लोकचतुर्दशरक्षककेशवपूरणवेदपुराणबिचारयो । श्रीकमलाकुचकुंकुममंडितपंडितदेवअदेवनिहारयो । सोक रमाँगनकोबलिपै करतारहुनेकरतारपसारयो ॥ १६ ॥ रावण-दोहा ॥ हमैंतुम्हैंनहिंबूझिये, बिक्रमबादअखंड । अबजोयहकहिदेहिगो, मदनकदनकोदंड ॥ १७ ॥ संयुत-तछंद ॥ व्रतबाणरावणकीसुन्यो । शिरराजमंडलमेंधुन्यो ॥ बिमति ॥ जगदीशअबरक्षाकरो । विपरीतबातसबैहरो ॥ ॥ १८ ॥ दोहा ॥ रावणबाणमहाबली । जानतसबसंसार । जोदोऊधनुकर्षिहैं, ताकोकहाविचार ॥ १९ ॥ बाण-सवैया । केशवऔरतेऔरभईगतिजानिनजाइकछूकरतारी । शूरनकेमिलिबेकहँआयमिल्योदशकंठसदाअविचारी । बाढ़िगयोबकवादवृथायहभूलिनभाटसुनावहिंगारी । चापच ढायेकिकीरतिकोयहराजकरैतेरीराजकुमारी ॥ २० ॥

टी०-जा कर ने कैटभादि बली दैत्यनको मारयो फेरि चौदहौ लोककी रक्षा करतहैं यों कहि कर कि बडी शक्ति जनायो फेरि श्रीकमलालक्ष्मी के कुचन में कुंकुम केशरि के मंडित में भूषित करै मो अर्थ मकरिका पत्र बनावै में पण्डित है यासों या जनायो कि जिन विष्णुके लक्ष्मी स्त्री हैं तासों सबसब पदार्थ सों पूरण जानौ जामेंती शक्ति है शारद कर हाथ करता करतार जे ब्रह्मा हैं तिनहुन के करतार जे विष्णु हैं तिन बलिपै मांगिबे को पसारयो ऐसे बली विष्णु बलिपैं भिक्षाही मांगि पायो जीतिकै न पाई तासों विष्णु हूं सों अधिक बलि औ दाता जानो इति भावार्थ ॥ १६ ॥ १७ ॥ व्रत धनुष उठाइबेकी प्रतिज्ञा ॥ १८ ॥ १९ ॥ विमति के ऐसे विकल वचन सुनि बाण कह्यो कि हे भाट ! सीताके व्याहिबेको बाणधनुष उठावत है ऐसी जो गारी है ताको भूलिहू ना सुनाउ सीता हमारी माता हैं उनतिसयें दोहा में कह्यो है कि सीता मेरी माई है ॥ २० ॥

मू०—रावण–मधुछंद ॥ मोकहँरोकिसकेक्कहिकोरे । युद्धजुरेयमहूंकरजोरे ॥ राजसभातिनुकाकरिलेखों । देखिकैराजसुताधनुदेखों ॥ २१ ॥ सवैया ॥ बानकह्योतबरावणसों अबवेगिचढाउशरासनको । बातेबनाइबनाइकहाकहछोडि देआसनबासनको । जानतहैकिधौंजानतनाहिंनतूअपनेमद नाशनको । ऐसेहिकैसेमनोरथपूजतपूजेबिनानृपशासनको ॥ २२ ॥ रावण–बंधुछन्द ॥ बाननबाततुम्हैंकहिआवै ॥ बान ॥ सोईकहौंजियतोहिंजोभावै ॥ रावण ॥ काकरिहौहमयोंहीं बरैंगे ॥ बान ॥ हैहयराजकरीसोकरैंगे ॥ २३ ॥ रावण–दंडक ॥ भौंरज्यौंभवतभूतवासुकीगणेशयुतमानोमकरन्द बुन्दमालगंगाजलकी । उडतपरागपटनालसीविशालबाहुक हाकहौंकेशोदासशोभापलपलकी । आयुधसघनसर्वमंगला समेतिसर्वपर्वतउठाइगतिकीन्हीहैकमलकी । जानतसकललो कलोकपालदिगपालजानतनबानबातमेरेबाहुबलकी॥ २४ ॥

टी०—॥ २१ ॥ आसन बिछावने औ बासन वस्त्रनको छोडिदे अर्थ महारूप काचिधनुष उठावोआइ अथवा सीताके लेवेकी जे आशा है तिनकी कामना स्मरण छोडिदे अपने मदनाशनको मोको तू जानतहै कि नहीं जानत जो ऐसी बात कहत हैं कि सीताको विना धनुष तोरेही वरिहौं अथवा अपने मदनाशनको धनुषको अर्थ यह धनुष तुम्हारे मदको नाश करिहै नृपशासन धनुष उठाइबो ॥ २२ ॥ हैहय राजा सहस्रार्जुन ॥ २३ ॥ वासुकी सर्प औ गणेश सहित भूतगण जा पर्वत में कमला- के भौंरसम भँवत भये औ महादेवके शीशको जो गंगाजल गिरयो ताकी माल मकरंद पुष्परस भयो औ उडत ये पार्वती आदि के पटवस्त्र हैं तेई पराग पुष्प- धूलि औ मेरी बाहु जो हैं सो नाल कमलदंड भयो एते में या जनायो कि जब मैं कैलास उठायो तब अतिशीघ्र उठायो तासों शंभूशीश को गंगाजल गिरयो औ वस्त्र उडत भये औ आयुध सघन कहि या जनायो कि तुम एक शंभु धनुष उठाइबो कठिन मानत हौ वा पर्वतमें ऐसे अनेक आयुध रहे सर्व मंगला पार्वती ॥ २४ ॥

मू०-मधुभारछंद ॥ तजिकैसुरारि । रिसचित्तमारि ॥ दश कंठआनि । धनुछुयोपानि ॥ २५ ॥ विमति ॥ तुमबलनिधान । धनुअतिपुरान ॥ पीसजहुअंग । नहिंहोहिभंग॥२६॥ सवैया ॥ खंडितमानुभयोसबकोनृपमंडलहारिरह्योजगती को ॥व्याकुलबाहुनिराकुलबुद्धिथक्योबलविक्रमलंकपतीको कोटिउपायकियेकहिकेशवकेहूनछाँडतभूमिरतीको । भूरि बिभूतिप्रभावसुभावहिज्योंनचलैचितयोगयतीको ॥ २७ ॥ पद्धटिका ॥ धनुअतिपुरानलंकेशजानि । यहबातबानसोंक हीआनि॥हौंपलकमाहँलेहौंचढाइ।कछुतुमहूँतोदेखोउठाइ॥२८॥

टी०-सुकहे सोरारि वाग्विवाद अथवा मुरारि । बाणासुर ॥ २५ ॥ २६ ॥ निराकुल शिथिल बलदेह बल विक्रम उपाय विभूति ऐश्वर्य सुवर्ण रत्न गजादि योग यती योगी ॥ २७ ॥ धनुष मोसों उठन लायक नहीं है यह जानिकै लंकेशरावण अपनो भ्रमर राखि धनुष छोडि कै वाण सो यह बात कह्यो कि धनुष अति पुरान है ॥ २८ ॥

मू०--वाण०--दोहा ॥ मेरेगुरुकोधनुषयह, सीतामेरीमाइ ॥ दुहूँभाँतिअसमंजसै, बाणचलेसुखपाइ ॥ २९ ॥ रावण-तोटकछन्द ॥ अबसीयलियेबिनहौंनटरौं । कहुँ जाहुँनतौलगि नेमधरौं ॥ जबलौंनसुनौअपनेजनको । अति आरतशब्द हतेतनको ॥ ३० ॥ ब्राह्मण-मोदकछंद ॥ काहूकहूँशरआशरमारिय । आरतशब्दअकाशपुकारिय ॥ रावणकेवहका नपरचोजब ॥ छोंडिस्वयंवरजातभयोतब ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ जबजान्योसबकोभयो, सबहीविधिव्रतभंग ॥ धनुषधरचोलै भवनमें, राजाजनकअनंग ॥ ३२ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिद्रजिद्विरचितायांबाणरावणयोर्वाग्विवादवर्णनं नामचतुर्थः प्रकाशः ॥ ४ ॥

टीका-॥ २९ ॥ हतेकहेबाणादि सों बेधे अर्थ-मेरे दास इहां उहां यज्ञादि विघ्नकरत फिरत हैं तिनको जो कोऊ सताइहै तो तिनकी रक्षाको जैहों ॥ ३० ॥ जब मारीचादिको रामचन्द्र मारचो है तब तिनको आरत पीडित दुःखितेति शब्द सुनि रावण स्वयंबर सभाते गयो सो भेद कछू ब्राह्मण तौ जानत नहीं तासों संदेह विशिष्टह्वै कहतहै कि कहूँ बली कहूँ कौन्यौ स्थानमें शर बाणसों आशर कहे काहू राक्षसको मारचो "क्रव्यादोऽस्रप आसर इत्यमरः" । सुदभासुर मारिय कहूं यह पाठ है तौ सुद नामा राक्षसते भा कहे उत्पन्न जो असुर राक्षस है मारीच ताको सुद नाम राक्षसकी स्त्री ताडका है ताको पुत्रमारीच है औ कहूँ शरमारीच मारिय पाठ है तौ शरसों मारीच नामा राक्षसको मारचो ॥ ३१ ॥ अनंग विदेह ॥ ३२ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिकीप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायाचतुर्थःप्रकाशः ॥ ४ ॥

मू०--दोहा ॥ यहप्रकाशपंचमकथा, रामगवनमिथिलाहि ॥ उद्धारणगौतमघरनि, स्तुतिअरुणोदयआहि ॥ १ ॥ मिथिलापतिकेवचनअरु, धनुभंजनउरधार ॥ जैमालादुंदुभिअमर, वर्षनफूलअपार ॥ २ ॥ ब्राह्मण-तारकछंद ॥ जब आनिभईसबकोदुचिताई । कहिकेशवकाहूपैमेटिनजाई । सियसंगलियेऋषिकीतियआई।इकराजकुमारमहासुखदाई३॥ मोहनछंद।सुंदरवपुअतिश्यामलसोहै ।देखतसुरनरकोमनमोहै आनिलखीसियकोबरुऐसो । रामकुमारहिदेखियजैसो ॥४॥ तोटकछंद ॥ ऋषिराजसुनीयहबातजहीं । सुखपायचलेमिथिलाहितहीं ॥ बनरामशिलादरशीजबहीं । तियसुन्दररूप भईतबहीं ॥ ५ ॥ विश्वामित्र-सोरठा ॥ गौतमकीयहनारि, इन्द्रदोषदुर्गतिभई ॥ देखितुम्हैंनरकारि, परमपतितपावनभइ ॥ ६ ॥ कुसुमवि-चित्राछन्द ॥ तेहिअतिरूरेरघुपतिदेख्यो । सबगुणपूरेतनमनलेख्यो ॥ यहबरमाँग्योदियोनका

हू । तुममममनतेकहूंनजाहू ॥ ७ ॥ कलहंसछन्द ॥ तहँता-हिंदैबरुकोचलेरघुनाथजू । अतिशूरसुन्दरयोंलसैंऋषिसाथ जू ॥ जनुसिंहकेसुतदोउसिद्धिश्रीरये । बनजीवदेखतयोंसबै मिथिलागये ॥ ८ ॥

टीका– ॥ १ ॥ २ ॥ जबधनुषकाहुसों नाउठयो तब सबके जनकादिके मनमें दुचिताई भई कि सीताको व्याह अब ना ह्वै है तादुचिताई मेटिबेके लिये त्रिकालदर्शिनी काहू ऋषिकी स्त्री एक राजकुमार सीताके संग चित्रमें लिखिकै ल्याई किं सीताको या प्रकारको वरु मिलि है आशय कि जब या प्रकारको राजकुमार आवै तब शम्भु धनुष चढाइकै सीताको व्याहै ॥ ३ ॥ सो हे ऋषि ! जैसो इन रामकुमारको देखियतहै तैसोई वरु ऋषिकी स्त्री सीताको लिखिल्याई ॥ ४ ॥ ५ ॥ दुर्गति दुर्दशाको गई कहे प्राप्त भई ॥ ६ ॥ रूरेसुंदर ॥ ७ ॥ अति शूर औ सुंदर दुवौ राम लक्ष्मण ऋषिके साथमें ऐसे शोभित भये मानो सिद्धि जो तप सिद्धिहै ताकी श्रीशोभा में रमे कहे अनुराग सिंहके सुत पुत्र हैं सिंहादि बन जीव तपस्विनके वश्य होत हैं यह प्रसिद्ध है औ सिद्ध है श्रीरये पाठ होइ तौ सिद्ध स्वाभाविक श्रीशोभा सों रये युक्त ॥ ८ ॥

मू०–दोहा ॥ काहूकोनभयोकहूं, ऐसोसगुननहोत । पुर पैठतश्रीरामके भयोमित्रउद्दोत ॥ ९ ॥ राम-चौपाई ॥ कछुराजतसूरयअरुनघरे । जनुलक्ष्मणकेअनुरागभरे ॥ चितवतचित्तकुमुदिनीत्रसै । चोरचकोरचितासोलसै ॥१०॥ लक्ष्मण-षटपद ॥ अरुणगातअतिप्रातपद्मिनीप्राणनाथ भय । मानहुँकेशवदासकोकनदकोकप्रेममय ॥ परिपूरण सिंदूरपूरकैधौंमंगलघट । किधौंशक्रकोछत्रमढयोमानिक-मयूषपट ॥ कैश्रोणितकलितकपालयह किलकपा लिकाकालको । यहललितलालकैधौंलसतदिग्भामिनिके भालको ॥ ११ ॥

टी०–अति अनुराग करि पुरमें पैठतही लक्ष्मणके सगुनार्थ उदित भये ताही अनुराग प्रेमसों मानो भरेकहे पूरित हैं अथवा लक्ष्मणको ब्याज करि सगुन

समय उदयसों आपने ऊपर सूर्यको प्रेम जनायो यह कहनूति लोकरीति है ॥ १० ॥ 'पद्मिनी प्राणनाथ सूर्य अरुण तामें तर्कहै कोकनद कमलनको फुलावत हैं कोक चक्रवानको संयोगी करत हैं तासों मानो तिनके प्रेममयीहै अर्थ तिन प्रति जो प्रेम है सो ऊपर छाइ रह्यो है सिंदूरकी पूर प्रवाह जलेति अर्थ–सिंदूर मिश्रित जलसों भरचो अथवा परिपूर्ण सिंदूरसों पूर कहे पूरित अर्थ सिंदूरहीसों भरचो अथवा सिंदूर सों रँग्योकै मंगल विवाहादिको घट पूजन कलशहै मानिक रत्नकी मयूष किरणि तिनको बीन्यो पटवस्त्र औ कोकिलकहै निश्चयकरि यह कपालिकाकाली पै श्रोणितरुधिर कलितकालको कपालशीश है अथवा कपालिकाको व कालको श्रोणित कलितकपाल है कालीको रुधिर मांसभक्षकतासों कालको सर्वभक्षक तासों 'कालो जगद्भक्षकः' इति प्रमाणात् ॥ ११ ॥

मू०–तोटकछन्द ॥ पसरेकरकुमुदिनिकाजमनो । किधौंपद्मिनिकोसुखदेनघनो ॥ जनुऋक्षसबैयहित्रासभगे । जियजानिचकोरफंदानठगे ॥ १२ ॥रामचन्द्र–चंचरीछन्द ॥ व्योममेंमुनिदेखियेअतिलालश्रीमुखसाजहीं । सिंधुमेंवड़वाग्निकीजनुज्वालमालबिराजहीं । पद्मरागनिकोकिधौंदिविधूरिपूरितसोभई । शुरवाजिनकीखुरीअतितिक्षतातिनकीहई ॥ १३ ॥ विश्वामित्र–सोरठा ॥ चढ्योगगनतरुधाइ, दिनकर बानरअरुणमुख ॥ कीन्हौंझुकिझहराइ, सकलतारकाकुसुमबिन ॥ १४ ॥

टी०–कुमुदिनि कोई कै काजकहे गाहिवेको कुमुदिनि भयसों संकोचको प्राप्त होती है तासों ऋक्ष नक्षत्र यहि त्रास कहे फंदाभ्रमके त्रास ॥ १२ ॥ यामें आकाशमें सूर्यकी लाली छाई रही है ताको वर्णन है मुनि विश्वामित्र को संबोधन है ॥ १३ ॥ सूर्योदय सों नक्षत्रास्त भये तामें विश्वामित्रने तर्ककरचो दिनकर सूर्यरूपी जो अरुणमुख वानरहै सो गगन आकाशरूपी तरुवृक्षमें धाइके चढचो है सो झुकि कहे रिसायकै झहराइकहे हलाइकै सकल तारका नक्षत्ररूपी जे कुसुम फूले हैं तिन बिन कीन्ही सकल नक्षत्रास्तभयो तासों झुकि पद करचो ॥ १४ ॥

मू०--लक्ष्मण-दोहा ॥ जहींबारुणीकीकरी, रंचकरुचिद्विजराज ॥ तहींकियोभगवन्तबिन, संपतिशोभासाज ॥ १५॥ तोमरछन्द ॥ चहुँभागबागतडाग । अबदेखियेबडभाग ॥ फलफूलसोंसंयुक्त । अलियोंरमैंजनमुक्त ॥ १६ ॥राम-दोहा॥ तिननगरीतिननागरी, प्रतिपदहंसकहीन॥जलजहारशोभितन जहँ, प्रगटपयोधरपीन ॥ १७ ॥

टी०--वारुणी पश्चिमदिशा औमदिरा द्विजराज चन्द्रमा औ ब्राह्मण भगवंत सूर्य औ ईश्वर संपत्ति चांदनी औ द्रव्यशोभा अंग छविदुवौमें जानो सूर्योदय-सों पश्चिम दिशामें शोभारहित चंद्रबिंब देखि श्लेषोक्तिसों वर्णन करचो जो ब्राह्मण मदिराकी रुचि इच्छा करतहै ताको ईश्वर संपत्त्यादि सों हीन करत हैं।। १५ ॥ चहुँ भागचारौंवीरमुक्त साधुजन ॥ १६ ॥ जा जनकदेशगेते नगरी पुरी औ तेनागरी स्त्री नहीं हैं जे प्रतिपदस्थान स्थान प्रति औ चरण चरण प्रति हंसपक्षी ओक कहे जल औ हंसक बिछुवन सों हीन है औ जहां कहे जिनमें पीन बडे पयोधर वापी कूपतडागादि औ कुचनमें जलज कमल औ मोतिनके हार समूह औ माला नहीं शोभित अर्थ सब नगरिनमें जलाशय जल युक्त हैं तिनमें कमल फूलेहैं औ हंस बसत हैं औ स्त्री मोतिनके माला औ बिछुवा पहिरे हैं यासों या जनायो कि विधवा नहीं है और अथ-जो देश तिन नगरिन औ तिन नागरिन सों युक्त है युक्तेतिशेषः । जिनके प्रतिपद कहे मग राजमार्गेति औ पग चिह्न जे धूरिमें अंकित होत हैं तेई हंसपक्षी औकजल औ बिछुवन करिहीन हैं अर्थ नगरीमें राजमार्ग छोंडि अन्यत्र हंसयुक्त जल शोभितहै औ स्त्रिनके पग चिह्नही-में बिछुवा नहीं हैं औ पगनमें सब बिछुवा पहिरेहैं ओप जहां कहे जिन नगरिनमें औ स्त्रिनमें शोभितन जलज हारन कमल समूहन औ मोतीमालनसों युक्त पीन बडे पयोधर तडागादि औ कुचहैं ॥ १७ ॥

मू०--सवैया ॥ सातहुदीपनकेअवनीपतिहारिरहेजियमें जबजाने । बीसबिसेब्रतभंगभयोसोकहौ अबकेशवकोधनुताने । शोककिआगिलगीपरिपूरणआइगयेघनश्यामबिहाने । जानकिकेजनकादिककेसबफूलिउठेतरुपुण्यपुराने ॥ १८ ॥

दोधकछन्द ॥ आइगयेऋषिराजहिलीने ॥ मुख्यसतानँदवि प्रप्रवीने । देखिदुवौभयेपांयनिलीने । आशिषशीरषवासुलै दीने ॥ १९ ॥ विश्वामित्र–सवैया ॥ केशवयेमिथिलाधि पहैंजगमेंजिनकीरतिबेलिबईहै । दानकृपानविधातनसोंसिग रीवसुधाजिनहाथलई है । अंगछतासकआठकसोंभवतीनिहु लोकमेंसिद्धिभई है । वेदत्रयीअरुराजसिरी परिपूरणताशुभ योगमई है ॥ २० ॥

टी०–घनश्याम रामचन्द्र औ सजलमेघ जैसे सजल मेघनके आगमनसों वृक्षनकी दावाग्नि बुझातीहै औ हरित ह्वै जात हैं तैसे धनुष काहूसों ना उठ्यो अब सीताको ब्याह ना ह्वै है ऐसे गाढ समयमें हम कछु सहाय ना कियो यह जासों कहै ताको आगि जनकादिके पुण्य वृक्षनमें लगीरहे सो रामागमन सों धनुष उठिवो निश्चय करि बुझानी औ फूलि उठे प्रफुल्लित ह्वै उठे हरित ह्वै उठे इति ॥ १८ ॥ मुख्य जे सतानन्द प्रवीने विप्र ऋषि हैं ते राजा जनकको लीन्हें विश्वामित्रको आगे ह्वै लेवेको आइ गये विश्वामित्रको देखि दुवौ सतानन्द औ जनक पांयनमें लीनभये विश्वामित्र शीश सूंघी आशिष दयो ॥ १९ ॥ विश्वा-मित्र रामादिसों जनककी वडाई करत हैं वेदत्रयी कहे तीनोंवेद ऋग्वेद, सामवेद यजुर्वेद, तिनके अंगसों औ राजश्रीके सात अंग सों औ योगके आठ अंग सों भव जो संसार है तामें तीनिहुँ लोकमें जनककी सिद्धि काज सिद्धि भई है यासों यां जनायो षडंग युक्त वेद सप्तांग युक्तराज्य अष्टांग युक्त योग साधन करत हैं वेदांगानि यथाशिक्षा १ कल्प २ व्याकरण ३ निरुक्त ४ ज्योतिष ५ छंद ६ यथोक्तंषट्पंचाशिकायां भट्टोत्पलटीकायां शिक्षा कल्पोव्याकरणं निरुक्तंछंदो ज्योतिषमिति । राज्यांगानि यथा–राज १ मंत्री २ मित्र ३ खजाना ४ देश ५ कोष ६ सैन्य ७ " स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशं राष्ट्रदुर्गबलानिच । राजांगानीत्यमरः " योगांगानियथा । यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ ध्यान ६ धारणा ७ समाधि ८ यथोक्तं प्रबोधचंद्रोदये । यम नियमासन प्राणायाम प्रत्याहार ध्यानधारणा समाधयश्च ॥ २० ॥

मू०–जनक–सोरठा ॥ जिनअपनोतनस्वर्ण, मेलितपोमय अग्निमें ॥ कीन्हों उत्तमवर्ण, तेईविश्वामित्रये ॥ २१ ॥ लक्ष्मणमो

हनछंद ॥ जनराजवंत जगयोगवंत । तिनकोउदोत । केहि भाँतिहोत ॥ २२ ॥ श्रीराम--विजय ॥ सबछत्रिनआदिदै काहूछुईनछुयेबिजनादिकबातउगै । न घटैनबढैनिशिबासरकै शवलोकनकोतमतेजभगै । भवभूषणभूषितहोतनहींमदमत्त गजादिमसीनलगै । जलहूंथलहूंपरिपूरणश्रीनिमिकेकुलअद्भुतज्योतिजगै ॥ २३ ॥

टी०--जब विश्वामित्र जनककी स्तुति करचुके तब जनक अपने मंत्री आदि सों विश्वामित्रकी बडाई करत हैं उत्तमवर्ण ब्राह्मण औ अरुणरंग अर्थ-तपस्याकरि क्षत्रिय सों ब्राह्मण भये ॥ २१ ॥ जब विश्वामित्र जनकके राज्य औ योगकी स्तुति कियो तब संदेह युक्त ह्वै लक्ष्मण पूछ्यो कि, जे जन जगतमें राज्य औ योग दुवौ साधत हैं ते कैसे उदयको प्राप्त होत हैं काहेते राज्य औ योग परस्पर कर्म विरुद्ध हैं ॥ २२ ॥ लक्ष्मण पूछ्यो कि जेजन राजवंत योगवंत हैं तिनको उदोत कैसे होत है सो सुनिकै कहिबेकी अद्भुत युक्ति मनमें प्राप्त भई तासों विश्वामित्र सों प्रथमहीं रामचंद्रही उदोतके हेतुकहन लगे उदोत ज्योतिको होत है तालिये ज्योतिरूप करि कहत हैं कि निमि जे जनकके पुरिखा हैं तिनके कुलकी जो ज्योतिप्रकाशकी शिखा है सो अद्भुत जगै कहे जगति है दीपित है है इति अर्थ और दीप ज्योतिके सम नहीं है सो अद्भुतता कहत हैं कि, दीप ज्योति को और दीप ज्योति छ्वै सकति है अर्थ समता करि सकति है अर्थ जैसे एक दीपकी ज्योति होति है तैसी सजातीय औरहू दीप की होती है औ या निमिकुलकी ज्योतिको आदि दै कहे आदिही सों जबसों प्रगट भई है. अर्थ-जबसों निमिवंश भयो तब सों काहू क्षत्रिन नहीं छुयो अर्थ-समता करयो फेरि कैसी है कि और ज्योति व्यजनादि बातसों डगमगाती है यह ज्योति व्यजनादि बातसों नहीं उगति आदि पदते चामरादि जानौ अर्थ व्यजनादि बात भोगादिको सुख जामें लिप्त नहीं ह्वैसकत फेरि कैसी है कि और दीप ज्योति दिनमें घटतिहै औ यह निशिवासर कहे रात्योंदिन घटति बढति नहीं है अर्थ-सबप्राणी जा वंशमें बराबर होत जात हैं तासों घटति नहीं औ पूर्णताको प्राप्त है तासों बढति नहीं औ और दीप ज्योतिसों थल मात्रहीकौ तम अंधकार दूरि होत है यासों कनकोत्तम तेज कहे अज्ञानको तेज दूरि होत है अर्थ-जिनके उप-

देश सों अथवा गानकरे सों अथवा कथा सुनिकै लोकन के प्राणिन को अज्ञान दूरि होत है । ज्ञानी होत हैं फेरि कैसी है कि दीप ज्योति भवभूषण जो भस्म है तासों अर्थ गुलसों भूषित होति है औ यह भव जो संसार है ताके जे भूषन कुंडलादि हैं तिनसों नहीं भूषित होती अर्थ कुंडलादि धारण सुखमें नहीं लिप्त होती औ दीप ज्योतिमें मषी जो मसी है कज्जल रति सों लागति है अरु यामें गजादिरूपी जो मषी है सो नहीं लागति अर्थ गजादि आरोहण सुखभोगमें लिप्त नहीं होती आदि पदते रथाश्वादि जानो औ दीप ज्योति थलहीमें पूरण रहति है औ यह जलहू थलमें परिपूरण है अर्थ-जल थलमें प्रसिद्ध है योगसों जीवन्मुक्त है तासों राज्यसुखमें लिप्त नहीं होत इतिभावार्थः ॥ २३ ॥

मू०-जनक-तारक ॥ यहकीरतिऔरनदेशनसोहै । सुनिदेवअदेवनकोमनमोहै ॥ हमकोवपुरासुनियेऋषिराई । सबगांउंछसातककीठकुराई ॥ २४ ॥ विश्वामित्र-विजय ॥ आपने आपनेठौरनितौभुवपालसबैभुवपालैंसदाई । केवल नामहिकेभुवपालकहावतहैंभुवपालिनजाई । भूपनिकीतुमहीं धरिदेहबिदेहनमें कलकीरतिगाई ॥ केशवभूषणकीभवभूषण भूतनतैंतनयाउपजाई ॥ २५ ॥

टीका-जा प्रकार तुम वरण्यो यह कीरति और बडे राजनमें मोहति है या लायक हम नहीं हैं ॥ २४ ॥ पतिको धर्म है स्त्रीसों पुत्र कन्या उपजावै सो भूमिरूपी स्त्री है तासों और काहू भूपति नहीं उपजायो तासों केवल नामहीके भूपाल भूपतिकी देह कोऊ नहीं धरे औ तुम भव संसार में भूषणनहू को भूषण अर्थ जाते भूषण शोभा पावत हैं अति सुन्दरी ऐसी तनया पुत्री भूतन पृथ्वीके तन देह ते उपजायो तासों भूपन की देह केवल तुमहीं धरे हो औ ताहू पर तुम्हारी कल कहे निर्दोष कीरति विदेहन में गाई है कहावत विदेह हौ यासों या जनायो कि भोग राज्यको करत हौ यश जीवनमुक्त तपस्विनमें गायो है याते तुमसम कोऊ राजा नहीं हैं ॥ २५ ॥

मू०-जनक-दोहा ॥ इहिंविधिकीचिंतचातुरी, तितको कहाअकत्थ ॥ लोकनकीरचनारुचिर, रचिबेकोसमरत्थ ॥

॥ २६ ॥ सवैया ॥ लोकनकीरचनारचिबेकोजहींपरिपूरणबुद्धिविचारी । ह्वैगइकेशवदासतहींसबभूमिअकाशप्रकाशितभारी । शुद्धसलाकसमानलसी अतिरोषमईदृगदीठितिहारी । होतभयेतवसूरसुधाधर पावकशुभ्रसुधारँगधारी ॥ ॥ २७ ॥ दोहा ॥ केशवविश्वामित्रके, रोषमईदृगजानि ॥ संध्यासीतिहुँलोकमें; किहिनिउपासीआनि ॥ २८ ॥ जनक-दोधकछंद ॥ एसुतकोनकेशोभहिसाजे । सुंदरश्यामलगौरविराजे ॥ जानतहौंजियसोदरदोऊ । कैकमलाविमलापतिकोऊ ॥ २९ ॥

टी०-जिनके लोक रचना रचिबेकी सामर्थ्य है तिनको वचन रचना करिबो कहा है ॥ २६ ॥ परिपूरण बुद्धि कहे निश्चयबुद्धि सों बुद्धि भूमि औ आकाशमें प्रकाशित भई अर्थ-फैलत भई अथवा भूमिअकाश सहित प्रकाशित भयो प्रगट भई अर्थ सब विषय हस्तामलकवत् देखि परचो तासमय शुद्ध कहे तीक्ष्ण शलाक बाण समान तिहारी रोषमयी दृष्टि लसी तासों सूर सूर्य सुधाकर चंद्रमा सरिस भयो औ अग्नि अमृतके रंगभये अर्थ अति भयसों तेजहीन श्वेतभये "शलाका शल्य मदन शारिका शल्यकीषुच ॥ छत्रादि काष्ठो शरयोरिति मेदिनी" ॥ २७ ॥ संध्यासम अरुणनेत्र भये तट जैसे तीनों लोकमें सब दोष निवारणार्थ संध्याकी उपासना करतहैं तैसे रोष निवारणार्थ ब्रह्मादि सब उपासना करतभये अर्थ सब आधीनहै स्तुति करतभये ॥ २८ ॥ दुहुनको सम सौंदर्यादि देखि यह मैं जीमें जानत हौं कि ए दूनों सहोदर सगे भाई हैं औ कै कोऊ कहे कौनों रूपधारी कमलापति विष्णु विमलापति ब्रह्मा हैं आशय यह कि इनमें विष्णु ब्रह्मासम सौंदर्यादि गुण हैं ॥ २९ ॥

मू०-विश्वामित्र ॥ चौ०-सुंदरश्यामलरामसुजानों । गौरसुलक्ष्मणनामबखानों ॥ आशिषदेहुइन्हैंसबकोऊ । सूरजकेकुलमंडनदोऊ ॥ ३० ॥ दोहा ॥ नृपमणिदशरथनृपतिके, प्रगटेचारिकुमार ॥ रामभरतलक्ष्मणललित, अरु शत्रुघ्नउदार ॥ ३१ ॥ घनाक्षरी ॥ दानिनकेशीलपरदानकेप्र

हारी दीनदानवारिज्योंनिदानदेखियेसुभायके ॥ दीपदीपहू-
केअवनीपनकेअवनीपपृथुसमकेशोदासदासद्विजगायके ।
आनँदकेकंदसुरपालकसेबालकयेपरदारप्रियसाधुमनवचका-
यके । देहधर्मधारीपैविदेहराजजूसेराजराजतकुमारऐसेदश-
रथरायके ॥ ३२ ॥

टीका-॥ ३० ॥ ३१ ॥ यामें विरोधाभास है दानी जे हरिश्चंद्रादि राजाहैं तिनके ऐसे शील सुभाव हैं जिनके अपर जे शत्रु हैं तिनसों दान दंडके प्रहारो लेवैया हैं औ दिन प्रति दान वारि विष्णुके जैसे सुभाय हैं ऐसे सुभायनके निदान कहे आदिकारण है अर्थ विष्णुके ऐसे शौर्यादि सुभायनको प्रगट करत हैं औ दीपक हैं प्रकाश कहँ दीपकहू के अर्थ आति कांति युक्त हैं औ अवनीपनके अवनीप राजा हैं अथवा दीप दीपके अवनीपन के अवनीप राजा हैं अर्थ सातों द्वीपनके राजनके राजा हैं औ राजा पृथुके समान हैं औ गो ब्राह्मणके दासहैं तौ एते बडे राजाको अतिदीन गो ब्राह्मणकी सेवा विरोध है अविरोध यह गो ब्राह्मणकी सेवा क्षत्रीको उचित है परदार लक्ष्मी अथवा पृथ्वी विदेह राजकाम अथवा जन वा राजाजनकको संबोधन है दानवारि सम सुभाव कहि औ लक्ष्मी प्रियकहि जनकको जनायो कि ये विष्णु अवतार हैं अथवा ऐसे जे दशरथ-राय हैं तिनके ए कुमार राजत हैं सुरपाल कैसे हैं बालकही ते ये दशरथ राय जिनको वर्णन करियत हैं ॥ ३२ ॥

मू०-सोरठा ॥ जबतेंबैठेराज, राजादशरथभूमिमें ।
सुखसोयोसुरराज, तादिनतेसुरलोकमें ॥ ३३ ॥ स्वाग-
ताछंद ॥ राजराजदशरत्थतनैजू । रामचन्द्रभुवचन्द्रबनै
जू ॥ त्योंविदेहतुमहूंअरुसीता ॥ ज्योंचकोरतनयाशुभगीता
॥ ३४ ॥ तारकछंद ॥ रघुनाथशरासनचाहतदेख्यो ।
अतिदुष्कर राजसमाजनिलेख्यो ॥ जनक ॥ ऋषिहैवहम-
न्दिरमाँझमगाऊं । गहिल्यावहिहौंजनयूथबुलाऊं ॥ ३५ ॥
पद्धटिकाछन्द ॥ अबलोगकहाकरिबेअपार । ऋषिराजक-

हीयहबारबार ॥ इनराजकुमारहिंदेहुजान । सबजानतहैं बलकेनिधान ॥ ३६ ॥ जनकदंडक ॥ वज्रते कठोरहै कैलासते विशाल कालदंडते कराल सब काल कालगावई । केशवत्रिलोकके बिलोकिहारे देवसबछोडचंद्रचूड़एकऔरकोचढावई ॥ पन्नगप्रचंडपतिप्रभुकीपनचपीनपर्वतारिपर्वतप्रमानमानपावई ॥ विनायकएककहूपैआवैनपिनाकताहिकोमलकमलपाणिरामकैसेल्याबई ॥ ३७ ॥

टी०-यासों या जनायो कि इंद्रकी सहाय करत हैं ॥ ३३ ॥ राजनके राजा दशरथके तनय पुत्र श्रीरामचन्द्र जैसे भूतलके चन्द्रमा बने हैं अर्थ राजनका राजा ऐसो तौ जाको पिता है आपु चन्द्रमा सरिस सबको सुखदहै औ चांदनी सम यशप्रकाशक है याते बडे भाग्यवान हैं इति भावार्थः ॥ तैसे हे विदेह ! तुमहूं औ सीता हौ अर्थ तुम राजनके राजा हौ औ सीता चकोर तनया सरिस शुभगीता हैं तौ जाको तुमसो पिता है आपु ऐसे यशको प्राप्त है तैसो सीता हू बडी भाग्यवती हैं इति भावार्थः ॥ औ चकोरी को औ चंद्रहीको प्रेम उचित है तैसे सीताको औ श्रीरामचन्द्र को ह्वै है इति व्यंग्यार्थः ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ इनको बलके निधान अर्थ बडे बलवान सब जानत हैं औ विधान पाठ होइ तौ विधान कहे विधि जहां जा प्रकार चाहिये तहां ता प्रकार बल करबो ॥ ३६ ॥ या प्रकार जाको सब प्राणी काल कालमें कहे समय समय में गावत हैं अथवा काल जे यम हैं तिनहूं को काल नाश कर्त्ता चन्द्रचूड महादे॰ प्रचण्ड जे पन्नग सर्पनके पति हैं बडे सर्प तिनहुँन के जे प्रभु वासुकी हैं तिन हींकी पीन कहे मोटी पनच रोदा है अथवा पन्नग प्रचंड पति जे वासुकी तेई प्रभुकी महादेवकी पनच हैं आशय यह और रोदा जाको बल नहीं स॰ सकत औ पर्वतादि इंद्र और जे पर्वतन के प्रभा सदृश हैं दैत्यादि ते जा॰ गरुवाई के मान प्रमानको नहीं पावत औ ए कहे अकेले जो बिनायक गणेश ल्यायो चहै तौ नाहीं आइ सकत ॥ ३७ ॥

मू०-मुनि-दोहा ॥ रामहत्योमारीचज्यहि, अरुताडुका सुबाहु ॥ लक्ष्मणकोयहधनुषदै, तुमपिनाककोजाहु ॥ ३८ ॥ जनक-त्रिभंगीछन्द ॥ सिगरेनरनायकअसुरविनायकराक्ष-

सपतिहियहारिगये । काहूनउठायोथलनछुडायोटरयोनटा-
रयोभीतभये ॥ इनराजकुमारनिअतिसुकुमारनिलैआयोहौंपै
जकरे ॥ व्रतभंगहमारोभयोतुम्हारोऋषितपतेजनजानिप-
रे ॥ ३९ ॥ विश्वामित्र–तोमर ॥ मुनिरामचन्द्रकुमार-
धनुआनियेयहिबार ॥ पुनिवेगताहिचढ़ाव ॥ यशलोकलोक
बढ़ाव ॥ ४० ॥

टी०–जनक कोमलपाणि कहेउ ताल ए मारीचादि को वध सुनाइ कठोर पाणि जनायो ॥ ३८ ॥ असुर बाणासुरादि विनायक गणेश अथवा असुरनमें विनायक श्रेष्ठबाणासुर औ राक्षस पति रावण पैज कहे धनुष उठाइबेमें पराक्रम करिबेको लै आये हैं अथवा पैजकहे श्रमको करिकै तुम इन्हैं ल्याये हौ अथवा पैज प्रतिज्ञा ॥ ३९ ॥ ४० ॥

मू०–दोहा ॥ ऋषिहिदेखिहरषैहियो, रामदेखिकुम्हिलाइ ॥
धनुषदेखिडरपैमहा, चिन्ताचित्तडोलाइ ॥ ४१ ॥ स्वाग
ताछन्द ॥ रामचन्द्रकटिसोंपटुबांध्यो । लीलयैवहरको
धनुसाध्यो ॥ नेकुताहिकरपल्लवसोंछै ॥ फूलमूलजिमिटूक
करयोद्वै ॥ ४२ ॥ सवैया ॥ उत्तमगाथसनातजबै धनुश्री
रघुनाथजुहाथकैलीनो । निर्गुणतेगुणवंतकियो सुखकेशव
संतअनंतनदीनो । ऐंचोजहींतबहींकियोसंयुत तिच्छकटाक्ष
नराच नवीनो । राजकुमारनिहारिसनेहसोशंभुकोसांचोश
रासनकीन्हो ॥ ४३ ॥ प्रथमटंकोर झुकिझारिसंसारमदचंड
कोदंडरह्योमंडिनवखंडको । चालिअचलाअचलघालिदि-
गपालबलपालिऋषिराजकेवचनपरचंडको । सोधुदैईशको
बोधुजगदीशकोक्रोधउपजाइभृगुनंदबरिबंडको । बांधिवरस्वर्ग
कोसाधिअपवर्गधनुभंगकोशब्दगयोभेदिब्रह्मंडको ॥ ४४ ॥

टी०– ॥ ४१ ॥ कटिसों कहे कटिमेंफूल मूलपोनारी लीलहि सों हरको धनु साध्यो यहौ पाठ है ॥ ४२ ॥ उत्तम गाथकहे गान जिनको औ सनाथ

विश्वामित्र सहित गुणवन्त रोदायुक्त औ धनुष खैंचत में तिरछी दृष्टि परतिहै सोई नराच बाण हैं तासों संयुत कियो राजकुमार जे रामचन्द्र हैं ते स्नेह सहित निहारिकै शंभुको शरासन सांचो "कीन्हो शरान् अस्यति क्षिपतीति शरासनः" अर्थ धन्वी शरन्का चलावत है जासों तासों शरासन कहावत है सो कटाक्षरूपी शरयुक्त करि सत्य कियो ॥ ४३ ॥ धनुभंगको जो शब्द है सो चण्ड कहे प्रचण्ड जो कोदण्ड धनुष है ताको जो प्रथम टङ्कोर खैंचिबेको शब्द है ताके साथ ही इति शेषः ॥ यासों प्रथम टंकोरहीके संग धनुषटूटिबो जनायो झुकि कहे क्रुद्धह्वै अर्थ क्रूरताको प्राप्तह्वै कै संसारकोमद्झारिकै अर्थ संसार के सब प्राणिनको कादर करिकै नौहूखंडमें मंडिकहे छाइरह्यो औ फेरि अचला जो पृथ्वी है औ अचल पर्वतनको चालि कहे चलाइकै औ दिगपाल इंद्रादिकनके बलको घालिकै अर्थ विह्वल करिकै औ रामचंद्र धनुष उठाइ हैं यह वचन विश्वामित्रको जनक प्रति रह्यो ताको पालिकै औ ईश महादेवको सोधु कहे खोज संदेश इति दैकै औ क्षीरसागरमें सोवत जे जगदीश विष्णु हैं तिन्हैं बोधि कहे जगाइ कै औ भृगुनंदन परशुराम के क्रोध उपजाय कै औ स्वर्गको बांधि कै कहैं स्वर्ग भरेमां व्याप्त ह्वैकै औ बॉधि पाठ होइ तौ स्वर्ग को वाधा करिकै अर्थ—की वेधि कै अथवा स्वर्ग के प्राणिनको विह्वल करिकै या प्रकार ब्रह्मांड को वेधिकै मुक्तिको साधि साधन करिकै गयो अर्थ ब्रह्मांड फोरि विष्णुलोक को प्राप्त भयो ऐसो उच्च शब्दभयो इति भावार्थः ॥ औ रामचन्द्र के करस्पर्श सों याही विधि सबको मुक्ति मिलति है इति व्यंग्यार्थः ॥ ४४ ॥

मू०—जनक—दोहा ॥ सतानंदआनंदमति, तुमजोहुतेउन साथ ॥ बरज्योकाह्यनधनुषजब, तोरयोश्रीरघुनाथ ॥४५॥ सतानंद—तोमर ॥ सुनुराजराजविदेह । जबहौंगयोवहिगेह ॥ कछुमैंनजानीबात । कबतोरियोधनुतात ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ सीताजूरघुनाथको, अमलकमलकीमाल ॥ पहिराईजनुसबनकी, हृदयावलिभूपाल ॥ ४७ ॥

टी०—॥ ४५ ॥ ४६ ॥ सीतामें सब भूपालनके हृदय लगे रहैं तिनकं वेधि माल बनाइ मानौं रामचन्द्र को पहिरायो हृदयको कमल सदृश वर्णन है तासों ॥ ४७ ॥

मू०—चित्रपदाछंद ॥ सीयजहींपहिराई । रामहिमाल सुहाई ॥ दुंदुभिदेवबजाये । फूलतहींबरसाये ॥ ४८ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकाया-
मिन्द्रजिद्विरचितायांधनुर्भंगवर्णननामपंचमःप्रकाशः ॥ ५ ॥

टी०—॥ ४८ ॥ इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजान-
कीप्रसादनिर्मिताया रामभक्तिप्रकाशिकाया पचम.प्रकाशः ॥ ५ ॥

मू०—दोहा ॥ छठैप्रकाशकथारुचिर, दशरथआगमजानि ॥ लगनोत्सवश्रीरामको, व्याहविधानबखानि ॥ १ ॥ सतानंद—तोटकछंद ॥ विनतीऋषिराजकिचित्तधरौ । चहुँभैयनकेअबव्याहकरौ ॥ अबबोलहुबेगिबरातसबै । दुहितासमदौसुखपाइअबै ॥ २ ॥ दोहा ॥ पठईतबहींलगनलिखि-अवधपुरीसबबात ॥ राजादशरथसुनतहीं, चाह्योचलीबरात ॥ ३ ॥ मोटक—छंद ॥ आयेदशरत्थबरातसजे । दिगपालगयंदनिदेखिलजे ॥ चारचौंदलदूलहचारुबने । मोहेसुरऔरनिकोनगनै ॥ ४ ॥

टी०—॥ १ ॥ दशरथ की प्रभुता सुनि औ रामचन्द्रको पराक्रम देखि जनक चारौं सुतनके व्याह करिवेको विश्वामित्रसों बिनती कीन्ही सो सतानंद विश्वामित्रको समुझावत हैं कि, हे ऋषिराज ! जनककी विनती चित्तमें धरौ समदो । विवाहो ॥ २ ॥ राजा दशरथके लगनपत्री सुनतही चारौंबरातैंचलीं अर्थ चारौं बरातैं साजि राजादशरथ व्याहिवेको चले ॥ ३ ॥ ४ ॥

मू०—तारकछंद ॥ बनिचारिबरातचहूँदिशिआई । नृपचारिचमूअगवानपठाई ॥ जनुसागरकोसरितापगुधारी । तिनकेमिलिबेकहँबाहँपसारी ॥ ५ ॥ दोहा ॥ बारोठेकोचारुकरि, कहिकेशवअनुरूप । द्विजदूलहपहिराइयो, पहिराये

सबभूप ॥ ६ ॥ त्रिभंगीछंद ॥ दशरत्थसँघातीसकॅलबरा-
तीबनिबनिमंडपमाहँगये । आकाशविलासीप्रभाप्रकाशी ज-
लजगुच्छजनुनखतनये ॥ अतिसुंदरनारीसबसुखकारीमंगल
गारीदेनलगीं । बाजेबहुबाजतजनुघनगाजतजहांतहांशुभ
शोभजगीं ॥ ७ ॥ दोहा ॥ रामचन्द्रसीतासहित, शोभतहैं
त्यहिठौर । सुवरणमयमणिमयखचित, शुभसुंदरशिर
मौर ॥ ८ ॥

टीका–एकही दिशासों चारौं बरातैं आवतीं तौ एक एक बरातकी अगवानी-
में बेर होती व्याहकी लगन टरिजाती तासों एकही बार अगवानी होबेके लिये
चारौं बरातैं चारों दिशाह्वै आईं सागर सरिस राजा जनक हैं सरिता सरिस चारों
बरातैं हैं बाहॅ सरिस अगवानी की चारोंचमू हैं ॥ ५ ॥ बारोंठे को चारकहे द्वार-
पूजा अनुरूप यथोचित पहिराइयो पदते भूषण वस्त्र पहिराइयो जानों ॥ ६ ॥
बारोंठेको चारकरि जनवासमंदिरको गये इति कथाशेषः जनवास मंदिर ते भां-
वरि करिवेके लिये मंडपकहे मॉँडवमें गये सो मंडप कैसो है आकाश विलासी
कहे आकाश को ऐसो है विलास कौतुक जाको अर्थ अति दीर्घ अति उच्च है औ
आकाश में नक्षत्र हैं इहां झालरन में लगे प्रभा प्रकाशी कहे अति शोभायुक्त
जे जलजमोतिनके गुच्छ हैं तेई नये नवीन नक्षत्र हैं ॥ ७ ॥ खचित कहे
चित्रित ॥ ८ ॥

मू०–षट्पद ॥ बैठेमागधसूतविविधविद्याधरचारण ।
केशवदासप्रसिद्धसिद्धशुभअशुभनिवारण ॥ भरद्वाजजाबा-
लिअत्रिगौतमकश्यपमुनि । विश्वामित्रपवित्रचित्रमतिवामदेव
पुनि ॥ सबभांतिप्रतिष्ठितनिष्ठमतितहँवाशिष्ठपूजतकलश ।
शुभसतानंदमिलिउच्चरतशाखोच्चारसबैसरस ॥ ९ ॥ अनु-
कूलछंद ॥ पावकपूज्योसमिधसुधारी । आहुतिदीनीसबसु
खकारी ॥ दैतबकन्याबहुधनदीन्हों । भाँवरिपारिजगतयश
लीन्हों ॥ १० ॥ स्वागताछन्द ॥ राजपुत्रकनिसोंछबिछा-

ये । राजराजसबडेरहिआये ॥ हीरचीरगजबाजिलुटाये । सुंदरीन बहुमंगलगाये ॥ ११ ॥ सोरठा ॥ वासरचौथेयाम, सतानंदआगूदिये ॥ दशरथनृपकेधाम । आयेसकलविदेहब- नि ॥ १२ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ कहूँशोभनादुंदुभीदीहबा जैं । कहूँभीमभंकारकर्नालसाजैं ॥ कहूँसुंदरीबेनुबीनाबजा- वैं । कहूँकिन्नरीकिन्नरीलैसुगावैं ॥ १३ ॥ कहूंनृत्यकारीनचैं शोभसाजैं । कहूँभांडबोलैंकहूँमल्लगाजैं ॥ कहूँभाटभाट्यो करैंमानपावैं । कहूँलोलिनीबेडिनीगीतगावैं ॥ १४ ॥ कहूँ बैलभैंसाभिरैंभीमभारे । कहूँएणएणीनकेहेतकारे ॥ कहूँबोक बाँकेकहूँमेपशूरे । कहूंमत्तदंतीलेरैंलोहपूरे ॥ १५ ॥

टीका—मागध वंशावली वर्णन करैया सूत स्तुति करैया चारण प्रेष्य ए भाट- की जाति हैं शुभ अशुभ निवारण कहे शुभमें अशुभ के निवारण मेटनहार निष्ठ- मति कहे उत्तम मति ॥ ९ ॥ समिध होमकी लकरी ॥ १० ॥ ११ ॥ वासर के चौथे याम कहे तीनि पहर दिनबीतेके उपरांत दशरथ के धामकहे जनवास- मंदिरमें बिदेह कहे जनकके गोत्री ॥ १२ ॥ तीनि छंदको अन्वय एक है राजा दशरथके फौजमें ऐसो कौतुक देखत भये किन्नरी सारंगी ऐनी हरिणीनसों हेत करियत हरिण परस्पर भिरतहैं भिरत पदको अनुषंग एतहू मे है मेष मेडा लोह पूरे जंजीरहू कौ पहिरे अथवा वीरतासों युक्त ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

मू०—दोहा ॥ आगेह्वैदशरथलियो, भूपतिआवतदेखि ॥ राजराजमिलिबैठियो, ब्रह्मब्रह्मऋषिलेखि ॥ १६ ॥ सता- नंद-शोभनाछंद ॥ मुनिभरद्वाजवशिष्ठअरुजाबालिविश्वामि- त्र । सबैहौतुमब्रह्मऋषिसंसारशुद्धचरित्र ॥ कीन्होंजोतुमया वंशपैकहिएकअंशनजाइ । स्वादकहिबेकोसमर्थनगूँगज्योंगु रखाइ ॥ १७ ॥ अन्यच्च—सुखदाछंद ॥ ज्योंअतिप्यासोपा- वैमगमेंगंगाजलु ॥ प्यासनएकबुझाईबुझैत्रैतापबलु ॥ त्यों

तुमतेहमकोनभयोअबएकसुख ॥ पूजैंमनकेकामजोदेख्यो रामसुख ॥ १८ ॥

टी०–राजर्षि दशरथादि राजर्षि जनकादिकन सों मिलिकै बैठे ब्रह्मर्षि वशिष्ठादि ब्रह्मर्षि सतानन्दादिकन सों मिलिकै बैठे ऋषिपद की अनुषंगराजपद हम है ॥ १६ ॥ संसार में शुद्ध है चरित्र जिनको अथवा संसारको शुद्ध कर्त्ता है चरित्र जिनको अर्थ जिनके चरित्र कहि सुनि संसारके प्राणी शुद्ध होतेहैं ॥१७॥ जैसे मगमें अति प्यासो प्राणी जलमात्रको चाहत है औ वह भाग्ययोग ते गंगाजलपावै तौ वाकी एक प्यासही नहीं बुझाति दैहिक दैविक भौतिक जे तीनों ताप हैं तिनको बल बुझात है अर्थ त्रयताप दूरिहोत हैं तैसे केवल धनुष चढावै ताही को व्याह करिये हमारी इतनी प्रतिज्ञा पूर्वक इच्छा रही सो तुमते हमको केवल व्याह इच्छा पूर्ण रूपही सुख नहीं भयो रामचन्द्रको मुखदेखि रूपबल विद्या कुलादिके काम अभिलाष पूजे पूर्ण भये ॥ १८ ॥

मू०–जनक–सवैया ॥ सिद्धसमाजसजैंअजहूँनकहूंजगयोगिनदेखनपाई । रुद्रकेचित्तसमुद्रबसैनितब्रह्महुपैबरणीजोनजाई॥रूपनरङ्गनरेषविशेषअनादिअनन्तजोवेदनगाई।केशवगाधिकेनन्दहमैंवहज्योतिसोमूरतिवंतदेखाई ॥ १९ ॥ अन्यच्च-तारकछंद ॥जिनकेपुरिषाभुवगंगाहिल्याये । नगरीशुभस्वर्गसदेहसिधाये ॥ जिनकेसुतपाहनतेतियकीनी । हरकोधनुभंगभ्रमेंपुरतीनी ॥ २० ॥ जिनआपुअदेवअनेकसँहारे । सबकालपुरन्दरकेरखवारे ॥ जिनकीमहिमाहिअनंतनपायो । हमकोबपुरायशवेदनिगायो ॥ २१ ॥ बिनतीकरियेजनजोजियलेखो । दुखदेख्योजोकालिहत्योंआजहुदेखो । यहजानिहियेढिठईमुखभाषी । हमहैंचरणोदकके अभिलाषी ॥ २२ ॥

टी०–रुद्र महादेव के चित्तरूपी समुद्र में जो बसति है अर्थ जाको महादेव आराधन करते हैं ॥ १९ ॥ तीनि छंद को अन्वय एक है भगीरथ सगरके सुत_

नके तारिवेको गंगाकोल्याये हैं औ हरिश्चन्द्र नगरी अयोध्या सहित स्वर्गको गये हुवौ कथा प्रसिद्ध हैं औ जिनके सुत रामचन्द्र गौतिमीको पाहन सों स्त्री कीन्हों औ हरका धनुष भंग कीन्हों जा धनुष में तीनिपुर कहे तीनिलोक भ्रमें अर्थ जा धनुषको तीनों लोक के प्राणिन उठायो ना उठ्यो तव भ्रमें कहे संदेहको प्राप्त भये अथवा ऐसी अवस्था में ऐसो धनुष तोग्यो यासों तीनहुं लोक भ्रमें औ आपु कैसे हैं कि जिन अनेक अदेव दैत्यनको माग्यो है औ मदापुरन्दर इन्द्रकी रक्षा करतहौ यासों या जनायो कि ऐसे उद्धत कर्म करिवे को तुम्हारे घरकी परम्परा की रीति है अनंतशेष औ जिनकी महिमा महि अंत न पायो पाठहोई तौ महीभर के प्राणिन जिनकी महिमाको अंत नहीं पायो यह विनती करियत है हमको अपने जन सेवकके समान जिय में लेखो कहे जानों औ जैसे काल्हि हमारे इहांवास करि दुःख देख्यो है तैसे आजहूं देखो अर्थ आजहू वास करो हम चरणोदक कहे चरण जल के अभिलाषी हैं तासों एती ढिठाई मुखसों भाख्गो है यह तुम जीमें जानिकहेजानों चरणोदकके अभिलाषी कहि या जनायो कि हमारे घरमें चलि भोजन करौ जाते हम चरण धोइ चरणोदकलेइँ जाते हमारे गृहादि पवित्र होंई या भांति निमंत्रण दियो ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥

मू०—तामरसछन्द ॥ जबऋषिराजबिनयकरिलीनों । सुनिसबकेकरुणारसभीनों ॥ दशरथरायइहैजियजानी । यह वहएकभईरजधानी ॥ २३ ॥ दशरथ—दोहा ॥ हमकोतुम सेनृपतिकी, दासीदुर्लभराज । पुनितुमदीनीकन्यका, त्रिभुवनकीशिरताज ॥ २४ ॥ भारद्वाज-तामरसछंद ॥ सुखदुख आदिसबैतुमजीते । सुरनरकीबपुराबलरीते ॥ कुलमहँहो-हिंबडोलघुकोई । प्रतिपुरुषनिबडोसोबडोई ॥ २५ ॥

टी०—ऋषि सतानन्द राजा जनक ॥ २३ ॥ २४ ॥ अतिवली जे दुःख सुखादि हैं आदि पदने काम क्रोधादिहू जानों तिनहींको तुम जीते हौ अर्थ दुःख सुखादि के वश्य नहीं हौ तौ वल करिके रीते कहे खाली वपुरा कहे दीन जे सुर औ नर हैं ते तुमको जीतिवेको कहे कहाहैं औ कुलमें चाहौ प्रतापादि करि वडो होइ चाहै छोटोई जो प्रति पुरुषन वडो होत है सो वडोई रहत हैं

यासों या जनायो कि जो प्रति पुरुष बडो है ताके कुलमें लघुहु होइ तौ बडो है औ तुमप्रति पुरुषानहूं बडे हौ औ तुम्हारे दुःख सुखादि जीतिबेकी सामर्थ्य है तासों तुमसमान कोऊ नहीं है अथवा और कोई अपने कुलमें बडो लघु होत है अर्थ कोऊ प्राणी बडो भयो कोऊ छोटो भयो औ ई कहे जनक प्रति पुरुषान बडो सो बडोकहे बडेते बडे हैं अर्थ इनके कुलमें क्रमसों एक ते एक बडे होत आवत हैं ॥ २५ ॥

मू०–वशिष्ठ–विजयछंद ॥ एकसुखीयहिलोकबिलोकि येहैंवाहिलोकनिरैपगुधारी । एकइहांदुखदेखतकेशवहोतवहां सुरलोकविहारी ॥ एकइहांऊउहांअतिदीनसोदेतदुहूंदिशि- केजनगारी । एकहिभाँतिसदासबलोकनिहैप्रभुतामिथिले- शतिहारी ॥ २६ ॥ जाबालि–विजयछंद ॥ ज्योंमणिमय अतिज्योतिहुतीरवितेकछुऔरमहाछबिछाई । चंद्रहिबंदत हैंसबकेशवईशतेवंदनताअतिपाई ॥ भागीरथीहुतिपै अ- तिपावनबावनतेअतिपावनताई । त्योंनिमिवंशबडोईहतो भइसीयसँयोगबडीयबडाई ॥ २७ ॥ विश्वामित्र–मालिनीछ- न्द ॥ गुणगणमणिमाला । चित्तचातूर्यशाला ॥ जनकसुखद गीता । पुत्रिकापाइसीता ॥ अखिलभुवनभर्त्ता । ब्रह्मरुद्रादि कर्त्ता ॥ थिरचरअभिरामी । कीयजामातुनामी ॥ २८ ॥ ॥ दोहा ॥ पूजिराजऋषिब्रह्मऋषि, दुंदुभिदीन्हिबजाइ । जनककनकमन्दिरगये, गुरुसमेतसुखपाइ ॥ २९ ॥

टी०– ॥ २६ ॥ ईशमहादेव ॥२७॥ जनक संबोधन है गुणगणरूपी जे मणि मुक्तादिहैं तिनकी माला है अर्थ अनेक गुणनसों युक्त है औ चित्तको जो चातु चातुरी है ताकी शालादार है अथवा चित्तहै चातुर्य्यको शाला जाको अथ चित्त की चातुर्य्यसे शाला कहे गृह्यो है औ सुखद है गीतागानजाको अ जाको गानकरे सुने सबके सुख होत हैं ऐसी सीता नामा पुत्रिकाको पाइ अथवा ये तीनों लक्ष्मीके विशेषण हैं विशेषण नहीं सो लक्ष्मी जनायो कि ऐ

जो लक्ष्मी हैं ताको सीता नामा पुत्रिका पाईके अखिल सम्पूर्ण भुवन कहे चौदहों भुवनके भर्त्ता पोषक औ ब्रह्म रुद्रादि के कर्त्ता औ थिर वृक्षादि चर मनुष्यादि सबमें अभिगमी कहे वास कर्त्ता अथवा शोभा कर्त्ता औ नामी कहे यशी ऐसो जामातु तुमकीय कहे करयो जैसे तीनों विशेषणन सों लक्ष्मी जनायो तैसे चारयों विशेषणन सों विष्णु जानो तो लक्ष्मीजाकी पुत्रिका भई औ विष्णु जामातु भये तासों अति भाग्यवान् हौ इतिभावार्थः अथवा विश्वामित्र कहत हैं कि जनक सुखद जे ईश्वर हैं जिन करिकै गीताकहे गाई अर्थ जाको विष्णुहू गान करत हैं यासों लक्ष्मी जनायो और अर्थ एकहि है ऐसी जो सीता नामा तुम्हारी पुत्रिका है ताको हमपायो औ मो जामातु तुमकीय कहे करयो यासों या जनायो कि दोनों तरफ बडा लाभ भयो ॥ २८ ॥ २९ ॥

मू०—चामरछंद ॥ आसमुद्रकेक्षितीशऔरजातिकोगनै । राजभैामभोजकोसबैजनेगयेबने ॥ भाँतिभाँतिअन्नपान व्यं-जनादिजेंवहीं । देतनारिगारिपूरिभूरिभूरिभेवहीं ॥३० ॥ हरि गीतछंद ॥ अबगारितुमकहदेहिंहमकहिकहादूलहरामजू । कछुबापप्रियपरदारसुनियतकरी कहतकुवामजू । कोगनैकेत नेपुरुषकीन्हेंकहतसबसंसारजू । सुनिकुँवरचितदैवरणिताको कहियसबव्योहारजू ॥ ३१ ॥

टी०—औ समुद्रके कहे समुद्र पर्यंतके अर्थ पृथ्वीभरेके भूरि भूरि भेवही कहे अनेक भेदसों ॥ ३० ॥ सात हरिगीतछंदको अन्वय एक है यामें श्लेष सों आशीर्वादात्मक व्याजस्तुति है परदार कहे परस्त्री उत्कृष्टदार कुवाम कुत्सित वाम औ कु कहे पृथ्वीरूपवाम व्योहार कहे संबन्ध मित्रता इति कुवाम पक्ष रत्नाकर कहे अनेक रत्नयुक्त पृथ्वी ये छः समुद्र शीश पश्चिम करिकै औ पांय पूरुब करिके प्रलयकाल के उपरांत जब शेषके फणिकहे फणनि की मणिमाला मणिसमूहकी पलिका अथवा शेषजे फणिकहे सर्प्प हैं तिनकी मणिमालाकी पलिकामें परति पौढति है तब अनेक पुरुषन को युद्धादि कराई ग्रहण त्यागरूप प्रबन्ध कियो करतिहै गातहैं सहजेही सुगंध युक्त जाके 'गंध-वती पृथ्वीतिन्यायशास्त्रोक्तत्वात्' ॥ ज्या प्रबंधसों हिरण्याक्षादि जो पुरुषकरयो सो क्रमही गनायो सरवस कहे सबसार कहे रसस्वादेति औ द्रव्यभ्रमि कहे

भूलिहूकै ज्यौं कहेजाते और पति को मुख न निरखै त्यों कहे ता प्रकारसों तुम ताको राखियो जा स्त्रीको दशरथ राख्यो ताको तुम राखियो यह परिहास है औ ताही पृथ्वीकी रक्षा तुम करियो यह आशीर्वाद है ॥ ३१ ॥

मू०—बहुरूपसोंवनयोबनाबहुरत्नमयवपुमानिये । पुनि वंशरत्नाकरबन्योअतिचित्तचंचलजानिये ॥ शुभशेषफणि मणिमालपलिकापरतिकरतिप्रबंधजू । करिशीशपश्चिमपाँयपूरबगातसहजसुगंधजू ॥ ३२ ॥ वहहरीहठिहरिनाक्षदैयत देखिसुंदरदेहसों । बरबीरयज्ञबराहबरहीलईछीनिसनेहसों ॥ ह्वैगईविहवलअंगपृथुफिरिसजेसकलशृँगारजू । पुनिकछुक दिनवशभईताकेलियोसरवससारजू ॥ ३३ ॥ वहगयोप्रभुपरलोककीन्होंहिरणकश्यपनाथजू । तेहिभाँतिभाँतिनभोग योभ्रमिपलनछोंड्योसाथजू ॥ वहअसुरश्रीनरसिंहमारचोलई प्रबलछडाइकै । लैदईहरिहरिचंदराजहिंबहुतजोसुखपाइकै ॥ ३४ ॥ हरिचन्द्रविश्वामित्रकोदइदुष्टताजियजानिकै । तेहिबरोबलिबरिबंडबरहींविप्रतपसीजानिकै । बलिबांधिछल बललईबावनदईइंद्रहिआनिकै । तेहिइन्द्रतजिपतिकरचोअर्जुनसहसभुजकोजानिकै॥३५॥तबतासुमदछबिछक्यो अर्जुनहत्योऋषिजमदग्निजू । परशुरामसोसकुलजारचोप्रबलवलकी अग्निजू । तेहिबेरतबहींसकलक्षात्रिनमारिमारिबनाइकै । इकबीसबेरादईविप्रनरुधिरजलअन्हवाइकै॥ ३६ ॥ वहरावरेपितुकरोपत्नीतजीविप्रनथूंकिकै । अरुकहतहैंसबरावणादिक रहेताकहँढूँढिकै ॥ यहिलाजमरियततााहितुमसोंभयोनातोनाथजू । अबऔरमुखनिरखैनज्योंत्योंराखियोरघुनाथजू॥३७॥ सोरठा॥ प्रातभयेसबभूप, बनिबनिमंडपमेंगये ॥ जहाँरूपअनुरूप, ठौरठौरसबशोभिजैं ॥ ३८॥ नाराचछन्द ॥ रचीवि-

रंचिवाससी निथम्बराजिकाभली । जहाँतहाँबिछावनेबनेब-
नेथलीथली ॥ वितानश्वेतश्यामपीतलालनीलकारँगे । मनो
दुहूँदिशानकेसमानबिम्बसेजगे ॥ ३९ ॥

टी०–३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ रूपजो सौंदर्य्य है ताके अनुरूप सदृश अर्थ आति सुंदर ॥ ३८ ॥ जा मंडपमें विरञ्चि जे ब्रह्मा हैं तिनके वासगृहकी ऐसीनिथंभ कहे थंभनकी राजिका पंगतिरचीहै अर्थ ब्रह्माके मंदिर सदृशमंडपबन्योहै विचित्रवाससीनि पाठ होइ तौ विचित्र वाससीनि कहे विचित्र वस्त्रन करिकै अर्थ परदान करिकै थंभराजिका रचीहै बनीहै अर्थ अनेक रंग के परदा लगे हैं वितान चँदोवा श्याम कहे वैंजनी नीलिका जो लीलहै तासों रंगे हरिण जानो मानो भू आकाश जे दूनो दिशा हैं तिनके परस्पर समान बिंब कहे प्रतिबिंब से जने हैं अर्थ भूमें जे बिछावने हैं तिनके प्रतिबिंब आकाश में जगे हैं औ आकाश में वितानहैं तिनके प्रतिबिम्ब भूमें जगेहैं यासों या जानो जहाँ जारंग को वितान तन्योहै तहां ताही रंगके बिछावने हैं "बिंबन्तुप्रतिबिम्बेपीतिमेदिनी" ॥ ३९ ॥

मू०–पद्धटिकाछन्द ॥ गजमोतिनकीअवलीअपार ।
तहँकलशनपरउरमालिसुढार । शुभपूरितरतिजनुरुचिरधार ।
जहँतहँअकाशगंगाउदार ॥ ४० ॥ गजदन्तनकीअवलीसुदे-
श । तहँकुसुमराजराजतसुवेश ॥ शुभनृपकुमारिकाकर-
तिगान । जनुदेविनकेपुष्पकबिमान ॥ ४१॥ तामरसछन्द ॥
इतउतशोभितसुन्दरिडोलैं । अर्थअनेकनिबोलनिबोलैं ॥
सुखमुखमंडलचित्तनिमोहैं । मनहुँअनेककलानिधिसो
हैं ॥ ४२ ॥ भ्रुकुटिविलासप्रकाशितदेखे । धनुषमनोज
मनोमयलेखे ॥ चरचितहासचन्द्रिकनिमानो । सुखमु-
खवासनिवासितजानो ॥ ४३ ॥

टी०–मण्डपकी रति कहे प्रीति सों पूरित मानों रुचिर धार कहे प्रवाहन करिकै मण्डपमें जहां तहां उदार सुन्दर आकाश गंगा है अर्थ गजमोतिन की

माला हैं ते मानो अनेक धारा है मण्डपमें आकाशगंगा राजती हैं ॥ ४० ॥ गजदन्त जे टोडा हैं तिनकी अवली सुदेश कहे सुन्दर रौसयुक्त बनी हैं आकाश मे वर्त्तमान विमान सदृश गजदन्त के रौसहैं देवी सरिस नृपकुमारिका ह ॥ "नागदन्तोहस्तिदन्ते गेहान्निःसृतदारुणी" त्यभिधानचिन्तामणिः ॥ ४१ ॥ कलानिधि चन्द्रमा । ॥ ४२ ॥ मानो मनोजमय कहे मनोज प्रधान मनोज जो कन्दर्प है सोई है प्रधान देवता जिनके ऐसे धनुषहैं अर्थ मानो कामके धनुष हैं यह लेखे कहे ठहरायो है अथवा मनोमय कहे अनेक मनन करिकै युक्त अर्थ सुन्दरतासों जिनमें अनेक मन बसे हैं ऐसे मनोजके धनुषहैं चर्चितपूजितयुक्तेतिसुखकहे स्वाभाविक ॥ ४३ ॥

मू०-दोहा ॥ अमलकपोलैआरसी, बाहूचम्पकमार ॥ अवलोकनैविलोकियें, मृगमदमयघनसार ॥ ४४ ॥ गतिको मारमहावरे, अंगअंगकोभार ॥ केशवनखशिखशोभिजै, शोभाई शृंगार ॥ ४५ ॥ सवैया ॥ बैठेजरायजरेपलिका परराममसियासबकोमनमोहै । ज्योतिसमूहरहेमढिकैसुरभूलि रहेबपुरोनरकोहै । केशवतीनिहुँलोकनकीअवलोकिवृथा उपमाकविटोहै । शोभनसूरजमंडलमांझमनोकमलाकमला पतिसोहै ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ गंगाजलकीपागशिर, सोहत श्रीरघुनाथ ॥ शिवशिरगङ्गाजलकिधौं, चन्द्रचन्द्रिका साथ ॥ ४७ ॥ तोमरछन्द ॥ कछुभ्रुकुटिकुटिलसुवेश । अतिअमलसुनिलसुदेश ॥ विधिलिख्योशोधिसुतंत्र । जनुजयाजयकेमंत्र ॥ ४८ ॥

टी०-॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ टोहैं कहे खोजत हैं ॥ ४६ ॥ गंगाजल कपरा पश्चिम में प्रसिद्ध है तो बडे लोग ब्याह समयही में पीतपाग बांधत हैं औ यह बिदा के रोजको वर्णन है तासों श्वेतपाग कह्यो अथवा चौदहवें प्रकाशमें कह्योहै कि ॥ "समुझै नसूरप्रकाश । आकाशबलितबिलाश ॥ पुनिऋक्षलक्ष निसंग । जनुजलधिगंनतरंग" ॥ औ पन्द्रहवें प्रकाशमें कह्योहै कि, "बीचबीचहैं कपीश बीचबीचऋक्षजाल । लंक कन्यका गरे कि पीतनीलकण्ठमाल" ॥ तौ

पीत वानरनको गंग तरंगसम कह्यो तैंमे छाँडि पीतपागको गंगाजल सम कह्यो तासों श्वेतपीतकी औ हरित श्यामकी कहूं समता करतेंहं यह कविनियम है ॥ ४७ ॥ सुमिल चिक्कण सुदेश सुन्दर सुतंत्र कहे स्वच्छंद जे विधि हैं तिन लिख्यो है अथवा सुष्ट जो तंत्रशास्त्रहै तासों शोधिकै ढूँढिकै अथवा शुद्ध करिकै मानो विधातें जाके पास होइ ताके जयको शत्रुके अजयको मंत्र लिख्यो है अथवा जायके अर्थ अजय कहे काहूके जीतिवे योग्य नाहीं ऐसे जे श्रीराम चन्द्र हैं तिनको जय कहे जीतिको मंत्रविधि लिखि दियो है जासों रामचन्द्र सबको जीतत हैं वश्य करत हैं अथवा जया जो पार्वती हैं तिनहूंके जयको जीतिवेको मंत्र लिख्यो है यासों या जनायो पतिव्रतमें अग्रगणनीय जे पार्वती हैं तेऊ जिनको देखि वश्यहोयँ तो और स्त्री पुरुषकी कहाँ वातहै आशय कि अति सुन्दर हैं " जयाजयन्तीतिथिमित्यथोमातत्सखीषु च " । इति-मेदिनी ॥ ४८ ॥

मू०—दोहा ॥ यदपिभ्रुकुटिरघुनाथकी, कुटिलदेखियत ज्योति ॥ तदपिसुरासुरनरनकी, निरखिशुद्धगतिहोति॥४९॥ श्रवणमकरकुण्डललसत, मुखसुखमाएकत्र ॥ शशिसमी-पसोहतमनो, श्रवणमकरनक्षत्र ॥ ५० ॥ पद्धटिका छन्द ॥ अतिवदनशोभसरसीसुरंग । तहँकमलनयननासा तरंग ॥ जनुयुवतिचित्तविभ्रमविलास । तेइभ्रमरभँवतरस रूपआस ॥ ५१ ॥

टी०—माना शशिके समीप कहे दोनों और निकट उदित ह्वै श्रवण नक्ष-त्रमें ह्वै मकरराशि शोभित हैं नक्षत्र पदको सम्बन्ध श्रवण मोहै अथवा श्रवणमो मकरराशि स्वरूपके नक्षत्र कहे तारा मकरराशि स्वरूपेति शोभितहैं युक्ति यह कि, उत्तराषाढ श्रवण धनिष्ठा तीनि नक्षत्रनमें मकरराशि को बास है सो मानो श्रवणही में वर्त्तमान ह्वै शशिके दुवौ ओर शोभित है श्रवण नक्षत्रकी औ कर्णकी शब्दसाम्यहै औ मकरराशिकी औ कुण्डलको रूप साम्यहै शशि सदृश मुखहै ॥ ४९ ॥ ५० ॥ सरसीतडाग सुरंगनिर्मलरामचन्द्रकेनेत्रशोभामें भ्रमतेंहं विलास कौतुक जिनको ऐसे जे युवतिनके चित्तहैं तेई भ्रमर भँवतहैं रस मकर-

न्द्ररूपी जो रूपशोभा है ताकी आशा सों अर्थ जैसे मकरन्दकी आश करि तडागमें भँवर भँवतहैं तैसे रूपकी आश करि रामचन्द्रके मुखपर स्त्रीनके चित्त भ्रमत हैं ॥ ५१ ॥

मू०-निशिपालिका छन्द ॥ शोभिजातिदन्तरुचिशुभ्र उरआनिये । सत्यजनुरूपअनुरूपकबखानिये ओंठरुचिरेखसविशेपशुभश्रीरये । शोधिजनुईशशुभलक्षणसबैदये ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ ग्रीवाश्रीरघुनाथकी, लसतिकम्बुवर वेप ॥ साधुमनोबचकायकी, मानोलिखीत्रिरेष ॥ ५३ ॥ सुन्दरीछन्द ॥ शोभनदीरघबाहुविराजत । देवसिहातअदेवतेलाजत ॥ वैरिनकोअहिराजबखानहुँ ॥ हैहितकारिनकी ध्वजमानहुँ ॥ ५४ ॥ योंउरमेंभृगुलातबखानहुँ । श्रीकरको सरसीरुहमानहुँ ॥ सोहतिहैउरमेंमणियोजनु । जानकीको अनुरागिरह्योमनु ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ सोहतजनरतरामउर, देखतजिनकोभाग ॥ आइगयोऊपरमनो, अन्तरकोअनु राग ॥ ५६ ॥

टीका-शुभ्रश्वेतसत्यकहेनिश्चयजानो रूपसुन्दरताकेअनुरूपक कहे प्रतिमा बखानियतहै अथवा: जानो सत्य जो पदाथ है ताके रूपकेअनुरूपकप्रतिमाहै सत्यकोरूपश्वेतहै ॥ ५२ ॥ कंबुशंखमनसावाचा कर्मणा करिके जो रामचन्द्र साधु हैं तिन तीन्योंकी मानों विधातैं तीनि रेखा लिखिदियो है निश्चयबातको रेखा खींचि कहिबेकी रीति लोकमें प्रसिद्ध है ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ रामचन्द्रके उरमें लक्ष्मी वास कियेहैं ताके करको मानो कमल है मणि कौस्तुभ मणि अनुरागकी मन सदृशकह्यो तासों अरुण जानों ॥ ५५ ॥ वाही मणिकी फेरि उत्प्रेक्षा करत हैं जन जे दासहैं तिनमें रतकहे संलग्न जो अनुराग रामचन्द्रके उरमें शोभित है सो बाढिकै उर अन्तर ते मानो ऊपर आइगयो है ताको जे देखत हैं तिनको बडो भागहै ॥ ५६ ॥

मू०—पद्धटिकाछन्द ॥ शुभमोतिनकीदुलरीसुदेश । जनुवेदनके अक्षसुवेश ॥ गजमोतिनकीमालाविशाल । मन मानहुँसन्तनकेमराल ॥ ५७ ॥ विशेषकछन्द ॥ श्यामदुवौपगलालसैद्युतियोंतलकी । मानहुंसेवतिज्योतिगिरायमुनाजलकी ॥ पाटजटीअतिश्वेतसोंहीरनकीअवली । देवनदीकनमानहुँ सेवतभाँतिभली ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ कोवरणै रघुनाथछबि, केशवबुद्धिउदार ॥ जाकीकिरपाशोभिजति, शोभासबसंसार ॥ ५९ ॥ दण्डक ॥ कोहैदमयन्तीइन्दुमतीरति रातिदिन होहिनछबीलीछबिइनजोशृंगारिये । केशवलजातजलजातवेद ओपजातरूपबापुरेविरूपसीताजोनिहारिये ॥ मदननिरूपमनिरूपननिरूपभयो चन्दबहुरूपअनुरूपकैविचारिये । सीताजूकेरूपपरदेवताकुरूपकोहैं रूपहीकेरूपकनौ वारिवारिडारिये ॥ ६० ॥

टीका—मरालहंस ॥ ५७ ॥ या प्रकार मानो त्रिवर्णारामचन्द्रके चरण सेवित है पाठ पदश्लेष है रेशम औ दुवौ कुलको अंतर ॥ ५८ ॥ बुद्धितुसार पाठ होइ तौ बुद्धिहै तुसार हेवार समक्षणभंगुरजाकी ॥ ५९ ॥ दमयन्ती नलकी स्त्री इन्दुमती अज की स्त्री रति काम की स्त्री इनको राति दिन शृंगारिये तौ सीताकी छवि समान इनकी छवि ना होइ जातवेद अग्नि जातरूप सुवर्ण निरूपम कहे जाके ऊपमा कोऊ नहीं अर्थ अति सुन्दर जो मदन है सो सीता जू के रूप समताके निरूपण में निर्णयमें लाजसों निरूप कहे निःस्वरूप निर्देहेति भयो औ घटि बढिकै अनेक रूपको धर्ता जो चन्द्रहै ताको अनुरूपकै कहे असदृशै विचारियत है रूप जो सौंदर्य है ताहीके रूपक कहे साम्यको वारिवारि डारियत है ॥ ६० ॥

मू०—गीतिका छन्द ॥ श्रीशोभिजैसखिसुन्दरीजनुदामिनीवपुमंडिकै । घनश्यामकोजनुसेवहीं जडमेघओघनछंडि-

कै ॥ यक्कअंगचर्चितचारुनन्दनचन्द्रिकातजिचन्दको । जनु राहुकेभयसेवही रघुनाथ आँनँदकंदको ॥ ६१ ॥ मुखएक हैनतलोकलोचन लोललोचनकीहरे । जनुजानकीसँगशोभि जै शुभलाज देहनकोधरे ॥ तहँएकफूलनकेविभूषण एक मोतिनकेकिये । जनुक्षीरसागरदेवतातन क्षीरछीटनिकोछिये ॥ ६२ ॥ सोरठा ॥ पहिरेवसनसुरंग, पावकयुतस्वाहामनो ॥ सहजसुगन्धितअंग, मानोदेवीमलयकी ॥ ६३ ॥ चामर छंद ॥ मत्तदन्तिराजराजिबाजिराजराजिकै । हेमहीरमुक्त चीर चारुसाजसाजिकै ॥ वेषवेषबाहिनी अशेषवस्तुसोधि यो। दाइजोविदेहराज भाँतिभाँतिकोदियो ॥ ६४ ॥ वस्त्र भौनस्योवितान आसनेबिछावने । अस्त्रशस्त्रअंग त्रान भाजनादिकोगने ॥ दासिदासबासिबासरोमपाटकेकियो । दाइ जो विदेहराज भांतिभांतिकोदियो ॥ ६५ ॥

टी०—वपुमंडिक यह चंद्रिकाहू में जानौ ॥ ६१ ॥ एकन के मुख नत कहे लाजपों नीचेको नये हैं वे लोल लोचन करिकै लोक लोचनन को हरति हैं ॥ ६२ ॥ स्वाहा अग्नि की स्त्री पावक सम वस्त्र है स्वाहा सम स्त्री है ॥ ६३ ॥ मत्त जे दंतिराज गजराजहैं तिनकी राजि कहे समूह औ वाजिराज घोडेनकी राजिका कहे समूह और जे देवे के उचित वस्तु हैं तिन्हें शोधियो कहे दीबे के लिये ढूंढि ढूँढि मँगाइयो ॥ ६४ ॥ वितान कहे चँदोवा सामियानेति आसन भूपासन गद्दीति बिछावने फरसस्यो कहे सहित वस्त्र भौन कहे पाल डेरा इति दियो अंगत्राण बख्तर भाजन सुवर्णादिके पात्रवासि सुगंधसों युक्तकरिकै रोमवसी उत्तम कंबलादि पाठ बास पीतांबरादि दियो ॥ ६५ ॥

मू०—दोहा ॥ जनकराजपहिराइयो, राजादशरथसाथ ॥ छत्रचमरगजबाजिदै, आसमुद्रक्षितिनाथ ॥ ६६ ॥ निशि

पालिकाछन्द ॥ दानदियराजदशरथसुखपाइकै । शोधिऋ-
षिब्रह्मऋषिराजनिबोलाइकै ॥ जोपियाचकसल दादुरमयू-
रसे । मेघजिमिवर्षिगजवाजियमयूरसे ॥ ६७ ॥

इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकाया-
मिन्द्रजिद्विरचितायां सीताराम विवाहवर्णनंनामषष्ठः प्रकाशः ॥ ६ ॥

टी०–राजा दशरथ के साथ जे आसमुद्र के क्षितिनाथ रहे तिन्हैं राजा दश-
रथके साथ जनकराज बरतौनीपहिरायो बिदा समयकी पहिरावनि बरतौनी
नामकरि पश्चिममों प्रसिद्धहै ॥ ६६ ॥ बरतौनीकी पहिरावनिके बादि जनकपुर-
बासिनको राजा दशरथ यथोचितदानदियो ऋषिराजनपरमी ब्रह्म ऋषिराज
ब्राह्मणराज पदको अनुषंगऋषिहूमोहै ॥ ६७ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसाद
निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां सीतारामविवाहवर्णननामषष्ठः प्रकाशः ॥ ६ ॥

मू०–दोहा ॥ याप्रकाशसप्तमकथा, परशुरामसंवाद ॥
रघुवरसोंअरुरोषत्यहि, भंजनमानविपाद ॥ १ ॥ विश्वामि-
त्रबिदाभये, जनकफिरेपहुँचाइ ॥ मिलेआगिलीफौजको,
परशुराम अकुलाइ ॥ २ ॥ चंचरीछन्द ॥ मत्तदन्तिअमत्त
होगये देखि देखिनगज्जहीं । ठौर ठौरसुदेशकेशव दुन्दुभी
नहिंबज्जहीं । डारिडारिहथ्यारशूरजजीवलैलैभज्जहीं ॥ का-
टिकैतनत्राणएकैंनारिवेषतलज्जहीं ॥ ३ ॥ दोहा ॥ वामदेव
ऋषिसोंकह्यो, परशुरामरणधीर । महादेवकोधनुषयह, को
तोरेउबलवीर ॥ ४ ॥ वामदेव ॥ महादेवकोधनुषयह, पर-
शुरामऋषिराज । तोरेउरायहककहतहीं, समुझेउरावणराज ॥
॥ ५ ॥ परशुराम ॥ अतिकोमलनृपसुतनकी, ग्रीवादलीअ-
पार ॥ अबकठोरदशकंठके, काटहुँकंठकुठार ॥ ६ ॥ परशु

राम-विजयछन्द ॥ बाँधिकैबाँध्योजोबालिबली पलनापरलै सुतकोहितठाढ़े । हैयहराजलियोगहिकेशवआयोहोछुद्रजोछिद्रनिडाढ़े । बाहेरकाढ़िदियोबलिदासिन जाइपरेउजोपतालकेबाढ़े । तोकोकुठारबडाईकहा कहितादशकंठकेकंठनकाढ़े ॥ ७ ॥

टी०—या प्रकाशमें परशुराम सों औ रघुवर सों सम्वाद है ताही रघुबरके रोष करिकै परशुरामके मानको औ आपने सैन्यके विषाद के दुःखको भंजन है ॥ १ ॥ २ ॥ यामें परशुरामके तेजको वर्णन है कि जिन परशुराम को देखि भयसों दशरथ चमूमें या दशा भई सूरय कहे शूरनके पुत्र अर्थ परम्पराके शूर अथवा सूरय सूर्यवंशी ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ बाध्यो कहे मारचो सुत जो अंगद है ताको पलना परसों अंकमें लैकै ताको हित कौतुक रावण में ठाढ्यो अर्थ रावण को बालखेल बनायो सो कथा प्रसिद्ध है बालको अंक में लैकै कौतुक देखाइबो लोकरीति है क्षिद्रनिको डाढेकहे देखे अर्थ समय बिचारिकै हैहयराज सहस्रार्जुनपें युद्ध करिबेको आयोहो आयो रहे अथवा जाको हैहयराजा गहि लियो सो क्षुद्र क्षिद्रनिको डाढे अर्थ या समय जनकपुरमें परशुराम नहींहै ऐसे अवसरको बिचारि के आयो रहे ताके कण्ठ जो तू न काटै तौ तो को कहा बडाई है अथवा ताके कण्ठनको जो तू काटै तौ तोको कहा बडाई है जाकी बालि आदि ऐसी दुर्दशा करी ताको कण्ठ काटिबो सहजहै इति भावार्थः ॥ ७ ॥

मू०—सोरठा ॥ यद्यपिहैअतिदीन, मोहितऊखलमारने ॥ गुरुअपराधहिलीन, केशवक्योंकरिछाँडिये ॥ ८ ॥ चन्द्रकलाछन्द ॥ वरवाणशिखीनअशेषसमुद्रहि सोखिसखासुखहीतरिहौं । पुनिलंकहिऔटिकलंकितकै फिरिपंककतंकहिकीभरिहौं । भलभूजिकैनेकसखाकसकै दुखदीरघदेवनकोहरिहौं । शितकंठकेकंठनकोकठुला दशकंठकेकंठनका करिहौं ॥ ९ ॥ परशुराम—संयुताछन्द ॥ यहकौनकोदल देखिये । बामदेव ॥ यहरामकोप्रभुलेखिये ॥ परशुराम ॥

कहिकौनरामनजानियो ॥ वामदेव ॥ शरताड़काजिनमारि-
यो ॥ १० ॥ परशुराम—विनयछन्द ॥ ताड़कासंहारी तिय
नविचारीकौनबडाईताहिहने ॥ वामदेव ॥ मारीचहुतेसंगप्र-
बलसकलखलअरुसुबाहुकाहूनगने ॥ करिक्रतुरखवारीगुरु
सुखकारी गौतमकीतियशुद्धकरी । जिनरघुकुलमंड्योहरध-
नुखंड्योसीयस्वयम्बरमांझबरी ॥ ११ ॥

टी०—जो ऐसो दीनहै ताकोमारिबो अनुचित है ना लिये कहतहैं ॥ ८ ॥ शिखीन कहे अग्नि मो सखा कुथागको सम्बोधन है मुखही कहे महजही ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ गुरुजे विश्वामित्र हैं तिनको सुखकारी क्रतु जो यज्ञहै ताको रखवारी करिकै ॥ ११ ॥

मू०—दोहा ॥ हरहूहोतोदंडद्वै, धनुषचढ़ावतकष्ट ॥
देखोमहिमाकालकी, कियोसोनरशिशुनष्ट॥ १२ ॥ विजय ॥
बोरौंसबैरघुवंशकुठारकी धारमैंवारनबाजिसरत्थहि । बा-
णकीवायुउडाइकैलक्षन लक्षिकरौअरिहासमरत्थहि । रामहिं
वामसमेतपठैवन कोपकेभारमैंभूंजौंभरत्थहि । जोधनुहाथ
धरैरघुनाथतौआजुअनाथकरौंदशरत्थहि ॥ १३ ॥

टी०—सरस्वती उक्तार्थ- स कहे सहित व कहे निश्चय अर्थ निश्चयकरि रघुवंशके जे कुठारशत्रुहैं तिन्हैं बारन बाजिरथ सहितकीकहे समुद्रादि जलाशयकी धारप्रवाहमें बोरौं 'कंजलमस्मिन्नस्तीति' को अर्थ जामें जल रहै सो की कहावै वंशपद श्लेष है बांसहू को नामहै ताकुठारपदकह्यो बारनबाजि सरथ कहि या जनायो कि जामें उनको चिह्नऊ न रहै औ लक्षण कहे लाखन जे रघुवंशके शत्रुहैं तिन्हैं बाण की वायुसों उडाइकै हा कहे हाइहाइ जो शब्द है ताहीमें समरत्थलक्ष कहे निशाना करौं अर्थ ऐसी बाणवृष्टि करौं जामें केवल हाइहाइ-करै और पराक्रम करिबे लायक ना रहै औ जयरामहि कहे केवल रामचन्द्रहीसों वामकहे कुटिलता समेति हैं अर्थ जे रामहीके शत्रु हैं तिन्हैं वनको पठै देउँ औ जे भरत्थहि वाम समेति हैं अर्थ भरत के शत्रु हैं तिन्हैं शोकके भारमें भूँजौं औ जो धनुष को रघुनाथ हाथमें लियो कहे उठायो तौ आजु दशरथ को

अनाथ कहे जाको नाथ कोऊ नहीं अर्थ सबको नाथकरों कहे करिमानो तौ सबके नाथ जे विष्णु हैं तिनहीं के शंभु धनुषतोरिबे की सामर्थ्यहै ताते तेई विष्णु रामरूपह्वै दशरथके पुत्र भये यह निश्चय करि दशरथको सर्वोपरि मानो इतिभावार्थः ॥ १२ ॥ १३ ॥

मू०—सोरठा ॥ रामदेखिरघुनाथ, रथतेउतरेवेगिहै ॥ गहेभरतकोहात, आवतरामविलोकियो ॥ १४ ॥ परशुराम—दंडक ॥ अमलसजलघनश्यामवपुकेशवदास चंद्रहूतेचारु मुखसुखमाकोग्रामहै ॥ कोमलकमलदलदीरघविलोचननि सोदरसमानरूपन्यारोन्यारोनामहै । बालकविलोकियतपूरण पुरुषगुण मेरोमतमोहियतऐसोएकयामहै ॥ बैरमानिवामदेवकोधनुषतोरोइन जानतहौंबीसविशेरामवेषकामहै ॥ १५ ॥ भरत—गीतिकाछन्द ॥ कुशमुद्रिकासमिधैंस्रुवाकुशऔकमंडलकोलिये । करमूलशरघनतर्कसी भृगुलातसीदरशैहिये ॥ धनुबाणतिक्षकुठारकेशव मेखलामृगचर्मसों । रघुवीरको यहदेखियेरसवीरसात्त्विकधर्मसों ॥ १६ ॥ राम—नाराचछन्द ॥ प्रचंडहैहयाधिराजदंडमानजानिये । अखंडकीर्त्तिलेयभूमि देयमानमानिये ॥ अदेवदेवजेअभीतरक्षमानलेखिये । अमेयतेजभर्गभक्त भार्गवेशदेखिये ॥ १७ ॥

टी०—राम परशुराम ॥ १४ ॥ पूरण पुरुष विष्णु याम पहर वामदेव महादेव ॥ १५ ॥ कुश मुद्रिका कहे पैंतीसमिधैं होम की लकडी करमूल कहे कांधा में हैं शरघन घने बान सों पूरित तरकस जाके मेखला कटिभूषण धनुर्बाण धारणादि वीररसको धर्म है औ कुश मुद्रिका धारणादि सात्त्विक प्राणीको धर्म है ॥ १६ ॥ प्रचंड जे हैहयादि सहस्रार्जुनादि राजा हैं तिनके दंडकर्त्ता हैं अर्थ सहस्राजुनादिकनको नाश इनहिंन कियो है औ अखण्ड कहे पूर्ण कीर्त्तिके लेयमान लेवैयाहैं औ अखंड भूमिके देयमान कहे देवैया हैं अखण्ड पदको संबंध भूमिहूंमेंहै अदेव दैत्य औ देवनके जेयमान जीतनहार हैं मानपदको संबंध लेय जेयहू में है औ भीत जे भय युक्तहैं तिनके रक्षमान रक्षक हैं अमेय

कहे अपरिमान वडो इति है तेज जिनको औ भर्ग महादेवके भक्तहैं औ भार्गव जे भृगुवंशीहैं तिनके ईशहैं अर्थ भृगुवंशमें ये वडे ऐश्वर्य युक्त हैं ॥ १७ ॥

मू०—तोमरछन्द ॥ सहभरतलक्ष्मणराम ॥ चहुँकियेआनिप्रणाम ॥ भृगुनन्द्रआशिषदीन । रणहोहुअजयप्रवीन ॥ ॥ १८ ॥ परशुराम ॥ सुनिरामचन्द्रकुमार । मनवचनकीर्तिउदार ॥ राम ॥ भृगुवंशकेअवतंश । मनवृत्तिहैक्यहिअंश ॥ १९ ॥ परशुराम ॥ मदिराछन्द ॥ तोरिशरासनशंकरको शुभसीयस्वयंबरमांझवरी ॥ तातेबढ्योअभिमानमहामन मेरीयोनेकनशंककरी ॥ राम ॥ सोअपराधपगेहमसों अवक्योंसुधरैतुमहूंधौंकहो ॥ बाहुदैदोउकुठारहिकेशत्र आपनेधामकोपंथगहो ॥ २० ॥

टी०—अजय कहे जाको कोऊ न जीति सकै ॥ १८ ॥ हमारे वचन सुनो औ उदार कीर्ति सुनो अथवा कीर्ति है उदार जिनकी ऐसे हमारे वचन सुनो अथवा कीर्ति उदार रामचंद्रको संबोधन है तुम्हारो मन वृत्ति के केहि अंश कहे भाग मोंहै अर्थ मनोभिलाष कहाहै जो होइ सो कहौ ॥ १९ ॥ सरस्वती उक्तार्थः अनेक राजा जामें हारि गये ताशरासनको तोरचो स्वयम्बरके मध्यमें सीताको वरचो तासों तुम्हारे वडो अभिमान वाढ्यो है सो उचितही है जो एनो पराक्रम करै ताके अभिमान वढ्योईचाहै औ सकल क्षत्रिन को नाशकर्ता जो मैं हों ताहू की शंका तुम ना करी तासों तुम्हारे बलको समुझि हमारे भय भयो है तासों सकल क्षत्रिनके नाशको हमारो दोष क्षमा करि हमारे दोऊ बाहु औ हमारो कुठार आपनो करि हमको दैकै आपने घरको जाउ इनहीं कारणसों याही कुठार सों क्षत्रिन को क्षयकह्यो है तासों तुम करिकै बाहु कुठार खंडिवेकी शंका है सो तुम वचन करि हमको दैकै निर्भय करौ इतिभावार्थः ॥ अथवा या कुठार को दोऊ बाहँ दैकै आपने धामको जाउ बाहँ वीर देवेकी रीति लोकमें प्रसिद्ध है कुठार को बडो दोष है तामों दोऊ बाहँ देवे कह्यो ॥ २० ॥

मू०—राम—कुंडलिया ॥ टूटैटूटनहारतरु वायुहिदीजतदोष । त्योंअबहरकेधनुषकोहमपरकीजतरोष ॥ हमपरकीज-

नगेपकालगतिजानिनजाई । होनहारह्वैरहैमिटैमेटीनमिटाई ॥ होनहारह्वैरहैमोहमदसबकोछूटै ॥ होइतिनूकावज्रवज्रतिनुकाह्वैटूटै ॥ २१ ॥ परशुराम–विजयछन्द ॥ केवशहैहयराजकोमासहलाहलकौरनखाइलियोरे । तालगिमेदमहीपनको घृत घोरिदियोनसिरानोहियोरे । खीरषडाननकोमद केशवसोपलमेंकरिपानलियोरे । तौलोंनहींसुखजौलहुंतूरघु-वंशकोशोनसुधानपियोरे ॥ २२ ॥

टी०–हैहयराजको मासरूपी जो हलाहल विष है मेद चरबी खीर दूध षडाननस्वामिकार्तिक यायुक्तिसों आपनो सकलबल कृत सुनाय भयदेखायो मरु[illegible]नी उक्तार्थः ॥ हे कुठार ! यद्यपि तू ऐसे क्रतु करयो है परंतु जबलग [illegible]श जे रामचंद्रहैं तिनको सो कहे तिनको ऐसो न कहे स्तुत्य मधुर इति सुधा-मा[illegible] वचन नहींपियो तौलौं तोको सुख नहीं है इहां सुधा जो उपमानहै ताके [illegible]चारसों मधुर वचन उपमेयको ग्रहण कियो तू सकल क्षत्रिनको क्षयकरयौ है औ ये आत बलवान क्षत्रवंशमें उत्पन्न भये सो वैर समुझि तेरो नाशकारिबेको समर्थ हैं ताते ये जबलौं मधुर वचनसों तेरो दोषक्षमानहींकरत तौलौं तोकों सुखनहीं है इतिभावार्थः । "नः पुमान्सुगते वंधेद्विरण्डप्रस्तुते पिचेतिमेदिनी" ॥ २१ ॥ २२ ॥

मू०–भरत-तंत्रीछन्द ॥ बोलतकैसेभृगुपतिसुनियेसोकहि-येतनमनबनिआवै ॥ आदिबड़ेहौबडपनराखौ जातेतुमसब जगयशपावौ ॥ चन्दनहूमेंअतितनघरियेआगिउठैयहगुण सबलीजै । हैहयमारेनृपतिसंहारेसोयशलैकिनयुगयुगजीजै ॥ २३ ॥ परशुराम-नाराचछंद ॥ भलीकहीभरत्थतैंउठाय आगिअंगतैं । चढाउचोपिचापआपबाणलैनिषंगतैं ॥ प्रभा-उआपनोदेखाउछोडिबालभाइकै । रिझाउराजपुत्रमोहिंराम लैछुडाइकै ॥ २४ ॥ सोरठा ॥ लियोचापजबहाथ, तीनिहुभै यनरोषकरि वरज्योश्रीरघुनाथ,तुमबालकजानतकहा ॥२५॥

रा०—दोहा ॥ भगवन्तनसोंजीतिये, कबहुँनकीनेशक्ति ॥ जीतीएकैबातमें,केवलकीनेभक्ति ॥ २६ ॥ हरिगीतछंद ॥ जबहयोहैहयराजइनविनक्षत्रक्षितिमण्डलकरचो । गिरिवेध षण्मुखजीतितारक नंदकोजबज्योंहरचो ॥ सुतमैनजायोराम सों यह कह्योपर्वतनंदिनी । वहरेणुकातियधन्यधरणीमेंभ- ईजगवंदिनी ॥ २७ ॥

टी०—सो बात कहौ जो तनमनमों बनिआवै अर्थ कग्न बनि पै यासों या जनायो कि जो कहत हैं सो तुमका मनहूं सों करिवे को दुर्लभ है ॥ २३ ॥ भरन कह्यो है कि घमत घमत चंदनहूमें आगि उठति हैं तासों परशुरामकह्यो कि अंगसों आगि उठावो सरस्वतीउक्तार्थः॥ कि हमारेसंगपरशुराम सों रामचन्द्र लरि हैं यह जो रामचन्द्र प्रति तुम्हारो लै कहे चोप है ताको छिडाइ कहे त्याग के तुम हमका आपनी कृत देखाय कै रिझाउ कहे प्रसन्न करो अथ रामचन्द्रको भरोसो छोडि हमसों तुम लरौ तौ हम लरैं रामचन्द्र सों लरिवे लायक हम नहीं हैं ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ क्रौंचनामाजोगिरि है ताके वेधन हार जे षण्मुख कहे स्वामिकार्तिक हैं तिनको जीति कै तारकासुर को जो नंदनपुत्र है ताको ज्यों हत्यो मारचो ऐसे ऐसे इनके कृत्य देखि कै पार्वती कह्यो कि ऐसो पुत्र हमारे न भयो तब रेणुका परशुरामकी माता जगवंदिनी भई औ धन्य भई ऐसो परा- क्रम परशुराम देखिकै रेणुकाको सब जगवंदना करिकै कह्यो धन्य है रेणुका जाके ऐसो पुत्र भयो या प्रकार रामचन्द्र परशुरामकी स्तुति कियो ॥ २७॥

मू०—परशुराम—तोमरछन्द ॥ सुनुरामशीलसमुद्र । तवबंधु हैंअतिक्षुद्र ॥ ममवाडवानलकोप । अशुकियोचाहतलोप- ॥ २८ ॥ शत्रुघ्न—दोधक ॥ हौभृगुनंदबलीजगमाहीं. राम बिदाकरियेघरजाहीं, हौंतुमसोंफिरियुद्धहिमाडौं ॥ क्षत्रिय वंशकोवैरलैछांडौं ॥ २९ ॥ तोटकछंद ॥ यहबातसुनीभृ- गनाथजबै । कहिरामहिंलैघरजाहुअबै ॥ इनपैजगजीवतजो बचिहै । रणहौंतुमसोंफिरिकैरचिहौ ॥ ३० ॥ दोहा ॥ नि

जअपराधीक्योंहतौं, गुरुअपराधीछांडि । तातेकठिनकुठार अब, रामहिंसोरणमांडि ॥ ३१ ॥

टीका०-बडवानलरूपीजो हमारे कोप है सो इनको लोप भस्म कियो चाहत है ॥ २८ ॥ २९ शत्रुघ्नजीकी यह बात सुनि भरतसों कह्यो कि तुम रामचन्द्रको लैके घर जाहु इनपै शत्रुघ्नपै युद्ध करि जो जीवित बचि है तब तुमसों रण करि हों ॥ ३० ॥ गुरु अपराधी रामचन्द्र निज अपराधी शत्रुघ्न सरस्वती उक्तार्थः-निज ते अपनाते हमते इति है अपरा कहे अन्य अधिक इति है बुद्धि जिनकी इहां बुद्धिउपलक्षणमात्र है बुद्धि पदते बुद्धिबल विद्यादि जानों ऐसे जे रामचन्द्र हैं तिनको कैसे मारों अर्थ इनके मारिबे को समर्थ नहीं हों फेरि कैसे हैं गुरु जे शिव हैं तिनहुँनते अपराधी कहे बल विद्यादि करि अधिक हैं जिनको शिवहू ध्यान करत हैं ताते मारिबे की आशा करि छांडिकै हे कठिन कुठार रामचन्द्र हीको सो रनकहे स्तुतिसों रनसों मांडि कहे युक्तकरौ अर्थरामचन्द्रकी स्तुति करो जो कहौ कुठार तौ बोलत नहीं कैसे स्तुति करि है तो सबमें अभिमानी देवतारहत है ता करिकै स्तुति करिबे को समर्थ है जैसे समुद्रको अभिमानी देवता रामचंद्रकी स्तुति कर्यो है औ लंका हनूमानको रोक्यो है ॥ ३१ ॥

मू०-परशुराम-विजयछंद ॥ भूतलकेसबभूपनकोमद भोजनतौबहुभांतिकियोई । मोदसोंतारकनंदकोमदपछ्या-वरिपानसिरायोहियोई । खीरषडाननकोमदकेशवसोपलमें करिपान लियोई ॥ रामतिहारेइकंठकोश्रोणितपानको चाहैकठार कियोई ॥ ३२ ॥ लक्ष्मण-तोटक ॥ जिनका अनुग्रहवृद्धिकरै । तिनकोकिमिनिग्रहचित्तपरै ॥ जिनको जगअच्छतशीशधरै । तिनकोतनसक्षतकौनकरै ॥ ३३ ॥ राम-मदिराछन्द ॥ कंठकुठारयशैअबहार किफूलअशोकसशोकसमूरो ॥ कैचित्रसारिचढैकिचितातनचन्दनचित्र किपावकपूरो ॥ लोकमलोकबडोअपलोकसुकेशवदासजो

होउसोहोऊ । विप्रनके कुलकोभृगुनन्दनसूरजकेकुल शूरनकोऊ ॥ ३४ ॥

टी०-पछचावरि शिखरनि को भेद है खीर दूध सरस्वती उक्तार्थः हे राम! तिहारे कंठ को कहे शब्द को अर्थ मधुर वचन पानि के सो कुठार नितहीं पियो पान करचो चाहतहै अर्थ सुन्यो चाहत है ॥ "कंठोगलेसन्निधौनेध्वनौ मदनपादपे" इति मेदिनी ॥ ३२ ॥ जिन ब्राह्मणनको अनुग्रह कृपा सब को वृद्धि करत है तिनको निग्रह दंड हमारे चित्तमें कैसे परे कहे आवै औ जिनके शीशमें जग अक्षत धरत है अर्थ पूजन करत है तिनको तन साक्षात कहे खंडिन को करे या जनायो ब्राह्मण अवध्य है तामों तुम को नहीं मारते ॥ ३३ ॥ चहै अशोक सुख चहै शोक दुख फूलो होइ लोक यश अपलोक अयश ॥३४॥

मू०-परशुराम-विशेषकछन्द ॥ हाथधरेहथियारसबैतुम शोभतहौ । मारनहाररहिदेखिकहामनक्षोभतहौ ॥ क्षत्रियके कुलहैकिमिबैननदीनरचौ । कोटिकरोउपचारनकैसेहुमीचबचौ ॥ ३५ ॥ लक्ष्मण ॥ क्षत्रियहैगुरुलोगनके प्रतिपालकरैं । भूलिहुतौतिनकेगुणऔगुणजीनधरैं । तौहमकोगुरुदोषनहीं अबएकरती । जोअपनीजननी तुमहींसुख पाइहती ॥ ३६ ॥

टी०- लक्ष्मण औ रामचंद्र के नम्र वचन सुनिकै भय युक्त जानि परशुराम कह्यो कि, मारन हार जो मैं हूं ताको देखि कै कहा क्षोभत डरात हौ सरस्वती उक्तार्थः सबै कहे चारों भाई तुम हाथन में हथियार धरे ऐसे शोभत हौ कि, मारनहार जे यमराज हैं तिनहुन को देखिकै कहा क्षोभत डेरात हौ अर्थ तुम यमराजहूको नहीं डरात हौ औ क्षत्रिय के कुलमें ह्वैके किमि कहे काहे दीन बैन हम सों ना रचो ब्राह्मणसों क्षत्रिय को अधीन रहिबोई उचित धर्म है कछू भयसों तुम दीनवचन नहीं कहत काहेते कि कोटि उपचार यत्न करौ कहे करै अर्थ ब्रह्मादिहू की शरण में जाइ औ तुम मीच को मारौ चाहौ तो कैसेहू न बचौ कहे बचै ॥ ३५ ॥ जो तुमही अपनी जननी माता को सुख पाइकै मारयो तुमको कछु गुरु दोष ना भयो तौ तुम्हारे मारे सों हमहूं को रत्तिहू भरि गुरुदोष-

नहीं है जननीको बधजनाइ या जनायो कि तुमने ऐसे स्त्रीवधादि पराक्रम करयोहै अथवा गुरुदोषीजनायो ॥ ३६ ॥

मू०-परशुराम-विजयछन्द ॥ लक्ष्मणकेपुरिषान कियो पुरुषारथसोनकह्योपरई । वेषबनाइकियोबनितानकोदेखत केशव ह्योहरई । क्रूरकुठारनिहारितजैफलताकीयहैजो हियोजरई । आजुतेकेवलतोकोमहाधिकक्षत्रिनपैजोदयाकरई ॥ ३७ ॥ गीतिकाछन्द ॥ तबएकविंशतिबेरमैंबिनक्षत्रकी पृथिवीरची। बहुकुंडश्रोणित सोंभरेपितृतर्पणादिक्रियासची ॥ उबरेजेक्षत्रियक्षुद्रभूतलशोधिशोधिसंहारिहौं । अबबालवृद्धन ज्वानछाँड़हुँधर्मनिर्दय पारि हौं ॥ ३८ ॥

टी०-सरस्वतीउक्तार्थः लक्ष्मण के पुरिखान बडेन जो पुरुषारथ कियो है सो कह्यो नहीं परत कहा पुरुषारथ करयो जिन बनितन को बेष बनायो अर्थ बनिता रच्यो गौतम की स्त्रीको पाथर सों स्त्री बनायो जाको देखत हियो हरिजात है अर्थ अति सुंदरी बनायो तौ या जनायो सृष्टि करिबे को समर्थ हैं याही विधि दशरथ भगीरथादि के कृत गंगा ल्याइबो आदि जानो सो हेक्रूरकुठार ! तिनको निहारि कै तजे कहे छोडे अर्थ इनके समीपते अन्यत्र जाइ तौ नाको इनके बियोग को यहै फल है जो हृदयजरई कहे जरतहै अर्थ अति सुंदररूप जे येहैं तिनके वियोग सों हृदयजरत है इनके योगको यहै फल है तासों जो तेरो इनको वियोग ह्वै है ता तेरो हियोजरिहै सोआजकेवल कहे एक तोको महा अधिक कहे महाउत्तम है जो क्षत्रिन के ऊपर दया करु आजुतक क्षत्रिनको बध करयो ता क्षत्र वर्णनमें ये ऐसे रूप गुण बलादि पूरित भये तासों अब क्षत्र वर्णकी रक्षा करिबो तोहिं उचितहै तिनके निकट रहि सहायता करि क्षत्रीवर्ण तोको रक्षणीय है ॥ ३७ ॥ सची कहे करी ॥ ३८ ॥

मू०-राम-दोहा ॥ भृगुकुलकमलदिनेशसुनि, ज्योति सकलसंसार ॥ क्योंचलिहैइनशिशुनपै, डारतहौयशभार ॥ ३९ ॥ परशुराम-सोरठा ॥ रामसुबन्धुसँभारि, छोडत हौंशरप्राणहर ॥ देहुहथ्यारनडारि, हाथसमेतिनबेगिदै ॥ ४० ॥

राम-पद्धटिकाछंद ॥ सुनिसकललोकगुरुजामदग्नि । तपविशिषअशेपनकीजोअग्नि ॥ सबविशिषछाँड़िसहिहौंअखंड । हरधनुषकरयोजिनखंडखंड ॥ ४१ ॥ परशुराम-सवैया ॥ बाणहमारेनकेतनत्राणविचारिबिचारिविरंचिकरेहैं । गोकुलब्राह्मणनारिनपुंसकजेजगदीनसुभावभरेहैं ॥ रामकहा करिहौतिनकोतुमबालकदेवअदेवधरेहैं । गाधिकेनंदतिहारेगुरूजिनतेऋषिवेषकियेउबरेहैं ॥ ४२ ॥

टी०-सकलसंसारको जीतिके जो यश एकत्र कर्यो है सो इनसों लरिकै हारिकै ता यशको बोझ इनबालनपै डारत हौ इनमों कैसे चलिहै इनसों लरिहौ तौ हारिजैहौ इति भावार्थः ॥ ॥ ३९ ॥ रामचन्द्र के सतर्क वचन सुनि परशुराम कोप करि बोले सो अर्थ खुलो है सरस्वती उक्तार्थः ॥ हे हर महादेव ! इनके शर करिकै मैं प्राण छोडतहौं अर्थ ये बाण सों मेरे प्राण हर्यो चाहतहैं तासों बन्धुसहित जो कोपयुत रामचन्द्र हैं तिनको तुम सँभारि कहे सम्हारो ये अब तुम्हारेई सँभारन लायक हैं जासों ये हाथन मो समेतन कहे सबन हथ्यारन को डारि देहिं जब-तक ये हाथ में हथ्यारधरे रहिहैं तबतक हमारे भय बन्यो है तासों तुम इनको कोप शांत करि हथ्यार उतरावो आगे महादेव आयऊबे भये हैं ॥ ४० ॥ तपके जे अशेष विशिष बाण हैं विशिष पदते शाप जानौ तिनकी अग्नि औ और सब बाणनको छांडो ते अखंड कहे निर्विघ्न सहिहौं अर्थ हमारे ऊपर शाप औ बाण दुवो चलाओ हम सहिहैं ॥ ४१ ॥ सरस्वती उक्तार्थः ॥ हे राम ! तिन बाणन को तुम कहा करिहौ अर्थ कहा कियो चाहत हौ अर्थ इनको प्रभाव लोप कियो चाहतहौ तुम कैसेहौ बालकताही में देव औ अदेव तुम को डरे हैं ॥ ४२ ॥

मू०-श्रीराम-षट्पद ॥ भगनभयोहरधनुषशालतुमको अबशालै । वृथाहोइविधिसृष्टिईशआसनतेचालै ॥ सकल लोकसंहरहुशेषशिरतेधरडारैं । सप्तसिंधुमिलिजाहिहोहिंसबहीतमभारैं ॥ अतिअमलज्योतिनारायणीकहिंकेशवबुडि

जाहिबरु । भृगुनंदसँभारुकुठारमैंकियोशरासनयुक्तशरु ॥ ॥ ४३ ॥ स्वागताछंद ॥ रामरामजबकोपकरचोजू ॥ लोक लोकभयेभूरिभरचोजू ॥ वामदेवतबआपुनआये । रामदेव दोऊसमुझाये ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ महादेवकोदेखिकै, दोऊरा-मविशेष ॥ कीन्होंपरमप्रणामउन, आशिषदियोअशेष ॥ ॥ ४५ ॥ महादेव-चतुष्पदी ॥ भृगुनंदनसुनियेमनमहँगुनि-येरघुनंदन निर्दोषी। निजयेअविकारीसबसुखकारीसबहीविधि संतोषी ॥ एकैतुमदोऊऔरनकोऊएकैनामकहायो । आयु-बॅलखूट्योधनुषजोटूट्योमैंननमनसुखपायो ॥ ४६ ॥ महा-देव-पद्धटिका छंद ॥ तुमअमलअनंतअनादिदेव । नहिंवे-दबखानतसकलभेव ॥ सबकोसमाननाहिंबैरनेह । सबभक्त नकारनधरतदेह ॥ ४७ ॥

टी०-जब गुरुजे विश्वामित्रहैं तिनकी निंदा करचो तब रामचन्द्र कोप करिकै बोले ईश महादेव आसन योगासनते चालै कहे चले सबही कहे सर्वत्र अर्थ चौदहों लोकमें ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ निर्दोषी हैं अर्थ धनुष तोरनेमें इनको कछू दोष नहींहै औ अविकारी कहे माया कृत विकार रहित हैं यासों या जनायो कछू द्रोहादिसों धनुष नहीं तोरचो औ संतोषी कहि या जनायो कि इनके कछू इच्छा नहीं है दुवो गुणनसों या जनायो ईश्वर हैं ॥ ४६ ॥ द्वै छंदको अन्वय एक है महादेव परशुरामसों कहतहैं कि तुम अमल कहे माया विकार रहित औ अनंत जाको अन्त नहीं है कि ये तो है औ अनादि कहे जाकी आदि नहीं कोऊ जानै कि कबसों है ऐसे देव हौ अर्थ परब्रह्म हौ औ तुम्हारो सब भेद कहे भेद वेद नहीं बखानि सकत अर्थ वेदहू नहीं जाको प्रमाण यावत् सब प्राणिनको समानहौ काहू को स्वाभाविक वैर औ स्नेह तुम्हारे नहींहै केवल प्रह्लादादि जे भक्त हैं तिनके हेतु देह धरि दुःख दूरि करत हौ यासों भक्तवत्स-लता जनायो आपनपौ पहिंचानि कै कि हम औ ये एकही हैं यह जानिकै इनके हाथ मों होनहार जो रावणादि वध आगिलो काज है ताको करौ तब महा

देवके वचनसों जानिकै ये नारायण हैं यह जानिकै नारायणको धनुष परशुराम पै रह्यो सो रामचंद्रको दियो ॥ ४७ ॥

मूल—अबआपनपैांपाहिंचानिविप्र । सबकरहुआगिलो काजक्षिप्र ॥ तवनारायणकोधनुषजानि ॥ भृगुनाथदियोरघुनाथपानि ॥ ४८ ॥ मोटनकछंद ॥ नारायणकोधनुबाण लियो । ऐंच्योहँसिदेवनमोदकियो ॥ रघुनाथकहेउअबकाहि हनो । त्रैलोक्यकँप्योभयमानिघनो ॥ ४९ ॥ दिग्देवदहेबहुबातबहे । भूकम्पभयेगिरिराजढहे ॥ आकाशविमानअमानछये । हाहासबहींयहशब्दरये ॥ ५० ॥ परशुराम—शशिबदनाछंद ॥ जगगुरुजान्यो । त्रिभुवनमान्यो ॥ ममगति मारौ । हृदयबिचारौ ॥ ५१ ॥

टी०—॥ ४८ ॥ द्वै छंदको अन्वय एक है ॥ ४९ ॥ ५० ॥ त्रिभुवनमें मान्यो अर्थ जाको तीनों भुवनमानतहैं पूजतहैं औ जगतके गुरु जो ईश्वर हैं सो हम तुमको जान्यो अर्थ तुम ईश्वर हौ ताते और सबको निर्दोष हमको सदोष विचारि हमारी सुर पुरकी गति मारो ॥ ५१ ॥

मूल—दोहा ॥ विषयीकीज्योंपुष्पशर, गतिकोंहनतअनंग । रामदेवत्योंहींकियो, परशुरामगतिभंग ॥ ५२ ॥ चतुष्पदीछंद ॥ सुरपुरगतिभानी शासनमानी भृगुपतिको सुखभारो । आशिपरसभीने सबसुखदीने अबदशकंठहिमारो ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ सोवतसीतानाथके, भृगुमुनिदीन्हीं लात । भृगुकुलपतिकीगतिहरी, मनोसुमिरिवहबात ॥ ५४ ॥ मधुभारछन्द ॥ दशरथजगाइ । संभ्रमभगाइ । चलिरामराइ । दुंदुभिबजाइ ॥ ५५ ॥ सवैया ॥ ताडकातारिसुबाहुसँहारिकै गौतमनारिकेपातकटारे । चापहत्योहरकोहँसिकै सबदेवअदेव

हुतसःहारेसीताहिव्याहिअभीतचल्योगिरिगर्वचढेभृगुनंदउतारे। श्रीगरुडध्वजकोधनुलैरघुनन्दनऔधपुरीपगुधारे ॥ ५६ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणि-श्रीरामचन्द्रचन्द्रिकाया-मिंद्रजिद्विरचितायां परशुरामसंवादवर्णनं नाम सप्तमः प्रकाशः ॥ ७ ॥

टीका-॥ ५२ ॥ सब जे देवऋषि आदिहैं तिनका सुख दान अबदशकंठको मारौ ऐसी जो परशुराम कृत आशिष है ताके रसमें भीने ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ परशुरामके भयसों मूर्च्छाको प्राप्त जे दशरथ हैं तिनको जगाइकै औ परशुराम हारिकै गये यह कहि संभ्रम भगाइकै ॥ ५५ ॥ गर्वके गिरिपरचढे रहे तासों उतारयो अथवा गर्वका गिरि सोई परशुराम पर चढो रहै सो उतारो ॥ ५६ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसाद निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां सप्तमः प्रकाशः ॥ ७ ॥

मू०-दोहा ॥ यहप्रकाशअष्टमकथा, अवधप्रवेशबखानि । सीतावरण्योदशरथहि, औरबंधुजनमानि ॥ १ ॥ सुमुखीछंद ॥ सबनगरीबहुशोभरये । जहँतहँमंगलचारठये ॥ बरणतहैंकविराजबने । तनमनबुद्धिविवेकसने ॥ २ ॥ मोटनकछंद ॥ ऊंचीबहुवर्णपताकलसैं । मानोपुरदीपतिसीदरसैं ॥ देवीगणव्योमविमानलसैं । शोभैतिनकेमुखअंचलसैं ॥ ॥ ३ ॥ दोहा ॥ कलभनलीनेकोटपर, खेलतशिशुचहुँवोर । अमलकमलऊपरमनो, चंचरीकचितचोर ॥ ४ ॥ कलहंस छंद ॥ पुरआठआठदरबारविराजैं । युतआठआठसैनापति राजैं ॥ रहैंचारिचारिघटिकापरिमानै । घरजाहिंऔरजबआवतजानै ॥ ५ ॥

टी०-मंगलाचार बंदनवारादि ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ कलभ छोटे हाथी कमल सदृश कह्यो तासों पद्माख्य कोट जानो ताको भेद आगे कहिहैं ॥ ४ ॥ पुर

कहे अग्रभाग जे पुरीके आठहैं ॥ तिनमें आठ दरबार कहे सभा विराजत हैं अर्थ आठ प्रकारके कोट होतहैं यथा नरपतौ। "अतिदुर्ग कालवर्म चक्रावर्त च डिंबुरम्। तटावर्तच पद्माख्यं यक्षभेदं च सार्वगम्। कोटचक्रं प्रवक्ष्यामिविशेषादष्टधा-च तत्" ॥ सो जैसे एक और पद्माख्य कोटदेख्यो तैसे पुरीके आठहू ओर शहर पनाहमें आठहू प्रकार के कोटबनेहैं तिनमें राजाके आठ मंत्रीहैं। यथा वाल्मीकीये-"धृष्टिर्जयंती विजयः सिद्धार्थोत्यर्थसाधकः। अशोको मंत्रपालश्च सुमंतश्चाष्टमो महान्"। ते मंत्री तिन कोटनमें आठहू दिशनके प्रजान संग सभा करतहैं अथ तिनमें बैठि आठहू दिशन को मामलो करतहैं अथवा दरबार कहे मुख्यद्वार पुरद्वार इति अर्थ—पुरीके शहरपनाह में आठहू दिशन में आठद्वार बनेहैं यथा कविप्रियायां। "नीके कै कवार देहौं द्वारद्वार दरबार केशोदास आस पास शूर जौन छावैगो" ॥ ५ ॥

मू०–दोहा ॥ आठोंदिशिकेशीलगुण, भाषोंवेषविचार ॥ वाहनवसनविलोकिये, केशवएकहि बार ॥ ६ ॥ कुसुमविचित्राछंद ॥ अतिशुभबीथीरजपरिहरे। चंदनलीपीपुष्पनिधरे ॥ दुहुँदिशिदीसतसुवरणमये। कलशविराजतमणिमयनये ॥ ७ ॥ तामरसछंद ॥ घरघरघंटनकेरवबाजैं। विचविचशंखरुझालरिसाजैं। पटहपखाउजआवझसोहैं। मिलिलइनाइनसों मनमोहैं ॥ ८ ॥ हीरकछंद ॥ सुंदरिसबसुंदरप्रतिमंदिरपर योंबनी। मोहनगिरिशृंगनपरमानहुँमहिमोहनी ॥ भूषनगन भूषिततनभूरिचित्तनचोरहीं। देखतिजनुरेखतितनुबाननयनकोरहीं ॥ ९ ॥ सुंदरीछंद ॥ शंकरशैलचढीमनमोहति। सिद्धनकीतनयाजनुसोहति ॥ पद्मनऊपरपद्मिनिमानहुँ। रूपनऊपरदीपतिजानहुँ ॥ १० ॥

टी०–॥ ६ ॥ यामें चौकीदार सेनापतिनकी रीति कहतहैं कि आठों दिशिके चौकीदारन के शील कहे स्वभाव गुण शूरता आदि औ भाषा कहे बोली चौकी समयकी चौकीदारन की बोली भिन्नहै औ वेष कहे देहकी उच्चता

स्खलना आदि औ विचार औ वाहन गज अश्वरथादि वसन श्याम श्वेत पीतादि एकहि वार कहे एकहि तरह विलोकियत हैं जा वेषसों जा पहरकी चौकी जैसे सेनापतिकीहैं तसी आठहू ओर की है इति भावार्थः॥अथवा जा पुरीमें आठौं दिशिके शील आदि एकही वार एकही समय विलोकियतहैं यासों या जनायो कि आठौं दिशिके राजा जा पुरमें हाजिर रहत हैं औ आठौं दिशिके प्राणी जापुर में बसत हैं वीथी गली ॥ ७ ॥ ८ ॥ प्रतिमंदिर कहे अपने अपने मंदिरन पर वगत को कौतुक देखिबेको सुंदरी कहे स्त्री चढीहैं मोहनारि सदृश कहि अति सुंदर मंदिर जनायो जब देखती हैं तब बाणसम जे नयन कोर हैं तिनसों मानो तनको देखती हैं कहे वेधती हैं ॥ ९ ॥ सिद्धदेव योनि विशेष हैं पद्मिनी कमलिनी रूपसौंदर्य्य कैलास औ पद्म औ रूप सम गेह है सिद्धतनया कमलिनी दीपति सम स्त्री हैं ॥ १० ॥

मूल-कीरतिश्रीजयसंयुतसोहति । श्रीपतिमंदिरकोमन मोहति ॥ ऊपरमेरुमनोमनरोचन । स्वर्णलताजनरोचतिलोचन ॥ ११ ॥ विशेषकछंद ॥ एकलियेकरदर्पणचंदनचित्र करे । मोहतिहैमनमानहुँचांदनिचंदधरे ॥ नैनविशालनिअंबरलालनिज्योतिजगी ॥ मानहुँरागनिराजतिहैअनुरागरँगी ॥ १२ ॥ नीलनिचोलनकोपहिरेयकचित्तहरे । मेघनकीद्युतिमानहुँदामिनिदेहधरे ॥ एकनकेतनसूक्षमसारिजरायजरी । सूरकरावलिसीजनुपद्मिनिदेहधरी ॥ १३ ॥ तोटकछंद ॥ बरषैकुसुमावलिएकघनी । शुभशोभनकामलतासिबनी ॥ बरषैफलफूलनलायककी । जनुहैतरुणीरतिनायककी ॥ १४ ॥

टी०-कि जय संयुत कीर्त्ति है जयसम गेहहै कीर्तिं सम स्त्री है कि पतिके विष्णु के मंदिर में श्रीलक्ष्मी है कि मन रोचन कहे सुंदर अनेक मेरु सुमेरु पर स्वर्णलता हैं रोचति कहे नीकी लागति हैं लोचननि की ॥ ११ ॥ मानो चन्द्रमाके मन को चांदनी मोहती है चंद्र सरिस दर्पणहै चांदनी सरिस चंदन चर्चित स्त्रीहैं नयन हैं विशाल जिनके ऐसी जे स्त्रीहैं तिनके अंबर वस्त्र लालनकी शोभा

जगीहै रागिनी मम स्त्री हैं अनुराग प्रेम मम वस्त्र हैं प्रेमको रंग अरुण है॥ १२॥ मेघ द्युति मम श्यामवस्त्र है दामिनी मम स्त्री है पद्मिनी कमलिनी सम स्त्रीहैं सुरकगावलि सम जगयजरी मार्गहै ॥ १३ ॥ फलपूगी फलादि ॥ १४ ॥

मू०--दोहा ॥ भीरभयेगजपरचढे, श्रीरघुनाथविचारि ॥ तिनहिंदेखिबरणतसबै, नगरनागरीनारि ॥ १५ ॥ तोटक छंद ॥ तमपुंजलियोगहिभानुमनो । गिरिअंजनऊपरशोमभनो ॥ मनमत्थ विराजतशोभतरे । जनुभासतलोभहिदान करे ॥ १६ ॥ मरहट्टाछंद ॥ आनंदप्रकासीसबपुरबासीकरत नेदौरादौरी । आरतीउतारैंसरबसवारैंअपनीअपनीपौरी ॥ पढिमंत्रअशेषनि करिअभिषेकनिआशिषदैसविशेष । कुंकुमकर्पूरनिमृगमदचूरनिवर्षतिवर्षावेष ॥ १७ ॥ आभीरछंद । यहिविधिश्रीरघुनाथ । गहेभरतकोहाथ ॥ पूजत लोग अपार । गयेराजदरबार ॥ १८ ॥ गयेएकहीबार । चारोंराजकुमार ॥ सहितवधूनिसनेह ॥ कौशल्याकेगेह ॥ ॥ १९ ॥ त्रिभंगीछंद ॥ बाजेबहुबाजैंतारनिसाजैंसुनिसुरलाजैं दुखभाजैं। नाचैंनवनारीसुमनशृंगारीगतिमनुहारीसुखसाजैं॥ बीनानिबजावैंगीतनिगावैंमुनिनरिझावैंमनभावैं । भूषणपट दीजैसबरसभीजैदेखतजीजैछविछावैं ॥ २० ॥

टीका—ताही क्षण गजपर चढे राम ऐसे शोभित भये तमपुंज मानो भानु सूर्यको गहि लियो अथवा तम पुंजही को मानो भानु गहि लियो जानो लोभहि तरेको दान भासत है तरे पदको संबंध याहूमें हैं औ कहूं यह पाठहै जनु राजत काम शृंगार तरे नो शृंगार है तरेजाके ऐसो मानो काम राजत हैं भानु औ चंद्रमा औ शोभा औ दान सम रामचन्द्रहैं तम पुंज औ अंजनगिरि औ मन्मथ औ लोभसम गजहैं ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ तार कहे उच्च स्वरको साजतहैं ॥ "तारो निर्मलमौक्तिके मुक्तासुद्धावुच्चनादे" इत्यभिधानचिंतामणिः ॥

नमकहे प्रेम में भीजे जे सब पुरवारीहिं तिन करिकै भूषण पट दीजे कहे दीजि-यत हैं अर्थ प्रेमसों युक्त सब भूषण पटदान करत हैं ॥ २० ॥

मू०-सोरठा ॥ रघुपतिपूरणचंद, देखिदेखिसबसुखमढैं ॥ दिनदूनेआनंद, तादिनितेतेहिपुरबढ़ैं ॥ २१ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्र-जिद्विरचितायांरामस्यायोध्यानगरप्रवेशोनामाष्टमः प्रकाशः ॥ ८ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्र-सादनिर्मिताया रामभक्तिप्रकाशिकायामष्टम प्रकाशः ॥ ८ ॥

मू०-दोहा ॥ यहप्रकाशनवमेंकथा, रामगमनबनजानि ॥ जनकनंदिनीको सुकृत, वर्णन रूप बखानि ॥ १ ॥ रामचंद्र लक्ष्मणसहित, घरराखेदशरत्थ ॥ बिदाकियोननसारको,सँग शत्रुघ्नभरत्थ ॥ २ ॥ तोटकछंद ॥ दशरत्थमहामनमोदरये । तिनबोलिवशिष्ठहिंमंत्रलये ॥ दिनएककहोशुभशोभरयो । हमचाहत रामहिंराजदयो ॥ ३ ॥ यहबातभरत्थकीमातसुनी। पठऊंबनरामहिंबुद्धिगुनी ॥ तेहिमंदिरमेंनृपसोंबिनयो । वरदेहुहतोहमकोजोदयो ॥ ४ ॥ नृपबातकहीहँसिहेरिहियो । बर मांगिसुलोचनिमैंजोदियो ॥ कैकेयी ॥ नृपतासुविशेशिभरत्थ लहैं । बरषैबनचौदहरामरहैं ॥ ५ ॥

टीका-॥ १ ॥ २ ॥ शोभरयो राजाको बिशेषणहै ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥

मू०-पद्धटिकाछंद ॥ यहबातलगीउरवज्रतूल । हियफाट्योज्योंजीरणदुकूल ॥ उठिचलेविपिनकहँसुनतराम । तजि तातमाततियबंधुधाम ॥ ६ ॥ हरिलीलाछंद ॥ छूटेसबै सबनिकेसुखक्षुत्पिपास । विद्धद्विनोदगुणगीतबिधानवास ॥

ब्रह्मादिअंत्यजनअंतअनंतलोग । भूलेअशेषसविशेषनिराग भोग ॥ ७ ॥ मौक्तिकदामछंद ॥ गयेतहँरामजहांनिजमात । कहीयहबातकिहौंवनजात । कछूजनिजोदुखपावहुमाइ । सोदेहुअशीषमिलौंफिरिआइ ॥ ८ ॥ कौशल्या ॥ रहौचुपह्वैसुत क्योंवनजाहु । नदेखिसकैतिनकेउरदाहु ॥ लगीअबबापतुम्हारेहिवाइ । करैउलटीविधिक्योंकहिजाइ ॥९॥ राम-ब्रह्मरूपकछंद ॥ अन्नदेइसीखदेइराखिलेइप्राणजात । राजबापमोललैकरैजोदीहपोपिगात ॥ दासहोइपुत्रहोइशिष्यहोइकोइमाइ । शासना न मानई तौ कोटिजन्मनर्कजाइ ॥ १० ॥

टी०--जीर्णकहे पुरानीराजिचले पदते इहां मानसिक त्याग जानो ॥ ६ ॥ सुतकहे सुवा विद्वद्विनोद कहे शास्त्रार्थ गुणशास्त्र विद्यादि गीतविधान गाइबो वासघर अथवा वस्त्रब्रह्महिआदि दैकै अंत्यज जे चांडालहैं तिन पर्यन्त जे अनंत लोगहैं तिनको अशेषराग प्रेम औ भोग नाविशेषण भूले अर्थ अत्यन्त भूले यद्यपि रामवन गमन सों ब्रह्मादि देवन को रावण वधादि हित कार्य ह्वै है परंतु अनवसर विलोकि तिनहूंको दुःख भयो ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ अन्नदाता औ शिषदाता औ कहूं प्राण जात होइ ता भय सों रक्षक औ राजा औ बाप औ जो मोल लैकै पोषिकै गातकहे बड़े करै अर्थ जो मोललै पालन करै ई जे छः हैं तिनके दास औ पुत्र औ शिष्य औ काहू कहूं औरौ कोऊ होइ अर्थ अन्नग्राहक प्राण रक्षित औ प्रजा जे छः हैं ते आज्ञा को नामानैं तो कोटि जन्म नर्क नरक जाईं या जनायो कि एक तो राजा हैं दूसरे पिताहैं तासों विशेषि कै आज्ञामानि हमको वन जैबो उचित है ॥ १० ॥

मूल-कौशल्या-हरनीछंद ॥ मोहिंचलौवनसंगलियें । पुत्र तुम्हैंहमदेखिजियैं ॥ अवधपुरीमहँगाजपरै । कैअबराजभरत्थकरै ॥ ११ ॥ राम-तोमरछंद ॥ तुमक्योंचलोवनआजु । जिनशीशराजतराजु ॥ जियजानियेपतिदेव । करिसर्वभाँति

नसेव ॥ १२ ॥ पतिदेइजोअतिदुःख । मनमानिलीजैसुःख ॥ सबजक्तजानिअमित्र । पतिजानिकेवलमित्र ॥ १३ ॥ अमृतगतिछंद ॥ नितपतिपंथहिचलिये । दुखसुखकोदलुदलिये तनमनसेवहुपतिको । तबलहियेशुभगतिको ॥ १४ ॥ स्वागताछंद ॥ योगयागब्रतआदिजोकीजै । न्हानगानगनदान जो दीजै ॥ धर्म कर्मसबनिष्फलदेवा । होहिंएकफलकैपति सेवा ॥ १५ ॥

टी०–तुम क्यों चलौ बन इत्यादि दश छंदनमें पातिब्रत धर्म सुनाइ रामचन्द्र माता को बोध करत हैं राजकहे राजा दशरथ अथवा राजस्त्रिन करिकै केवल पतिही को देवजानिये कहे जानो चाहिये ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ पतिही स्त्रिन करिकै नित्यप्रति पथ कहे सुराहशास्त्रोक्तपतिब्रतनकी रीति इति तामें चलिये या प्रकार सुख औ दुःख के दल कहे समूह को दलिये कहे बिताइये औ तन औ मन सों केवल पतिही को सेवहु कहे सेवन करिये तब शुभगति को पाइये कछू सुख दुख परै तामें स्त्रीको पतिही की सेवा करिबो उचित है और उपाय करिबो उचित नहीं है इति भावार्थः ॥ १४ ॥ देव कहे देवता अर्थ देवपूजा ॥ १५ ॥

मू०–तातमातुजनसोदरजानौं । देवरजेठसगे सो बखानौं ॥ पुत्रपुत्रसुतश्रीछबिछाई । है बिहीनभरतादुखदाई ॥ १६ ॥ कुंडलिया ॥ नारीतजैनआपनो, सपनेहूंभरतार ॥ पंगुगुंगुबौराबधिर, अंधअनाथअपार ॥ अंधअनाथअपारवृद्धबावनअतिरोगी बालकपंडुकुरूपसदाकुवचनजडयोगी ॥ कलहीकोढीभीरुचोरज्वारी व्यभिचारी । अधमअभागीकुटिलकुपतिपतितजैननारी ॥ १७ ॥ पंकजवाटिकाछंद ॥ नारितजैनमरेभरतारहि । तासंगसहतिधनंजयझारहिं ॥ जीकेहूंकरतारजिआवत । तौताकोयहबातसुनावत ॥ १८ ॥ निशिपालिकाछंद ॥ गानविनमानविनहासविनजीवहीं । तप्त

नहिंखाइजलशीतलनपीवहीं । तेलतजिखेलतजिखाटतजि सोवहीं । शीतजलन्हाइनहिंउष्णजलजोवहीं ॥ १९ ॥

टी०—पुत्र सुत पौत्र ॥ १६ ॥ पंडु पिंडरोगी योगी विरक्त भीरु कादर कुपति निर्लज्ज अथवा नपुंसक ॥ १७ ॥ धनंजय कहे अग्नि की झाग महनिहं अर्थ सती होति हैं जो काहू प्रकार कर्तार जिआवै अर्थ पतिके संग ना जर्यो जाइ तौ तिन तिनके लिये यह बात है सो हम तुमको सुनावत हैं सो गान बिन इत्यादि द्वैछंदमों आगे कहत हैं ॥ १८ ॥ द्वैछंद को अन्वय एक है जल शीतल न पीवहीं अर्थ सीरो करिके जल न पीवें जैसो होइ तैसो पीवें शीत जलमें न्हाइ या जनायो कि गरम जल करि स्नान ना करै जा समय जैसे पीवें तैसे में स्नान करै काय मन वाचा सब धर्म करिबो करैं अर्थ ये जे सब धर्म हैं तिनको मनसा वाचा कर्मणासे करैं अथवा और जे सब धर्मदानादि हैं तिनहुंन को करे कृच्छ्र उपवास कृच्छ्र-चांद्रायणादिसो जबलों तनको अतीत कहे छांडें अर्थ मरे तबलों पुत्रकी शिष में लीन रहे पुत्र की आज्ञामें रहे यामें त्रिकाल दर्शी जे रामचंद्र हैं तिन अपने वियोग सों पिताको मरण निश्चय करि पति व्रतन को धर्म सुनाय माताको बोध करि युक्ति सों विधवा स्त्री को उचित धर्म सिखायो ॥ १९ ॥

मू०—खायँमधुरान्ननहिंपायपनहींधरैं । कायमनवाचसबधर्मकरिबोकरैं॥कृच्छ्रउपबाससबइंद्रियनिजीतहीं ॥ पुत्रशिपलीनतनजौलगिअतीतहीं ॥ २० ॥ दोहा ॥ पतिहितपितुपरतनु तज्यो, सतीसाखिदैदेव ॥ लोकलोकपूजितभई, तुलसीपतिकी सेव ॥ २१ ॥ मनसावाचाकर्मणा, हमसोंछाँडोनेहु । राजाको विपदापरी, तुमतिनकीसुधिलेहु ॥ २२ ॥ पद्धटिकाछंद ॥ उठिरामचन्द्रलक्ष्मणसमेत । तबगयेजनकतनयानिकेत ॥ सुनुराजपुत्रिकेएकबात । हमबनपठयेहैंनृपतितात ॥ २३ ॥ तुमजननिसेवकहँरहहुबाम । कैजाहुआजुहीजनकधाम॥सुनि चन्द्रबदननिगजगमनिऐनि ।मनरुचैसोकीजैजलजनैनि॥२४॥

सीताजू-नाराचछंद ॥ नहौंरहौंनजाहुजूविदेहधामकोअबै।कही जोवातमातुपैसोआजुमैंसुनीसबै॥लगैक्षुधाहिमाभलीबिपत्तिमां झनारिये । पियासत्रासनीरबीरयुद्धमेंसम्हारिये ॥ २५ ॥

टी०-॥ २० ॥ सती की औ तुलसी की कथा प्रसिद्ध है ॥ २१ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ जननि कौशल्या ऐनि कहे हे सुन्दरि ॥ २४ ॥ कि स्त्रीको पतिहि कि सेवा उचित है यह वात जो माता सों तुमकह्यो है सो हम सब सुन्यो है यासों या जनायो कि तुम्हारी सेवा छाँडि हम कैसे घर में रहैं क्षुधामें माता भली लगतिहै पोषण करिबो मुख्य धर्म माताकोहै तासों यथाकवि प्रियायां माता जिमि पोषति पिता जिमि प्रतिपाल करै औ विपत्तिमें नारियै कहे स्त्रीही भली लागति है जो अनेक प्रकारसों शुश्रूषा करि मन को बहरावतिहै औ पियास की त्रास समय नीर भलो लागतहै औ युद्धमें वीर जो योद्धा है तिन को सँभारिये यहै भलो लागत है अर्थ अनेक वीरनको सँभारिबो एकत्र करिबो अथवा सावधान करिबोई भलो लागत है यह कहि या जनायो कि यह तुम्हारो विपत्तिको समय है तासों तुम्हारे संग हमको चलिबो विशेषि है ॥ २५ ॥

मू०--लक्ष्मण-सुप्रियाछंद ॥ वनमहँविकटविविधदुखसुनि- ये । गिरिगहवरमगअगमकेगुनिये ॥ कहुँअहिहरिकहुँनिशिच- रचरहीं । कहुँदवदहनदुसहदुखदहहीं॥२६॥सीताजू-दंडक ॥ केशोदासनींदभूखप्यासउपहासत्रासदुखकोनिवासाविषमुखहू गह्योपरै । वायुकोबहनदिनदावाकोदहनबडीवाडवाअनलज्वा- लजालमेंरह्योपरै । जीरनजनमजातजोरजुरघोरपरिपूरणप्रकट परितापक्योंकह्योपरै । सहिहौंतपनतापपतिकेप्रतापरघुवीरको विरहवीरमोसोंनसह्योपरै ॥ २७ ॥

टी०-दवदहन कहेदावाग्नि-॥ २६ ॥ दुखको निवास जो विष है सो मुखमें गह्यो परत है अर्थ विष खायो जात है जीर्ण कहे जर्जर अर्थ थोडी है मर्यादा जाकी ऐसो जो जन्म है सो जातु कहे जाउ अर्थ कि मृत्यु होय औ घोर जो ज्वरहै औ परिपूर्ण कहे दैहिक दैविक भौतिक तीनों प्रकार की जो

परितापहै कैसी परिताप कि क्यों कह्यो परै अर्थ जो काहू विधि सों नहीं कह्यो जात अति बडो इति ये सब पतिके प्रतापसों सहिहौ जो परके प्रताप पाठ होय तौ पर जे शत्रु हैं तिनकेप्रतापसहिहौ अर्थ शत्रुकृत दुःख सहिहौं ॥ २७ ॥

मू०--रामविशेषक--छंद ॥ धाम रहौ तुमलक्ष्मण राजकि सेव करौ। मातनिके सुनि तातसो दीरघ दुःखहरौ॥आइ भरत्थ कहाधौं करै जियभायगुनौ । जोदुखदेइँतोलैउरगौयहबात सुनौं ॥२८॥ लक्ष्मण--दोहा ॥ शासनमेटीजायक्यों, जीवन मेरे हाथ ॥ ऐसीकैसेबूझिये, घरसेवकवननाथ ॥२९॥ द्रुतविलंबितछंद ॥ विपिनमारगरामविराजहीं । सुखदसुन्दरिसोदरभ्राजहीं ॥ विविधश्रीफलसिद्धिमनोफल्यो । सकलसाधनसिद्धिहिलैचल्यो ॥ ३० ॥ दोहा ॥ रामचलतसबपरचल्यो, जहँ तहँसहितउछाह ॥ मनोभगीरथपथचल्यो, भागीरथीप्रवाह ॥ ३१ ॥ चंचलाछंद ॥ रामचन्द्रधामतेचलेसुनेजबैनृपाल । बातकोकहे सुनेसोह्वैगयेमहाविहाल ॥ ब्रह्मरंध्रफोरिजीवयोंमिल्योविलोकिजाइ । गेहचूरिज्योंचकोरचंद्रमेंमिलेउडाइ॥३२॥

टी०--उरगौ कहे वितावो अथवा हे माइ ! जो भरत तुमको दुःख देहै तौ लै कहे अंगीकारकरिकै उरमें गुनौं अर्थ समय पाय ताको फलदेवेके लिये समुझि राखौगौ यह बात सुनौ अर्थ गौंकी जो यह बात है सो सुनो ॥ २८ ॥ यामें या जनायो कि जो मैं इहां रहिबोऊकरौं तो जीव तुम्हारे संग जैहै॥२९॥ विपिन कहे वन भ्राजहीं कहे शोभहीं विविध कहे अनेक प्रकार की श्रीफल कहे शोभा फलकी जो सिद्धि कहे वृद्धि है "सिद्धिः स्त्रीयोगनिष्पत्तिपादुकतांर्द्धिवृद्धिषु"। इति मेदिनी ॥ तासों फल्यो जो सिध्यहै सिद्धति शेषः सकल साधन कहे ध्यानादि औ सकल सिद्धिः कहे अणिमादिकनको लैकै चल्योहै तौ जप योग ते वडी शोभा को प्राप्त सिद्धरूप रामचंद्र है सकल साधनरूप लक्ष्मण हैं अष्टसिद्धि रूप

सीताहैं औ कहूं सिद्धि मनो फल्योपाठ है सो अर्थ खुल्यो है ॥३०॥ उछाह जो आनंदहै तेहिते सबपुर चल्यो कहे सब पुरवासी चले तो या जानो पुरीमें उछाहहु रामहीं के साथ चलो गयो ॥ ३१ ॥ गेहु कहे पिंजरा ॥ ३२ ॥

मू०-चित्रपदाछंद ॥ रूपहिदेखतमोहैं । ईशकहौनरकोहैं ॥ संभ्रमचित्तअरूझै । रामहियोंसबबूझै ॥ ३३ ॥ चंचरीछंद ॥ कौनहौकितते चलेकितजातहौकेहिकामजू । कौनकीदुहिताबहूकहिकौनकीयहवामजू ॥ एकगाँवउरहौकिसाजनमित्रबंधुबखानिये । देशकेपरदेशकेकिधौंपंथकीपहिचानिये ॥ ३४ ॥ जगमोहनदंडक ॥ किधौंयहराजपुत्रीबरहींवयोहैकिधौंउपधिबरचोहै यहिशोभाअभिरतहौ। किधौंरतिरतिनाथजससाथकेशोदासजाततपोवनशिववैरसुमिरतहौ । किधौंमुनिशापहतकिधौंब्रह्मदोषरत किधौंसिद्धियुतसिद्धपरमविरतहौ । किधौंकोऊठग हौठगोरीलीन्हेकिधौंतुमहरिहरश्रीहौशिवाचाहतफिरतहौ ॥ ३५ ॥

टी०-सब जगके प्राणी तिनहुनकी सुंदरता देखि कै मोहत हैं सो मनमें कहत हैं कि हे ईश ! हे भगवन् ! ये कोहैं या प्रकार संभ्रममें सबके चित्त अरुझत हैं तब रामहीं सों या प्रकार सब बूझैं कहे पूंछत हैं सो आगे कहत हैं ॥ ३३ ॥ बहू पुत्रवधू साजन कहे स्वामी ॥ ३४ ॥ कि यह जो स्त्री है सो राजपुत्री है ताको बरहीं कहे जबरईसों बरचो है कहे विवाह्यो है अथवा यह जो राजपुत्री है ताहीं माता पिताकी आज्ञा मेटिकै अपनी इच्छासों तुमको जबरईबरचो है कि तुम याको उपधि कहे छलसों बरचो है ॥ "कपटोस्त्री व्याजदम्भोपधयश्छद्मकैतवे" इत्यमरः ॥ ऐसी शोभासों अभिरत कहे युक्त हौ काहे ते कि जो तुमको तपस्वी जानि राजा अपनी इच्छासों विवाहदे तौ तुम्हारे आश्रमपर्यन्त आपने लोग संग करिदेते सोनहीं हैं तासों यह जानि परत है कि ताही राजाके भयसों बनको भागे जात हौ इति भावार्थः ॥ जब संसार जीत्यो है ताको यश रूप लक्ष्मणहैं शिवजी नयनकी आगिसों जारचो ता बैरको सुमिरतको शिवसे लरिबेको जात हौ अथवा शिवके बैर को सुमिरत हौ तासों तपोवन-

में तप करिवेको जात हौ जासों वडो तप करि तपोवलसों शिवको जीते कि सिद्धि तप सिद्ध अथवा मुक्ति तासों युक्त तुम परम विरत सिद्ध हौ परम विरत कहि या जनायो कि संसारसों अति विरक्त ह्वै अति वडो तप कर्‍यो है यासों देह धरि सिद्धि तुम्हारे संगसंग फिरतिहै ॥ " सिद्धिस्तुमोक्षेनिष्पत्तियोगयोरित्यभिधानचिन्तामणौ " ॥ कि हरि औ हर औ श्रीलक्ष्मी हौ शिवा जो पार्वती हैं तिन्हैं चाहत कहे ढूंढत फिरत हौ ॥ ३५ ॥

मू०-मत्तमातंगलीलाकरनदंडक । मेघमंदाकिनीचारुसौदामिनीरूपरूरेलसैंदेहधारीमनो । भूरिभागीरथीभारतीहंसजाअंशकेहैंमनोभागभारेमनो ॥ देवराजालियेदेवरातीमनोपुत्रसंयुक्तभूलोकमेंसोहिये । पक्षदूसंधिसंध्यासधीहैमनोलक्षियेस्वच्छप्रत्यक्षहीमोहिये ॥ ३६ ॥

टी०-मेघ औ मंदाकिनीआकाशगंगा औ सौदामिनीकहेबिजुली ये तीनौं देहधारी मानो रूरेकहे सुंदर रूपकहे वेषसों लसत हैं अथवा रूरेकहे विमल जो रूपसौंदर्यहै तेहिकरिकै देहधारी लसै कहे शोभितहैं यासों या जनायो कि मेघादिक तीनों जब सुंदरतासों मिलिकै रूप धरैं तब रामादिकनके रूपसम होइ कि मानो भागीरथी गंगा औ भारती सरस्वती औ हंसजा यमुना तिनके जे हैं भूरि कहे संपूर्ण अंश कहे भाग तिनहिंनके भारे भाग कहे भाग्य भनौ कहे कहियत हैं अर्थ भागीरथी भारती हंसजाके अंशनके वडे भाग हैं जिन ऐसे सुंदर रूप पाये हैं भागीरथीके पूर्णांशावतार रूप लक्ष्मण हैं भारतीके पूर्णांशावतार रूप सीता हैं यमुनाके पूर्णांशावतार रूप रामचन्द्र हैं देवराजको पुत्र जयंत औ की दू कहे दूनौ कृष्णपक्ष तिनकी संधिमें स्वच्छ संध्या सधी है स्थित है जाको प्रत्यक्ष ही लक्षिये कहे देखियत है औ शोभा सों मोहियत है कृष्णपक्षरूप राम हैं शुक्लपक्ष रूप लक्ष्मणहै संध्यारूप सीताहैं अथवा दूनों जे पक्ष हैं तिनमें संधि कहे मध्य है तौ शुक्लादि गणना सों दुवौ पक्षनको मध्य पूर्णिमा है तौ संधिपदते पूर्णिमा जानौ याहूमें पूर्णिमारूप सीता हैं दुवौ पक्षरूप राम लक्ष्मण हैं औ तीनों संध्या परस्परसधी हैं अर्थ कि एकत्र हैं प्रातःसंध्या रक्त है मध्याह्न संध्या शुक्ल है सायंसंध्या श्याम है यथा सामसंध्यायाम् ॥ "पूर्व संध्यातुगायत्री रक्तांगीरक्तवाससा ॥ १ ॥ मध्याह्नेतुयासंध्या श्वेतांगीश्वेतवाससा ॥ २ ॥

अपराह्ने तु या संध्या कृष्णांगीकृष्णवाससा" ॥ कतहूं संध संध्या संधी या पाठ है तौ दुवौ पक्षनके संध कहे साथ संध्या संधी है सो जानो ॥ ३६ ॥

मू०—अनंगशेखरदंडक ॥ तडागनीरहीनतेसनीरहोतकेशोदासपुंडरीकझुंडभौंरमंडलीनमंडहीं । तमालवल्लरीसमेतिसूखिसूखिकैरहेतेबागफूलिफूलिकैसमूलशूलखंडहीं ॥ चितैचकोरनीचकोरमोरमोरनीसमेत हंसहंसिनीसमेतशारिकासबैपढैं । जहींजहींविरामलेतरामजूतहींतहींअनेकभांतिकेअनेकभोगभागसोबढैं ॥ ३७ ॥

टी०—पुंडरी कमल भाग सो कहे भाग्य सों अथवा द्विगुण चतुर्गुणादि भाग कहे हींसा सों ॥ ३७ ॥

मू०—सुंदरीछंद ॥ घामकोरामसमीपमहाबल । शीतहिलागतहैअतिशीतल ॥ ज्योंघनसंयुतदामिनिकेतन । होतहैंपूषन केकरभूषन ॥३८॥ मारगकीरजतापितहैअति । केशवसीतहि शीतललागति ॥ ज्योंपदपङ्कजऊपरपाँयनि । दैजोचलैतेहितें सुखदायनि॥३९॥ दोहा ॥ प्रतिपुर औ प्रतिग्रामकी, प्रति नगरनकीनारि ॥ सीताजूकोदेखिकै, वर्णतहैंसुखकारि ॥४०॥ जगमोहनदंडक ॥ वासों मृगअङ्ककहैं तोसोंमृगनैनीसबवहसुधाधरतुहूंसुधाधरमानियेवहद्विजराजतेरेद्विजराजिराजैंवहकलानिधितुहूंकलाकलितबखानियेरत्नाकरकेहैंदोऊकेशवप्रकाशकर अंबरविलासकुबलयहितमानिये । वाकेअतिशीतकरतुहूंसीताशीतकरचंद्रमासीचंद्रमुखीसबजगजानिये ॥ ४१ ॥

टी०—घामको जो महाबल कहे अति तेजहै सो रामके समीप में सीताको अति शीतल लागतहै जैसे घन जे मेघहैं तिनते युक्त जो दामिनी बिजुली है ताके तनुमें पूषण जे सूर्य हैं तिनके कर किरण भूषण होतहैं सूर्यकी किरणें मेघनमें परतीहै तब इंद्रधनुष होतहै सोई दामिनीको भूषण समहै ॥ ३८ ॥

हेतु यह कि पृथ्वी की सीता पुत्रीहै रामचन्द्र जामातुहैं तासों पृथ्वीकी रज तिनको सुख दियोई चहै तामें युक्ति यह कि पंकजपर पाँउ धारिके चले तौ शीतलई लागत है ॥ ३९ ॥ ४० ॥ या प्रकार कोऊ स्त्री सीतासों कहतिहै कि वह जो चंद्रमा हैं जाको मृगअंक सब कहत हैं मृगा जो शशा है सोहै अंकमें गोदमें मध्य इति जाके अथवा मृगको अंक कहे चिह्नहै जाके औ तोहूंको मृगनैनी कहतहैं औ वह सुधाधरहै सुधा अमृत को धरे है औ तुहूं सुधाधर है सुधासम हैं अधर ओष्ठजाके औ वह द्विजराज कहावत है तेरेहू द्विज जे दंतहैं तिनकी राजिकहे पंगति राजतिहै औ वह षोडशकलनको निधिहै औ तुहूं अनेक जे नेत्र विक्षेपादि कला हैं अथवा चौसठिकला तिनसों कलित है औ वह रत्नाकर जो समुद्र है ताको प्रकाशकर कहे बढावन हार है पूर्णमासीके चन्द्रमाके उदयसों समुद्र बाढत है प्रसिद्ध है औ तू भूषणनके रत्ननको जो आकर समूह है ताको प्रकाश शोभा करता है अर्थ तेरी छबिसों भूषणनके रत्न शोभा पावतहैं औ चन्द्रको अंबर आकाशमें बिलासहै सीताको अंबर वस्त्रमें औ चन्द्रमा कुवलयको हित है औ सीता कुवलय कहे पृथ्वी मंडलको हितकरे अतिप्रिय लागतिहै अर्थ सौंदर्यादिक गुण सीतामें ऐसे हैं जासों सबको प्रिय है औ वाके चन्द्रमाके अति शीत है कर कहे किरणि औ हे सीता तुहूं शीतकर है जो तो को देखत हैं ताके लोचन शीतल हैं तौ जौन जौन जिह्वगुण चंद्रमामो हैं ते तोहू में हैं याते हे चंद्रमुखी! सब जग करिकै तोकों चन्द्रमा सम जानियतहै अर्थ सब जग तोकों चन्द्रमा समजानत हैं ॥ ४१ ॥

मू०—अन्यच्च ॥ कलितकलंककेतुकेतुअरिसेतुगातभोगयोगकोअयोगरोगहीकोथलसों ॥ पून्योईकोपूरनपैप्रतिदिनदूनोदूनो क्षणक्षणक्षीणहोतछीलरकीजलसों । चंद्रसोंजोबरगतरामचंद्रकी दोहाईसोईमतिमंदकविकेशवकुशलसों । सुंदरसुवासअरुकोमलअमलअतिसीताजूकोमुखसखिकेवलकमलसों ॥ ४२ ॥

टी०—दूसरीस्त्री ताकोमत खंडिकै आपनोमत कहतिहै कलंक कि जो केतुकहे पताका है अर्थ पताकासम जाको कलंक प्रसिद्ध है औ केतुको अरि शत्रु है राहु केतु एकइके खंड हैं तासों अक्षर मैत्रीके लिये केतु कह्यो औ स्त्री आदिके जे

भोग हैं तिनको जो योगसंयोग रेताको अयोग असमर्थ है गुरुशापसों क्षयरोग युक्त है क्षणक्षण क्षीण होत जो छीलरकहे दीना अथवा अंजलिकोजलहै तासम प्रतिदिन दूनों क्षीणहोत हैं ॥ ४२ ॥

मू०—अन्यच्च ॥ एकेकहैंअमलकमलमुखसीताजूको एकक हैंचन्द्रसमआनंदकोकंदरी । होइजोकमलतौरयनिमैंनसकुचै रीचंदजोतौबासरनहोइद्युतिमंदरी । बासरहीकमलरजनीही-मेंचंद्रमुखबासरहूरजनिविराजैजगबंदरी । देखेमुखभावेअनदे-खेईकमलचंद तातमुखमुखैसखीकमलैनचंदरी ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ सीतानयनचकोरसखि, रविवंशीरघुनाथ ॥ रामचंद्र सियकमलमुख, भलोबन्योहैसाथ ॥ ४४ ॥ बिजयछंद ॥ बहु-बागतड़ागतरंगनितीरतमालकीछांहबिलोकिभली । घटिका-यकबैठतहैंसुख पायबिछायतहांकुशकाशथली ॥ मगकोश्रम-श्रीपतिदूरिकरैंसियकोशुभवाकलअंचलसों । श्रमतेऊहरैंतिन कोकहिकेशवचंचल चारुदृगंचलसों ॥ ४५ ॥ सोरठा ॥ श्रीर-घुबरकेइष्ट, अश्रुबलित सीतानयन ॥ सांचीकरीअदृष्ट, झूँठीउपमामीनकी ॥ ४६ ॥

टी०—तीसरी स्त्री दुवौ को मत खंडि आपनो कहति है कमलचंद्रके देखेहू पर मुख भावत है औ कमलचन्द्रमुखके अनदेखे ही भावत है जब या मुखको देखो तब कमलचंद्रके देखबे की इच्छा नहीं होति जब उत्तमवस्तु देखो तब अनुत्तम वस्तु देखे अच्छीनहीं लागति है ॥ ४३ ॥ सूर्यको औ चकोर को औ चंद्रको औ कमल को स्वाभाविक विरोध है सो इहाँ भलो कहे अद्भुत साथ वन्यो है ॥ ४४ ॥ दृगंचल दृगकोर ॥ ४५ ॥ श्रीरघुबर के इष्ट कहे प्रिय अश्रु आनंदाश्रु करिकै वलित युक्त जे सीताके नयन हैं तिन मीनकी जो झूठी उपमा अदृष्ट रही है ताको सांची करी अर्थ मीन जल में रहते हैं नयन जलमें नहीं रहत समतामें यह भेद रह्यो है सो आनंदाश्रु जलमें बूडि कै सीता के नयन सांची करी ॥ ४६ ॥

मू०—दोहा ॥ मारगयोंरघुनाथजू, दुखसुखसबहीदेत ॥ चित्रकूटपर्वतगये, सोदरसियासमेत ॥ ४७ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्र चंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांरामस्यचित्रकूटगमनं नामनवमः प्रकाशः ॥ ९ ॥

टी०—दर्शन सों सुख देत वियोग सों दुख देत ॥ ४७ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जन जानकीप्रसाद निर्मिताया रामभक्ति प्रकाशिकाया नवमः प्रकाशः ॥ ९ ॥

मू०—दोहा ॥ यहप्रकाश दशमेंकथा, आवनभरतसुनाम ॥ राजमरणअरुतासुको, बसिबोनंदिग्राम ॥ १ ॥ दोधकछंद ॥ आनिभरत्तपुरीअवलोकी । स्थावरजंगमजीवसशोकी ॥ भाट नहींविरदावलिसाजैं ॥ कुंजरगाजैंनदुंदुभिबाजैं ॥ २ ॥ राजसभानविलोकियकोऊ । शोकगहेतवसोदरदोऊ ॥ मंदिरमातुविलोकिअकेली । ज्योंबिनवृक्षविराजतिवेली ॥ ३ ॥ तोटकछंद ॥ तबदीरघदेखिप्रणामकियो ॥ उठिकैउनकण्ठलगाइ लियो ॥ नपियोजलसंभ्रमभूलिरहे । तबमातुसोंबातभरत्थकहे ॥ ४ ॥

टी०—नाम कहे प्रसिद्ध ॥ १ ॥ २ ॥ राज सभामें कोऊ न देख्यो तव शोकको गहे औ माता के मंदिरमें जाइ कै माताको अकेली देख्यो तव शोक गहे ॥ ३ ॥ ४ ॥

विजयाछंद ॥ मातुकहांनृपतातगयेसुरलोकहिक्योंसुतशोकलये ॥ सुतकौनसुरामकहांहैंअबैबनलक्ष्मणसीयसमेतगये । बनकाजकहाकहिकेवलमोसुखतोकोंकहासुखयामेंभये । तुमको प्रभुताधिकतोकोंकहाअपराधबिनासिगरेई-

हये ॥ ५ ॥ दोहा ॥ भर्त्तासुतविद्वेषिनी, सबहीकोदुखदाइ ॥ यहकहिदेखेभरततब, कौशल्याकेपाइ ॥ ६ ॥ तोटकछंद ॥ तबपायनजाइभरत्थपरे । उनभेंटिउठाइकैअंकभरे ॥ शिर-सूंघिविलोकिबलाइलई । सुत तो विनयाविपरीतभई ॥ ७ ॥ भरत—तारकछंद ॥ सुनुमातभई यहबातअनैसी । जुकरीसुत-भर्तृविनाशिनिजैसी ॥ यहबातभई अबजानतजाके । द्विज-दोषपरैसिगरेशिरताके ॥ ८ ॥ जिनके रघुनाथबिरोधबसैजू । मठधारिनकेतिनपापग्रसैजू ॥ रसरामरस्योमननाहिंनजाको । रणमेंनितहोइपराजयताको ॥ ९ ॥ कौशल्या ॥ जनिसौं-हकरौतुमपुत्रसयाने । अतिसाधुचरित्रतुम्हैंहम जाने ॥ सबकोसबकालसदासुखदाई । जियजानतिहौसुतज्यौं रघुराई ॥१०॥ चंचरीछंद ॥ हाइहाइजहांतहांसबह्वैरहीसिग-रीपुरी । धामधामनिसुन्दरीप्रगटींसबैजेहुतीदुरी ॥ लैगये नृपनाथकासबलोगश्रीसरयूतटी । राजपत्निसमेतिपुत्रनिविप्रलापगढीरटी ॥ ११ ॥

टी०—॥ ५ ॥ ६ ॥ लघूको शिरसूँघिबो बडेनकी प्रीतिरीतिहै रोगबलाइली-बोस्त्रीनके प्रसिद्ध हैं ॥ ७॥ ८ ॥ शिवआदि देवनके मठकी जे पूजालेतहैं ते मठधारी कहावतहैं रसकहे प्रेमअंगरादौ "विषेवीर्येद्रवेरागेगुणेरसः" इत्यमरः रस्यो भीज्योयुक्त इति ॥ ९ ॥ १० ॥ विप्रलाप जे हैं अनर्थ वचन अथवा कैकेयी प्रति विरोध वचन तिनकी गढी कहे समूह रढी कहत भये कि कैके-यीही के करत ऐसो विघ्न भयो तासों याको मुखदेखिबो उचित नहीं है इत्यादि वचन सब कहत हैं । "विप्रलापो विरोधोक्तावनर्थकवचस्यपि" इत्यभिधान-चिन्तामणिः ॥ ११ ॥

मू०—सोमराजीछंद ॥ करीअग्निअर्चा । मिटीप्रेतचर्चा ॥ सबैराजधानी । भईदीनवानी ॥ १२ ॥ कुमारललिताछंद ॥

क्रियाभरतकीनी । वियोगरसभीनी ॥ सजीगतिनवीनी । मुकुंदपदलीनी ॥ १३ ॥ तोटकछंद ॥ पहिरेवकलासुजटाधरिकै । निजपाँयनिपंथचलेअरिकै ॥ तरिगंगगये गुहसंग लिये। चित्रकूटबिलोकतछाँडिदिये ॥ १४ ॥

टी०-जब भरत अग्निसों अर्चा पूजा करी अर्थ चितामें अग्नि दियो तब प्रेतचर्चा मिटी अर्थ सब अयोध्यावासी परस्पर अनेक प्रेतवार्ता करत रहे ताको छोंडिदीन वाणी भये अर्थ करुणा स्वर करिकै रोये मरण समयमों औ दाहभूमिमें लैजात मों औ दाह होतमों अधिक अधिक तर वियोग ग्लानि रोइवेकी रीति प्रसिद्ध है अथवा अग्निकरीकहे चितामें अग्नि दियो तब ने अशुद्धिसो अर्चाकहे देवपूजा मिटी औ प्रेतचर्चाभई इतिशेषः ॥१२॥ क्रिया षोडशी-आदि भरत नीकी करत भये ताके बादि मुकुंद रामचन्द्रके वियोगरसमें भीनी नवीनी गति कहे दशावल्कल वसनादि साजी औ मुकुंदपद लीनी कहे ज्ञान बुद्धि इति सजी अर्थ पिताकी क्रिया पूर्ण करि रामचन्द्रके चरणनमें मनुलगायो गति पद श्लेष है एक पक्ष दशा जानौ एक पक्ष बुद्धि जानौ " गतिस्त्रीमार्ग-दशयोर्ज्ञानेयात्राभ्युपाययोरितिमेदिनी" ॥ ॥ १३ ॥ अरिकै कहे हठ करिकै गंगा उतरिकै गुहको संग कहे ज्ञातिसमूह सूधी मार्ग बताइबेके लिये गये जब चित्रकूट देख्यो तब तिन्हैं छोडिदियो ॥ १४ ॥

मू०-मदनमोदकछंद ॥ सबसारसहंसभयेखगखेचरवारिद ज्योंबहुबारनगाजे । बनकेनरवानर किन्नरबालकलैमृगज्यों मृगनायकभाजे॥ तजिसिद्धसमाधिनके सबदीरघदौरिदरीनमें आसनसाजे । भूतलभूधरहालेअचानकआइभरत्थकेदुंदुभिबाजे ॥ १५ ॥ दोहा ॥ रामचन्द्रलक्ष्मणसहित, शोभितसीता संग । केशवदाससहासउठि, चलेधरणिधरशृंग ॥ १६ ॥ लक्ष्मण-मोहनछन्द॥ देखहुभरतचमूसजिआये।जानिअबल हमकोउठिधाये ॥ हींसतहयबहुवारणगाजे । जहँतहँदीरघदुंदुभिबाजे ॥ १७ ॥ तारकछंद ॥ गजराजनिऊपरपाखरसोहैं ।

अतिसुंदरशीशशिरोमणिमोहैं ।। मणिघूंघुरघंटनकेरवबाजैं । तडितायुतमानहुँवारिदगाजैं ।। १८ ।। विजयछंद ।। युद्धको आजुभरत्थचढेधुनिदुंदुभिकीदशहूँदिशिधाई । प्रातचलीचतुरंगचमूवरणीसोनकेशवकैसेहुँजाई ।। योंसबकेतनत्राननिमें झलकीअरुणोदयकीअरुणाई । अंतरतेजनुरंजनकोरजपूतन कीरजऊपरआई ।। १९ ।।

टी०–सारस हंस औ और जे खग पक्षी हैं ते खेचरकहे आकाशगामी भये जैसे मृगनायक सिंह जौन ग्रीवादि अंग पकरि पायो सोई अंग गहि मृगको लै भाग्यो ताही प्रकार अतिभय सों अपने अपने बालकनको लै किन्नरादि भागे ।। ।। १५ ।। किन्नरादिकी या दशा देखि हास्यपूर्वक कारण देखिबेको धरणिधर शृंगमें चढे ।। १६ ।। हींसत बोलत ।। १७ ।। पाखरझूल ।। १८ ।। रजनको क्षत्र धर्म में रंजित करिबेको मानौं रजपूतनकी रज रजोगुण रजपूतीइति ऊपर कहि आयेहैं ।। १९ ।।

मूल–तोटकछंद ।। उठिकैधरधूरिअकाशचली । बहुचंचल बाजिखुरीनदली ।। भुवहालतिजानिअकाशहिये । जनुथंभित ठौरनिठौरकिये ।। २० ।। तारकछंद ।। रणराजकुमारअरूझहि गेजू । अतिसन्मुखघायनिजूझहिंगेजू ।। जनुठौरनिठौरनिभूमि नवीने । तिनकेचढिबेकहँमारगकीने ।। २१ ।। सीताजू–तोटकछंद ।। रहिपूरिविमाननिव्योमथली । तिनकोजनुटारनधूरि चली ।। परिपूरिअकाशहिधूरिरही । सुगयोमिटिशूरप्रकाशसही ।। २२ ।। दोहा ।। अपनेकुलकोकलहक्यों, देखहिंरविभगवंत । यहैजानिअंतरकियो, मानोमहीअनंत ।। २३ ।। तोटकछंद ।। बहुतामहदीहपताकलसै । जनुधूममेंअग्निकीज्वाल बसै ।। रसनाकिधौंकालकरालघनी । किधौंमीचुनचैचहुँओर बनी ।। २४ ।। दोहा ।। देखिभरतकीचलध्वजा, धूरिनमेंसुख

देत । युद्धजुरनकोमनहुँप्रति, योधनबोलेलेत ॥ २५ ॥ लक्ष्मण–दंडकछंद॥मारिडारौंअनुजसमेतयहिखेतआजु मेटि परौंदीरघबचननिजगुरको । सीतानाथसीतासाथबैठेदेखिछत्र तरयहिसुखशोषौंशोकसबहीकेउरको ॥ केशवदासविलासवी-सविस्वेरासहोइकैकेकेयीकेअंगअंगशोकपुत्रज्वरको ॥ रघुराज जूको साजसकलछिड़ाइलेउँभरतहिआजुराजदेउँयमपुरको २६

टी०–सैन्यके भयसों अथवा वालसों हालत जानिकै थंभित कहे थांभखंभा इति ॥ २० ॥ सन्मुख घाव जूझिकै वीर स्वर्ग को जात हैं सो मानो राजकुमारनके स्वर्ग जाइबेको भूमि मार्ग कहे गह कीन्हें हैं ॥ २१ ॥ विमान आकाश गामी रथ व्योमयान 'विमानोऽस्त्रीत्यमरः' ॥ २२ ॥ मही जो पृथ्वीहै तेहि अनंत कहे अनेक अंतर किये अनेक धूरिके तुंग उठत हैं तेई अंतर व्यवधान हैं अथवा अनंत लक्ष्मणको संबोधन है ॥ २३ ॥ रसना जिह्वा ॥ २४ ॥ २५ ॥ पुत्र ज्वर कहे पुत्रमरण चौबीसवें प्रकाशमें कह्यो है कि जरा जब आवै ज्वराकी सहेली तहां ज्वराशब्द मृत्युको वाची है रघुराजजूकी साज अर्थ गजरथादि राज साजराज्य रामचन्द्रको है जाको लै ताके सब साज भरत सजे हैं तिन्हें छडाइ रामचन्द्रमें साजिकै राज्यमें बैठारिये इत्यर्थः ॥ २६ ॥

मू०–दोहा ॥ एकराजमेंप्रगटजहँ,द्वैप्रभुकेशवदास॥तहांबस-तहैरैनदिन,मूरतिवंतबिनास॥२७॥कुसुमविचित्राछंद ॥ तबस-बसैनावहिथलराखी॥मुनिजनलीन्हेसँगअभिलाषी ॥ रघुपति केचरणनशिरनाये । उनहँसिकैगहिकंठलगाये ॥२८॥ भरत दोधकछंद॥ मातुसबैमिलिबेकहँआई । ज्योंसुतकीसुरभीसुल-वाई ॥ लक्ष्मणस्योउठिकैरघुराई । पाँयनजायपरेदोउभाई ॥२९॥ मातनिकंठउठायलगाये । प्राणमनोमृतदेहनिपाये ॥ आइमिलीतबसीयसभागी । देवरसासुनकेपगलागी ॥ ३० ॥

टी०–पिताने भरतको राजा कियो है तासों भरतको राज्यपदभ्रष्ट होइ तौ पिताको वचन निष्फल होइ या हेतु भरतको यमपुरको राज्यदेउँ जामें रामचन्द्र

सुचित्त ह्वै अयोध्यामें राज्य करैं इति भावार्थः ॥ २७ ॥ अभिलाषी जे मुनिजन हैं अथवा मुनिजन संग लीन्हें औ और रामदर्शनको अभिलाषी हैं तिन्हैं लीन्हें रामचन्द्रके हँसिबेके हेतु लक्ष्मणके बचन हैं ॥ २८ ॥ थोरे दिनकी बियानी गाय लवाई कहावति है ॥ २९ ॥ भरतके वचन सुनिके भरत शत्रुघ्नको सीताके पास राखि लक्ष्मण मातनके मिलिबेको आये ताके पीछे सीता जो सभागी हैं सोऊ देवर जे भरत शत्रुघ्न हैं तिन सहित सासुनको आइमिलीं प्राम भई औ सासुनके पग लागी ॥ ३० ॥

मू०–तोमरछंद ॥ तबपूछियोरघुराइ । सुखहैंपितानमाइ ॥ तवपुत्रकोमुखजोइ । क्रमतेउठींसबरोइ ॥ ३१ ॥ दोधक छंद ॥ आंशुनसोंसबपर्वतधोये । जंगमकोजडजीवनरोये ॥ सिद्धबधूसिगरींसुनिआईं । राजबधूसबईसमुझाईं ॥ ३२ ॥ मोहनछंद ॥ धरीचित्तधीर । गयेगंगतीर ॥ शुचिह्वैशरीर । पितृतर्पिनीर ॥ ३३ ॥ भरत–तारकछंद ॥ घरकोचलियेअब श्रीरघुराई । जनहौंतुमराजसदासुखदाई ॥ यहबातकहीजलसों गलभीन्यौ । उठिसोदरपाइँपरेतबतीन्यों ॥ ३४ ॥ श्रीराम–दोधकछंद ॥ राजदियोहमकोबनरूरो । राजादियोतुमकोअबपूरो ॥ सो महूंतुमहूंमिलिकीजै । बापकोबोलुननेकहुछीजै ॥ ३५ ॥ ॥ दोहा ॥ राजाकोअरुबापको, बचननमेटैकोइ । जौनमानिये भरत तौ, मारेकोफलहोइ ॥ ३६ ॥ भरत–स्वागताछंद ॥ मद्य पानरतस्त्रीजितहोई । सन्निपातयुतबातुलजोई ॥ देखिदेखितिनकोसबभागे । तासुबातहतिपापनलागे ॥ ३७ ॥

टी०–राम बनगमन दशरथमरण भरतागमनादि कथाक्रमसों कहत सब रोवत भई ॥ ३१ ॥ सिद्ध तपस्वी अथवा देवयोनिविशेष ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ भरथलक्ष्मण शत्रुघ्न तीनों पांयन परे कि घरको चलिबो उचित है ॥ ३४ ॥ रूरोसुन्दर ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ स्त्री जित कहे जो स्त्री करिकै जीतो गयो है अर्थ स्त्रीके वश्य है औ बातुल जो बहुत बातैं कहै ॥ ३७ ॥

मू०-ईशईशजगदीशबखान्यो। वेदवाक्यबलतेपहिचान्यो॥ ताहिमेटिहठिकैरहिहौंतौ। गंगतीरतनकोतजिहौंतौ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ मौनगहीयहबातकहि, छोंडौसबैविकल्प। भरतजाइ भागीरथी, तीरकरचोसंकल्प॥ ३९ ॥ इन्द्रवज्राछंद॥ भागी रथीरूपअनूपकारी। चंद्राननीलोचनकंजधारी॥ वाणीबखा-निमुखतत्त्वसोध्यौ। रामानुजैआनिप्रबोधबोध्यौ॥४०॥ उपे-न्द्रवज्राछंद॥ अनेकब्रह्मादिनअंतपायो। अनेकधावेदनगीत गायो॥ तिन्हैंनरामानुजबंधुजानौ। सुनौसुधिकेवलब्रह्ममानौ॥ ॥ ४१ ॥ निजेक्षयाभूतलदेहधारी। अधर्मसंहारकधर्मचारी॥ चलेदशग्रीवहिमारिबेको। तपीव्रतीकेवलपारिबेको॥ ४२॥ उठोहठीहोहुनकाजकीजै। कहैंकछूरामसोमानिलीजै॥ अदोष तेरीसुतमातुसोहै। सोकौनमायाइनकोनमोहै॥ ४३॥

टी०-ईश जे विष्णु हैं औ ईश जे महादेव हैं और जगदीश जे ब्रह्मा हैं तिन यह बात बखान्यो है कि स्त्रीजितादिकनके वचन मेटे सों पातक नहीं होत सो हम वेदवाक्य बलसों पहिचान्यो है अर्थ वेदमें तीन्यो देवके ऐसे वचन हैं ते हम सुन्यो है अथवा तीनों देवन बखान्यो है औ वेदवाक्य बल बलहू सों पहिचान्यो अर्थ वेदहू यहै कहत है॥ ३८॥ विकल्पविचार भागीरथी मंदाकिनी॥ ३९॥ तत्त्व कहे सारांश सोध्यो कहे ढूँढ्यो ता सारांश युक्त मुखसों वाणी बखानी अथवा ऐसी वाणी बखानी जामें तत्त्व जो राम कथा तत्त्व है ता करिकै अपने मुखको सोध्यो शुद्ध करचो औ रामानुज जे भरत हैं तिनको प्रबोध कहे उत्तम ज्ञान आनि कहे ल्याइकै बोध्यो बोध करचो पद कहि या जनायो कि रामचन्द्रप्रति बन्धु बुद्धिरूपी निशामें सोवतरहैं तामें जगायो॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ सुत भरतको संबोधन है यासों या जनायो कि इनकी मायामें मैं मोहिकै तुम्हारी माते इनको वनगमन चाह्यो॥ ४३॥

मू०-॥दोहा॥ यहकहिकैभागीरथी, केशवभईअदृष्ट॥भरत कह्योतबरामसों, देहुपादुकाइष्ट॥४४॥ उपेंद्रवज्राछंद॥ चले

बलीपावनपादुकालै । प्रदक्षिणारामसियाहुकोदै ॥ गयेतेनंदी पुरबासकीनों । सबंधुश्रीरामहिचित्तदीनों ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ केशवभरतहिआदिदै, सकलनगरकेलोग ॥ बनसमानघरघर बसे सकलविगतसंभोग ॥ ४६ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोराचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रि-कायामिद्रजिद्विरचितायांभरतस्यचित्रकूटागमनं नामदशमः प्रकाशः ॥ १० ॥

टीका-पादुकारूपी इष्ट कहे स्वामी देहु आशय यह कि राज्य पर स्वामी चाहिये ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

टी०-॥ ४८ ॥ इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजान-कीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायादशमःप्रकाशः ॥ १० ॥

मू०-दोहा ॥ एकादशैप्रकाशमें, पंचवटीकोवास॥शूर्पणखा-केरूपको, रघुपतिकरिहैंनाश ॥ १ ॥ भरतोद्धताछंद॥चित्रकूट तबरामजूतज्यो । जाइयज्ञथलअत्रिकोभज्यो॥ रामलक्ष्मणस-मेतदेखियो । आपनोसफलजन्मलेखियो ॥ २ ॥

टी०-॥ १ ॥ भज्यौ कहे प्राप्त भये ॥ २ ॥

मू०-चन्द्रवर्त्मछंद ॥ स्नानदानतपजापजोकरियो । शोधि शोधिपनजोउरधरियो ॥ योगयागहमजालगिगहियो। रामचं-न्द्रसबकोफललहियो ॥ ३ ॥ वंशस्थाछंद ॥ अनेकधापूजन-अत्रिजूकरचो । कृपालुह्वैश्रीरघुनाथजूथरचो ॥ पतिव्रतादेवि महर्षिकीजहां । सुबुद्धिसीतासुखदाईतहां ॥ ४ ॥ दोहा ॥पति व्रतनकीदेवजा, अनुसूयाशुभगात॥ सीताजूअवलोकियो,जरा सखीकेसाथ ॥ ५ ॥ चतुष्पदीछंद ॥ शिरश्वेतविराजैकारीति

राजै जनुकेशवतपबलकी । तनुवलितपलितजनुसकलवासना निकरिगईथलथलकी ॥ कांपतिशुभग्रीवासबअँगसींवादेखत चित्तभुलाहीं । जनुअपनेमनप्रतियहउपदेशतियाजगमेंकछु नाहीं ॥ ॥६॥प्रमिताक्षराछंद ॥ हरवाइजाइ सियपाइँपरी । ऋषिनारिसूंघिशिरगोदधरी ॥ बहुअंगरागअँगअंगरये । बहु भाँतिताहिउपदेशदये ॥ ७ ॥ स्रग्विनीछंद ॥ रामआगेचले मध्यसीताचली । बंधुपाछेभयेसामसोमैभली ॥ देखिदेहीसबै कोटिधाकेभनो । जीवजीवेशकेबीचमायामनो ॥ ८ ॥

टी०—मनको शोधिशोधि शुद्ध करि करि गुनकी जो उर विशेष धरयो है अर्थ तुम्हारो ध्यान करयो है अथवा मनहीको शुद्ध करिकै जो उरमें धारण करयो अर्थ मनकी जो चंचलता है ताहि छोडाइ अपनेवश्य करयो है सो हे रामचन्द्र ! ताको सब को फल जो तुम्हारे दर्शन हैं ताको पायो ॥ ३ ॥ ४ ॥ जरा कहे बुढाईरूपी जो सखी है ताके साथ देख्यो ॥ ५॥ तन वलितकहे युक्त है पलितकहे ढिलाईसों अर्थ वृद्धता सों त्वचामें सिकुरा परिगये हैं सो मानों थलथल की अंगअंगकी वासना विषय वासना निकरिगई है ताहीते अंग अंग सिकुरि गयेहैं सींवा मर्यादा ॥ ६ ॥ हरवाइकहे हरबराइकै ॥ ७ ॥ बनोकहे कह्यो जीवेश ईश्वर ॥ ८ ॥

मू०—मालतीछंद ॥ विपिनविराधबलिष्ठदेखियो । नृपतनयाभयभीतलेखियो ॥ तबरघुनाथबाणकैहयो । निजनिर्णवा पंथकोठयो ॥ ९ ॥ दोहा ॥ रघुनायकसायकधरे, सकललोक शिरमौर ॥ गयेकृपाकरिभक्तिवश, ऋषिअगस्त्यकेठौर॥१०॥ वसंततिलकाछंद ॥ श्रीरामलक्ष्मणअगस्त्यसनारिदेख्यो । स्वाहासमेतशुभपावकरूपलेख्यो ॥ साष्टांगक्षिप्रअभिवंदन जाइ कीन्हों ॥ सानंदआशिषअशेषऋषीशदीन्हों ॥ ११ ॥ बैठारि आसनसबैअभिलाषपूजे । सीतासमेतरघुनाथसबन्धु-

पूजे ॥ जाके निमित्तहमयज्ञयज्योसोपायो । ब्रह्मांडमंडनस्व-रूपजोवेदगायो ॥ १२ ॥

टी०-निर्वाण जो मोक्ष है ताके पंथ कहे राह में ठयो कहे युक्त करचो अर्थ मुक्ति दियो ॥ ९ ॥ सकल लोक शिरमौर जे रघुनाथ हैं ते सायक जे बाण हैं तिनको धरे अगस्त्यके ठौरमें गये अथवा रघुनायक भक्तिके वश कृपा-करिके अगस्त्यके ठौर गये तहां सकललोक शिरमौर जे अपने सायक हैं तिन्हैं धरं धारण करचो विष्णु के धनुर्बाण अगस्त्य के यहां धरे रहे हैं ते रामचंद्र को अगस्त्य दियो है यह कथा वाल्मीकीय रामायणमें है अथवा सकललोक शिर-मौर जो विष्णु हैं तिनके सायकधरेधारणकरचो अथवा रघुनायकके सकल लोक शिरमौर सायक अगस्त्यके ठौर धरे हैं तालिये औ भक्ति वश कृपाकारि अग-स्त्यके ठौर गये ॥ १० ॥ स्वाहा अग्नि की स्त्री ॥ ११ ॥ सबै आपने अभि-लाप पूजे पूर्ण करे ब्रह्माण्ड को मंडन भूषण जो यह रावरो स्वरूप है ताहीके मिलिबे के लिये हम यज्ञ यज्यौ होम्योकरचो इति सो यह स्वरूप पायो ॥१२॥

मू०-पद्धटिकाछंद ॥ ब्रह्मादिदेवजबबिनयकीन । तटक्षीर सिन्धुकेपरमदीन ॥ तुमकह्योदेवअवतरहुजाइ। सुतहोंदशरथ-कोहोतुआइ ॥१३॥ हमतबतेमनआनन्दमानि । मनचितवत तवआगमनजानि। ह्याँरहिजैकरिजैदेवकाजु । ममफूलिफल्यो तपवृक्षआजु ॥ १४ ॥ श्रीराम-पृथ्वीछंद ॥ अगस्त्यऋषिरा-जजूबचनएकमेरोसुनौ।प्रशस्तसबभाँतिभूतलसुदेशजीमेंगुनौ॥ सनीरतरुखंडमंडितसमृद्धशोभाधरैं। तहांहमनिवासकीबिमल पर्णशालाकरैं ॥ १५ ॥ अगस्त्य-पद्मावतीछंद ॥ यद्यपिजग कर्त्तापालकहर्त्तापरिपूरणवेदनगाये । अतितदपिकृपाकरिमा-नुषवपुधरिथलपूछनहमसोंआये ॥ सुनिसुरवरनायकराक्षस-घायकरक्षहुमुनिजनयशलीजै । शुभगोदावरितटविशदपंचव-टपर्णकुटीतहँप्रभुकीजै ॥ १६ ॥ दोहा ॥ केशवकहेअगस्त्यके-पंचवटीकेतीर ॥ पर्णकुटीपावनकरी, रामचन्द्ररणधीर॥ १७॥

॥ त्रिभंगीछंद ॥ फलफूलनपूरेतरुवररूरेकोकिलकुलकलरव-बोलैं। अतिमत्तमयूरीपियरसपूरीवनबनप्रतिनाचतिडोलैं ॥ साराशुकपंडितगुणगणमण्डितभावनिमेंअरथबखानै ॥ देखहु रघुनायकसीयसहायकमदनरतिमधुजानै ॥ १८ ॥

टी०–॥ १३ ॥ तव कहे तुम्हारो ॥ १४ ॥ प्रशस्तनीको सुदेश समउच्च नीच रहितेति सनीर सजल औ तरु जे वृक्ष हैं तिनको जो खण्ड समूह है तासों मण्डित युक्त औ समृद्ध कहे वर्द्धमान अधिक इति शोभाको धरै धारण करे होइँ निवासको कहे वसिवे की ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ रामचन्द्रके आगमन-सों दंडकारण्यमें रूरे कहे सुन्दर जे तरुवृक्ष हैं ते फल औ फूलनसों पूरे युक्त भये अथवा रूरेजे फल औ फूल हैं तिनसों तरुवर पूरे औ कोकिल के जे कुल-जाति समूह हैं ते कल कहे अव्यक्त मधुररव शब्दको बोलतहैं ॥ "काकलीतुकले-सूक्ष्मेध्वनौतुमधुरास्फुटे ॥ कलो मंद्रस्तुगंभीरेतारोत्युच्चैस्त्रयस्त्रिषु" इत्यमरः ॥ औ अतिमत्त जे मयूरीहैं ते पिय जे मयूर हैं तिनके रसमें प्रेममें पूरी वनवन प्रति नाचत डोलती हैं अर्थ जहाँ जहाँ मोर नाचत हैं तहाँ तहाँ संग मयूरी डोलती हैं औ सारो सारिका औ शुक जे गुणगणसों मंडित पंडित प्रवीणहैं अर्थ अनेक गुणनमें पंडित हैं ते भावनियम कहे अनेक भाव अभिप्राय युक्त गानके अर्थ को वखानत हैं अथवा नृत्यके जे अनेक भाव चेष्टा हैं तिनमें अर्थ को वखानत हैं जब जैसी चेष्टा देखत हैं तब तैसे अर्थ के प्रयोजनको बखान करत हैं. तामें तर्क करतहैं कि रघुनायक रामचन्द्र औ सीता औ सहायक जे लक्ष्मण हैं तिनको इन वृक्षादिकन देख्यो है सो मानो मदन काम और रतिसहित मधुवसन्त जानत हैं तौ वसंतहूके आगमनमें ये कौतुक होत हैं तासों उत्प्रेक्षा करयो औ युक्ति यह कि वसंत वनको प्रभुहै सो प्रभुकी अवाईमें अनेक वितान बिछावने नृत्यादि रचना सब करत हैं सो रतिसहित मदन जो मित्र है तासों युक्त वसंतको आवत देखि वन करयो प्रफुल्लित जे अनेक कुंज हैं तेई वस्त्र भवन औ वितान हैं औ गिरे जे पुष्पहैं तेई पुष्प बिछावने हैं कोकिल गावत हैं मोर नाचत हैं सारो शुक वखान करत हैं वेश्यादि नृत्य कारिनहूमें वखान कर्त्ता एकरहत है ॥ १८ ॥

मू०–लक्ष्मण–सवैया ॥ सबजातिफटीदुखकीदुपटीकपटी नरहैजहँएकघटी। निवटीरुचिमीचघटीहूँघटीजगजीवयतीन-

कीछूटीतटी । अघओघकीबेरीकटीबिकटीनिकटीप्रकटीगुरुज्ञानगटी । चहुँओरननाचतिमुक्तिनटीगुणधूरजटीवनपञ्चवटी ॥ १९ ॥

टी०-दुपटी द्वैपाटको ओढिबे को वस्त्र सो जहाँ जा पंचवटीके निकट सब फाटि जाति है नेकहू नहीं रहति अर्थ सब दुःख जहां नशि जात हैं औ कपटी जीव जहां एक घडी नहीं रहत यासों या जनायो कि जहाँ जातही कपटीको कपट दूरि होतहै औ जाकी शोभा निरखि जगके जे यती तपस्वी जीव हैं तिनकी तटी कहें ध्यान स्थिती सो छूटि औ मीचुकी रुचि घटीहू घटी कहें घरी घरीमें निघटी घटत भई अर्थ यती जीवनको मरे ते मुक्ति होति है परन्तु जा स्थानकी शोभा निरखि मुक्तिहू की इच्छा नहीं करत अघ पाप ओघ समूह बेरी बंधन जंजीरसो ऐसी जो पंचवटीहै सो धूर्जटी जो महादेव हैं तिनके गुणनसों जटी कहे युक्त है येई दुःख नाशनादि गुण महादेवहू मों हैं अथवा ये जे दुःख नाशनादि गुणहैं तिनसों औ धूर्जटी जे महादेव हैं तिनसों जटी कहे युक्त है पंचवटी ॥ १९ ॥

मू०-हाकलिकाछन्द ॥ शोभतदण्डककीरुचिबनी । भाँतिनभातिनसुन्दरघनी ॥ सेवबडेनृपकीजनुलसै ॥ श्रीफलभूरिभाव जहँबसै ॥२०॥ बेरभयानकसीअतिलगै । अर्कसमूहजहाँजगमगै॥नैंनतकोबहुरूपनग्रसै। श्रीहरिकीजनुमूरतिलसै २१

टी०-दण्डकनाम राजा रहे हैं तिनको राज्य शुक्रके शाप सों बन ह्वै गयो है तासों दंडकारण्य कहावत है रुचि शोभा श्रीफल बेल औ लक्ष्मीको फल बडे राजाकी सेवामें बहुत द्रव्य पाइयत है ॥२०॥ भयानक बेर प्रलयकाल अर्क मदार औ सूर्य प्रलय कालहूमो बारहौं आदित्य उगत हैं नैंननको अनेक रूपकरि ग्रसत हैं यासों या जनायो कि क्षणमें अधिक अधिक नवीन शोभा धरत है ऐसी विष्णुकी मूर्तिहू है तासों समता करयो सुंदरताको याही प्रकार वर्णन है यथामावकाव्ये ॥ "दृष्टोपिशैलःसमुहुर्मुरारेरपूर्ववद्विस्मयमाततान ॥ क्षणेक्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपंरमणीयतायाः" ॥ २१ ॥

मू०-राम-दोधकछंद ॥ पांडवकीप्रतिमासमलेखो । अर्जुन भीममहामतिदेखो ॥ हैंसुभगासमदीपतिपूरी । सिंदुरकीतिल-

कावलिरूरी ॥ २२ ॥ राजतिहैयहज्योंकुलकन्या । धाइविराजतिहै सँगधन्या ॥ केलिथलीजनुश्रीगिरिजाकी । शोभधरेशितकंठप्रभाकी ॥ २३ ॥ मनहरनछंद ॥ अतिनिकटगोदावरीपापसंहारिणी । चलतरंगतुंगावलीचारुसंचारिणी । अलिकमलसौगंधलीलामनोहारिणी । बहुनयनदेवेशशोभामनोधारिणी ॥ २४ ॥

टी०-प्रतिमा चित्र अर्जुन ककुभवृक्ष औ पांडुपुत्र ॥ "अर्जुनः ककुभे पार्थे इति मेदिनी" ॥ औ भीम अम्लवेतस वृक्ष औ भीमसेन ॥ "भीमोवृकोदरेघोरे शंकरेप्यम्लवेतसे इत्यभिधानचिंतामणिः" ॥ जो कहौ रामावतार प्रथम भयो है अर्जुनादि कृष्णावतार समय मो रहे हैं पूर्वापर विरोधहै तौ सब कल्पनमें दशौ अवतार होतहैं सो अनेक रामावतार कृष्णावतार भये हैं तासों दोष नहीं है यथा-तुलसीकृत रामायण में कहा है ॥ 'कल्पकल्पप्रति प्रभुअवतारा' । सुभगा सौभाग्यवती स्त्री सधवा इति ताके सम शोभा पूरीहै दंडककी रुचि सिंदुरक जो है वृक्ष विशेष औ तिलक वृक्ष करिकै रूरी सुन्दर है ॥ "सिन्दूरस्तरुभेदस्यादितिमेदिनी ॥ तिलकोद्रुमरोगाश्वभेदेचतिलकालके इतिमेदिनी ॥ औ सुभगा सिन्दूरक जो सेंदुर है ताके तिलक की अवली करिके रूरी है अथवा सिन्दुरक करिकै और और जे सुवर्ण मणि आदि के तिलक हैं तिनकी अवली करिकै रूरी सुंदर है ॥ २२ ॥ कुलकन्या पद सों बडे की कन्या जानौ धाइ वृक्षविशेष औ उपमातास्तना दूध पिआवति है गिरिजा पार्वती शितकण्ठ मयूर औ महादेव ॥ २३ ॥ जा पर्णकुटीके अति निकट पापसंहारिणी गोदावरी नाम नदी है फेरि कैसी है गोदावरी चल चंचल जे तरंग हैं तिनके जे तुंग समूह हैं तिनकी जे अवली पांती हैं तिनकी चारु कहे अच्छी भाँति संचारिणी चलावन हारी है अर्थ अनेक तरंगें उठायो करति है अथवा तरंग तुंगावलिन करिकै चारु संचारिणी चलनहारी है अलि भ्रमर युक्त जे कमल हैं तिनके सौगंध सुगंध करिकै लीला है मनोहारिणी जाकी औ अलियुक्त कमलन करिकै बहुनयन जे देवेश इंद्र हैं तिनकी शोभा की मानो धारिणी धारण कर्त्री है इंद्रके सहस्रनेत्र हैं यहाँ नेत्र सदृश अलियुक्त कमलहै ॥ २४ ॥

मू०-दोधकछन्द ॥ रीतिमनोअविबेककीथापी ॥ साधुनकी गति पावत पापी । कंजजकीमतिसीबडभागी । श्रीह-

रिमंदिरसोंअनुरागी ॥ २५ ॥ अमृतगतिछंद ॥ निपटपति-व्रतधरणी । जगजनकेदुखहरणी ॥ निगमसदागतिसुनिये। अगतिमहापतिगुनिये ॥ २६ ॥

टी०-कंजजब्रह्मा ब्रह्माकीमतिहूको अनुरागहारि मंदिर वैकुण्ठ में है औ गोदावरी हू को है काहेते जो कोऊ स्नान करत हैं ताको आपनो जानि वैकुण्ठ पठावति है ॥ २५ ॥ यामें विरोधाभास है सदा पति जो समुद्र हैं तामें लीन रहतिहै तोसों निपट पतिव्रत धरणी कह्यो विरोध पक्षमें दुःख काम पीडा अविरोध में पापजनित दुःख दरिद्रादि निगम जे वेद हैं तिनमें सदा गति कहे सदा है गति मुक्ति जासों ऐसी सुनियत है अर्थ जो कोऊ स्नान करत हैं ताकोमुक्तिदेतिहैं औ पति जो समुद्रहै ताही को अगति सुनियत है अर्थ ताको गति मुक्ति नहीं देति यह विरोधार्थ है अविरोधहू की अगति गमन रहित समुद्रको जल वहत नहीं ॥ २६ ॥

मू०-दोहा ॥ विषमेंयहगोदावरी, अमृतनकोफलदेति ॥ केशवजीवनहारको, दुखअशेषहरिलेति ॥ २७ ॥ त्रिभंगी-छंद ॥ जबजबधरिवीनाप्रगटप्रवीनाबहुगुणलीनासुखसीता । पियजियहिरिझावैदुखनिभजावै विविधबजावैगुणगीता ॥ तजिमतिसंसारीविपिनविहारीदुखसुखकारीघिरिआवै । तबतबजगभूषण रिपुकुलदूषणसबकोभूषणपहिरावै ॥ २८ ॥ तोटकछंद ॥ कबरी कुसुमालिसिखीनदई । गजकुंभनिहार-निशोभमई ॥ मुकुताशुक सारिकनाकरचे । कटिकेहरिकिं-किणिशोभसचे ॥ २९ ॥ दुलरी कलकोकिलकंठबनी ॥ मृगखंजनअंजनभाँतिठनी ॥ नृपहंसनि नूपुरशोभभिरी । कलहंसनिकंठनिकंठसिरी ॥ ३० ॥

टी०-याहूमें विरोधाभास है विषमय कहे जलमय ॥ "विषन्तुगरलेतोये इति मेदिनी"॥औ जैसे अमृत अमर करत है तैसे याहू मुक्तकै अमर करतिहै विरोध पक्षमें जीवन जीव अविरोधमें जल दुःख प्यास दुःख अथवा विषयमें कहे टेढीहै

अमृत जे देवता हैं तिनके फलको देति है अर्थ शुद्धगतिको देति है औ जीवन-हार जे यमराज हैं तिनको दु:ख कहे तिनकृत दुःख यम यातना इति। ताको अशेष कहे संपूण हरिलेति है ॥ २७ ॥ सुख कहे सुखसों गुण सीतारामचंद्रकी गुणगीता दुःख कारी व्याघ्रादि सुखकारी कोकिलादि जे विपिनविहारी कहे वन विहारी हैं ते संसारी मति कहे भेद भय मतिको तजिकै मनुष्यके समीपमें वन जीवनको आपहीसों आइबो आश्चर्य है सो आवत हैं याही संसारी मतिको त्याग जानो ॥ २८ ॥ तीनि छंदनमें एक वाक्यता है शिखी मोरकबरी कहे केशपाश ॥ २९ ॥ नृप हंसराजहंस ॥ ३० ॥

मू०—मुखबासनिवासितकीनतबै । तृणगुल्मलतातरुशैल सबै ॥ जलहूथलहूयहिरीतिरमैं । बनजीवजहांतहँसंगभ्रमैं ॥ ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ सहजसुगंधिशरीरकी, दिशिविदिशन-अवगाहि ॥ दूतीज्योंआई लिये, केशवशूर्पनखाहि ॥ ३२ ॥ मरहट्टाछंद ॥ यकदिनरघुनायकसीयसहायकरतिनायक-अनुहारी । शुभगोदावरीतटविमलपंचवटबैठेहुतेमुरारी ॥ छबिदेखतहींमनमदनमथ्योतनुशूर्पणखातेहिकाल । अति-सुंदरतनुकरिकछुधीरज धरि बोलीवचनरसाल ॥ ३३ ॥

टी०—मुखवासन कहे मुखके सुगंधनसों तृण कुशादि गुल्म गुलाब आदि लता लवंगादि तरु आम्रादि औ याही रीतिसों अर्थ जैसे सीताजूके गावतमें रमत हैं तैसेही सौंदर्यादिहूके वश ह्वै रामचन्द्रके समीपमें जल जीव हंसादि औ थलजीव मयूरादि जे बन जीवकहे दंडकारण्यके जीव हैं ते रमत हैं औ जहाँ तहाँ रामचं-द्रके संग भ्रमत हैं अर्थ जहाँ रामचन्द्र जात हैं तहां संग संग भ्रमत फिरत हैं तीन हू छंदनमें युक्ति यह कि जा जीवको जो अंगवर्ण्य है ताकेही अपन पहि-रायो अथवा जाके जा अंगमें रामचंद्र जो भूषणपहिरायो ताको तौन अंगसुंदर-ताको प्राप्त ह्वै वर्ण्य भयो औ काहू काहू जीवके अवपर्यंत ताको चिह्न बन्यो है ॥ ३१ ॥ जैसे दूती ढूँढिकै स्त्रीको पुरुषके पास लै जाति है तैसे रामचन्द्रके शरीरकी जो सहज स्वाभाविक सुगंधि है सो दिशि विदिशनमें अवगाहिकै ढूँढिकै शूर्पनखाको रामचंद्रके पास ल्याई रामचंद्रके अंगनको सहज सुगंध

जो बनमें वायु योगसों फैलि रह्यो है ताको आघ्रानकै ताके अनुसार शूर्पणखा रामचंद्रके पास आई इति भावार्थः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

मू०—शूर्पणखा—सवैया ॥ किन्नरहोनररूपबिचक्षणयच्छकी स्वच्छशरीरनिसोहौ । चित्तचकोरकेचंदाकिधौंमृगलोचनचारुबिमाननिरोहौ । अंगधरेकिअनंगहौकेशवअंगीअनेकनकेमनमोहौ । बीरजटानिधरेधनुबाणलियेबनिताबनमेंतुमकोहौ ॥ ३४ ॥ राम—मनोरमाछंद ॥ हमहैंदशरत्थमहीपतिकेसुत । शुभरामसुलक्ष्मण नामनसंयुत ॥ यहशासनदैपठयेनृपकानन। मुनिपालहुमारहुराक्षसकेगन ॥३५॥ शूर्पणखा॥नृपरावणकीभगिनीगनि मोकहँ।जिनकीठकुराइतितीनहुलोकहँ॥सुनिजैदुखमोचनपंकजलोचन।अबमोहिंकरोपतिनीमनरोचन ॥३६॥ तोमर छंद ॥ तबयोंकह्योहँसिराम । अबमोहिंजानिसबाम ॥ तियजायलक्ष्मणदेखि समरूपयौवनलेखि ॥३७॥ शूर्पणखा-दोधकछंद ॥ रामसहोदरमोतनदेखो । रावणकीभगिनीजियलेखो ॥ राजकुमाररमोसँगमेरे । होहिंसबैसुखसंपतितेरे ॥ ३८ ॥ लक्ष्मण ॥ वैप्रभुहोंजनजानिसदाई । दासिभयेमहँकौनिबड़ाई ॥ जौभजियेप्रभुतौप्रभुताई ॥ दासिभये उपहास सदाई ॥ ३९ ॥

टी०—विचक्षणप्रर्वाण चित्तरूपी जो चकोर हैं ताके चंद्रमाही जैसे चन्द्रमा चकोरको सुख देत है तैसे तुम चित्तको सुख देत हौ चंद्रमा मृगनके विमान रथको रोहत है अर्थ चढत है तुम मृगरूपी जे लोचन हैं तिनहीके विमानको रोहतहौ अर्थ जो तुमको कोऊ देखत है ताके नयननमें ऐसे बसि जात हौ कि उतरत नहीं ॥ ३४ ॥ शासन आज्ञा ॥ ३५ ॥ हे मन ! रोचन अर्थ मेरे मनको तुम अति रुचत हौ ॥ ३६ ॥ आपने रूप औ यौवन संग इन्हैं लेखि कहे जानु अर्थ जैसो रूप यौवन तेरो है तैसो इनहूंको है ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ सदाई जन हौं कहि या जनायों कि कबहूं प्रभुबा हैबेकी आशा नहीं है ॥ ३९ ॥

मू०–मल्लिकाछंद॥ हासकेबिलासजानि। दीहमानखंडमानि॥ भक्षिबेकोचित्तचाहि। सामुहेभईसियाहि॥ ४०॥ तोमरछंद॥ तबरामचन्द्रप्रवीन। हँसिबंधुत्योंदृगदीन॥ गुनिदुष्टता सहलीन। श्रुतिनासिकाबिनुकीन॥ ४१॥ दोहा–शोन छिंछिछूटतबदन, भीमभईतेहिकाल॥ मानोकृत्याकुटिलयुत, पावकज्वालकराल॥ ४२॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणि-श्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायां शूर्पणखाश्रवणनासिकाछेदनं नामैकादशः प्रकाशः॥११॥

टी०–जब जान्यौ कि ये मोसों रमिहैं नहीं केवल मोसों हासके बिलास उपहास करत हैं तब दीह कहे बडो आपनो मानखंड कहे अपमान मानिकै॥ ४०॥ ॥ ४१॥ कराल पावक ज्वाल सों युक्त है वदनजाको ऐसी मानो कृत्यानामा देवी है॥ "कृत्याक्रियादेवतयोरितिमेदिनी" ॥ ४२॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसाद निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायामेकादशः प्रकाशः॥ ११॥

मू०–दोहा॥ या द्वादशे प्रकाशखर, दूषण त्रिशिरानाश॥ सीताहरणविलाप सु,–ग्रीवमिलन हरि त्रास॥ १॥

टी०–त्रासजो भय है ताको हरिकै सुग्रीवको मिलन है अर्थ बालिको वध निश्चय करि सुग्रीवको त्रास हरि रामचन्द्रमित्रता करि है॥ १॥

मू०–तोटकछंद॥ गइशूर्पणखाखरदूषणपै। सजिल्याइतिन्हैंजगभूषणपै॥ शरएकअनेकतेदूरिकिये। रविकेकरज्योंतमपुंजपिये॥ २॥ मनोरमाछंद॥ वृषकेखरदूषणज्योंखरदूषण। तबदूरिकियेरविकेकुलभूषण॥ गदशत्रुत्रिदोषज्योंदूरिकरैवर। त्रिशिराशिरत्योंरघुनंदनकेशर॥ ३॥ भजिशूर्पणखागइरावणपैतब। त्रिशिराखरदूषणनाशकहेसब॥ तबशूर्पण-

खासुखबातसबैमुनि । उठिरावणगोमारीचजहाँमुनि ॥ ४ ॥ मनोरमाछंद ॥ रावणबातकहीसिगरीत्यों । शूर्पणखाहिंविरूप करीज्यों ॥ एकहिरामअनेकसंहारे । दूषणस्योंत्रिशिराखर मारे ॥ ५ ॥ तूअबहोहिसहायकमेरो । हौंबहुतैगुणमानिहौंतेरो ॥ जोहरिसीतहिल्यावनपैहैं । वैभ्रमिशोकनहींमरिजैहैं॥६॥ मारीच ॥ रामहिंमानुपकै जनिजानो । पूरणचौदहलोकबखानो ॥ जाहुँजहाँतियलैसुनदेखो । हौंहरिकोजलहूंथललेखो॥७॥

टी०—रामचन्द्रकी आज्ञासों लक्ष्मण सीताको लैकै गुफामें राख्यो है यह कथा शेष जानो ॥ २ ॥ वृष राशिके रवि जे शेखर कहे तृणके दूषण होत है सुखाइ डारत हैं तैसे रविके कुलके पूषण जे रामचन्द्र हैं तिन खर औ दूषण नाम राक्षस को दूरि कियो कहे मारयो औ गद शत्रु जो वैद्य है सो जैसे त्रिदोष कहे कफ पित्त वात तीनोंको दोष एकही बार दूरि करत है तैसे रघुनंदनके शर त्रिशिराके शिरनको एकही बार दूर करयो ॥ ३ ॥ ४ ॥ स्यों कहे सहित ॥५॥ सीताको ढूंढत भूतलमें भ्रमि कहे घूमिकै अथवा संदेहको प्राप्त ह्वैकै ॥ ६ ॥ चौदहों लोकमें पूर्ण कहे व्याप्त ॥ ७ ॥

मू०—रावण—सुन्दरीछंद ॥ तूअबमोहिसिखावतहैशठ । मैं वशजगतकियोहठहीहठ ॥ बेगिचलैअबदेहिनऊतरु । देव सबैजजएकनहींहरु ॥ ८ ॥ दोहा ॥ याचिचल्योमारीचमन, मरणदुहूंविधिआसु ॥ रावणकेकरनरककहै, हरिकरहरिपुरबासु॥ ॥ ९ ॥ राम—सुंदरीछंद ॥ राजसुताइकमंत्रसुनोअब । चाहत हौंभुवभारहरेउसब ॥ पावकमेंनिजदेहहिंराखहु । छायशरीर मृगहिअभिलाषहु ॥ १० ॥ चामरछंद ॥ आइयोकुरंगएक चारुहेमहीरको । जानकीसमेतचित्तमोहि रामवीरको ॥ राज पुत्रिकासमीपसाधुबंधुराखिकै । हाथचापबाणलैगयेगिरीशनां-

१ सूर्य. २ रोग.

घिकै ॥ ११ ॥ दोहा ॥ रघुनायकजबहींहन्यो, सायकशठ मारीच ॥ हालक्ष्मणयहकहिगिरेउ, श्रीपतिकेस्वरनीच ॥ ॥ १२ ॥ निशिपालिकाछंद ॥ राजतनयातबहिंबोलसुनियों कहेउ । जाहुचलिदेवरनजातहमपैरहेउ । हेममृगहोहिनींहिरै- निचरजानिये । दीनस्वररामकेहिभाँजिमुखआनिये ॥ १३ ॥

टी०—एक हर महादेवको छोडिकै और सब देवता मेरेजन कहे सेवक हैं ॥ ॥ ८ ॥ आशु कहे जल्दी ॥ ९ ॥ छाया शरीरसों मृगै कहे चलिवेको अभि- लाष करौ अर्थ छाया शरीर आलंब्य रहौ अथवा छाया शरीरसों या सुवर्णमृगको अभिलाषी ॥ १० ॥ हेम सुवर्ण औ हीरनको कुरंग हरिण बनि मारीच आयो ॥ ११ ॥ जैसो रामचन्द्रको स्वरकहे शब्द है ताही स्वरसों हा लक्ष्मण यह कहिकै गिरयौ नीच मारीचको विशेषण है ॥ १२ ॥ यह कोऊ राक्षस है हरिण- को रूप धरिकै आयो है ताने रामचन्द्रको मारयो तासौं हा लक्ष्मण ऐसो दीन- स्वर रामचन्द्र कह्यो इति भावार्थः ॥ १३ ॥

मू०—लक्ष्मण ॥ शोचअतिपोचउरमोचदुखदानिये । मातु यहबातअवदातममानिये ॥ रैनिचरछद्मबहुभाँतिअभिलाष- हीं । दीनस्वररामकबहूंनमुखभाषहीं ॥ १४ ॥ चंचलाछंद ॥ पक्षिराजयक्षराजप्रेतराजयातुधान । देवताअदेवतानृदेवताजि- तेजहान ॥ पर्वतारिअर्बखर्बसर्बसर्बथाबखानि । कोटिकोटिसूर चन्द्ररामचन्द्रदासमानि ॥ १५ ॥ चामरछन्द ॥ राजपुत्रि- काकह्योसोऔरकोकहैसुनै । कानमूंदिबारबारशीशबीसधा- धुनै ॥ चापकीयरेखखाँचिदेवसाखिदैचले । नांघिहैंतेभस्म होहिंजीवजेबुरेभले ॥ १६ ॥

टी०—अति पोच कहे निषिद्ध जो दुःखदानि शोच है ताको उरसों मोचु कहे त्याग करौ छद्म कपट ॥ १४ ॥ पक्षिराज गरुड यक्षराज कुबेर प्रेतराज यम- राज यातुधान राक्षस देवता औ अदेवता दैत्य नृदेवता राजा औ पर्वतारि इंद्रते ये सब अर्ब खर्ब संख्या परिमित औ अर्बखर्ब सर्वकहे महादेव अर्बखर्बको संबंध

सर्वपद्द्रूमों है तिन्हैं सर्वथा कहे सब प्रकार बखानि कहे कहौं औ कोटि सूर्य औ चन्द्रमा हैं तिन सबको रामचन्द्रके दास कहे सेवक मानो रामचन्द्रके मारिवे लायक ये कोऊ नहीं हैं इति भावार्थः ॥ १५ ॥ लक्ष्मणको राजपुत्रिकाने जे कटुवचन कहे तिन्हैं और कौन कहै औ कौन सुनै अर्थ अतिकटुवचन कहे जे काहूके कहिबे सुनिबे लायक नहीं हैं औ जो थोरो सुनिबोहू करै तौ जामें आगे और ना सुनिपरै तालिये कान मूंदिकै बिनसुने वचननके शोकसों बीसधा अर्थ अनेक प्रकारसों शीश धुनै अथवा सीताही कान मूँदिके शीश धुनत भई कान मूँदिवेको हेतु यह जामें लक्ष्मणके ये बोध वचन न सुनिपरैं तौ लक्ष्मण वातै ना कहैं रामचन्द्रके पास जाइ अथवा जामें कटुवचन ना सुनिपरैं तालिये लक्ष्मणहीं कानको मूंदिकै वारवार शीशधुनतभये ॥ १६ ॥

मू०–छिद्रताकिक्षुद्रराजलंकनाथआइयो । भिक्षुजानिजानकीसोभीषकोबोलाइयो ॥ शोचपोचमोचिकैसकोचभीमवेषको । अंतरिक्षहींकरीज्योंराहुचंद्ररेखको ॥ १७ ॥ दण्डक ॥धूमपुरकेनिकेतमानोंधूमकेतुकी शिखाकीधूमयोनिमध्यरेखासुधाधामकी । चित्रकीसीपुत्रिकाकीरूरेबयरूरेमांहशम्बरछोडाइलईकामिनिकीकामकी ॥ पाखंडकीश्रद्धाकीमठेशबशएकादशीलीन्हींकैश्वपचराजशाखाशुद्धसामकी । केशवअदृष्टसाथ जीवजीतिजैसीतैसीलंकनाथहाथपरीछायाजायारामकी ॥ १८ ॥

टी०–क्षुद्रनको राज जो लंकनाथ है सो छिद्र कहे अवसर ताकि भिक्षुककहे दंडीरूप धरिकै सीतापै आयो शूर्पणखाकी नासिका काटेको जो पोच कहे बुरो शोच है सीता हरण निश्चय करि ताको मोचिकै छोडिकै अथवा पोच रावणको विशेषण है औ भीमवेषको जो संकोच सिकोरनो रह्यौ ताको मोचिकै अर्थ जो लघुशरीर करचोरहै ताको बडाइकै अंतरिक्ष आकाश ॥ १७ ॥ धूमपुर के निकेत कहे घरमें अर्थ धूम समूह में धूमकेतु जो अग्नि है ताकी शिखाज्योति है कि धूमयोनि जे मेघहैं तिनके मध्यमें सुधाधाम जो चन्द्रमा है ताकी रेखा कहे कलाहै कि रूरेकहे बडे बघरूरे कहे बौंडर वायु ग्रंथि करिकै प्रसिद्ध है तामें चित्रपुत्रिका है कि शंबरनामा जो दैत्य है सो कामको शत्रुहै तेहि काम की

कामिनी रतिको छँडाइ लीन्ही है कि पाखंडके वशमों अद्धापरी है यह कथा विज्ञानगीतामें प्रसिद्ध है कि मठपतिके वश एकादशी परी कि श्वपचराजु चांडालन को राजा शुद्धसामवेद की शाखा लीन्होंहे अदृष्ट कर्मके साथ में जैसी जीवें ज्योति परी है तैसी छाया कृत जो राम की जाया सीता है सो लंकनाथ के हाथ में परी ॥ १८ ॥

मू०-सीताजू-हरिलीलाछंद॥हारामहारमनहारघुनाथधीर। लंकाधिनाथवशजानहुँमोहिंवीर ॥ हापुत्रलक्ष्मणछोडावहुबेगिमोहिं। मार्तंडवशयशकीसबलाजतोहिं ॥१९॥ पक्षीजटायु यहबातसुनंतधाइ।रोक्योतुरंतबलरावणदुष्टजाइ॥कीन्हों प्रचंड रथछत्रध्वजाबिहीन। छोडयोविपक्षतबभोजबपक्षहीन॥२०॥ संयुताछंद॥दशकंठसीतहिलैचल्यो।अतिवृद्धगीधहियोदल्यो॥ चितजानकीअधकोंकियो। हरितीनिद्वैअवलोकियो॥ २१ ॥ पदपद्मकीशुभघूंघरी। मणिनीलहाटकसोंजरी ॥ जनुउत्तरीय विचारिकै। शुभडारिदीयगठारिकै ॥ २२ ॥ दोहा ॥ सीताके पदपद्मको, नूपुरपटजनिजानु॥मनहुँकरयोसुग्रीवघर, राजश्री प्रस्थानु॥२३॥यद्यपिश्रीरघुनाथजू, समसर्वगसर्वज्ञ॥नरकैसी लीला करत, जेहिमोहतसबअज्ञ ॥२४॥ राम-सवैया॥ निज देखोंनहींशुभगीतहिसीतहिकारणकौनकहौअबहीं॥अतिमोहितकैबनमांझगई सुरमारगमेंमृगमारयोजहीं ॥ कटुबातकछूतुम सोंकहिआईकिधौंतेहित्रासडेराइरहीं। अबहैयहपर्णकुटीकिधौं और किधौंवहलक्ष्मणहोइनहीं ॥ २५ ॥

टी०- ॥ १९ ॥ प्रचंडपदजटायुरावणरथतीन्योकोविशेषण ह्वै सकते हैं विपक्ष शत्रु रावण ॥२०॥ तीनि औ द्वै कहे पांच अथवा द्वै तीनि कहिबेकी रीति शुभाषोक्ति है हरि बानर ॥२१॥ उत्तरीय ओढिवेको वस्त्र ॥२२॥ जब प्रस्थान भयो तब आप आयोई चाहै ॥ २३ ॥ सम कहे सदा एक रस रहत हैं औ सर्वग कहे सर्वत्र व्याप्त हैं औ सर्वज्ञ कहे सबजानत हैं ॥ २४ ॥ जो हमारे स्वरसों हा लक्ष्मण यह

कहिके मृग मरयो है सो हमारो शब्दजानि ताही स्वरके मार्ग ह्वै हमारे वडे हितसों बनके मध्यमें गई है कि हे लक्ष्मण ! यह पर्णकुटी है कि कछू औरई वस्तु है औ कि वह पर्णकुटी नहीं है और ई पर्णकुटी है ॥ २५ ॥

मू०-दोधकछन्द॥धीरजसोंअपनोमनरोक्यो । गीधजटायु परचोअवलोक्यो ॥ छत्रध्वजारथदेखिकैबूझेउ । गीधकहौरण कौनसोजूझेउ ॥ २६ ॥ जटायु ॥ रावणलैगयोराघवसीता । हारघुनाथरटैशुभगीता ॥ मैंबिनछत्रध्वजारथकीन्हों । ह्वैगयो हौंबलपक्षविहीनो ॥२७॥ मैंजगमेंसबतेबडभागी । देहदशा तबकारणलागी ॥ जो बहुभांतिनवेदनगायो॥रूपसोंमैंअवलो-कनपायो ॥२८॥ राम ॥ साधुजटायुसदाबडभागी । तोमन-मोवपुसोंअनुरागी ॥ छूटचोशरीरसुनीयहबानी । रामहिमेंतब ज्योतिसमानी ॥ २९ ॥ तोटकछंद ॥ दिशिदक्षिणकोकरिदा-हचले । सरितागिरिदेखतवृक्षभले ॥ बनअंधकवंधबिलोकत हीं । दोउसोदरखैंचलियेतबहीं ॥३०॥ जबसैबेहिकोजियबुद्धि गुनी । दुहुँबाणनिलैदोउबाहिहनी॥वहँछाडिकैदेहचल्योजबहीं यहव्योममेंबातकहोतबहीं ॥ ३१ ॥ तोटकछंद ॥ पीछे मघवामोहिंशापदई । गंधर्वतेराक्षसदेहभई ॥ फिरिकैमघवास-हयुद्धभयो । उनक्रोधकैशीशमेंवज्रहयो ॥ ३२ ॥

टी०-॥२६ ॥ २७ ॥ दशा अवस्था अर्थ यह कि यह देह गृध्रकी औ यह वृद्धावस्था तुम्हारे कछू उपकारके लायक नहीं रही तासों तुम्हारोउपकार भयो औ ऐसो जो तुम्हारो रूप है ताकों देख्यो तासों जगमें मैं सबसों बडभागी हौं ॥ २८ ॥ अर्थ सायुज्य मुक्ति पायो ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ बाहु दई पर्यन्त तीनिछंदके छेपकहैं पीछेकहे पूर्वहीं ॥ ३२ ॥

मू०-दोहा ॥ गयोशीशगडिपेटमें, परचोधरणिपरआय ॥ कछुकरुणाजियमोभई, दीन्हीबाहुबढ़ाय॥३३॥बाहुदई द्वैको-

शकी, आवैतेहिगहिखाउँ ॥ रामरूपसीताहरण,उधरहुगहनउपाउ॥३४॥सुरसरितेआगेचले,मिलिहैंकपिसुग्रीव।देहैंसीताकीखवरि, बाढैसुखअतिजीव ॥३५॥ तोटकछंद ॥ सरिताएककेशवसोभरई । अवलोकितहांचकवाचकई ॥ उरमेंसियप्रीतिसमाइरही । तिनसोंरघुनायकबातकही ॥ ३६ ॥ अवलोकतहौं जवहींजबहीं । दुखहोततुम्हैंतबहींतबहीं ॥ वहवैरनचित्तकछूधरिये । सियदेहुबताइ कृपाकरिये ॥ ३७॥ शशिकेअवलोकन दूरिकिये । जिनकेमुखकीछबिदेखिजिये ।कृतचित्तचकोरकछूकधरौ । सियदेहुबताय सहायकरौ ॥ ३८ ॥

टी०—॥३३॥करुणा करिकै द्वै कोश कि बाहु दई औ यह वर दियो कि जो इन बाहुनके मध्यमें आवै ताको खाहु जब सीताहरण ह्वैहै तब रामचन्द्र या मग अइहैं तिनके गहन उपाय सों उद्धरहु कहे तुम्हारो उद्धार होई अर्थ जब रामचन्द्रको इन बाहुनसों गहिहै तब तेरो उद्धार ह्वैहै ॥ ३४ ॥ सुरसरि गोदावरी ॥ ३५ ॥३६॥ जब सीताको तुम अवलोकत रहे कहे देखत रहौ तब अपनासों अधिक सुन्दर सीताके कुच देखि तुम्हारे दुख होत रहै अथवा हमको संयोगी देखत तासों तुम्हारे दुःख होत रह्यो ॥ ३७ ॥ शशि जो अति सुन्दर जिनके मुखको देखि शशिकी ओर विलोकिवो छोडि केवल जिनके मुखकी छविको देखिकै जियत रहेहौ अथवा शशिके अवलोकन दर्शन दूरिकिये पर अर्थ जब कृष्णपक्षमें चन्द्रमा आपनो दर्शनदृष्टि सों दूरि कियो ना देखि परचो तब चंद्रसम केवल जिनके मुखकी छबिको देखि जियत रहे हौ वह कृत कहे उपकार कछु चित्तमें धरिकै सीताको वताइ देउ ॥ ३८ ॥

मू०—सवैया ॥ कहिकेशवयाचककेअरिचंपकशोकअशोकलियेहरिकै । लखिकेतककेतकिजातिगुलाबतेतीक्षणजानितजेडरिकै ॥ सुनिसाधुतुम्हैंहमबूझनआयेरहेमनमौनकहाधरिकै । सियकोकछुसोधुकहौकरुणामयसोकरुणाकरुणाकरिकै॥३९॥ नाराचछंद॥ हिमांशुसूरसोलगैसोबातबज्रसोबहै।दिशालगैंकृ-

शानुज्योंविलेपअंगकोदहै ॥ विशेषिकालरातिसोकरालराति मानिये । वियोगसीयकोनकालकोकहारजानिये ॥ ४० ॥

टी०-रामचन्द्र करुण वृक्षसों कहत हैं कि चम्पक जेहैं ते याचकके अरि शत्रुहैं पुष्पनको याचक जो भ्रमर है ताको निकट नहीं आवनदेत चंपकमें भ्रमर नहीं बैठत यह प्रसिद्ध है ता भयसों चंपक सो सीताको सोधु नहीं जांचे अशोक जे वृक्ष हैं तिनके शोकको हरिकै छोडिकै अशोक यह जो नाम है ताको लीन्हों है तासों जिनहूको तज्योहै कि जिनके शोक हैही नहीं ते हमारो दुःख देखि दुःखी ह्वै कृपा करि सीताको सोधु काहेको बताई है केतक केवरा औ केतकी औ गुलाव इनकी जाति जे और कंटक वृक्ष हैं कमलादि तिन्हैं तीक्ष्ण कहे कंट-कित जानिकै डरिकै तज्यो है सो हे करुणा कहे करुण वृक्ष ! करुणा कहे दीनतामय जे हमहैं तिनसों सीताको कछु सोधु कहौ ॥३९॥ रामचन्द्र लक्ष्मणसों कहत हैं कि हिमांशु जो चन्द्रमा है सो हमको सूर्य सम तप्त लागत है औ वायु वज्रसम बहति है औ दशों दिशा अग्निके समान तप्तलागतिहै औ तुम जो शीतलताके अर्थ हमारे अंगनमें विलेप करतहौ सो अंगनको जारतहै औ राति काल राति समकराल लागति है औ सीताको वियोग लोक हरकाल संहार काल सम लागत है ॥ ४० ॥

मू०-पद्धटिकाछन्द ॥ यहिभाँतिविलोकेसकलठौर । गये शबरीपैदोउदेवमौर ॥ लियोपादोदकत्यहिपदपखारि । पुनि अर्घ्यादिकदीन्हेंसुधारि ॥ ४१ ॥ हरदेतमंत्रजिनकोविशाल शुभकाशीमेंपुनिमरणकाल॥ तेआयेमेरेधामआज । सबसफ-लकरनजपतपसमाज ॥४२॥ फलभोजनकोतेहिधरेआनि । भयेयज्ञपुरुषअतिप्रीतिमानि ॥ तिनरामचन्द्रलक्ष्मणस्वरूप । तबधरेचित्तजगजोतिरूप॥४३॥ दोहा ॥ शबरीपावकपंथतब, हरखिगईहरिलोक ॥ बननविलोकितहरिगये, पंपातीरसशोक ॥ ४४ ॥ तोटकछंद ॥ अतिसुन्दरशीतलसोभवसै । जहँरू-पअनेकनिलोभलसै ॥ बहुपंकजपक्षिविराजतहैं । रघुनाथवि-लोकतलाजतहैं ॥ ४५ ॥ सिगरीऋतुशोभितसुभ्रजहीं । लहै

ग्रीषमपैनप्रवेशसही ॥ नवनीरजनीरतहाँसरसैं । सियकेशुभ लोचनसेदरसैं ॥ ४६ ॥

टी०-॥ ४१ ॥ मंत्र राम तारक तप औ जप समाज के सफल करन कहे सफल कर्त्ता अर्थ जो कोऊ जप तप करत है ताको फल रामचंद्र ही देत हैं ॥ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ जीवतही अग्निमों जरिकै ॥ ४४ ॥ कैसो है पंपासर अति सुंदर है औ अति शीतल है जहां शोभा जो है सदा आय वास करति है औ जहां कहे स्थान में जातही प्राणिन के अनेक रूप सो लोभ बसतहै अर्थ जहां जातही प्राणिन के रहिबेको लोभबाढत है औ बहुत पंकज कमल औ हंसादि पक्षी विराजतहैं ते रामचन्द्रको देखिकै लज्जित होत हैं जा अंगको जो उपमान है ता अंगको निरखि अपना सों अधिक जानि लजात हैं ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

मू०-विजयछंद ॥ सुन्दरसेतसरोरुहमें करहाटकहाटककी द्युतिकोहै । तापरभौंरभलेमनरोचनलोकविलोचनकीरुचिरो-है॥देखिदईउपमाजलदेविनदीरघदेवनकेमनमोहै । केशवकेश-वरायमनोकमलासनकेशिरऊपरसोहै ॥ ४७ ॥लक्ष्मण-सवै-या॥ मिलिचक्रिनचंदनबातबहैअतिमोहतन्यायनहींमतिको। मृगमित्रविलोकतचित्तजरैलियेचन्दनिशाचरपद्धतिको। प्रति कूलशुकादिकहोहिंसबैजियजानैनहींइनकीगतिको । दुखदेत तड़ागतुम्हैंनबनैंकमलाकरह्वैकमलापतिको ॥ ४८ ॥

टी०-सरोरुह कमलकरहाटक शिफाकंद हाटकसुवर्ण लोकके लोचनकी रुचि कहे इच्छाको रोहैकहै धारण करत है अर्थ जिनको देखि सबके लोचननमें सदा देखिबेकी इच्छा होतिहै अथवा लोकके लोचनन की रुचि शोभा रोहत है अर्थ लोचन सम शोभतहै केशवराय विष्णु कमलासन ब्रह्मा श्वेत कमल सोई ब्रह्माको आसन कमल समहै करहाटक ब्रह्मासम पीतवर्ण है भ्रमर विष्णुसम है ॥४७॥ पंपासर सो लक्ष्मण कहत हैं कि चन्दनवात जो इनकी मतिको मोहत है मूर्च्छित करत है सो न्याय यही सों काहे ते चंदन वृक्षमें लपटे जे अनेक चक्रीसर्प हैं तिनसों मिलिकै स्पर्शकरिकै बहत है सो सर्पनक संगको फल है सर्पहू जाको काटत हैं ताको मूर्च्छित करत हैं अति पतिसों मृगके अंकमें धरे हैं तासों मृग मित्रपद

कह्यो सों संग मित्र जो चंदहै ताको विलोकि इनको चित्त जरत है सोऊ न्यायही है काहेते निशाचरन की पद्धति परिपाटीको लिये है निशाचर राक्षसहू हैं चंदहू है सो निशाचरन की राक्षसन की परिपाटीको लिये है राक्षसनहूंको देखतही चित्तजरतहै औ मृग मित्रकहिया जनायो कि पशुनको मित्र है प्रतिकूला दुःखद जो शुकादिक होतहैं सोऊ न्यायही है काहेते वे पक्षी पशुहैं इनकी गतिको नहीं जानत कि ये ईश्वरहैं कमलाकरपद श्लेष है कमलनके आकर समूहसों युक्त औ कमला लक्ष्मीके उत्पन्नकर्ता युक्ति यह कि ये तुम्हारे जामातु[१] हैं इनको दुःख देना तुम्हें न चाहिये ॥ ४८ ॥

मू०-दोहा ॥ ऋष्यमूकपर्वतगये, केशवश्रीरघुनाथ ॥ देखे वानरपंचविभु, मानोदक्षिणहाथ ॥४९॥ कुसुमविचित्राछंद ॥ तबकपिराजारघुपतिदेखे । मननरनारायणसमलेखे॥ द्विजवपुधरितहँहनुमतआये। बहुविधिआशिषदैमनभाये ॥ ५० ॥ हनुमान ॥ सबविधिरूरेबनमहँकोहौ। तनमनसूरेमनमथमोहौ॥ शिरसिजटावकलाबपुधारी । हरिहरमानहुंविपिनबिहारी ॥ ५१ ॥ परमबियोगीसमरसभीने । तनमनएकैयुगतनकीने ॥ तुमकोहौकालगिबनआये । क्यहिकुलहौकौनेपुनिजाये ॥ ५२ ॥ राम-चंचरीछंद ॥ पुत्रश्रीदशरत्थकेबनराजशासन आइयो । सीयसुन्दरिसंगहीबिछुरीसोसोधनपाइयो ॥ राम लक्ष्मणनामसंयुतशूरवंशबखानिये । रावरेबनकौनहौक्यहि काजक्योंपहिंचानिये ॥ ५३ ॥

टी०-सुग्रीव हनूमान नल नील सुषेण य पांच जे वानरहैं विभु कहे प्रतापी तिन सहित ऋष्यमूक को देख्यो मानों सो पृथ्वीको दक्षिण हाथ है पृथ्वी इति शेषः अथवा मानों अपनो दक्षिण हाथही देख्यो है मित्रको औ भ्राता को दक्षिण बाहुसम कहिबेकी रीतिहै ॥ ४९ ॥ नरनारायणके द्वैरूप हैं ॥ ५० ॥ रूरे सुन्दर

१ दामाद ।

॥ ५१ ॥ परम वियोगी हौ अर्थ तुम्हारी चेष्टाते जानि परत है कि काहू वडे हितको वियोग भयो है औ जटा वल्कलादि सों शान्तरसमें भीनेजानि परतहौ ॥ ॥ ५२ ॥ शासनआज्ञा ॥ ५३ ॥

मू०–हनुमान–दोहा ॥ यागिरिपरसुग्रीवनृप, तासँगमंत्री चारि ॥ वानरलईछँडाइतिय, दीन्होवालिनिकारि ॥ ५४ ॥ दोधकछंद ॥ वाकहँजोअपनोकरिजानो । मारहुवालिविनैयह मानो ॥ राजदेहुजोवाकीतियाको । तोहमदेहिंवतायसिया-को ॥ ५५ ॥ लक्ष्मण ॥ आरतकेप्रभुआरतटारौ । दीनअना-थनकोप्रतिपारौ ॥ स्थावरजंगमजीवजोकोऊ । सन्मुखहोतकृ-तारथसोऊ ॥ ५६ ॥ वानरह्वैहनुमानसिधारेउ । सूरजकोसु-तपाँयनिपारेउ ॥ रामकह्योउठिवानरराई । राजसिरीसखिस्यो तियपाई ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ उठेराजसुग्रीवतब, तनमनअतिसु-खपाइ ॥ सीताजूकेपटसहित, नूपुरदीन्हेआइ ॥ ५८ ॥ तारक छंद ॥ रघुनाथजबैपटनूपुरदेखे । कहिकेशवमाणसमानहिंले-खे ॥ अवलोकतलक्ष्मणकेकरदीन्हे । उनआदरसोंशिरमानि-कैलीन्हे ॥ ५९ ॥ राम–दंडक ॥ पंजरकीखंजरीटनैननको-किधौंमीनमानसको केशोदासजलुहैकिजालुहै । अंगकोकि अंगरागगेडुआकीगलसुईकिधौंकटिजेबहीकोउरकोकिहारुहै॥ बंधनहमारोकामकेलिकोकिताडिबेकोताजनोंविचारकोकीच-मरबिचारुहै । मानकीजमनिकाकी कंजमुखमूंदिबेको सीता-जूकोउत्तरीयसबसुखसारुहै ॥ ६० ॥

टी०–वानर वालिको विशेषण है ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ कृतार्थ कहे कृतहै अर्थ प्रयोजन जाको ॥ ५६ ॥ अर्थ वालिको मारि कै राज्य श्रीसहित तुम्हारी स्त्री हम तुमको देहैं ऐसा निश्चय वचन रामचंद्र सुग्रीवको दियो ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

शिर मानिकै कहे शिरपर राखि कै ॥ ५९ ॥ रामचन्द्रकहत हैं कि हमारे खंजरीट कहे खंडरिचरूपीजेनयनहैं तिनको पंजर पिंजराहै जामें परिनयन कै कढन नहीं पावत औ कि मीनरूपी जो मानस मन है ताको जल है कि जालु है जैसे मीन जलसों नहीं कढति तैसे मन यासों नहीं कढत औ जालको औ पंजरको हेतु एकही है अंगन को कि अंगराग कहे चंदनादि को लेपहै कि गेरुआ तकिया है कि गलसुई छोटी तकिया है अर्थ स्पर्शते अंगनको अंगरागादि सम सुखदहै औ कि कटिजेब कहे क्षुद्रघंटिका है औ किही को जेब कहे धुकधुकी है जेबपदको संबंध याहूमें है औ कि उरको हार है औ कि कामकेलि समयको हमारो बंधन फांस है औ कि कामकेलि समयको हमारे ताडिबेको ताज नोकसा है कोडाइति अर्थ कामकेलिमें अति चंचल कर्ता है औ कि कामकेलिका जो विचार कहे विगत चार चलन है रतांत इतिताको रत भ्रमहर चमरकहे बाल व्यजन है यहां चमर पदते व्यजन जानौं अथवा हमारे विचारको चमर है अर्थ विचारको शोभाकर्त्ता है अर्थ प्रकाश कर्ता है ऐसो हमारो विचार अनुमान है औ कि सीताजूके मानकी जमनीका कनात है अर्थ याही की आडमें सीताजूको मान रहत रह्यो औ कि सीताजूको कंजमुख मूँदिबेको सब सुखसार उत्तरीय है याही विधि उत्तरीयको वर्णन हनुमन्नाटकमें है । "द्यूतेपणःप्रणयकेलिषुकंठपाशः क्रीडापरिश्रम हरंव्यजनं रतांते । शय्यानिशीथसमयेजनकात्मजायाप्रातं मयाविधिवशादिहचोत्तरीयम्" ॥ ६० ॥

मू०-स्वागताछंद ॥ वानरेन्द्रतबयोंहँसिबोल्यो । भीतभेद जियकोसबखोल्यो ॥ आगिबारिपरतक्षकरीजू । रामचन्द्रहँसिबाहँधरीजू ॥ ६१ ॥

टी०-जब निश्चय मित्र जान्यो तब आपनो भीतभेदकहे बालि कृत भयको सब भेद खोल्यो कहे कह्यो मित्र सों अंतःकरण को सब भेद कह्यो चाहिये॥ ६१॥

मू०-सूरपुत्रतबजीवनजान्यो । वालिजोरबहुभाँतिबखान्यो ॥ नारिछीनिजेहिभाँतिलईजू । सोअशेषबिनतीविनईजू ॥ ॥ ६२ ॥ एकबारशरएकहनौजो ॥ साततालबलवंतगनोतो । रामचन्द्रहँसिबाणचलायो ॥ तालबेधिफिरिकैकरआयो ॥ ६३ ॥

---

१ खञ्जन या खडरीच ।

सुग्रीव–तारकछंद ॥ यह अद्भुतकर्मऔरपैहोई । सुरसिद्धप्रसिद्धनमेंतुमकोई ॥ निकरीमनतेसिगरीदुचिताई । तुमसोंप्रभुपाय सदासुखदाई ॥ ६४ ॥ विजयछंद–बावनकोपदलोकनमापिज्योंबावनकेवपुमाँहसिधायो । केशवसूरसुताजलसिंधुहिपूरिकैसूरहिको पदपायो ॥ रामकेबाणत्वचामबबेधिकैकामपैआवतज्योंजगगायो ॥ रामकोशायकसातहुतालनि बेधिकैरामहिंकेकरआयो ॥ ६५ ॥ सोरठा ॥ जिनकेनामविलास, अखिललोकबेधतपतित ॥ तिनको केशवदास, साततालबेधतकहा ॥ ६६ ॥ रामतारकछंद–अतिसंगतिबानरकीलघुताई । अपराधबिनावधकौनिबडाई ॥ हतिवालिहिंदेउतुम्हैंनृपशिक्षा । अबहैकछुमोमनऐसियइच्छा ॥ ६७ ॥

टी०–॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ वालिके शीघ्र वधमें आपने अंतर निश्चयको प्रकट करत मित्रताधिक्य को दिखावत रामचन्द्र परिहासपूर्वक सुग्रीव सों कहते हैं कि हे सुग्रीव ! वानरकी संगति अति लघुता है काहेते अपराध विना वधमें कछू बडाई नहीं है लघुताई ही है परंतु हमारे मनमें अब यहै इच्छा है कि वालिको मारि तुमको नृपशिक्षा दीजै अर्थात् राजा कीजिये यह केवल वानर संगतिको प्रभाव है विनकाज अकाज करिवो सब वानरनको स्वभाव होतहै तिनकी संगतिते तैसो स्वभाव भयोचाहै ॥ ६७ ॥

मू०–इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायां सीताहरणरामसुग्रीव मैत्रीवर्णनंनामद्वादशः प्रकाशः ॥ १२ ॥

टी०–इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसाद निर्मिताया रामभक्तिप्रकाशिकायां द्वादशः प्रकाशः ॥ १२ ॥

मू०—॥ यातेरहेप्रकाशमें, बालिवध्योकपिराज ॥ वर्णनवर्षा शरदको, उदधिउलंघनसाज ॥ १ ॥ पद्धटिकाछंद ॥ रविपुत्रबालिसोंहोतयुद्ध । रघुनाथभयेमनमाहँक्रुद्ध ॥ शरएकहन्योउरमित्रकाम ॥ तबभूमिगिरयोकहिरामराम ॥ २ ॥ कछुचेतभयेतेहिबलनिधान ॥ रघुनाथविलोकेहाथबान ॥ शुभचीरजटाशिरश्यामगात । वनमालहियेउरविप्रलात ॥ ३ ॥ बालि ॥ तुम आदिमध्यअवशानएक । जगमोहतहौवपुधरिअनेक ॥ तुमसदाशुद्धसबकोसमान । केहिहेतुहत्योकरुणानिधान ॥४॥ राम ॥ सुनिवासवसुतबुधिबलविधान । मैंशरणागतहितहतेप्रान ॥ यहसांटोलैकृष्णावतार । तबह्वैहौतुमसंसारपार ॥ ५ ॥

टी०—॥ १ ॥ मित्र जे सुग्रीवहैं तिनके काम कहे अर्थ बालिके वधमें केवल सुग्रीवही को हित है रामचंद्रको कछु हित नहीं है ॥ २ ॥ ३ ॥ जगको आदि कहे उत्पत्ति मध्य कहे प्रतिपाल अवसान कहे संसार कर्त्ता एक तुमही हौ अर्थ ब्रह्मारूप ह्वै तुमहीं सृष्टि करते हो विष्णु रूप ह्वै प्रतिपाल करत हौ रुद्र रूप ह्वै संहार करतहौ सो अनेक वपुशरीर धरिकै जगको मोहत हौ अर्थ दशरथके पुत्र रामचन्द्र हैं इत्यादि मोह बढावत हौ ॥ ४ ॥ सांटो कहे बदलो ॥ ५ ॥

मू०—रघुवीररंकतेराजकीन । युवराजबिरदअंगदहिदीन ॥ तबकिष्किंधातारासमेत ॥ सुग्रीवगयेअपनेनिकेत ॥ ६ ॥ दोहा ॥ कियोनृपतिसुग्रीवहति, बालिबलीरणधीर । गयेप्रवर्षण अद्रिको, लक्ष्मणश्रीरघुवीर ॥ ७ ॥ त्रिभंगीछंद ॥ देख्योशुभ गिरिवरसकलसोभधरफूलबरनबहुफलनिफरे । संगसरभऋक्षजन केशरिकेगणमनहुधरणिसुग्रीवधरे ॥ सँग शिवाविराजैगजमुख गाजैपरवभृतेलैचित्तहरे । शिरशुभचन्द्रकधरपरमदिगंबरमानो हरअहिराजधरे ॥ ८ ॥

टी०—रामचंद्र सुग्रीवको रंक कहे दरिद्री ते राजा कीन्हो सुग्रीव पदको संबंध रंक राज पदहूमोंहै विरद पदवी ॥ ६ ॥ प्रवर्षण नामा जो अद्रि पर्वत है तामें जाइ वास करचो ॥ ७ ॥ रामचंद्र कैसो पर्वत देखंत भये कि फूल हैं बरन बहु कहे अनेक रंगके औ बहुत फलन सों फरे बहुपदको संबंध फलन हूं मों है आगे श्लेषोरक्षाकरि वर्णत हैं शरभवानर नाम विशेष है औ पशुजाति विशेष ॥ "शरभस्तु पशौ भिदिकरभेवानरेभिदि इति मेदिनी"। ऋक्ष पर्वतहूमें है सुग्रीवहूके संग जाम्बवंतादि हैं केशरी कहे सिंह ताके गण समूह औ केशरी नामा वानर हनूमान के पिता तिनके गण सैन्य समूह शिवा पार्वती औ शृगाली गजमुख गणेश औ हस्ती आदि और वनजीव आदि पदते गेंडा आदि जानौं पर कहे वडे जे भृतसेवक हैं नंदिकेश्वरादि औ कोकेलचंद्रक चंद्रमा औ कपूर अर्थ कदली वृक्षनमें कपूर होतहै ते कदली जामें बहुत हैं अथवा जल अनेक वाप्यादिकनमें भरचो है अथ चंद्रक धर मोर ॥ "चंद्रः कर्पूरको कांपिल्य सुवार्णवारिषु इति मेदिनी"। दिगंवरनग्नदुवौपच्छमेंएकैहै अहिराज वासुकी औ बडे सर्प ॥ ८ ॥

मू०—तोमरछंद ॥ शिशुसोलसैसँगधाइ । बनमालज्योंसुर राइ ॥ अहिराजसोयहिकाल । बहुशीशशोभनिमाल ॥ ९ ॥ स्वागताछंद ॥ चंद्रमंदद्युतिवासरदेखौ । भूमिहीनभुवपालविशेषौ ॥ मित्रदेखियहशोभतहैयौं । राजसाजबिनुसीतहिहौं ज्यौं ॥ १० ॥ दोहा ॥ पतिनीपतिबिनुदीनअति, पतिपति नीबिनुमंद ॥ चंद्रबिनाज्यौंयामिनी, ज्योंविनयामिनिचंद ॥ ॥ ११ ॥ स्वागताछंद ॥ देखिरामबरषाऋतुआई । रोमरोमबहुधादुखदाई ॥ आसपास तमकीछबिछाई रातिदिवसकछुजानिनजाई ॥ १२ ॥ मंदमंद धुनिसोंघनगाजैं । तूरतारजनुआवझबाजैं ॥ ठौरठौरचपलाचमकैयौं । इंद्रलोकतियनाचतिहैंज्यौं ॥ १३ ॥ मोटनकछंद ॥ सोहैंघनश्यामलघोर घनैं । मोहैंतिनमैंबकपांतिमनैं ॥ शंखावलि पी बहुधाजलसों । मानीतिनकोउगिलैबलसों ॥ १४ ॥ शोभा अतिशक्र-

शरासनमें । नानाद्युतिदीसतिहैघनमें । रत्नावलिसी दिवि-द्वारभनो । वर्षागमबांधियेदेवमनो ॥ १५ ॥

टी०-शिशु बालक धाइ जो माताते अन्य आपनो स्तन दूध पिआवति है औ वृक्षविशेष सुरराइ कहे विष्णु ते बनमाल पहिरेहैं पर्वतमें वनकी माला पंगति-समूहेति है अथ बडोबनहै बहुशीश सहस्र शिर औ बहुतशीशसो सो हैं वृक्ष ॥ ९ ॥ दिनमें द्युतिहीन चंद्रमाको देखि रामचंद्र लक्ष्मण सों कहतहैं मित्र। सूर्य अथवा मित्र लक्ष्मण को संबोधन है ॥ १० ॥ ११ ॥ एकादश छंदन मों जैसो वर्णन करयो है ऐसी बर्षाऋतु आई देखिकै रामचंद्र कलहंस कलानिधि खंजन कंज याते इसयें छंद में जे वचन हैं ते कहत भये इति शेषः ॥ १२ ॥ तूर नगारे तार उच्चस्वर ॥ १३ ॥ १४ ॥ दिवि द्वार कहे आकाशके द्वारमें रत्नावलि पदते रत्ननके वन्दनवार जानौ बडे की अवाईमें बंदनवार बांधिबेकी रीति प्रसिद्ध है ॥ १५ ॥

मू०-तारकछंद ॥ घनघोरघनेदशहूंदिशिछाये । मघवाजनुसूरजपैचढिआये ॥ अपराधबिनाक्षितिकेतनताये । तिनपीडनपीडितह्वैउठिधाये ॥ १६ ॥

टी०-तीनि छंद को अन्वय एक है ग्रीष्म ऋतुमें अति तेजसों सूर्य क्षिति पृथ्वीके तनताये तप्त करयो है जो कोऊ काहूको बिन दोष दुःख देई ताको दंड करिबो राजन को उचित है इंद्रदेवन के राजा हैं तासों सूर्यको उचित दीर्घ दंड कियो जासों ऐसो अबना करै उत्प्रेक्षा करि यह राजनीति प्रगट देखायो अथवा पृथ्वीको अशरण जानिकै अशरणको सहाय करिबो बडेनको उचित है तासों अथवा पृथ्वीको स्त्री जानिकै स्त्री की रक्षा करिबो बडेन को उचित है तासों दुंदुभि कहे जे गजादि वाहन पर चमूके आगे नगारे बाजत हैं निर्घात कहे जाको वज्र शब्द सब कहत हैं सो नहीं है सबै कहे जे ते निर्घात होत हैं तेते पवि कहे वज्र के पात गिरिबो बखानो कहे कहत हैं अर्थ जै बार निर्घात होत है सो निर्घात नहीं है बार बार इंद्र सूर्यको वज्र चलावत हैं ताहीको शब्द होत है सम कहे बराबरि अर्थ जैसे अत्रिकी स्त्रीके उरमें देख्यो तैसे याके उरमें देख्यो है गोर मदाइनी कहे इंद्र धनुष नहीं है प्रत्यक्ष धनुष है गोर मदाइनि इंद्र धनुष को नाम पश्चिममों प्रसिद्ध है औ बर्नना तुसारहूसों प्रगट होत है कहूँगोर सदायन नाहीं पाठ है तौ गो जे किरणें हैं ते रसद कहे

मेघनके अयन कहे घरमें मध्यमें इति नहीं है प्रत्यक्ष धनुष है सूर्य की किरणें मेघनमें परि इंद्र धनुष होत है यह प्रसिद्ध है खड्ग कहे तरवारि द्युतिवंत चन्द्र-शुक्रादि तौ एकही चूकसों जातिमात्रको दंड वडे कोपको जनावत है चन्द्रवन्धू वीरवहोटी रसराज में कह्योहै नवलवधू उरलाजे इन्द्र वधूसीहोई ॥ १६ ॥

मू०—अतिगाजतबाजतदुंदुभिमानो ॥ निरघातसबैपविपातबखानो ॥ धनुहैयहगोरमदाइनिनाहीं । शरजालबहैजलधार वृथाहीं ॥ १७ भटचातकदादुरमोरनबोलै । चपलाचमकैंनफिरैखगखोलै ॥ द्युतिवंतनकोबिपदाबहुकीन्हीं । धरनीकहँ चंद्रवधूधरिदीन्हीं ॥ १८ ॥ तरुनीयहअत्रिऋषीश्वरकीसी । उरमें हमचन्द्रकलासमदीसी ॥ वरषानसुनैकिलकैकिलकाली । सबजानतहैंमहिमाअहिमाली ॥१९॥ घनाक्षरी ॥ भौंहैंसुरचापचारु प्रमुदितपायोधर । भूखन जरायजोतितड़ितरलाईहै । दूरिकरीसुखमुखसुखमाशशीकीनैंनअमलकमलदलदलितनिकाईहै ॥ केशोदास प्रवलकरेनुकागमनहरमुकुतसुहसकसबदसुखदाईहै । अंबरवलित मतिमोहैनीलकंठजूकीकालिकाकिवरखाहरखिहियआईहै ॥ २० ॥

टी०—॥ १७ ॥ १८ ॥ सम कहे वरावरि अर्थ जैसे अत्रिकी स्त्री के उरमें देख्योहै तैसे याके उरमें देख्योहै अनसूयाको पातिव्रत देखि ब्रह्मा विष्णु महेश पुत्र ह्वैवेकी इच्छाकरि गर्भमें आय चंद्रमा दत्तात्रेय दुर्वासारूप यथाक्रम अवतार लियो है कथा पुराणनमें प्रसिद्ध है अहिमाली महादेव औ सर्पनकी माला वर्षागमनमें सर्प अति प्रसन्न होत हैं ॥ १९ ॥ कैसी है वर्षा कि जामें अनेक ग्रहपतन चौरादिके भौ कहे डर हैं औ सुरचाप कहे इन्द्र धनुष है चारुसुन्दर औ प्रमुदित कहे प्रसन्न हैं पयोधर मेघजामें औ भू कहे पृथ्वी औ ख कहे आकाशमें नजराइ कहे देखि परति है ज्योति जाकी ऐसी तडित जो विजुली है ताकी तरलता है औ दूरि कीन्हों है सुख कहे सहजही मुखकी सुखमा शोभा शशि

कहे चन्द्रमाकी अर्थ चन्द्रप्रकाश नहीं होन पावत औ नै जे नदी हैं ते न कहे नहीं हैं अमल निर्मल अर्थ नदीनको जल म्लान ह्वै जात है औ कमलनको दल समूह दलित होत है औ निकाई कहे काई सों रहित है अथवा कमलदलकी दलित है निकाई जामें केशवदास कहत हैं कि रेणुका जो धूरिहै ताको गमनहर प्रबल है क कहे जल जामें अर्थ ऐसो जल चारों ओर भयो है जासों धूलि नहीं उडति औ मुकुत कहे त्यक्त है हंसक जे हंस हैं तिनको सुखदाई शब्द जामें वर्षामें हंस उडजातहैं यह प्रसिद्ध है औ अम्बर जो प्रकाश है तामें वलित कहे युक्त नीलकण्ठ जे मोर हैं तिनकी मतिको मोहै कहे प्रसन्न करति हैं, कालिका कैसी है कि भौंहैं हैं सुरचाप इन्द्रधनुषहू ते चारु जाकी औ प्रमुदित कहे उन्नत हैं पयोधर स्तन जाके भूषणनमें जराइ कहे जराऊ जो ज्योति है तामें तडित जो बिजुली है ताकी तरलाई चंचलता है अथवा भूषणमें जडाऊकी जो ज्योति है सो जटित समरलाई कहे योजित है अर्थ भूषणनमें रत्ननकी ज्योति बिजुली सम दमकति है रत्नजटित भूषण जडाऊ कहावत हैं औ दूरि कीनी है सुख सुख कहे सहज मुखही सो शशि जो चन्द्र है ताकी सुखमा शोभा अर्थ सहजमुख ऐसो छबिवान् है जामें चन्द्र द्युति मंद होति है औ अमल कहे स्वच्छ जे नयन हैं तिन करिकै कमलदलकी निकाई दलित है अर्थ जिनके नयननके आगे कमलनकी छबि दलि जाति है औ केशवदास कहत हैं कि प्रबल कहे नीको जो करेनुका हस्तिनी को गमन है ताकी हरणहारी है औ मुकुत कहे छूट्यो अर्थ उच्चरित जो हंसक कहे बिछुवान को शब्द है सोहै सुखदायी जाको अर्थ जाके चलतमें सुखदायक अनेक रंगको बिछुवानको शब्द होतहै औ अम्बर जो वस्त्रहैं तामें वलित युक्त नीलकण्ठ जे महादेव हैं तिनकी मति को मोहन है यहाँ काली पदते पार्व्वती जानो ॥ २० ॥

मू०-तारककन्द ॥ अभिसारिनिसीसमुझैंपरनारी । सतमारगमेटनकोअधिकारी ॥ मतिलोभमहामदमोहछयीहै । द्विजराजसुमित्रप्रदोषमयीहै ॥ २१ ॥ दोहा ॥ वर्णतकेशव सकलकवि, विषमगाढ़तमसृष्टि ॥ कुपुरुषसेवाज्योंभई, संततमिथ्यादृष्टि ॥ ॥ २२ ॥ चंद्रकलाछंद ॥ कलहंसकला निधिखंजनकंजकछूदिन केशवदेखिजिये । गतिआननलो-

चनपायनकेअनुरूपकसेमनमानिलिये ॥ यहिकालकरालते-शोधिसबैहठिकैबरषामिसदूरिकिये । अबधौंबिनप्राणप्रियार-हिहैंकहिकौनहितूअवलम्बिहिये ॥ २३ ॥

टी०—सत कहे उत्तम मार्ग यथोचित कुलांगनन की रीति औ राजमार्गादि ग्रामते ग्रामांतर की राह इति कि लोभ औ महामद औ मोह सों छई मति वुद्धि है वर्षा द्विजराज चन्द्रमा औ सुमित्र सूर्य तिनके दोषमयी है अर्थ चंद्र सूर्यको उदय नहीं होन पावत औ मति द्विजराज ब्राह्मण औ सुष्ठुमित्र इनके दोषमयी है यासों या जानों लोभ मद मोह युक्त प्राणी मित्र दोष द्विजदोष करत नहीं डरत ॥ २१ ॥ विषम कहे भयानक जो गाढ तम अन्धकार है ताकी सृष्टि कहे वृद्धि में मिथ्या दृष्टि भई जैसे कुपुरुषकी सेवामें होति है तैसी सकल कवि वर्णत हैं अर्थ जब कुपुरुष सेवा कोऊ करत है तब वाहि यह देखि परतहै कि कछू पायहैं जब कछू ना पायो तब पूर्ण दृष्टि मिथ्या होतभई तैसे जा दृष्टि सों सब विषय पदार्थ देखि परत हैं ताही दृष्टिसों वर्षांधकारमें निकटगत वस्तु नहीं देखियत पूर्ण दृष्टि मिथ्या होतिहै ॥ २२ ॥ अनुरूपक कहे प्रतिम जा वस्तुके वियोगसों विकलता होति है ताकी प्रतिमा देखि कछू बोध होतहै यह जो हमारो कराल कहे भयानक काल कहे समयहै जामें सीयवियोगादि दुःख भये ताही काल वर्षाको व्याज करि हमको दुःख देवेको तिनहुन कलहंसादिक-नको दूरि कीन्हों ॥ २३ ॥

मू०—दोहा ॥ बीतिबर्षाकालयों, आईशरदसुजाति ॥ गये अँध्यारीहोतिज्यों,चारुचांदनीराति ॥ २४ ॥ मोटनकछंद ॥ दंतावलिकुन्दसमानगनो । चंद्राननकुन्तलभौंरघनो ॥ भौंहैं धनुखंजननैनमनो । राजीवनिज्योंपदपानिभनो ॥ २५ ॥ हारावलिनीरजहीपरमैं । हैंलीनपयोधरअम्बरमैं ॥ पाटीरजोन्हाइहिअंगधरे । हसीगतिकेशवचित्तहरे ॥ २६ ॥ श्रीनार-

१ सुंदर. २ सदृश.

दकीदरशैमतिसी । लोपैतमताअपकीरतिसी ॥ मानौपति-देवनकीरतिको । सतमारगकीसमुझैगतिको ॥ २७ ॥

टी०-सुजातिकहे उत्तम॥२४॥ द्वै छंदको अन्वय एकहै शरदको स्त्री रूप करि कहतहैं कुंदके जे पुष्पहैं तेई दंतनकी अवली पंगतिहै कुन्द शरत्कालमें फूलतहैं यह कवि नियमहै औ चन्द्रमा जो है सोई आनन मुखहै चन्द्रमा वर्षाके मेघनमें मूंद्यो रहत है शरत्कालमें प्रकाशित होतहै औ सब राजा शरत्काल में पूजन करि धनुष चामरादि धारण करत हैं सो चौंर जे हैं तेई कुन्तल केशपाश हैं घनो कहे अति सघन औ धनुष जे हैं तेई भौहैं हैं औ शरत्कालमें खँजन आवत है तेई नयन हैं औ राजीव कहे कमल फूलतहैं तेई पद औ पाणि कहे कर हैं औ स्वातीनक्षत्रकी वर्षा सों नीरज मोती होतहैं तिनकी हारावलि हृदयमें है जाके औ पयोधर जे मेघहैं ते अम्बर कहे आकाशमें लीनहैं मिलेहैं स्त्री पक्ष पयोधर कुच अम्बर वस्त्रमें लीनहैं औ जोन्हाई जो है सोई पाटीर कहे चन्दनलेपहैं शरत्पक्षहंसी गति कहे हंसनकी गति स्त्रीपक्ष हंसन की ऐसी गति इन सब करिकै सबके चित्त को हरे है वश्य करे है ॥ २५ ॥ २६ ॥ तमता अंधकार औ तमोगुण नारद सत्त्वगुणी हैं पतिदेव जे पतिब्रता हैं तिनकी रति प्रीति को मानौ कहे जानौं अर्थ शरत्काल नहीं है पतिव्रतन की प्रीति है प्रीति कैसी है पतिसेवा आदि जे सत कहे उत्तम मार्ग हैं तिनकी गति कहे तिनविषे गमन समुझति कहे जानति हैं शरत्कैसी है सत कहे उत्तम जे मार्ग राह हैं तिनकी गति कहे प्रभाव को समुझै कहे जानति है अर्थ वर्षा करिके बिदारित जे सतमार्ग हैं तिनको प्रकट करति है ॥ २७ ॥

मू०-दोहा ॥ लक्ष्मणदासीवृद्धसी, आईशरदबजाति ॥ मनहुँजगावनकोहमहिं,बीतिवर्षाराति ॥ २८ ॥ कुंडलिया ॥ तातेनृपसुग्रीवपै, जैयेसत्वरतात । कहियोवचनबुझाइकै, कुश-लनचाहोगात ॥ कुशलनचाहोगातचहतहौबालिहिदेखो । कर-हुनसीताशोधकामवशरामनलेखो ॥ रामनलेखोचित्तचहीसुख संपतिजाते । मित्रकह्योगहिबाहँकानिकीजतहै ताते ॥ २९ ॥ दोहा ॥ लक्ष्मणकिष्किंधागये, वचनकहेकरिक्रोध ॥ तारातब

समुझाइयो, कीन्होंबहुतप्रबोध ॥ ३० ॥ दोधकछंद ॥ बोलिलयेहनुमानतबैजू ॥ ल्यावहुवानरबोलिसबैजू ॥ बारलगैनकहूबिरमाहीं ॥ एकनकोउरहैघरमाहीं ॥ ३१ ॥ त्रिभंगीछंद ॥ सुग्रीवसंघातीसुखदुतिरातीकेशवसाथहिसूरनये । आकाशबिलासीसूरप्रकाशीतबहींवानरआइगये ॥ दिशिदिशिअवगाहनसीतहिचाहनयूथपयूथसबैपठये । नलनीलऋच्छपतिअंगदकेसँगदक्षिणदिशिको बिदाभये ॥ ३२ ॥

टी०—जैसे वृद्धदासीके शुक्ल रोमनकरिके सर्वाङ्ग शुक्लहोतहै तैसे याहू शुक्ल है तासों वृद्धदासी समकह्यो लक्ष्मण संबोधन है ॥ २८ ॥ सत्वर कहे शीघ्र चित्त चही कहे मनमानी ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ साथहि कहे लक्ष्मणके साथहि रामचन्द्रके पास आइ गये लक्ष्मण इतिशेषः सूरप्रकाशी कहे सूर्यको ऐसोहैप्रकाश जिनको ॥ ३२ ॥

मू०—दोहा ॥ बुद्धिविक्रमव्यवसाययुत, साधुसमुझिरघुनाथ । बलअनंतहनुमंतके, मुँदरीदीन्हींहाथ ॥ ३३ ॥ हीरकछन्द ॥ चण्डचरणछण्डिधरणिमंडिगगनधावहीं । तत्क्षणहूयदक्षिणदिशि लक्ष्यनहींपावहीं ॥ धीरधरनबीरबरणसिंधुतटसुभावहीं । नाम परमधामधरमरामकरमगावहीं ॥ ३४ ॥

टी०—बुद्धिपद सो दान उपाउ जानौं काहेते बुद्धिवान हठ नहीं करते समय विचारि दान उपाइ सों कार्य्य साधत हैं औ विक्रम कहे अति बल 'विक्रमस्त्वतिशक्तिता' इत्यमरः । यासों दंडउपाउ जानौं बली अतिबलसों दंडकरि कार्य्य साधत है व्यवसाय कहे यत्न सों भेद उपाउ जानौं पत्नी पुरुष अनेक यत्न करि मन्त्र्यादिकन सों भेदकरिकै कार्य्य साधत हैं औ साधु पदते साम उपाउ जानौं साधु प्राणी मिलापही सों कार्य्य साधतहैं सो यासों समयोचित चारिहू उपाइ करि कार्य्यसाधिबेको लायक हनुमानको समुझि कै बल कहे सैन्य अनन्त है ताके मध्यमें हनुमंतके हाथमें रामचन्द्र मुँदरीदीन्ही ॥ ३३ ॥ तत्क्षण कहे जब रामचन्द्रकी आज्ञा पायो ताही क्षण चंड कहे प्रचंड चरणन सों धरणि पृथ्वीको छाँडिकै अर्थ

अति जोर सों कूदिकै गगन कहे आकाश को मंडिकै भूषित करिकै अर्थ अति-आकाश मार्ग ह्वैकै धावतहैं सीताको लक्ष्मण कहे खोज नहीं पावत धीरके धरन हार जे वीर वरण स्वरूप सब हैं ते सिंधुके तटमें स्वभाव ही साधरमको परम कहे बडो धाम जो रामनाम है औ कर्म वालिवधादि तिन्हैं गावत हैं धीरधरण कहि या जनायो कि यद्यपि खोज नहीं सीताको पायो परन्तु धीरको धरे हैं अधीर नहीं भये तौ जहां ताई खोजपाइहैं तहां ताई ढूंढि हैं औ स्वभावही कहि या जनायो कि कछुभय मानिकै रामनामको नहीं गावत ॥ ३४ ॥

मू०-अंगद-अनुकूलछंद ॥ सीयनपाई अवध बिनासी । होहुसबैसागरतटवासी ॥ जोघरजैयेसकुचअनंता।मोहिनछोंडै जनकनिहंता ॥ ३५ ॥ हनूमान ॥ अंगदरक्षारघुपतिकीन्हों । सोधनसीताजलथललीन्हों ॥ आलसछांडौंकृतउरआनौं।होहु कृतघ्नीजनिशिखमानौं ॥ ३६ ॥ अंगददंडक ॥ जीरणजटायु गीधधन्यएकजिनरोंकिरावणबिरथकीन्होंसहिनिजप्राणहानि। हुतेहनुमंतबलवंततहांपांचजनदीनेहुतेभूषणकछूकरनरूपजा-नि ॥ आरतपुकारतहीरामरामबारबारलीन्होंनछंडाइतुमसीता अतिभीतमानि। गाइद्विजराजतियकाजनपुकारलागैभोगवैन-रकघोरचोरकोअभयदानि ॥३७॥ दोहा ॥ सुनिसंपातिसप-क्षह्वै,रामचरितसुखपाय।सीतालंकामांझहैं,खगपतिदईबताय॥ ॥ ३८ ॥ दंडक ॥ हरिकैसोवाहनकीबिधिकैसोहेमहंसलीक-सीलिखत भयाहनकेअंकको । तेजकोनिधानरामसुद्रिकाबि-मानकैधौंलक्ष्मणकोबाणछूट्योरावणनिशंकको । गिरिगजगं-डतेउड़ान्योसुवरण अलि सीतापदपंकजसदाकलंकरंकको । हवाईसीछूटीकेशोदासआसमानमेंकमानकैसोगोलाहनुमान-चल्योलंकको ॥ ३९ ॥

टी०-मास दिवस की अवधि दियो है। यथा वाल्मीकीये ॥ "अधिगम्य-तुवैदेहीनिलयंरावणस्यच । मासेपूर्णेनिवर्तध्वमुदयंप्राप्यपर्वतम् ॥ १ ॥ ऊर्द्धमा-

सान्नवस्तव्यंवसन्वध्योभवेन्मम " ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ जीरण वृद्ध ॥ ३७ ॥ चंद्रमा ऋषि को आशीर्वाद रह्यो है कि सीताके खोजको वानर ऐ हैं तिन्हैं मिले पच्छ तेरे जामिहैं तुलसीकृतरामायणमों प्रसिद्ध है ॥ ३८ ॥ सदा कलंकही को रंक कहे दरिद्र अर्थ कलंक रहित जो सीतापदपंकज हैं कमान तोपको नाम पश्चिममों प्रसिद्ध है औ गोला के साहचर्य सों अति निश्चित है यथा भूषणकविः। "छूटतकमाननकेगोलीतीरवाननकेमुसकिलजात मुरचानहूं के ओटमें । ताहीसमैंशिवराजदावकरीपैंडापर दैसुरंगहलाकोहुकुमकरयोगोटमें ॥ भूषणभनतकहौंकिमतिकहांलोंदेसीहिम्मतिइहांलोंशरजाकेभटजोटमें । ताउदैदै मोछन कंगूरनमें पाउंदैदै घाउदैदैअरुमुख कूदेजाय कोटमें" ॥ ३९ ॥

मू०—दोहा ॥ उदधिनाकपतिशत्रुको उदितजानिबलवंत ॥ अंतरिक्षहींलक्षिपद, अच्छछुयोहनुमंत ॥ ४० ॥ बीचगयेसुरसामिली, औरसिंहिकानारि ॥ लीलिलियोहनुमंततेहि, कढ़ेउदरकहँफारि ॥ ४१ ॥

टी०—उदधि जो समुद्रहैं तामें नाकपति जे इन्द्र हैं तिनको शत्रु मैनाक ताको उदित कहे आपने विश्रामके लिये उठ्यो जानिकै अंतरिक्ष ही कहे आकाशही सों लक्षि कहे देखिकै बलवंत जे हनुमंतहैं तिन ता मैनाकके बाधके लिये अच्छ कहे स्वच्छ जो पद है तासों छुयो स्पर्शमात्र करयो काहे ते वाल्मीकीयरामायणमें लिख्यो है कि हनूमान मैनाक सों अपनी प्रतिज्ञा कह्योहै कि मध्यमें विश्राम न करिहौं। यथा—"त्वरतेकार्यकालोमेअहश्चाप्यनिवर्तते। प्रतिज्ञाचमयादत्तानस्थातव्यमिहांतरा" ॥ अथवा पदके सदृश अच्छसो छुयो अर्थ जैसे पदसों स्पर्शकरि लघुविश्राम करनोरहै तैसे केवल दृष्टि सों स्पर्श करि विश्राम कियो ॥ ४० ॥ सिंहिकाने हनुमंत को लीलिलियो ॥ ४१ ॥

मू०—तारकछंद ॥ कछुरातिगयेकरिदंशदशासी । पुरमांझचलेबनराजिबिलासी॥ जबहींहनुमंतचलेतजिशंका। मगरोंकिरहीतियह्वैतबलंका ॥ ४२ ॥ लंका ॥ कहिमोहिंउलंघ्यचलेतुमकोहौ ॥ अतिसूक्षमरूपधरेमनमोहौ ॥ पठयेक्यहिकारणकौनचलेहौ। सुरहौकिधौंकोउसुरेशभलेहौ ॥ ४३ ॥ हनू-

मान ॥ हमबानरहैंरघुनाथपठाये । तिनकीतरुणीअवलोकन-
आये ॥ लंका ॥ इतिमोहिंमहामतिभीतरजैये ॥ हनूमान ॥
तरुणीहिंहते कबलोंसुखपैये ॥ ४४ ॥ लंका ॥ तुममारेहिपै-
पुरपैठनपैहौ । हठकोटिकरौघरहीफिरिजैहौ ॥ हनुमंतबलीते-
हिथापरमारी । तजिदेहभईतबहीबरनारी ॥ ४५ ॥ लंका—चौ-
पाई ॥ धनदपुरीहोंरावणलीन्ही । बहुबिधिपापनकरेसभीनी ।
चतुराननचितचिंतनकीन्हों ॥ बरुकरुणाकरिमोकहँदीन्हों ॥
॥ ४६ ॥ जबदशकंठसियाहरिलैहैं । हरिहनुमंतबिलोकनऐहैं ॥
जबवहतोहिहतैतजिशंका । तबप्रभुहोइविभीषणलंका ॥४७॥
चलनलगों जबहीतबकीजो । मृतकशरीरहिपावकदीजो ॥
यहकहिजातभईवहनारी । सबनगरीहनुमंतनिहारी ॥ ४८ ॥

टी०—दंशकहे डास यामें कोऊ कोऊ संदेह करत हैं कि दंश रूप धरिकै गये मुद्रिका कैसे लैगये तालिये और अर्थ करि दंशकहे सिंह "करिणंहस्तिनंद-शतीतिकरिदंशः" । ताको रूप करि चले तो सिंहको औ श्वानको रूप एक होताहै ताही सों श्वानको नाम ग्रामसिंह है श्वानको ग्राममें जैबो साधारण रहत है तासों श्वानको रूप धरिकैगये ॥ ४२ ॥ सूक्ष्म कहे लघु श्वानके अर्थमें सूक्ष्म कहे तुच्छ ॥४३॥४४॥४५॥ धनद कुबेर ॥४६॥ हरि बानर॥४७॥मृतक शरीर कहे पुरी रूप मृतक शरीर लंकाने या प्रकार को बर मांग्यो है ताही लिये हनुमान लंकापुरीको जारि हैं ॥ ४८ ॥

मू०—तबहरिरावणसोवतदेख्यो । मणिमयपालिककीछ-
बिलेख्यो ॥ तहँतरुणीबहुभाँतिनगावैं । बिच बिच आवझ
बीनबजावैं ॥ ४९ ॥ मृतकचितापरवानहुंसोहैं । चहुँदिशि-
प्रेतवधूमनमोहैं ॥ जहँ जहँ जाइतहाँदुखदूनो । सियबिनहै-
सिगरोपुरसूनो ॥ ॥ ५० ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ कहूंकिन्नरी-
किन्नरीलैबजावैं । सुरी आसुरीबांसुरीगीतगावैं ॥ कहूंयक्षिणी-

पक्षिणीलैपढ़ावैं । नगी कन्यकापन्नगीकोनचावैं ॥ ५१ ॥ पियैंएकहालागुहैंएकमाला । बनीएकबालानचैचित्रशाला ॥ कहूंकोकिलाकोककीकारिकाको । पढ़ावैसुआलैशुकीशारिकाको ॥ ५२ ॥ फिरचोदेखिकै राजशालासभाको । रह्योरीझिकैबाटिकाकीप्रभाको । फिरचो बीरचौंहूंचितैशुद्धगीता । बिलोकीभलीसिंसिपामूलसीता ॥ ५३ ॥

टी०-॥ ४९ ॥ ५० ॥ किन्नरी सारंगी बाँसुरीमें गीत गावती हैं अथवा बाँसुरी सम गीत गावतीहैं ॥ ५१ ॥ हाला मदिरा सुष्ठु जे आलय घर हैं तिनमें शुकी औ शारिका मैना कोकिला जे हैं ते कोकशास्त्र की कारिका पढावती हैं अथवा स्त्री कोकिला सम पढावती हैं ॥ ५२ ॥ या प्रकार सब स्थाननमें फिरचो सो ऐसी राजशाला सभा कहे राजभवनमें स्त्रीनकी सभाको देखिकै रीझि रह्यो अथवा या प्रकार राजशाला औ राजसभाको देखि कै रीझि रह्यो जब सीताको तहां न देख्यो तब बाटिका की प्रभाको फिरचो अर्थ बाटिकाको गमन करचो शुद्ध गीता सीताको विशेषण है शिंशुपासी सौ अथवा " अगुरु पिच्छिलागुरु शिंशुपा " इति विश्वः ॥ ५३ ॥

मू०-धरेएकबेनीमिलीमैलसारी । मृणालीमनोपंकसोंकाढ़िडारी ॥ सदारामनामैररैदीनबानी । चहूँओरहैंएकसीदुःखदानी ॥ ५४ ॥ ग्रसीबुद्धिसीचित्तचिंतानिमानों । कियोजीभदंतावलीमैंबखानो ॥ किधौंघेरिकैराहुनारीनलीनी । कलाचंद्रकी चारुपीयूषभीनी ॥ ५५ ॥ किधौंजीवकोजोतिमायानलीनी । अविद्यानकेमध्यविद्याप्रवीनी ॥ मनोसर्वइस्त्रीनमैंकामबामा । हनूमानऐसीलखीरामरामा ॥ ५६ ॥ तहाँदेवद्वेषीदशग्रीवआयो । सुन्योदेविसीतामहादुःखपायो ॥ सबै अंगलैअंगहीमेंदुरायो । अधोदृष्टिकैअश्रुधाराबहायो ॥ ५७ ॥ रावण ॥ सुनोदेविमोपैकछूदृष्टिदीजे । इतोशोचतोरामकाजै-

नकीजे ॥ बसैंदंडकारण्यदेखैनकोऊ । जोदेखैमहाबावरोहो-यसोऊ ॥ ५८ ॥

टी०-पंकसदृश मैल सारोहै कहूंपंक शोकाधिकारी पाठ है तौ मानो पंक युक्त मृणाली है शोकाधिकारी कहे अति शोक युक्त दुहन को विशेषणहै ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ संसार विषे कीनी बुद्धि अविद्या है ईश्वर विवेकिनी बुद्धि विद्या है रामा स्त्री ॥ ५६ ॥ अति लाज भयसों अंग सिकोरिके बैठी ॥ ५७ ॥ चारि छंदको अन्वय एक हैं रावण कहत है कि हे देवि ! ऐसे जे रामचंद्र हैं तिनको शोचना करो हमजे तुम्हारे सदादास हैं तिनपै कृपा काहे नाहि करियत जासों अदेवी दैत्य स्त्री देवांगना तिनकी रानी होय औ वाणी सरस्वती औ मघौनी इंद्राणी मृडानी पार्वती तुम्हारी सेवा करैं औ किन्नरी सारंगी लिये किन्नरी किन्नर कन्या तुम्हारे समीप गीत गावैं औ सुकेशी औ उर्वशी नाचैं तुमसों मान कहे आदर पावैं यामें आपनो प्रभाव देखायो कि ए सब इंद्रादि मेरी आज्ञाकर हैं रामचन्द्र कैसे हैं दंडकारण्य में बसत हैं अर्थ वनवासी हैं औ ऐसे छिपे रहत हैं जिनको कोऊ कबहूं देखत नहीं औ जो देखत है औ सो महा बावरो आपने तनकी औ भवनादि की सुधि भूलि जात है यासों या जनायो कि बावरो होत है ताहीको संग्रह कोऊ नाहीं करत औ वे ऐसे हैं जिनको देखत औरऊ बावरो होत है तासों सोच करिबे लायक नहीं है अनाथ के अनुसारी कहे अनुगामी हैं अर्थ यह कि काहू बडेके अनुगामी नहीं हैं 'तुम्हैं देवि दूषै हितू ताहि मानैं' इत्यादि दुवौ वचन भेद उपायकेहैं सरस्वती उक्तार्थः ॥ हे देवि ! हे जगदंब ! हमपर कछु कृपादृष्टि दीजै अर्थ तुम्हारी नेक कृपादृष्टिसों हमारो भलो होत है औ रामचन्द्रके काज येतो शोच काहेको करती हौ रामचन्द्र शोचनीय नहीं हैं काहेते वे ऐसे प्रतापी हैं कि निर्जन दंडकारण्यमें बसते हैं आशय कि अति निर्भय हैं औ देखै न कोऊ अर्थ अनेक ध्यानादि उपाय योगी जन जिनके देखिबेको करत हैं ताहूपर दर्शन नहीं पावत सो छठे प्रकाशमें कह्यो है कि " सिद्धसमाधि सजैं अजहूं न कहूं जग योगिन देखन पाई " । औ जो देखतहै अर्थ जाको दर्शन होतहै सो महा बावरो होत है अर्थ बावरे सम संसार सुखको त्यागकरि जीवन्मुक्त ह्वै जात है अथवा बावरे सम देहकी सुधि नहीं रहति जैसे सुतीक्षणको भयो अथवा महा बावरो महादेव होई अर्थ महादेव सम प्रभावको प्राप्त होइ ॥ ५८ ॥

मृ०—कृतघ्नीकुदाताकुकन्याहिचाहै ॥ हितूनग्नमुंडीनहींको सदाहै ॥ अनाथैसुन्योमैंअनाथानुसारी । बसैंचित्तदंडीजटी मुंडधारी ॥ ५९ ॥

टी०—कृत जो कर्म हैं ताके हंता नाशकर्त्ता हैं अर्थ शुभाशुभ कर्म बन्धन तोरि दासनको मुक्तकरत हैं औ कु जो पृथ्वी है ताके दाता हैं अर्थ पूर्ण पृथ्वीके दाता हैं वावनरूप ह्वै बलिसों ले इंद्रको दियो औ कु जो पृथ्वी है ताकी कन्या चैत्रमही तिन्हैं चाहत हैं औ नग्न औ मुण्डी जे तप स्त्री हैं तिनके हितू हैं औ अनाथ कहे जिनको नाथ स्वामी कोऊ नहीं है आशय कि आपही सबके नाथ हैं औ अनाथ कहे अशरण जे मानी हैं तिनके अनुसारी अगामी हैं जाको रक्षक कोई नहीं है ताकी रक्षा करिबे को पाछे पाछे आपु फिरत हैं जैसे गज प्रह्लादकी रक्षा करचो औ दण्डी औ जटी औ मुण्डधारी जे तपस्वी हैं तिनके चित्तमें बसत हैं अर्थ राजाको सदा ध्यान करतैं अथवा दंडी औ जटी औ मुण्डधारी ऐसे जे महादेव हैं तिनके चित्तमें बसत हैं औ द्रव्यरूप लक्ष्मीको जे दूषत हैं औ उदासीन रहत हैं ते दास विष्णुको अतिप्रिय हैं औ निर्गुणी कहे प्राकृत गुणन करि रहित हैं अर्थ अति उत्कृष्ट गुणहैं जिनके। यथा वायुपुराणे ॥ " सत्त्वादिगुणहीनत्वान्निर्गुणी हरिरीश्वरः" ॥ औ ता नाम कहे ताको नाम ऐसो है जाकारिकै नहीं लीजियत अर्थ जाके नामको शिवआदि देव सब जपतैं अथवा महानिर्गुणी कहे रज सत्त्व तमोगुण करि रहित हैं औ ताको नाम नहीं लीजियत है अर्थ जाके नामका जप नहीं है ऐसी जो ब्रह्मज्योति है सो है अथवा हे देवि! जे तुम्हैं दूषतहैं तिन्हैं कहा हितू मानत हैं अर्थ हितू नहीं मानते जो तुम्हारी-रंचकऊ विरोधी है ताही रामचन्द्र परम विरोधी मानत हैं जयंतादि ते जानौ औ तोसों उदासीन है ताहू को कहा हितू मानत है अर्थ ताहू को आपनो परम हितूहू होइ पै विरोधही जानतहैं सीय खोजको वानर पठाइबेमें सुग्रीव उदासीनता करचो प्रेमकरि आपुहीसों वानर न पठयो तब कोपकरि लक्ष्मणसों विरोधी सम वचन कहि पठावनादि सों जानौं औ महानिर्गुणी कहे उत्कृष्ट गुणन करि युक्त जे रामचन्द्र हैं तिनको नाम कहाना लीजै अर्थ यह कि लीजे ताहीके नामसों मुक्ति प्राप्ति होती है ॥ मैं तुम्हारो सदा दास हौं मोपै कृपा काहे नाहीं कीजत सेवकपर कृपा करिबो स्वामीको उचित है अदेवीनकी रानीहोहु इत्यादि वचन आशीर्वादात्मक हैं कि तुम ऐसे सुखको प्राप्त होहु ॥ ५९ ॥

मू०—तुम्हैंदेविदूषैहितूताहिमानै । उदासीनतोसोंसदाताहि जानै॥ महानिर्गुणीनामताकोनलीजै । सदादासमोपैकृपाक्यों नकीजै ॥ ६० ॥ अदेवीनृदेवीनकीहोहुरानी । करैंसेववानीम-घौनीमृडानी ॥ लियेकिन्नरीकिन्नरीगीतगावैं । सुकेशीनचैंउर्व-शीमानपावैं ॥ ६१ ॥ मालिनीछंद ॥ तृणबिचदैबोलीसीयगं-भीरवानी । दशमुखशठकौतूकोनकीराजधानी ॥दशरथसुतद्वे-षीरुद्रब्रह्मानभासै। निशिचरवपुराभूक्योंनश्योमूलनासै॥६२॥ अतितनुधनुरेखानेकनाकीनजाकी । खलशरखरधाएक्योंसहै-तिच्छताकी। बिडकनघनघूरेभक्षिक्योंबाजजीवै।शिवशिरशशि श्रीकोराहुकैसेसोछीवै ॥ ६३ ॥

टी०—॥ ६० ६१ ॥ पतिब्रतनको परपुरुषसों संभाषण अनुचित है तासों तृण कहे खरको अंतरकरचो यह लोकमर्य्यादा है अथवा तृण अंतरमें करि या जनायो कि हम प्राणनको तृण समान समुझे हैं जो तू स्पर्श करिहै तौ प्राण तृण समानछोडि देहैं अथवा रावणको जनायो कि तू तृणसमानहै काहेते गंभीरवाणी बोली याते कछू भय नहीं सूचितहोत कोऊ कोऊ तृणअंचलहूको कहत हैं तौ अंचल ओट सों बोली या जानौं तेरो तो मूल तबही नशिगयोरहै जब हम को हरिल्यायोरहै तामें कछू लग्यो है ताको ऐसी बातें कहि अवनीकी भाँतिसों काहेको नाशत है ॥ ६२ ॥ तनु कहे सूक्ष्म बिट पुरीष तेरो राज्य सुख बिडकन सदृश है हम बाज सदृश हैं औ हम शिव शिर शशिसदृश हैं तू राहु सदृश है ॥ ६३ ॥

मू०—उठिउठिशठह्यांतेभागुतौलों अभागे । ममवचनबिस-र्योंसर्पजोलोंनलागे ॥ विकलसकुलदेखौंआसुहीनाशतेरो । निपटमृतकतोकोंरोषमारैनमेरो ॥ ६४ ॥ दोहा ॥ अवधिदई द्वैमासकी, कह्योराक्षसिनबोलि । ज्योंसमुझैसमुझाइयो, युक्ति छुरीसोंछोलि ॥ ६५॥ चामरछंद ॥ देखिदेखिकैअशोकराज पुत्रिकाकह्यो ॥ देहिमोहिंआगितैंजोअंगआगिह्वैरह्यो ॥ ठौर पाइपवनपुत्रडारिमुद्रिकादई । आसपासदेखिकैउठायहाथकै-

लई ॥ ६६ ॥ तोमरछंद ॥ जबलगीसियरीहाथ । यहआगि कैसीनाथ ॥ यहकह्योलषितबताहि ॥ मणिजटितमुँदरीआहि ॥ ६७ ॥ जबबांचिदेख्यौनाउ । मनपरयोसंभ्रमभाउ॥ आ- बालतेरघुनाथ । यहधरीअपनेहाथ ॥ ६८ ॥ बिछुरीसोकौ नउपाउ । केहिआनियोयहिठाउ ॥ सुधिलहौंकौनउपाउँ । अबकाहिबूझनजाउँ ॥ ६९ ॥ चहुँओरचितैसत्राश। अवलो कियोआकाश॥तहँशाखबैठोनीठि।तबपरयोबानर डीठि ॥७०॥

टी०—हमारे वचनमें विप्रशरण शील जे सर्पहैं इहां सर्प पदते सर्प शाप जानो ते जवलों तेरे अंगनमें नहीं लागे अर्थ जैसे सर्पके काटतही प्राण छूटतहैं तैसे हमारे शापसों तेरोप्राण छूट जैहैं अथवा हमारे बचनहीं जे विसर्पी कहे प्रशरण शील सर्पहैं ते जब लौं तेरे अंगन में नहीं लागे ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ अरुणपत्र युक्त अशोक वृक्ष विरहसों दाहक अग्नि समदेखि परत हैं तासों सीताजू कह्यो कि तिहारो सर्वाङ्ग आगि सम ह्वै रह्यो है सो हमको आगि तू देहु जामें जरि- कै दुसह रामवियोग ताप मिटाइये इति भावार्थः ॥ ६६ ॥ सियरी शीतल ॥ ॥ ६७ ॥ आवाल ते कह्यो लडिकाईहीं सों ॥ ६८ ॥ सुधिकहे खबरि ॥ ६९ ॥ नीठि कहे मरुमरुकै ॥ ७० ॥

मू०—तबकह्योकोतूआहि । सुरअसुरमोतनचाहि ॥ कैपक्ष पक्षविरूप । दशकंठबानररूप ॥ ७१ ॥ कहिआपनोतूभेद । नतुचित्तउपजतखेद ॥ कहिबेगवानरपाप । नतुतोहिं देहौंशा- प ॥ तबवृक्षशाखारूमि । कपिउतरिआयोभूमि॥ ७२ ॥ पद्ध- टिकाछंद ॥ करजोरिकह्योहौंपवनपूत । जियजननिजानुरघु- नाथदूत ॥ रघुनाथकौनदशरत्थनंद । दशरत्थकौनअजतन- यचन्द ॥ ७३ ॥ केहिकारणपठयेयहिनिकेत । निजदेनलेन संदेशहेत ॥ गुणरूपशीलशोभासुभाउ । कछुरघुपतिकेलक्षण बताउ ॥ ७४ ॥ अतियदपिसुमित्रानंदभक्त । अतिसेवकहैंअ- तिशूरशक्त ॥ अरुयदपिअनुजतीन्योंसमान । पैतदपिभरत

भावतनिदान ॥ ७५॥ ज्योंनारायणउरश्रीवसंति । त्योंरघुपतिउरकछुद्युतिलसंति ॥ जगतितनेहैंसबभूमिभूप । सुरअसुर नपूजैंरामरूप ॥ ७६ ॥ सीताजू-निशिपालिकाछंद ॥ मोहिं परतीतियहिभाँतिनहिं आवई । प्रीतिकहिधोंसुनरबानरनि क्यों भई ॥ बातसबवर्णिपरतीतिहरित्योंदई । आशुअन्हवाइउरलाइमुँदरीलई ॥ ७७ ॥ दोहा ॥ आशुबरषिहियरेहरषि, सीतासुखदसुभाइ । निरखिनिरखिपियमुद्रिकहि, बरणतिहैं बहुभाइ ॥ ७८ ॥

टी०-पच्छ जो हैज्ञाति वर्ग तासों विरूप कहे अन्य रूप ॥ ७१ ॥ खेद डर पाप छल यह छंद छःचरणकोहै तासों गाथा जानो यथा वृत्तरत्नाकरे॥ "शेषंगाथात्रिभिःषड्भिश्चरणैश्चोपलक्षिताः"॥ माघको दूसरो छंद छः चरणको है ॥ ७२॥ ॥७३॥ कछु कहे गुणादिकनमों काहूकोसक्षणकहौ ॥७४॥ शक्तसमर्थ ॥७५॥ नपूजेकहेसमता नहीं करत ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ भाइकहेअभिप्राय ॥ ७८ ॥

मू०-पद्धटिकाछंद ॥ यहसूरकिरणतमदुःखहारि । शशिकलाकिधौंउरश्रीतकारि ॥ कलकीरतिसीशुभसहितनाम । करौ ज्यश्रीयहतजीराम ॥ ७९ ॥ कैनारायणउरसमलसंति । शुभअंकनऊपरश्रीवसंति ॥ वरविद्यासीआनंददानि । युतअष्टापदमनशिवामानि ॥ ८० ॥ जनुमायाअच्छरसहितदेखि । कैपत्रीनिश्चयदानिलेखि ॥ प्रियप्रतीहारनीसीनिहारि । श्रीरामोजयउच्चारकारि ॥ ८१ ॥ पियपठईमानौसखिसुजान । जगभूषणकोभूषणनिधान ॥ निजआईहमकोशीषदेन । यहिकिधौंहमारोमरमलेन ॥ ८२ ॥

टी०-हमारो तम अंधकार सदृश जो दुःख है ताकी रहनहारी है ताते कैधौं सूर्य की किरण है कल कहे अविघ्न मुद्रिका में राम नाम लिख्यो है औ कीरतिहू जा प्राणीकी होति है ताके नाम के साथही रहति है प्रथम ताको नाम

कहि कीरति कही जाति है राज्य श्रीहूको रामचन्द्र छोंड्यो है औ याहू को छोंड्यो है ॥ ७९ ॥ नारायणके उरमें अंक जो गोदहै तापर श्री बसति है अथवा अंक कहे श्रीवत्सादि चिह्न पर श्री बसति है मुद्रिकामें श्रीरामोजयति लिख्यो है तहां रामोजयति इन अंकनके ऊपर श्रीअंक लिख्यो है शिवा पार्वती पक्ष अष्टापद कहे पशु पशुपदते सिंह अथवा वृषभ जानौ। "चामीकरं जातरूपं महा रजतकांचने ॥ रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनदमष्टापदोऽस्त्रियामित्यमरः" मुद्रिका पद सुवर्ण ॥ ८० ॥ अक्षर विष्णु औ अंक पिय जे रामचन्द्र हैं तिनकी प्रतिहारिणी चोवदारिनी हैं यामें श्रीरामोजयति लिख्यो है प्रतिहार को नामोच्चार करिबो धर्म है ॥ ८१ ॥ सखी कैसी है जगके जितने भूषण गहने हैं तिनको जो भूषण कहे भूषिबो है ताको निधान भांडा है अर्थ अनेक प्रकार सों भूषण पहिराइबे में चतुर है औ मुद्रिका कैसी है जग भूषण जे रामचन्द्र हैं तिनको भूषणनको निधान कहे भांडा है अर्थ जब याको रामचन्द्र पहिरत हैं तब अनेक भूषण पहिरे सम अपना को मानत हैं अथवा जब या मुद्रिकाको धारण करत हैं तब अनेक भूषण पहिरे समान छबि होति है अथवा जगके जे भूषण गहने हैं तिनको जो भूषण है सो माताको निधान कहे भांडा है काहेते मोहर है सब राज्यको व्यवहार मोहरके अंकन सों सही होतहै ॥ ८२ ॥

मू०—दोहा ॥ सुखदा शिखदा अर्थदा, यशदा रसदातारि। रामचन्द्रकी मुद्रिका, किधौं परम गुरुनारि ॥ ८३ ॥ बहु बरणा सहजप्रिया, तमगुनहराप्रमान । जगमारग दरशावनी, सूरज किरण समान ॥ ८४ ॥

टी०—परम गुरुनारि कैसीहै कोमल भाषणादि करिकै सुखदा है औ शिखदाता है कि कुलांगननको ऐसो करिबो उचित है सो करौ औ अर्थ जो प्रयोजन है ताकी दाता है कि स्त्रियनको पतिव्रतसों देवलोक गमन होत हैं यह पतिव्रतमें देवलोक गमनरूप जो प्रयोजन है ताको देति है औ पतिव्रत साधब करार यश देति है औ अनेक वचन चातुर्य्यादि रस कहे गुण देति है औ मुद्रिका दर्शनसों सुखदा है औ शिख दाताहै काहेते शिक्षा दियो कि धीरज धरौ औ अर्थ प्रयोजनकी दाता है काहेते रामचन्द्रको संदेशरूप हमारो प्रयोजन रह्यो ताको दियो अथवा अर्थ जो ज्ञानहै ताको दाता है औ अतिमूल्याधिक्य सो जाके पास रहै ताको यश दाता है औरस कहे प्रेमकी दाता है अर्थ रामचन्द्र प्रतिप्रेम

वढावन हारी है ॥ "शृंगारादौविषेवीर्येगुणेरागेद्रवेरसः ॥ इत्यमरः ॥ ८३ ॥ बहु वरणा कहे वहुत हैं वरण रंग अक्षर जिनके औ सहज प्रिया दुवौ हैं तमगुण अंधकार औ अज्ञान सूरज किरण जगके मारग राह देखावत हैं औ मुद्रिकाहू जगमारग दरशावनी है काहेते जहाँ रामचंद्र हैं तहांकी राह देखायो जा मारग है हमारो मन रामचंद्रके निकट गयो दोहा क्षेपक है ॥ ८४ ॥

मू०-दोहा-श्रीपुरमेंवनमध्यहौं,तूमगकरीअनीति। कहिसुं-दरीअबतियनकी, कोकरिहैपरतीति ॥ ८५ ॥ पद्धटिकाछंद॥ कहि कुशलमुद्रिकेरामगात। पुनिलक्ष्मणसहितसमानतात॥ यहउत्तरदेतिनबुद्धिवंत ॥ केहिकारणधौंहनुमंतसंत ॥ ८६ ॥ हनूमान-दोहा ॥ तुमपूंछतकहिमुद्रिकै, मौनेहातियाहिनाम॥ कंकनकीपदवीदई तुमबिनयाकहँराम ॥ ८७ ॥ दंडक ॥ दीरघदरीनबसैंकेशोदासकेशरीज्योंकेशरीकोदेखिबनकरी-ज्योंकपतहैं । बासरकीसंपतिउलूकज्योंनाचितवतचकवाज्यों-चंदचितैचौगुनोंचपतहैं । केकासुनिव्यालज्योंबिलातजात-घनश्यामघननकेघोरनजवासोज्योंतपतहैं ॥ भँवरज्योंभवत-वनयोगीज्योंजगतरैनिसाकतज्योंरामनामतेरोईजपतहैं॥८८॥

टी०-श्रीजो राज्यश्रीहै तेहिपुरमें अयोध्यामें रामचन्द्रको छोडिदियो औ बनके मध्यमें हमछाँड्यौ राम हमैं तू छाँड्यो सो हे सुन्दरी ! कहौ तियनको अबको परतीतिकारि है अर्थ कोऊ ना करि है ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ तुम्हारे विरह सों रामचन्द्र ऐसे दुर्वल भये हैं जासों याको कंकनके स्थानमों पहिरत है इति भावार्थः ॥ ८७ ॥ सीताजू सों हनुमान कहतहैं कि हे सीता ! तुम्हारे विरह सों रामचंद्र ऐसी दशाको प्राप्त हैं कि दीरघ दरीन में केशरी जो सिंहहै ताके समान बसत हैं जैसे सिंह भूमिहीमें सोवत बैठत है कछू सेजादि सुख की इच्छा नहीं करत तैसे रामचंद्र हैं औ केशरी पदश्लेष है करी कहे हस्ती पच्छ सिंह जानौ रामपक्ष केशरी केशरी उदीप कहे तासों औ बासर जो दिन है ताकी संपत्ति कहे लक्ष्मी शोभा इति ताको उलूक जो घूघू पक्षी विशेष है ताके समान नहीं देखत घूघू को दिनको देखि नहीं परत औ रामचन्द्रको अनेक वस्तु देखि

विरह उद्दीपन होतहै तासों दिनमें [illegible] नहीं निरखत औ चंद्रमाको देखि चक्रवाक समान जपत हैं चन्द्रमा विरह उद्दीपन है तासों औ केका जो मोर-वाणी है ताको सुनि व्याल जो सर्प हैं ताके समान बिलात जातहैं सर्प भक्षनके भयसों रामचन्द्र विरह वर्द्धन भयसों ॥ "केकावाणीमयूरस्येत्यमरः" औ घन-श्याम कहे सजल जे घन मेघ हैं तिनको जो घोर शब्द है तासों जवासे सम तपत हैं जवासे जल वृष्टिसों निज जरिवो जानिकै औ रामचन्द्रके विरहाग्नि ज्वलित होति है तासों औ वनमें ठौर ठौर भौंरसम भँवत रहत हैं औ जैसे योगीध्यान धारणादि करत राति बितावत हैं तैसे तुम्हारे वियोग सों विकल जे राम-चंद्रहैं तिनको रात्रिहू में निद्रा नहीं आवती औ जैसे शाक्त कहे देवीको उपासक देवीको नाम जपत हैं तैसे राम तिहारोई नाम रात्रि दिन जपत हैं ॥ ८८ ॥

मू०—हनूमान-बारिधरछंद ॥ राजपुत्रियकबातसुनौपुनि । रामचन्द्रमनमांहकहीगुनि ॥ रातिदीहयमराजजनीजनु । यात नानितनजानतकैमनु ॥ ८९ ॥

टी०—दीह कहे वडी जो राति है सो जानो यमराज की जनी कहे किंकरी है ता राति करिकै कृत जो यातना पीडा है ताको कि हमारो तन जानत है कि मन जानत है जापै बीतति है अर्थ कहिबे लायक नहीं है अति बडी है औ यम किंकरन हूं करिकै कृत यातना कहिबे लायक नहीं होति अति कठोर होति है तासों यमकिंकरी सम कह्यो ॥ ८९ ॥

मू०—दोहा ॥ दुखदेखेसुखहोहिगो, सुक्खनदुःखविहीन । जैसेतपसीतपतपै, होतपरमपदलीन ॥ ९० ॥ वरषावैभव देखिकै, देखीशरदसकाम । जैसेरणमेंकालभट, भेंटिभेंटि-यतबाम ॥ ९१ ॥ दुःखदेखिकैदेखिहौ, तवमुखआनँदकंद । तपनतापतपिद्यौसनिशि, जैसेशीतलचन्द ॥ ९२ ॥ अपनी-दशाकहाकहौं दीपदशासीदेह । जरतजातिबासरनिशा, केशव सहितसनेह ॥ ९३ ॥ सुगति सुकेसिसुनैनिसुनि, सुमुखि-सुदंतिसुश्रोणि । दरशावैगोबेगिही, तुमकोसरसिजयोनि ॥ ९४ ॥ हरिगीतछंद ॥ कछुजननिंदेपरतीतिजासोंरामच-

न्द्रहिआवई । शुभशीशकीमणिदईयहकहिसुयशतवजगगा-
वई ॥ सबकालह्वैहौअमरअरुतुमसमरजयपदपाइहौ । सुत
आजुतेरघुनाथकेतुमपरमभक्तकहाइहौ ॥ ९५ ॥

टी०-तुमको हमारे विरह कृत जो दुःखहै ताके अनन्तर मिलापरूप सुख ह्वै है इति भावार्थः॥ ९० ॥ वैभव ऐश्वर्य जैसे वर्षा बिताई शरद्को भेट्यो तैसे रावणादिकनको मारि तुमको भेंटिहैं इति भावार्थः ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ और अपनी दशा कहा कहिये तुम्हारे स्नेह प्रेम सहित जो देह है सो स्नेह तैल सहित दीपदशा कहे दीपकी बाती सम बासर निशा कहे रातोंदिन जरतजातिहै ॥ ९३ ॥ सुन्दर है श्रोणि कहे कटि जाकी । "कटि श्रोणीककुद्मतीत्यमरः ॥" सरसिजयोनि ब्रह्मा तुमको मोहिं दरशावैगो मोहिं इति शेषः ॥ ९४ ॥ ९५ ॥

मू०-करजोरिपगपरितोरिउपबनकोरिकिंकरमारियो । पुनि जंबुमालीमंत्रिसुतअरुपंचमंत्रिसंहारियो ॥ रणमारिअक्षकुमार बहुबिधिइंद्रजीतसोंयुद्धकै । अतिब्रह्मशस्त्रप्रमाणमानिसोबश्य भोमनशुद्धकै ॥ ९६ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचंद्रिकाया-
मिन्द्रजिद्विरचितायांहनूमद्बंधनंनामत्रयोदशः प्रकाशः ॥ १३ ॥

टी०-जंबुमाली प्रहस्तनामा मंत्रीको पुत्र है यथा वाल्मीकीये ॥ सदृष्टो राक्षसेंद्रेण प्रहस्तस्य सुतो बली ॥ जम्बुमाली महादंष्ट्रो निर्जगाम धनुर्द्धरः ॥ १ ॥ पुनः पंचमंत्रिणउक्ताः वाल्मीकीये ॥ सविरूपाक्षयूपाक्षौ दुर्द्धर्षं चैव राक्षसम् । प्रघसम्भासकर्णं च पंच सेनाग्रनायकान् ॥ ९६ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसाद
निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां त्रयोदशः प्रकाशः ॥ १३॥

मू०-दोहा ॥ याचौदहेंप्रकाशमें, ह्वैहैलंकादाह ॥ सागरतीरमिलानपुनि, करिहैरघुकुलनाह ॥ १ ॥ रावण-विजयछंद ॥ रेकपिकौनतुअक्षकोघातक दूतबलीरघुनंदनजीको।कोरघुनंदन रेत्रिशिराखरदूपणदूषणभूषणभूको ।सागरकैसेतरचोजैसेगोपद

काजकहासियचोरहिदेखो ।कैसेबँधायोजोसुंदरितेरीछुईदगसो-
वतपातकलेखो ॥२॥ रावण-चामरछंद ॥ क्रोरिक्रोरियातना
निफोरिफारिमारिये । काटिकोटिफारिमाँसुबांटिबांटिडारिये ॥
खालखैंचिखैंचिहाडभूजिभूजिखाहुरे।पौरिटांगिरुंडमुंडलैउम-
द्रजाहुरे ॥३॥ बिभीषण ॥ दूतमारियेनराजराजछोड़िदीजई ।
मंत्रिमित्रपूँछिकैसोऔरदंडकीजई ॥एकरंकमारिक्योंबडोकलं-
कलीजई । बुंदसोकिगोकुहामहासमुद्रछीजई ॥ ४ ॥

टी०–मिलान कहे विश्राम ॥ १ ॥ हम तेरी स्त्रीको सोवत में दग सों छुयो अर्थ देख्यो ता पातक सों बांधगये तू रामचन्द्रकी स्त्रीको हरि ल्यायो है तेरी अतिदुर्गति ह्वै है इतिभावार्थः ॥ २ ॥ हनूमानके कठोरवचन सुनि कोप करि रावण राक्षसन सों कहत हैं क्रोरि क्रोरि कहे करोरि करोरि जे यातना बाधा हैं नखदंतता जनदंडघातादि सों फोरि फोरि कहे जामें चर्म फोरि रुधिर कढि आवै या प्रकारसों मारि डारो कहूँ ताजनानि पाठ है तौ ताजन कहे चाबुक औखालखैंचै रोमांचिके कुठारादि सों हाडनके स्थान में काटिकै औ छुरिकादि सों फारिकै ताको मांस बांटि बांटि डारिये कहे आपनो आपनो भाग करि लीजिये औ हाड खैंचिके कहे निकारिकै भूजिभूजिकै खाय डारो रुण्ड रुण्डकी पदते रुंडकी खाल जानो अर्थ यह कि रुण्डकी खालमें तृणादि भरिकै सबके देखिवेके लिये पौरिमें कहे पुरद्वारमें टांगिदेहु औ मुंडको लैके उडाइ कहे उडिकै राम पास जाउ रामपासइतिशेषः । जासों मुण्ड चीन्हि रामचन्द्र दूतको मारयो जानि दुःखपावैं इतिभावार्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥

मू०–तूलतेलबोरिबोरिजोरिजोरिबाससी । लैअपारराररऊ-
नदूनसूतसोंकसी। पूछपवनपूतकोसंवारिबारिदीजहीं ॥ अंग-
कोघटाइकैउडाईजातभोतहीं ॥५॥ चंचरीछंद ॥ धामधामनि
आगिकीबहुज्वालमालबिराजहीं ॥पवनकेझकझोरतेझँझरीझ-
रोखनभ्राजहीं ॥ बाजिबारणशारिकाशुकमोरजोरणभाजहीं ।
छुद्रज्योंबिपदाहिआवतछोडिजातनलाजहीं ॥६॥ भुजंगप्रया-

तछंद ॥ जटीअग्निज्वालाअटासेतहैज्यों । शरत्कालकेमेघसं-
ध्यासमैज्यों ॥ लगीज्वालधूमावलीनीलराजैं । मनोस्वर्णकी
किंकिणीनागराजैं ॥ ७ ॥ लसैपीतक्षत्रीमठीज्वालमानौ । ठके
ओठनीलंकबक्षोजजानौ ॥ जरेजूहनारीचढ़ीचित्रसारी । मनो
चेटकामेंसतीसत्यधारी ॥ ८ ॥ कहूँ रैनिचारीगहेज्योतिगाढे ।
मनोईशरोषाग्निमेंकामडाढे ॥ कहूंकामिनीज्वालमालानिभौरें ।
तजैंलालसारीअलंकारतौरें ॥ ९ ॥

टी०—तूलरुई बाससी वस्त्र ॥ ५ ॥ झंझरीके जे झरोखा कहे छिद्र हैं तिनमें भ्राजहीं कहे शोभित हैं जैसे छुद्रप्राणी जाके पास रहत है ताको कछू विपत्ति-परै तो सहाय नहीं करत ताको छोडिकै भागत है लजात नहीं है तैसे अग्निदाह-की जो विपत्तिहै तामें वारणादि सब भागत भये ॥ ६ ॥ नाग कहे हाथी ॥७॥ वक्षोज कुचसम पीत क्षत्रिय हैं ओढनी सम अग्निज्वाल है ॥ ८ ॥ भोरे कहे भ्रमसों अलंकार स्वर्ण भूषण ॥ ९ ॥

मू०—कहूंभौनरातेरचेधूमछाहीं । शशीसूरमानोंलसैंमेघमा-
हीं । जरैशस्त्रशालामिलीगंधमाला ॥ मिलैअद्रिमानौलगीदाव
जाला ॥ १० ॥ चलीभागिचौहूंदिशाराजधानी । मिलीज्वा-
लमालाफिरैदुःखदानी ॥ मनोईशबानावलीलाललोलैं । सबै-
दैत्यजा यानकेसंगडोलैं ॥ ११ ॥ सवैया ॥ लंकलगाइदईह-
नुमंतबिमान बचेअतिउच्चरुखीहै । याचिफटैंउचटैंबहुधामनि
रानीरटैंपानीपानीदुखीहै ॥ कंचनकोपबिल्योपुरपूरपयोनिधि-
मेंपसरेतिसुखीहै । गंगहजारमुखीगनिकेशोगिरामिलीमानौ-
अपारमुखीहै ॥ १२ ॥

टी०—शशि कहे श्री जो प्रताप है त्यहिसहित प्रतापरहित सूर्य्यको रंग श्वेत है प्रतापसहित अरुण है तासों शशि कह्यो अथवा कि शशि कहे चन्द्रमा सहित मानों सूर्य लसत हैं अर्थ चन्द्रयुक्त सूर्य होते हैं तब सूर्य्यग्रहण होत है सो

मानो ग्रहण समयमें सूर्य शोभित हैं इत्यर्थः । औ कि मानो सूर्य मेघनमें शोभित हैं यथा सिद्धांत रहस्ये 'छादयत्यर्कमिन्दुरिति' । सर्पसम शस्त्रहैं चन्दन गंधसम गंधहै ॥ १० ॥ महादेव त्रिपुरका भस्म करिबे को बाण चलायो है ते बाण दैत्य जाया जे दैत्यस्त्री हैं तिनके भागन में तनुमें लागे भस्म करचोहै मानो तेईहैं बाणावली सम ज्वाला माला हैं दैत्यजाया सम राक्षसी हैं ॥ ११ ॥ पाचि कहे पन्नामणि अथवा पाचि कहे पाकिकै फटै कहे फूटती हैं ते मणि बहुधा उचटती हैं कहे उछरती हैं गंगको सहस्रमुखी कहे सहस्रधारा ह्वै समुद्रको मिलीं गुणिके गिरा जो सरस्वती हैं सो मानो अति सुखी ह्वै कै अपार कहे अगन्यमुखी ह्वै कै समुद्रको मिली हैं सुवर्णद्रव सरस्वतीके जल समहै ॥ १२ ॥

मू०—दोहा ॥ हनुमतलाईलंकसब, बच्योबिभीषणधाम ॥ ज्योंअरुणोदयबेरमें, पंकजपूरबयाम ॥ १३ ॥ संयुताछंद ॥ हनुमंतलंकलगाइकै । पुनिपूछसिंधुबुझाइकै॥शुभदेखिसीतहि पाँपरे । मनिपायआनँदजीभरे ॥ १४ ॥ रघुनाथपैजबहीगये। उठिअंकलावनकोभये॥ प्रभुमैंकहाकरणीकरी । शिरपायकीध-रणीधरी ॥ १५॥ दोहा ॥ चिन्तामणिसीमणिदई,रघुपतिकरह-नुमंत ॥ सीताजूकोमनरँग्यो, जनुअनुरागअनंत ॥ १६ ॥

टी०—हनुमान करिकै लाई कहे जारी जो जरति सब लंका है तामें बच्यो जो विभीषणको धाम है सो ज्वालमध्य कैसो शोभित है जैसे पूर्व याम कहे प्रथम पहर अरुण जे सूर्य हैं तिनके उदयके बेरमें कहीं समयमें पङ्कज कमल शोभित है जैसे कमल रात्रिको मुकुलित रहत है प्रातही सूर्योदय होत अति प्रफुल्लित ह्वै प्रकाशको प्राप्त होत है तैसे रावणको प्रभावरूपी जो रात्रि है तामें विभीषणको धाम उदासीन रह्यो सो लङ्कामें रामप्रतापरूपी सूर्योदय सों धाम सम जो अग्नितेज है तामें शोभित भयो पूर्वयाम कहि या जानियो कि ज्यों ज्यों सूरज सम प्रताप अधिक उदय को प्राप्त ह्वै है त्यों त्यों कमल सम बिभीषणको घर अधिक प्रकाशको प्राप्त ह्वै है इतिभावार्थः ॥ पूर्वयाम यासों कह्यो कि मेघादि करिकै आच्छादित ह्वै मेघनसों कहि तृतीयादि पहरहू में उदित कहावत है॥ १३॥ वाल्मीकीय रामायण में कह्यो है कि, लंक दाहिकै हनुमान पश्चात्ताप करचो है

कि यामें सीताहू जरि गई है हैं तासों गर्ग सीताके पास जाइ सीता को शुभ कहे सकुशल देखिकै मणिसम पाइकै आनन्द जीमें भरत भये जैसे कछु मणि रत्न पाये आनन्द होत है तैसे भयो ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

मू०-दोधकछंद ॥ श्रीरघुनाथजबैमणिदेखी । जीमहँभाग दशासमलेखी ॥ फूलिउठ्योमनुज्योंनिधिपाई । मानहुँअंधसो दीठिसोहाई ॥ १७ ॥ तारकछंद ॥ मणिहोहिनहींमनुआ-हिसियाको । उरमेंप्रगटद्योतनुप्रेमदियाको ॥ सबभागिग-यो जो हुतो तमछायो । अबमैंअपनेमनकोमतपायो ॥ १८ ॥ दरशैहमको बनहीदरशाये । उरलागतिआइबस्याइलगाये ॥ कुछउत्तरदेति नहींचुपसाधी ॥ जियजानतिहैहमकोअपराधी ॥ १९ ॥ हनूमान ॥ कछुसीयदशाकहिमोहिंनआवै । चर-काजडबातसुने दुखपावै ॥ सरसोप्रतिबासरबासरलागै । तनघावनहींमनप्राणनखागै ॥ २० ॥

टी०-भाग्यकी दशा कहे अवस्था ॥ १७ ॥ प्रिया प्रियके मनसों मनमिले अति प्रेम प्रगट होत है यह प्रसिद्ध है सो रामचंद्र कहत हैं कि ता मणिको देखि प्रेमरूपी जो दिया कहे दीपक है ताको तनु कहे स्वरूप ज्योति इति हमारे उरमें प्रगट भयो तासों यह सीताको मन है जा दीपके प्रगट भये सो हमारे मनमें जो तम अन्धकार छायो रहै सो सब भागिगयो तो इहां तम पदवे अज्ञान अथवा वियोग दुःख जानौं ता तमसे हमारे मनको रावण वचनरूप अथवा कर्त्तव्य वस्तु विचार रूप जो मत हिरानो रहै ताको पायो ॥ १८ ॥ अब यह दरशायेहू कहे हमारी ओर निहारो यह कहे हू पर हमको नहीं दरशै कहे देखति अर्थ हमारी ओर नहीं निहारति औ जब बरिआई कहे जबरई अपने हाथनसों उरमें लगाइ-यत है तब लागति है आपनी ओर सों नहीं लागति ॥ १९ ॥ चर कहे जंगम मनुष्यादि जड वृक्षादि प्रतिबासर कहे रोज रोज अर्थ निरन्तर वासर जो दिन है अथवा रागभेद जो रावणके मंदिरनमें नित्य राग होत है सो सीताके शर कहे बाण सम लागत है सो शरके लागे तनुमें घाव होत है वा शरके लागे तनमें घाव नहीं होत औ मन औ प्राणन में खागै कहे लपटात है अर्थ मन औ प्राणनको छेदत है "वासरो रागभेदेह्नीत्यभिधानचिन्तामणिः" ॥ २० ॥

मू०—प्रतिअंगनकेसँगहीदिननाशैं। निशिसोंमिलिबाढति दीहउसासैं ॥ निशिनेकहुनींदनआवतिजानौं । रविकीछबिज्योंअधरातबखानौं ॥ २१ ॥ घनाक्षरी ॥ भौंरनीज्योंभ्रमतरहति बनबीथिकानि हंसिनीज्योंमृदुलमृणालिकाचहतिहै ।। हरिणी ज्योंहेरतिनकेशरीकेकाननहिंकेकासुनिव्यालीज्योंबिलानहींचहतिहै। पीउपीउरटतरहतिचित्तचातकीज्योंचंद्चितैचकईज्योंचुपह्वैरहतिहै । सुनहुनृपतिरामबिरहतिहारेऐसीसूरतिनसीताजूकीमूरतिगहतिहै ॥ २२ ॥

टी०—शरद् ऋतु में शिशिर पर्यंत दिनमान घटत है रात्रि मान बाढत है सो हनूमान शरदऋतु में गये सो लंका जारि के शरद् में अथवा हेमन्त में रामचन्द्र के पास आयेह्वै हैं सो रामचन्द्र सों कहत हैं कि जैसे या समय के दिन मर्याद करिकै नाशत कहे घटत हैं तैसे सीताके सब अंग घटत हैं दूबरे होतहैं औ ज्यों ज्यों निशा बाढति है त्यों त्यों दीह उसास बाढति है दूसरो अर्थ खुलो है अधराति में जैसे रविकी छबि नेक नहीं रहति तैसे सीताको रातिकै नींद नहीं आवति अधरात कहे अति विनिद्रता जनायो जैसे तुलसीकृतमों कह्यो है कि। "सिरिस कुसुम कहुं बेधत हीरा" ॥ २१ ॥ भौंरनी सम बन अशोक वाटिकाकी बीथिकानिमें कहे गलिन में भ्रमत रहति है अथवा मन करिकै बन बीथिकानिमें भ्रमति रहति है तुम्हारा वियोग बनहींमों भयो है तासों सीता को मन बन बन भ्रम्यो करत है हंसिनी सुखभावसे सीता शीतल ताकेलिये केशरी सिंह औ कुंकुमहरिणीबधभयमोंसीता बिरहोद्दीपन भयसों॥२२॥

मू०—सीताजूसंदेश—दोहा ॥ श्रीनृसिंहप्रह्लादकी, वेदजोगावतगाथ । गयेमासदिनआशुहीं, झूँठीह्वैहैनाथ ॥ २३ ॥ आगमकनककुरंगके,रुहीबातसुखपाइ । कोपानलजारिजायजानि, शोकसमुद्रबुडाइ ॥ २४ ॥

टी०—नृसिंहरूप ह्वै खंभको फारि निकसि प्रह्लादकी रक्षा करयो यह जो गाथा वेद गावत हैं सो हम प्रति रावणकृत जे अवधि मास के दिन हैं तिनके

गये कहे बीते आशुही कहे थोरेही दिन मों झूंठी ह्वै है अवधि दिन बीते रावण हमको मारि डारि है तब सब कहि हैं कि साक्षात् स्त्री सीता की रक्षा रावण सों न करयो तो असंबंधी प्रह्लाद की रक्षा कहा करयो ह्वै है इति भावार्थः॥ जे वनकृत अवधि दिन तेरहें प्रकाश में कह्यो है । अवधि दई द्वै मासकी । सो जानो अथवा मास दिन कहे एक महीना गये कहे बीते अर्थ एक महीना के बाद हम प्राण छोड़िदेहैं बाल्मीकीयमें कह्यो है । "इदंब्रूयाश्रमेनाथं शूरं-रामं पुनःपुनः । जीवितं धारयिष्यामि मासं दशरथात्मजम् । ऊर्ध्वं मासन्नजीवेयं सत्येनाहं ब्रवीमि ते" ॥ २३ ॥ "राजसुता यक मंत्र सुनो अब । चाहत हौं भुव भार हरयो सब ॥ पावकमें निज देहहि राखहु । छायाशरीर मृगे अभिलाषहु ॥" या प्रकार राक्षसन को मारि भुवभार हरिबो कह्यो रहै सो बात को या अनलमें जरन न पावे औ शोकरूपी समुद्र में डूबन न पावे ता बात की रक्षा तुम को नीके प्रकार सों करिबे है ॥ २४ ॥

मू०—राम-दंडक ॥ सांचोएकनामहरिलीन्हेसबदुःखहरिऔ-रनामपरिहारिनरहरिठायेहो । बानरनहींहौतुममेरेबाणरोषसम बलीमुखशूरबलीमुखनिजगायेहो॥शाखामृगनाहीबुद्धिबलन-केशाखमृगकैधौंवेदशाखामृगकेशवकोभायेहो । साधुहनुमन्त बलवंतयशवंततुमगयेएककाजकोअनेककरिआयेहो ॥ २५॥ हनूमान—तोमरछंद ॥ गइमुद्रिकालैपार । मनिमोहिंल्याईवार॥ कहकरयोमैबलरंक । अतिमृतकजारीलंक ॥ २६ ॥

टी०—सीताको संदेश दै कै हमारो सब दुःख तुम हरिलीन्हों ताते हरि यह जो तुम्हारो नामहै सो सांचो है 'हरतिदुःख मितिहरिः,। अर्थ जो दुःखको हरै सो हरि कहावै सो तुम नरहरि कहे नृसिंह हौ और नाम जो नर है ताको परिहरि कहे छोडि के हरि एते नाम सों ठाये कहे युक्त हौ यासों या जनायो कि प्रह्लाद के समान तुम हमारो दुः ख हरयो है अथवा औरजे नामहैं इंद्रादिक तिनको परिहरि कहे छोडिकै नरहरि कहे नृसिंह यह जो नाम है ताके सम ठाये हौ अर्थ इन्द्रादि-कनकी समता करिबेलायक तुम नहीं हो विक्रमादि करिकै तुम नृसिंहके समान हो मेरे बाण को जो रोष क्रोध है ताके समहो अर्थ जैसे हमारे बाणको क्रोध निष्फल नहीं होत तैसे तुम निष्फल नहीं होते जो काज करिबो चाहौ सो करि

ही आवो अथवा मेरे बाण के सम हौ औ मेरे रोष के सम हौ कहूं बाण रस सम पाठ है तौ बाण को जो रस कहे बलहै ताके सम हौ अर्थ जैसे हमारे बाण- में बल है तैसे तुम्हारे बलहै "शृंगारादौविषेवीर्यद्रवेरागेगुणेरसः" इत्यमरः।हे बली- मुख शूर अर्थ बलीमुख जे वानर हैं तिनमें शूर कहे वीरबली जे बलवान हैं तिनके मुखन करिकै निज कहे निश्चय करिकै गाये हौ अर्थ बड़े बड़े बलवान तुम्हा- रो बखान करत हैं औ शाखा जे वृक्षशाखा हैं तिनके मृग कहे गामी तुम नहीं हौ बुद्धि बलनेक जे शाखा हैं तिनके गामी हौ अर्थ अनेक बुद्धि बल करि कारज साधत हौ औ कि वेदकी जे कलाआदि शाखा हैं तिनके मृग कहे गामी हौ अर्थ वेदाध्ययन मों प्रवीण हो एक काज सीय खोज अनेक काज लंका दाहादि ॥ २५ ॥ २६ ॥

मू०—अतिहत्योबालकअच्छ । लैगयोबांधिविपच्छ ॥ ज- ड़वृक्षतोरेदीन । मैंकहाविक्रमकीन ॥ २७ ॥ तिथिविजयदश मीपाइ ॥ उठिचलेश्रीरघुराइ ॥ हरियूथ यूथपसंग । बिनपच्छ केतिपतंग ॥ २८ ॥

टी०—विपच्छ कहे शत्रु जो मेघनाद है सो म्वहिं बांधि लैगयो ॥ २७ ॥ शरत्कालमें सीताके ढूँढिबेके लिये वानरनको रामचन्द्र पठायो है औ मास दिवसकी अवधि दईहै सो समुद्रतटमें अंगद कह्यो है कि । सीय न पाई अवधि बिताई । तौ शीतकालके माससों अधिक दिन बीते औ अमरकोषमें कह्यो है कि द्वौद्वौमावादिमासौस्यादृतुः । या मतसों क्वाँर औ कार्त्तिक द्वै मास शरत्काल जानौ औ क्वाँर शुक्लदशमी विजयदशमी कहावतीहै ताको रामचन्द्र चले यह विरोधहै तहां औैर अर्थ दशमी तिथिमां विजयनामा मुहूर्त्तको पाइकै श्रीरामचन्द्र चले दशमी यथा । वाल्मीकीये-अस्मिन्मुहूर्त्तेसुग्रीवप्रयाणमभिरोचय । युक्तोमुहूर्तो विजया प्राप्ता मध्यं दिवाकरः । कैसे हैं हरियूथ विना पच्छके पतंग कहे पक्षी हैं अर्थ विन पच्छ पक्षीसम उडत हैं ॥ २८ ॥

मू०—समुझैनसूरप्रकाश। आकाशवलितबिलाश॥ पुनिऋ- क्षलक्ष्मणसंग । जनुजलधिगंगतरंग ॥ २९ ॥ सुग्रीव-दंडक॥ केशोदासराजचन्द्रसुनौराजारामचन्द्ररावरीजबहिंसैनउचकि- चलतिहै । पूरतिहैभूरिधूरिरोदसिहिआसपासदिशिविदिशिवर-

पाज्योंबलनिबलतिहै । पन्नगपतंगतरुगिरिगिरिराजगजराज मृगमगराजराजनिदलतिहै। जहांतहांऊपरपतालपयआइजात पुरइनिकेसेपातपुहुमीहलतिहै ॥ ३० ॥

टी०-बानरनके संगमें लक्षन ऋच्छ हैं सो बानर औ ऋच्छ कैसे शोभित हैं जानों जलधि औ गंगाके तरंग हैं जलधि तरङ्ग सम ऋच्छ हैं गंगतरंगसम बानर हैं ॥ २९ ॥ रोदसी कहे भू,आकाश "द्यावाभूमी च रोदसीत्यमरः।" बलनि कहे बानरयूथनि औ मेघ समूहनि करि दिशि दिशि कहे दशों दिशनिको बलित कहे आच्छादित करतिहै पन्नग-सर्प, पतंग-पक्षी ॥ ३० ॥

मू०-लक्ष्मण ॥ भारकेउतारिबेकोअवतरेहौरामचन्द्रकिधौं केशोदासभूरिभारतप्रबलदल । टूटतहैंतरुवरगिरिगणगिरिवर-मूखेसबसरवरसरितासकलजल। उचकिचलतहरिदचकनिद-चकतमंचऐसेमचकतभूतलकेथलथल।लचकिलचकिजातशे-षकेअशेषफणभागिगईभोगवतीअतलबितलतल ॥ ३१ ॥ गीतिकाछंद । रघुनाथजूहनुमंतऊपरशोभियेतेहिकालजू । उदयाद्रिशोभनशृंगमानहुंशुभ्रसूरबिशालजू । शुभअंगअंगद संगलक्ष्मणलक्षियेबहुभांतिजू। जनुमेरुमंदरसंगअद्भुतचंद्रराज तरातिजू ॥ ३२ ॥दोहा ॥ बलसागरलक्ष्मणसहित,कपिसाग-रणधीर ॥ यशसागररघुनाथजू, मेलेसागरतीर ॥ ३३ ॥

टी०-भोगवती कहे नागपुरी ॥ ३१ ॥ अंगदके ऊपर शुभ अंग जे लक्षण हैं तिन्हैं रामचन्द्रके संग बहु भांतिसों लक्षये कहे देखियत है मेरु कहे सुमेरुके शृंगमें कै मंदर कहे मंदराचलके शृंगमें रातिको चंद्र राजत है ॥ ३२ ॥ कपि-सागर कहे कपिनकी सागर सदृश सेना ॥ ३३ ॥

मू०-विजयाछंद ॥ भूतिबिभूतिपियूषहुकीबिषईशसरोराकि-पायवियोहै । हैकिधौंकेशवकश्यपकोघरदेवअदेवनकेमनमोहै। संतहियोकिबसैहरिसन्ततशोभअनन्तकहेकविकोहै । चन्दन नीरतरंगतरंगितनागरकोउकिसागरसोहै ॥ ३४ ॥ गीतिका

छंद ॥ जलजालकालकरालमालतिमिंगिलादिकसोंबसै । उर लोभक्षोभविमोहकोहसकामज्योंखलकोलसै ॥ बहुसंपदायुत जानियेअतिपातकीसमलेखिये । कोउमांगनोअरुपाहुनोनहीं नीरपीवतदेखिये ॥ ३९ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकाया-मिन्द्रजिद्विरचितायांसमुद्रतटरामसैन्यनिवेशनंनाम चतुर्दशःप्रकाशः ॥ १४ ॥

टी०–ईश कहे महादेव केशरीपच्छ भूति कहे अधिकहै विभूति कहे भस्मकी औ पियूष कहे अमृतकी अमृत युक्त चंद्रमा धारण करे हैं तासों औ विषको सागर पच्छ भूति कहे उत्पत्ति हैं विभूति कहे रत्नादि द्रव्य औ पियूष कहे अमृत औ विषकी जासों देव अदेव कश्यप के पुत्र हैं तासों पिताको घर पुत्रनको लाग्योई चाहे औ समुद्रकी दीर्घता देखि देव अदेव मोहित कहे मूर्छित होत हैं नागर कहे नगर श्रेष्ठ सो चंदनको जो नीर कहे उद्धर है ताके जे तरंग हैं तासों तरंगित चित्रित है अर्थ अंगनमों नीकी विधि चंदन लेप करे है सागर पच्छ चंदन वृक्ष करिकै नीरके तरंग तरंगित हैं जाके अर्थ जाके तरंगमें चंदन वृक्ष वहत हैं जो कहो अमृतोत्पत्ति औ हरिशयन क्षीरसागरमों है तो इहां समुद्रकी जातिमात्रको वर्णन है लवण क्षीर भेदसों नहीं है सो जानों ॥ ३४ ॥ जा समुद्रकै जलको जालि कहे समूह जो है सो कालहूते कराल जे तिमिंगल मत्स्यभेद हैं तिन्हैं आदि जे जलजीव हैं तिनसों कहे तिनसहित बसत हैं अर्थ जा जलमें तिमिंगिलादि रहत हैं आदि पदते ग्राहादि जानों सो कैसो शोभित है जैसे लोभ औ क्षोभ कहे डर औ विमोह औ कोह कहे क्रोध औ काम सहित खलको दुष्टको उर लसतहै औ बहुत संपत्ति रत्नादिसों युक्तहै ताहूपर कोऊ मांगनो कहे याचक अर्थ जे रत्नादि लेनेके लिये जात हैं पाहुनो कहे नातो विष्णु आदि तिनको नीर जल पीवत नहीं देखियत ताते बडे पातकी सम लेखियत है गोवधादि पाप युक्त वडे पातकीहूको जल अति संपत्तिहूके लोभसों कोऊ नहीं पीवत इति भावार्थः ॥ ३९ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां चतुर्दशः प्रकाशः ॥ १४ ॥

मू०—दोहा ॥ याप्रकाशदशपंचमें, दशशिरकरैबिचार ॥ मिलनबिभीषणसेतुरचि, रघुपतिजैहैंपार ॥ १ ॥

मू०—रावण—गीतिकाछंद ॥ सुरपालभूतलपालहौसबमूल मंत्रतेजानिये । बहुमंत्रवेदपुराणउत्तममध्यमाधमगानिये ॥ करियेजोकारजआदिउत्तममध्यमाधमभानिये।उरमध्यआनि-अनुत्तमैजेगयेतेकाजबखानिये ॥२॥ स्वागताछंद ॥ आजुमो-हिंकरनेसोकहौजू ॥ आपुमांहजनिरोषगहौजू ॥ राजधर्मकहिये छबिछाये । रामचन्द्रनहिंजौंलगिआये ॥ ३ ॥

टी०—सब महोदरादि जे राक्षस हैं तिनसों रावण कहत है कि तुम सब सुरपाल जे इंद्रहैं तिनको जो भूतल स्वर्गहै ताके पालनहार हौ अर्थ इंद्रलोकमें राज्य कर्‌यौ है आशय यह कि मंत्रनहींके जोरसों इंद्रको जीति इंद्रलोक अमलयौ अथवा सुरपाल इंद्र सम भूतलपाल हौ इंद्रको ऐसो राज्य करत हौ सो मूलमंत्र कहे सिद्धांतमंत्र अर्थ जिनसों शत्रुकी पराजय आपनो जय होय ऐसे मंत्र जानिये कहे जानत हौ वेद पुराणनमें बहुत जे मंत्र हैं तिन्हैं उत्तम औ मध्यम औ अधम नीति प्रकारके वेद पुराणनकरिकै गाइयत है अर्थ वेद पुराण कहत हैं यथा शास्त्रकी दृष्टिसों अर्थ जैसो शास्त्र कहत हैं ताही विधिसों एक मत ह्वैकै मंत्र ठहरावै सो मंत्र उत्तम है औ जहां मंत्रीजन अपने मतको मंत्र भिन्न भिन्न कहैं फिरि राजभयादि कारणसों उदासीनतासों एकमत ठहरावैं सो मंत्र मध्यम है औ मंत्री जो आपनेही अपने मनको मत भिन्न भिन्न कहैं एकमत कैसेहू ना होइ सो मंत्र अधम है यथा । बाल्मीकीये । ऐकमत्यमुपागम्य शास्त्रदृष्टेन चक्षुषा । मंत्रिणो यत्र निरतास्तमाहुर्मंत्रमुत्तमम् ॥ १ ॥ बह्वीरपि मतीर्गत्वा मंत्रिणामर्थनिर्णयः॥ पुनर्यत्रैकतां प्राप्तः स मंत्रो मध्यमः स्मृतः ॥२॥अन्योन्यं मतिमास्थाय यत्र संप्रतिभाष्यते । नचैकमर्ण्यश्रेयोस्ति मंत्रः सोधम उच्यते ॥ ३ ॥ तिन तीनहू प्रकारके मंत्रनमें आदि उत्तम जो कारज है ताको करिये अर्थ एक मत ह्वै कारज करिये औ मध्यम औ अधमको भानिये कहे दूरि करो ऐसे समयमें जे अनुत्तम काज व्यतीत ह्वैगये अर्थ आपनेहीं आपने मनकी सब मिलि कह्यो तिन बातनको उरमें आनिकै बखानिये कहे कहत हौ अर्थ ऐसे समयमों ऐसी बात कहिबो उचित नहींहै तासों एकमत ह्वै मंत्र करौ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

मू०—प्रहस्त ॥ वामदेवतुमकोवरदीन्हो । लोकलोकसिगरेवशकीन्हो ॥ इन्द्रजीतसुतसोजगमोहै । रामदेवनरबानरकोहै ॥ ४ ॥ मृत्युपाशभुजजोरनितोरे । कालदंडतुमसोंकरजोरे ॥ कुंभकर्णसमसोदरजाके । औरकौनमनआवतताके ॥ ५ ॥ कुंभकर्ण—चतुष्पदी० ॥ आपुनसबजानतकह्यौनमानतकीजैजोमनभावै।सीतातुमआनीमीचुनजानीआनकिमंत्रबतावै॥ जेहिबरजगजीत्यौसर्वअतीत्यौतासोंकहाबसाई । अतिभूलिगईतबशोचकरतअबजबशिरऊपरआई ॥ ६ ॥ मंदोदरी-विजयछंद॥रामकिवामजोआनीचोराइसोलंककेमेंमीचुकीबेलिबईज । क्योंरणजीतहुगेतिनसोंजिनकीधनुरेखननांघिगईजू॥ बीसबिसेबलवन्तहुतेजोहुतीदृगकेशवरूपरईजू।तोरिशरासनशंकरकोपियसीयस्वयंवरक्योंनलईजू ॥ ७ ॥

टी०—वामदेव महादेव सरस्वती उक्तार्थः ॥ रामचन्द्र देव हैं नर औ वानर को हैं इहां देव पदते ईश्वर जानौ अर्थ रामचन्द्र ईश्वर हैं औ सुग्रीवादि वानर सब देवसैन्य हैं ॥ ४ ॥ ५ ॥ वर कहे वल अर्थ तपोबल अथवा शिवादिके वरसों सब अतीत्यौ कहे बीतो तासों कहा वसाइ कहे जोर चलै अर्थ विनाशको समय आयो सोई तुमसों ऐसे सीयहरणादि कार्य करायो है अथवा जेहि शिव औ ब्रह्माके वरसों जगको जीत्यौ सो वरदान सब वीतो काहेते कि यह वर दीन रह्यो कि नर वानरनको छोडिकै औरसों तुमको भय न ह्वै है सो और औ वानर ही लरिबेको आवत हैं सो वानरको प्रभाव तो कछू यामें चलि है नहीं सो तुमको तब कहे सीयहरणादि समयमों यह सुधि भूलि गई कि हमको नर वानरसों भय है जब शिर ऊपर आई है तब शोच करत हौ तो तासों कहा वसाइ कहे जोर चलै अर्थ अब मृत्युते रक्षाको कछू उपाय नहीं है ॥ ६ ॥ जो तुम्हारो दृगनमों सीतारूप जो सौंदर्य है ता करिकै रई कहे वसी रहे ॥ ७ ॥

मू०—बालिबलीनबच्योबरखोरिहिक्योंबचिहौतुमआंपनिखोरहि।जालगिक्षीरसमुद्रमथ्योकहिकैसेनबांधिहैंबारिधिथोरहि॥

श्रीरघुनाथगनौअसमर्थनदेखिबिनारथहाथिनघोरहि । तोरचो शरासनशंकरकोजेहिसोवकहातुवलंकनतोरहि ॥८॥ मेघनाद-दोहा ॥ मोकोंआयसुहोइजो, त्रिभुवनपालप्रवीन ॥ रामसहितसबजगकरौं,नरबानरकरिहीन ॥९॥ विभीषण-मोटनकछंद॥ कोहैअतिकायजोदेखिसकै । कोकुंभनिकुंभवृथाजोबकै ॥ को हैइन्द्रजीतजोभीरसहै । कोकुंभकर्णहथ्यारुगहै ॥ १० ॥

टी०-जालगि कहे जा लक्ष्मीरूप जे सीता हैं तिनके लिये ॥ ८ ॥ सरस्वती उक्तार्थः मेघनाद कहत है कि जो मंत्र कहिबेको हमको आज्ञा होइ तौ हम कहियत है कि त्रिभुवनपाल कहे तीनों लोकके रक्षा करणहार औ प्रवीण कहे विवेकी यासों या जनायो कि केवल समदृष्टिहीसों नहीं प्रतिपाल करत भक्तन-पर अतिकृपा शरणागतरक्षण शत्रुनाशादि कर्म यथोचित करत हैं ऐसे जे राम-चन्द्र हैं तिनहीं करिकै सहित सब जग है अर्थ रामचंद्रही सर्वत्र व्याप्त हैं अर्थ कि विष्णु हैं यथावृत्तरत्नाकरे ॥ म्यरस्तजभ्नगैर्लांतैरेभिर्दशभिरक्षरैः ॥ समस्तं वाङ्मयं व्याप्तं त्रैलोक्यमिव विष्णुना ॥ इनको नर औ बानर करिकै हीन करौं कहे करि मानत हौं अर्थ रामचन्द्र विष्णुहैं वानर सब देवताहैं अंगदहू सोरहे प्रकाशमें कह्यो है कि। कौनइहांनरवानरकोरे ॥ ९ ॥ १० ॥

मू०-देखेरघुनायकधीररहै । जैसेतरुपल्लवबातबहै ॥ जौलौंहरिसिंधुतरैइतरै । तौलौंसियलैकिनपाइपरै॥११॥जौलौंनलनीलनसिंधुतरै । जौलौंहनुमंतनदृष्टिपरै ॥ जौलौंनहिंअंगद लंकदहौ । तौलौंप्रभुमानहुबातकही॥१२॥ जौलौंनहिंलक्ष्मणबाणधरै । जौलौंसुग्रीवनक्रोधकरै॥जौलौंरघुनाथनशीशहरै तौलौंप्रभुमानहुपाइपरै ॥१३॥ रावण-कलहंसछंद ॥अरिकाजलाजतजिकैउठिधायो॥धिकतोहिंमोहिंसमुझावनआयो॥तजि रामनामयहबोलउचारचो॥शिरमांझलातपगलागतमारचो १४

टी०-अर्थ रघुनाथको देखि अतिकायादिकनके काहूके धीर न रहि है ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ रामनामको तजि कहे छोड़ यह बोलु रावण उचारचो

कहे कह्यो सरस्वतीउक्तार्थः अरि कहे शत्रुके काजसों लाज तजिकै उठि-धायो है अर्थ रामचन्द्रके हाथ मृत्युसों हमारी मुक्ति ह्वै है तामें चाहिये कि तू भाई है सहाय करै सो तू शत्रुता करत है जामें याकी मुक्ति ना होइ यामें तोकों लाज हीं है भाई ह्वै कै शत्रुको काम करत है तोकों धिक् है जो मोहिं समुझावत है कि रामचंद्रसों न लरौ अथवा मोहि कहे मोहवश ह्वै के रामको नाम जो ते रह्यो ताको तजिकै यह बोल उचारयो कहे एती कथा कह्यौ यह कहिकै पाँयन परत विभीषणके शिरमें लात मारयौ ॥ १४ ॥

मू०-करिहायहाय उठिदेहसँभारेउ । लियअंगसंगसबमंत्रि-यचारेउ ॥ तजिअंध दशकंधउडान्यो । उररामचंद्रजगती-पतिआन्यो ॥ १५। दोहा ॥ मंत्रिनसहितविभीषण, बाढीशोभ अकाश ॥ चुअलिआवतभावतो, प्रभुपदपद्म-निवास ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ निकटविभीषणआवतजाने । कपिपतिसोंतबहींगुदराने । रघुपतिसोंतिनजाइसुनायो । दशमुखसोदरसेवहिआयो १७ ॥ श्रीराम० ॥ बुधिबलवं-तसबैतुमनीके । मतसुनिलमंत्रिनहीके ॥ तबजोबिचारप-रैसोइकीजै । सहसाशत्रुनआदि दीजै ॥ १८ ॥ अंगद-सुंदरीछंद ॥ रावणकोयहसांचहु । आपुबलीबलवंत-लियेअरु ॥ राकसवंशहमैंहतनेर । काज कहातिनसों-हमसोंअब ॥ १९ ॥ वध्यविरोधसोंअति । क्योंमि-लिहैहमसोंतिनसोंमाति ॥ रावणक्योंतबहींइन । सी-यहरीजबहींवहनिघृन ॥ २० ॥ नल० चारपठैइनकोमत-लीजिय । ऐसेहिकैसेबिदाकरिदीजिय रखियजोअति-जानिय उत्तम । नाहिंतौमारियछोड़िसबै ॥ २१ ॥

टी०-॥ १५ ॥ १६ ॥ कपि जे बानर हैं तिनके प. वध्य वीव हैं तिनसों गुदराने कहे कहत भये ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ बध्य मारिबे लायक

कहाउजग जौंलगिरामनाम ॥ २७ ॥ तोटकछंद ॥ जबहीं रघुनायकबाण लियो । सविशेषविशोषितसिंधुहियो ॥ तबहीद्विजरूपसोआइ गयो । नलसेतुरचैयहमंत्रदयो ॥२८॥ दोहा ॥ जहँतहँवानरसिंधुमैं,गिरिगण्डारतआनि ॥ शब्दरह्यो भरिपूरिमहि, रावणको दुखदानि ॥ २९ ॥ तोटकछंद ॥ उछलैजलउच्चअकाशचढै । जलजोरदिशाबिदिशानमढै ॥ जनुसिंधुअकाशनदीअरिकै । बहुभाँतिमनावतपांपरिकै ॥३०॥

टी०--त्योंहीं कहे तत्कालही मोह कहे दुःख ॥ २६ ॥ २७ ॥ समुद्रतटमें रामचन्द्र तीन दिन डेरा कियेरहे जब समुद्र राह नहीं दियो तब समुद्रको शोषिवेकेलिये कोपकरि रामचन्द्र वाण लियो इति कथा शेषः॥ २८ ॥ २९ ॥ समुद्रको जल उछरि आकाशकोचढत है सो मानहु समुद्र पायन परिकै आकाश गंगाको मनावत है ॥ ३० ॥

मू०—बहुव्योमविमानतेभीजिगये । जलजोरभयेअँगरागमये ॥ सुरसागरमानहुयुद्धजये ।सिगरेपटभूषणलूटिलये॥३१॥ अतिउच्छलिछिंछित्रिकूटछयो । पुररावणकेजलजोरभयो ॥ तबलंकहनूमतलाइदई । नलमानहुआइबुझाइलई ॥ ३२ ॥ लगिसेउजहांतहँशोभगहे । सरितानिकफेरिप्रवाहबहे ॥ पतिदेवनदीरतिदेखिभली । पितुकेघरकोजनुरूसिचली ॥३३॥सब सागरनागरसेतुरची । बरणैबहुधायुतशक्रशची ॥ तिलकावलिसीशुभशीशलसै ।मणिमालकिधौं[illegible]विलसै॥३४॥तारक छंद ॥ उरतेशिवमूरतिश्रीपतिलीन्ही।शु[illegible]नुकेमूलअधिष्ठित कीन्ही॥इनकेदरशैपरशैपगजोई।भवसाग[illegible]रिपारसोहोई३५

टी०–जल जोर भये सो बहुत व्योम आशमें देव[illegible] विमान भीजिगये कहे जो अंगनमें लग्यो कुंकुमादि लेप है तासों रये कहे[illegible] पट औ भूषण बहि आये हैं सो मानो सुर जे देवता हैं तिनको सागर युद्धमें जीत्योहै सो मानो लूटि लीन्हों है इहां पटभूषणनको बहि आइबो विषय कहे उपमेय है सो अनुक्त

है तासों अनुक्त विषय वस्तूत्प्रेक्षा है ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ सेतुमें लगिके जहाँ तहाँ सोभरयेन जे सरितनके प्रवाह हैं ते फेरिकहे उलटिकै बहन लगे सो पांय परि परि मनावत हैं ऐसी भली कहे बडी रति प्रीति पतिकी समुद्रके देवनदी आकाशगंगामें देखिकै मानों आपने पिताके घरको रूसि चलीहैं ॥३३॥ नागरश्रेष्ठ ॥३४॥ उरते अर्थ विचारते जो वस्तु करिबो होतहै ताको विचार प्रथम मनहिमों आवत है ॥३५॥

मू०–दोहा॥ सेतुमूलशिवशोभिजै,केशवपरमप्रकाश॥साग-रजगतजहाजको, करियाकेशवदास ॥ ३६ ॥ तारकछंद ॥ शुकसारणरावणदूतपठायो । कपिराजसोएकसंदेशसुनायो॥अपनेघरजैयहुरेतुमभाई । यमहूंपहँलंकलईनहिंजाई ॥ ३७ ॥ सुग्रीव०॥भजिजेहौंकहांनकहूंथलदेखों ।जलहूंथलहूंरघुनायकपेखों ॥ तुमबालिसमानसहोदरमेरे । हतिहौंकुलस्यौंतिनप्राण न तेरे ॥ ३८ ॥ सबरामचमूतरिसिंधुहिआई । छबिऋक्षनकीधरअंबरछाई ॥ बहुधाशुकसारणकोजोबताई । फिरिलंकमनोंवर्षाऋतुआई ॥ ३९ ॥

टी०–संसार सागरको जो जहाज रामनाम है ताके करिया कहे केवट जे शिव हैं जैसे केवट जहाजमें चढाइ समुद्रपार करत है तैसे शिवमरणकाल काशीमें रामरूपी तारक मंत्र जहाजपर चढाइ संसारपार करत हैं ते सेतुके मूलमें परम प्रकाश कहे प्रसन्नतासों शोभित हैं जो जहाजपर चढाइ पार करत हैं सो आपने प्रभुसों सेतुपर चढाइ पार करिबेको अधिकार पाइ प्रसन्न भयोई चाहै इतिभावार्थः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ता रावणके संदेशमें सुग्रीवको भाई कह्यो ताको जवाब सुग्रीव दियो कि रावणसों कहियो कि तुम वालिके समान हमारे भाई हौ तासों तुम्हारो वध उचित है ॥ ३८ ॥ जा रामचन्द्रको काहु नीके प्रकारसों सुग्रीवादि वीरनको शुकसारण दूतसों बहुधा बहुत प्रकारसो बताइ कहे बतायो रहै अर्थ वर्णन करयो है सो तुलसीकृत रामायणमें रावणसों शुकसारण कह्यो है कि ॥ असमैं श्रवणसुनादशकंधर । पदुमअठारहयूथप बंदर ॥ अथवा जा प्रकार शुकसारणको बतायो है सो आगे कवित्तमें वर्णन है सो रामचमू सिंधुको तरि कहे उतरिकै लंकामें आई है सो भू आकाशमें ऋक्ष मेघसम श्याम शोभित है सो मानों फेरि हेमंत ऋतु में वर्षाऋतु लंकामें आई है ॥ ३९ ॥

मू०—दण्डक॥कुंतलललितनीलभ्रुकुटीधनुषनैनकुमुदकटा-
क्षबाणसबलसदाईहै। सुग्रीवसहिततारअंगदादिभूषण रु मध्य
देशकेशरीसुगजगतिभाईहै॥ विग्रहानुकूलसबलक्षलक्षऋक्षब-
लऋक्षराजमुखीमुखकेशोदासगाईहै। रामचन्द्रजूकीचमूराज्य
श्रीविभीषणकीरावणकीमीचुदरकूचचालिआईहै॥ ४०॥

टी०—रामचन्द्र चमू कैसीहै कि कुंतल औ ललित औ नील औ भ्रुकुटी औ धनुष औ कुमुद औ कटाक्ष औ बाण औ सबलई जे वानर हैं ते सदा हैं जामें अथवा बाण पर्यंत इन नामन करिकै युक्त औ सदा सबल कहे बलवान ऐसे जे वानर ऋक्ष हैं ते हैं जामें औ सुग्रीव सहित है औ तार नामा जे वानरहैं तिन सहितहै औ अंगदादिक जे भूषण कहे सेनानायक हैं तिनसों युक्त है औ मध्य देशनामा औ केशरीनामा औ सुगज नामा जे वानरहैं तिनकी गति भाई कहे नीकी है जामें औ विग्रहनामा औ अनुकूलनामा औ ऋक्षराज मुख कहे ऋक्षराज जे जाम्बवंत हैं ते हैं मुख कहे मुखिया जामें ऐसो लक्ष लक्ष कहे अनेक लक्ष ऋक्षन ऋक्षनकोहै बल सैन्य जामें विभीषणकी राज्यश्री कैसी है कि कुंतल जे केश हैं ते हैं ललित कहे सुंदर औ नील कहे श्याम जाके औ भ्रुकुटी धनुष सम जाकी औ नयन हैं कुमुद कहे कमलसम जाके औ कटाक्ष हैं बाणसम जाके औ सबल कहे सुंदरता सहित सदा है अर्थ जाकी छवि काहू समयमों म्लानि नहीं होति॥ "बलं गंधरसे रूपे-इति मेदिनी"॥ औ सुष्ठु जो ग्रीवा है सो सहितहै तार कहे विमल मुक्तनसों अर्थ मोतिनकी माला पहिरे है॥ "तारो निर्मलमौक्तिके मुक्ताशुद्धावुच्चनादे-इत्यभिधानचिंतामणिः"॥ औ अंगद जो विजायठ है तेहि आदिदै जे भूषण हैं तिनसों युक्त है औ मध्यदेश जो कटि है सो है केशरी कहे सिंहको ऐसो जाको औ सुष्ठु जो गज है अर्थ जो अति ललित चाल चलत है ताकी ऐसी गति है भाई कहे नीकी जाकी औ विग्रह कहे शरीर है अनुकूल कहे यथोचित सब कहे पूर्ण अर्थ जैसो जौन अंग चाहिये तौन अंग तैसोई है अथवा अनुकूल कहे हित है सबको अर्थ जे देखत हैं ताको मन वश ह्वै जात है अथवा अनुकूल कहे व्याधि रहित 'गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः इत्यमरः'॥ औ लक्ष लक्ष जे ऋक्ष नक्षत्र हैं गन कहे जो बल सौंदर्य है तेहि सहित जो ऋक्षरामचन्द्रमा है ताते सदृशहै मुख जाको अर्थ जब अनेक लक्ष

नक्षत्रकी शोभा लैके चन्द्रमा आपु धारण करै तब जाके मुखके सम होय ॥ "ऋक्षस्तुस्यान्नक्षत्राक्षभल्लयोः-इत्यभिधानचिंतामणिः" ॥ रावणकी मीचु कैसी है कि कुंत जो वरछी है सो है ललित कहे लचकति जाके अर्थ वरछी हाथमें लिये है अथवा कुंतल जो भालाहै सोहै ललित कहे अति तीक्ष्ण जाको अर्थ हथियारको धरे है ॥ "कुंतलोभल्लकेशयोरित्यभिधानचिंतामणिः ॥" औ नील कहे श्यामवर्ण है औ भ्रुकुटी भौंहै हैं धनुषसम विकराल जाकी इहां कवि क्रूर स्त्री करि वर्णत है तासों भौंहनकी धनुषकी क्रूरता धर्म करि साम्य जानो औ नयन हैं कुमुद कहे कुत्सित है मुद आनंद जिनमें ऐसे हैं जाके अर्थ रावणके वधको आनंद है बिभीषणके राज्यलाभादि उत्सवको आनंद नहीं है अथवा नयन हैं कुमुद कहे मुद जो आनंद है प्रसन्नता इति तासों रहित अर्थ अतिकोपसों अरुण अति विकरालहैं प्रशस्त नहीं हैं औ कटाक्ष हैं बाणसम कराल जाके औ सबल कहे बुद्धिवल सहित सदा हैं इहां बलपदते बुद्धिवल जानौ अर्थ बुद्धिवलसों सीता हरणादि कार्य कराइ रामचन्द्रसों विरोध कराइ दियो तार कहे उच्चस्वर करिकै सहित है सुष्ठुग्रीवा जाकी सुष्ठु पदको अर्थ यह कि ऐसी उच्चस्वर करिबेकी शक्ति और काहूकी ग्रीवामें नहीं है औ अंगद जो बिजायठ हैं तेहि आदि भूषण कहे नहीं है अर्थ मुंडमालादि क्रूर भूषण पहिरे हैं औ मध्य कहे अधम अनुत्तमेति हैं देश कहे जाके अंग ॥ "मध्यंविलग्नेन स्त्रीस्यान्नयाप्येऽतरेधमेऽपिचेति मेदिनी ॥" औ केशरी जो सिंह है ताकी गजपर ऐसी गति भाई है जाको अर्थ जैसे गजके मारिबेको सिंह चलत है तैसे रावणके मारिबेको चली आवति है औ रामचन्द्रको जो विग्रह विरोध है सोई है अनुकूल हित जाको अर्थ रामचन्द्रके विरोधहीसों है कार्यसिद्धि जाकी औ सब कहे पूर्ण अनेक लक्ष जे ऋक्ष भालु हैं तिनको है बल जाके औ ऋक्षराज जे जाम्बवंत हैं तिनको ऐसो है मुखजाको ॥ ४० ॥

मू०—हीरकछंद ॥ रावणशुभश्यामलतनुमंदिरपरसोहियो । मानहुदशशृंगयुतकलिंदगिरिबिमोहियो॥ राघवशरलाघवगति छत्रमुकुटयोंहयो । हंससबलअंशसहितमानहुउडिकैगयो ॥ ४१ ॥ लज्जितखलतज्जिसुथलभज्जिभवनमेंगयो । लक्षण प्रभुतलक्षण गिरिदक्षिणपरसोभयो ॥ लंकनिरखिअंकहर-

षिमर्मसकलजोलह्यो । जाहुसुमतिरावणवहअंगदसनयों-कह्यो ॥ ४२ ॥ कमलाछंद ॥ रामचन्द्रजूकहंनस्वर्णलंकदे-खिदेखि । ऋक्षवानरालि वोरओरचारिहूविशेखि ॥ मंजुकं-जगंधलुब्धभौंरभीरसीविशाल । केशोदासआसपासशोभिजे-मनोमराल ॥ ४३ ॥

टी०—सबल कहे अनेकरंग मिश्रित हैं अंशु कहे किरण जाके ऐसे जे सूर्य हैं तिन सहित मानों कलिंदगिरि शृंगने हंस कहे हंस समूह उडिगयो है यहाँ जातिविषे एक वचन है हंसनके सदृश श्वेत छत्र हैं औ सूर्यनके सदृश अनेक रंग नग जटित मुकुट हैं ॥ ४१ ॥ दक्षिण गिरि कहे समुद्रके दक्षिण कूलकी गिरि समुद्र पारको गिरि इति मर्म भेद ॥ ४२ ॥ भौंर भीर सम ऋक्ष हैं मराल हंस सम वानर हैं ॥ ४३ ॥

मू०—ताम्रकोटलोहकोटस्वर्णकोटआसपास । देवकीपुरी घिरीकिपर्वतारिकेविलास ॥ बीचबीचहैकपीशबीचबीचऋ-क्षजाल । लंककन्यकागरेकिपीतनीलकंठमाल ॥ ४४ ॥

इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्र-चंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांरामसैन्यसमुद्रतरणं नामपंचदशः प्रकाशः ॥ १५ ॥

टी०—अर्थ इंद्रकी शत्रुतासों मानो पर्वतन देवपुरीको घेरिलियो है देवपुरी सदृश स्वर्णकोट है जाके मध्यमों पुरी है औ ताके आस पास ताम्रादिके कोट हैं ते पर्वत समान हैं यासों या जनायो कि लंका देवपुरी सम है ॥ ४४ ॥

टी०—॥ । इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकी-प्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां पंचदशः प्रकाशः ॥ १५ ॥

मू०दोहा—यह वर्णनहैषोडशे, केशवदासप्रकास । रावण अंगदसोंविविध, शोभितवचनविलास ॥ १ ॥ अंगदकूदि गयेजहाँ, आसनगतलंकेश । मनुमधुकरकरहाटपर, शोभि-

तश्यामलवेष ॥ ॥ २ ॥ प्रतीहारनाराचछंद ॥ पढोबिरंचि मोनवेदजीवसोरछंडिरे । कुबेरबेरकैकहीनयक्षभीरमंडिरे। दिनेशजाइदूरिबैठुनारदादिसंगहीं । नबोलुचंदमंदबुद्धिइंद्रकीसभानहीं ॥ ३ ॥ चित्रपदाछंद ॥ अंगदयोंसुनिबानी। चित्तमहारिसआनी ॥ ठेलिकै लोगअनैसे । जाइसभामहँबैसे ॥ ४ ॥ चित्रपदाछंद ॥ कौनहोपठयेसोकौनेह्यांतुम्हैंकहकामहै ॥ अंगद ॥ जातिबानरलंकनायक दूतअंगदनाम है ॥ रावण ॥ कौनहैवहबांधिकैहमदेहपूछिसबैदही । लंकजारिसँहारिअक्षगयोसोबातवृथाकही ॥ ५ ॥

टी०–॥ १ ॥ आसनमें गत कहे बैठो ॥ २ ॥ रावणके सभाभवनमें जाइ अंगद ऐसे कौतुक देखत भये प्रतीहार या प्रकारके अनादर पूर्वक वचन ब्रह्मादिसों कहत हैं हे कुबेर ! तुमसों कैयो बार कह्यो कि तुम यक्षनकी भीरको न मंडौ अर्थ यक्षनकी भीरको संग लै इहां न आयो करो सो तुम आइबो करत हौ ३॥ ॥ ४ ॥ लंकनायक बिभीषण॥ ५ ॥

मू०–महोदर ॥ कौनभांतिरहैतहांतुमराजप्रेषकजानिये । लंकलाइगयोजोवानरकौननामबखानिये ॥ मेघनादजोबांधियोवहिमारियोबहुघातबै । लोकलाजदुरचोरहैअतिजानिजैन कहांअबै ॥ ६ ॥ रावण ॥ कौनकेसुतबालिकेवहकौनबालिनजानिये । कांखचापितुम्हैंजोसागरसातन्हातबखानिये॥ हैकहांवह वीरअंगददेवलोकबताइयो । क्योंगयोरघुनाथबानबिमानबैठि सिधाइयो ॥ ७ ॥ लंकनायककोबिभीषणदेवदूषणकोदहै।मोहिजीवतहोहिंक्योंजगतोहिजीवतकोकहै॥मोहिंकोजगमारिहैदुर्बुद्धितेरियजानिये।कौनबातपठाइयोकहिबीरबेगिबखानिये॥८॥अंगद॥सवैया॥श्रीरघुनाथकोबानरकेशवआयोहोएकुनकाहूहयोजू। सागरकोमदझारिचिकारित्रिकूटकोदे-

हविहारछयोजू। सीयनिहारिसंहारिकैराक्षसशोकअशोकबनीहि
दयोजू। अक्षकुमारहिमारिकैलंकहिजारिकैनीकेहिजातभयोजू९

टी०-महोदरने पूंछो कि तुम तहां कौन भांतिसों रहत हौ अर्थ कौने कामके अधिकारी हौ तव अंगद कह्यो है हम राजाके इहां प्रेषक कहे यथोचित स्थानमें दूतनके पठावनहार हैं अर्थ दूतनके नायक हैं लोक लाज डुरचो रहै यह कहि अंगद या जनायो कि हमारे सैन्यमें ऐसो कोऊ नहीं है जाको काहू वांध्यो मारचो होइ ॥ ६ ॥ ७ ॥ पाछे अंगद कह्यो है कि हम लंक नायकके दूत हैं सो रावण पूछचो कि लंकनायक को है जाके तुम दूत हौ तव अंगद कह्यो है कि विभीषण लंकनायक है कैसो है विभीषण जे देवतनके दूषण कहे पीडा करनहार हैं तिनको दहै कहे जारत हैं यामों या जनायो कि तुमहूं देव दूषण हो तुमहूं को दहि हैं ॥ ८ ॥ सागरके मद रह्यो कि हमको कोऊ ना नांघि सकिहै सो नांघिकै ना मदको झारि डारचो अर्थ दूरि करचो औ चिकारिकै गर्जि- कै त्रिकूट नाम जो लंकापुरीको पर्वत है ताके देहमें अर्थ सब पर्वतभरेमें विहारि कहे नीके प्रकारसों पुरीके स्त्री भवनादि देखिकै छयो कहे रहत भयो ॥ ९ ॥

मू०-गंगोदकछंद ॥ रामराजानकेराजआइयेइहांधामतेरेम- हाभागजागेअबै । देविमंदोदरीकुंभकर्णादिदैमित्रमंत्रीजितैपूं- छिदेखौसबै । राखिजैजातिकोभांतिकोवंशकोसाधिजैलोकमें लोकपलौकको । आनिकैपांपरौदैसुलैकोशलैआसुहीईशसों ताहिलैओकको ॥ १० ॥ रावण ॥ लोकलोकेशसोंशोचिब्रह्मा रचैंआपनीआपनीसींवसोंसोरहै । चारिबाहैंधरेविष्णुरक्षाकरैं वातसांचीयहैवेदवाणीकहै ॥ ताहिभूभंगहीदेवदेवेशसोंविष्णु ब्रह्मादिदैरुद्रजूसंहरै । ताहिहौंछोंड़िकैपायँकाकेपरौंआजुसंसा- रतोपायँमेरेपरै ॥ ११ ॥ मदिराछंद ॥ रामकोकामकहारिपु- जीतहिंकौनकबैरिपुजीत्योमहा । बालिबलीछलसोंभृगुनंदन गर्वसह्योद्विजदीनमहा ॥ दीनसोक्यौंछितिछत्रहत्योबिनप्राण-

निहैहयराजकियो । हैहयकौनवहैबिसरयोजिनखेलतहीतुम्हैं बांधिलियो ॥ १२ ॥

टी०-जा स्त्रीके संग राज्याभिषेक होइ सो देवी कहावै ॥ "देवी कृताभिषेकायामित्यभिधानचिंतामणिः" ॥१०॥ कल्पांतके अंतमें ब्रह्मा सृष्टि रचत हैं विष्णु रक्षा करत हैं सो ताहि कहे लोक सृष्टिको औ देवेश इन्द्र औ विष्णु औ ब्रह्मादि दै जे देव हैं तिन्हैं रुद्र जे महादेव हैं ते भू जो भौंहहै ताके भंगही टेढ़ी करनेहीसों संहारकालमों संहारकरि डारत हैं ॥ ११ ॥ छत्र कहे छत्रवर्णः ॥ १२ ॥

मू०-अंगद-विजयछंद ॥ सिंधुतरयोउनकोबनरातुमपैधनुरेखगईनतरी । बांध्योइबांधतसोनबँध्योउनबारिधिबांधिकै बाटकरी ॥ अजहूंरघुनाथप्रतापकीबाततुम्हैंदशकंठनजानिपरी । तेलनितूलनिपूंछिजरीनजरीजरीलंकजराइजरी ॥ १३ ॥ मेघनाद ॥ छांडिदियोहमहींवनरावहपूंछकीआगनलंकजरी । भीरमेंअक्षमर्योचपिबालकवादिहिंजाइप्रशस्तिकरी ॥ ताल विंधेअरुसिंधुबँधेयहचेटकविक्रमकौनाकियो । बानरकोनरको वपुरापलमैंसुरनायकबांधिलियो ॥ १४ ॥

टी०-बांध्योई कहे हनुमानको बंधन तुम काहूविधिसों करिबोहू करयौ ताहू पर बांधत ना बन्यो तेल औ तूल कहे रुईयुक्त जो वस्तु होतिहै सो विशेष जरति है सो या प्रकारकी पूंछ तुम करी सो ना जरी औ केवल सुवर्ण औ रत्ननमें अग्नि ज्वलित नहीं होति परंतु तुम्हारी लंका तृणादि रहित केवल रत्नादिके जरायमों जरी जरत भई रामके प्रभावसों ऐसी अनहोनी बातें होती हैं ताहूपर तुम्हैं नहीं जानि परत इतिभावार्थः ॥ १३ ॥ वादि कहे वृथा प्रशस्ति कहे स्तुति सप्ततालवेध्यो औ सिंधु बांध्यो यह चेटक कहे भगरविद्या है सरस्वती उक्तार्थः ॥ जो रामचन्द्र तालवेधन सिंधुबंधन करयौ सो तो चेटक कहे भगर विद्यासम है अर्थ खेल समहै यामें कौन विक्रम कहे अतिबल कियोहै ॥ "विक्रमस्त्वतिशक्तिता इत्यमरः" ॥ अर्थ वै चाहैं तौ त्रैलोक्यको संहार करिडारैं सिंधुबंधादि सदृश कर्मनमें उनको कौन श्रम है ऐसे प्रबल वे ना होते तौ जिन हम पलमें सुनायकको बांधि लियो ते बानर औ नरको वपुरा है जाते अर्थ हम इंद्र लोकादिमें जाइकै इन्द्रादिको

जीत्यौ औ वै हमपर चढि आये हैं हम वपुरासम कछु करि नहीं सकत अथवा वपुरा समुझि हमपर चढिआये हैं ॥ १४ ॥

मू०—अंगद ॥ चेटकसोंधनुभंगकियोप्रभुरावरेकोअतिजीरनहो । वाणसमेतरहेपचिकैतुमजासवपैनतज्योथलुहो ॥ बाणसुकौनबलीबलिकेसुतवैबलिबावनबांधिलियो।ओईसोतौजिनकीचिरचेरिननाचनचाइकैछांडिदियो ॥१७॥ रावण ॥ नीलसुखेनहनूउनकेनलऔरसबैकपिपुंजतिहारे । आठहुआठदिशाबलिदैअपनोपदुलैपितुजालगिमारे॥तोसिसपूतहिजाइकैवालिअपूतनकीपदवीपगुधारे। अंगदसंगलैमेरोसबैदलआजुहिक्यों नहनैवपमारे ॥ १६ ॥ दोहा ॥ जोसुतअपनेबापको, बैरनलेइप्रकाश ।तासोंजीवतहीमरयो, लोगकहैंतजित्रास ॥ १७ ॥

टी०—कवित्तमें उक्ति मेघनादकी है औ जवाब रावणको अंगद दियो ता जवावहीसों या जानो कि रामचन्द्र सिंधुबंधनादि मम शंभु धनुषभंग चेटकहीसों कियो है यह बात रावण कह्यो है अंगद कहत हैं कि प्रभु जे रामचन्द्र हैं तिन चेटकसों धनुष भंग कीन्हों औ तुम कहत हौ कि जीरण कहे पुरानो रहे परन्तु तुमको पुरानो तो रहै पै बाणसमेत तुम पराक्रम करि पचिकै कहे थकिके रहिगये ताहूपर थलहू ना छोंड्यो अर्थ रंच ना उठ्यो ॥ १५ ॥ नील, सुखेन, हनुमान औ सुग्रीव औ राम लक्ष्मण औ विभीषण ये जे आठ हैं [illegible] नील सुखेनादि चारि बानर उनके सुग्रीवके हैं ते वालिके भयसों भागि रहे [illegible] संगरहे यासों या जनायो कि जो रामचन्द्र आज्ञाहू करैं औ तिनहींके मोहसों तिनहीं वै तिहारो राज्य न दियो चाहैं तौ सब बानर तेरेई साथी ह्वै हैं तासों तू आठहू आठ दिशा बलिद जे रामचन्द्र हैं आठ दिशनके आठ जो इन्द्रादि दिक्पाल हैं ते हैं बलिदकहे भेंटके दाता जिनके अर्थ इन्द्रादि दिक्पाल जिनकर भेंट देतहैं तिनहीं सों आपनो पद जो राज्यहै ताको ले जाके लिये सुग्रीव तिहारे पितुको मारिडारयो है काहेते राज्य तिहारे पिताको है रामचन्द्र मर्यादापुरुषोत्तम हैं जो तू कहिहै तौ तोको विशेष देहं । "बलिर्दैत्योपहारयोरित्यभिधानचिन्तामणिः" ॥ बापमारे कहे जो तेरे बापको मारयो है ॥ १६ ॥ १७ ॥

मू०-अंगद॥इनकोबिलग्रुनमानिये,कहिकेशवपलआधुपानी पावकपवनप्रभु, ज्योंअसाधुत्योंसाधु॥१८॥रावण॥द्रुतविलंबितछंद॥ उरसिअंगदलाजकछूगहौ।जनकघातकवातवृथाकहौ॥ सहितलक्ष्मणरामहिंसंहरौ । सकलवानरराजतुम्हैंकरौ ॥१९॥

टी०-बिलग्रु कहे द्वेष साधु कहे भलो असाधु कहे बुरो ॥ १८ ॥ जनक पिता सरस्वती उक्तार्थः ॥ हे अंगद तुम रामचन्द्रसों मिलिवेकों हमकों कहत हौ यामें तुमको कछू लाज नहीं होत ऐसी बात कहि कछू लाज तौ उरमें गहौ काहेते कि तुम्हारे जनक वालि तिनके जे घातक रामचन्द्र हैं तिनकी वात वृथा है यह तुम कहौ अर्थ रामचन्द्रकी बात वृथा नहीं होति जो मनमें संकल्प करतहैं सो करिबोई करत हैं यासों या जनायो कि अति बली बालिके वध करिबेको संकल्प कियो सो वध करिबोई कियो तैसे वै तो हमारे मारिबेको संकल्प करें हैं यह संकल्प वृथा काहू उपावसों न ह्वै है तासों मैं लक्ष्मण सहित रामहिंसों संहरौं कहे संहारनाशकों प्राप्त होत हौं अर्थ लक्ष्मण सहित राम मोहिं मारतहींहैं नाहीं तो ऐसो हित सीख तुमको दियो है जासों सब वानरनको राजा तुमको करौं अर्थ सुग्रीवसों छोरि तुम्हारो राज्य तुम्हैं देऊं अथवा जनकघातक जे सुग्रीवहैं तिनकी वात वृथा कहत हौ अर्थ जो तुम्हारे पिताको मारयो ताकी तुम बडाई वृथा करत हौ मैं लक्ष्मण सहित राम करिकै संहरौं कहे नाश कों प्राप्त होत हौं नाहीं तो सुग्रीवको मारि सब वानरनकौ राजा तुमकों करौं ॥ १९ ॥

मू०-अंगद-निशिपालिकाछंद ॥ शत्रुसबमित्रहमचित्तपहिंचानहीं । दूतविधिनूतकबहूंनउरआनहीं ॥ आपमुखदेखि अभिलाषअभिलाषहू । राखिभुजशीशतबऔरकहँराखहू ॥ २० ॥ रावण-इन्द्रवज्राछन्द ॥ मेरीबडीभूलसोकाकहौंरे । तेरोकह्योदूतसबैसहौंरे ॥ वैजोसबैचाहततोहिंमारयो । मारों कहातोहिंजो दैवमारयो ॥ २१ ॥ अंगद-उपेन्द्रवज्राछन्द ॥ नराचश्रीरामजहींधरैंगे । अशेषमाथेकटिभूपरैंगे ॥ शिखाशिवाश्वानगहैंतिहारी । फिरैंचहूंवोरनिरैविहारी ॥ २२ ॥

टी०–तुम्हारी जो यह नूतन कहे नवीन दूतविधि कहे दूतता तोर फोर है ताको कबहूं न उरमें आनि हैं पाइ है ॥ २० ॥ २१ ॥ नराच बान निंगेविहारी रावणको संबोधन है अथवा शिवा औ श्वान औ और जे निरैविहारी काकादि हैं ते तिहारी शिखा गहे तिहारे शिरको लिये फिरैंगे ॥ २२ ॥

मू०–रावण भुजंगप्रयातछन्द ॥ महामीचुदासीसदापाइँधोवै । प्रतीहारह्वैकैकृपाशूरसोवै ॥ क्षपानाथलीन्हेरहैछत्रजाको । करैगो कहाशत्रुसुग्रीवताको ॥ २३ ॥ सकामेघमालाशिखीपाककारी । करैकोतवालीमहादंडधारी ॥ पढ़ैवेद ब्रह्मासदाद्वारजाके । कहाबापुरोशत्रुसुग्रीवताके ॥ २४ ॥

टी०–अंगदकह्यो कि श्रीराम वाण धरिकै तुमको मारिहैं ताको उत्तर रावण दियो कि महामीचुजो है सो मेरे सदा पाईं धोइवेके अर्थ दासीहै याते अति न्यूनदासी जनायो एकशत एक मीचु हैं तामें शत अकालमीचु हैं एक महामीचु है शतमीचु उपायसों दूरि होती हैं एक महामीचु काहू उपायसों नहीं मिटति । यथा भावप्रकाशे "एकोत्तरं मृत्युशतमथर्वाणः प्रयच्छते । तत्रैकः कालसंयुक्तः शेषास्त्वागंतवः स्मृताः" । यामों या जनायो कि युद्धादिमें मारिवो तो अकालमृत्यु है सो मेरे समीप कैसे आइ है ॥ २३ ॥ सका कहे सक्का पाककारी रसोंईदार ॥ २४ ॥

मू०–अंगद-विजयछन्द ॥ पेटचढ़्योपलनापलिकाचढ़िपालकिहूचढ़िमोहमढ़्योरे । चौकचढ़्योचित्रसारीचढ़्योगजवाजिचढ़्योगढ़गर्बचढ़्योरे ।व्योमविमानचढ़्योईरह्योकहि[illegible]वसोंकबहूंनपढ़्योरे । चेततनाहींरह्योचाढ़िचित्तसोंचाहतमूढ़ चिताहूचढ़्योरे ॥ २५ ॥

टी०–प्रथमहिं पेटमें चढ्यो कहे गर्भमें आयो जब जन्म भयो तब पलनामें चढिकै झूल्यो कछू और बडो भयो पलिका जो खट्वा है तामें चढि सोवन लाग्यो औ जब व्याह भयो तब पालकीमें चढि व्याहने चल्यो तब मोह जो माया है तामें मढ्यो कहे युक्त भयो फेरि पाणिग्रहणमें चौकमें चढ्यो फेरि स्त्रीकि संग चित्रसारीमें चढ्यो फेरि राजा ह्वैकै गजवाजिमें चढ्यो औ गढपर

चढ्यो औ गर्वपर चढ्यो अर्थ राज्याभिमान भयो औ जेहि कहे जाते अर्थ जाकी कृपासों व्योममें विमानन पर चढ्योई रह्यो अर्थ पुष्पकादि विमानन पर चढ्यो आकाश आकाश फिरत रह्यो केशव कहत हैं कि सो जो वह प्रभु रामचन्द्र हैं ताको कबहूं न पढ्यो अर्थ राम नाम कबहूं न जप्यो सो हे मूढ ! अब चिताहू पर चढ्यो चाहत है ताहू पर तेरो चित्त चढि रह्यो है कहे मत्त ह्वै रह्यो है तामें तू चेतत नहीं अर्थ चेत नहीं करतो चिताहूमें चढ्यो चाहत है यह कहि या जनायो कि रामचन्द्र तोहि शीघ्रही मारि हैं तासों उनके शरणमों जाइकै आपनो भलो करु ॥ २५ ॥

मू०-रावण-भुजंगप्रयातछंद ॥ निकारयोजोमैंपालियोराजजाको । दियोकाढिकैजूकहात्रासताको ॥ लियेबानराली-कहौंबाततोसों । सोकैसेलरैरामसंग्राममोसों ॥ २६ ॥ अंगद-बिजयछन्द ॥ हाथीनसाथीनघोरेनचेरेनगाउँनठाउँकोठाउँ-बिलैहै । तातनमातनपुत्रनमित्रनवित्तनतीयकहींसंगरैहै ॥ केशव कामकोरामबिसारतऔरनिकामनकामहिऐहै । चेति-रे चेतिअजौंचितअन्तरअंतकलोकअकेलोईजैहै ॥ २७ ॥

टी०-रामचन्द्रके राज्याभिषेकको येतो बडो उत्सव तामें भरत घरमें नहीं रहे सो सुनिकै रावण याही समुझ्यो कि परस्पर स्वाभाविक बन्धु विरोध समुझि भरतकृत अभिषेकोत्सवभंग भयसों भरतको दशरथ निकारि दियो ह्वै है सो कहत हैं कि निकारो जो भैया भरत है ताने पिता क्रारि करिकै दियो राज जाको काढिकै कहे देश सों निकारिकै लै लीन्हों ताको कहा त्रास कहे रहै आशय यह कि जा भयसों दशरथ भरतको निकारिकै रामचन्द्रको राज्य दियो सोई आपने बलसों भरत रामचन्द्रसों छोरि लीन्हों औ देशसों निकारि दीन्हों तो जिनसों पिताको दियो राज्य न राखत बन्यो ते हमको मारिकै कहा हमारी राज्य छोरि हैं औ ताहूपर सैन्य बानरनको लिये हैं औ वेष यतीको धरे हैं यतिनको औ वानरनको काम लरिबेको नहीं है सरस्वती उक्तार्थः । संकल्प करिकै जो रामचन्द्र हमारो राज्य लियो औ हम करिकै निकारो जो भाई बिभीषण है ताको दियोहै ता बातको कहा हमारे आत्रासहै अर्थ बडोत्रास है यह हम निश्चय जानत हैं कि रामचन्द्रको संकल्प निष्फल न ह्वै है हमसों राज्य छोरि बिभीषणको दे हैं और कहे अग्नि

ताकी आली कहे समूह अर्थ जिनमों अनि अग्नि है ऐसे बाण लिये हैं अथवा र कहे तीक्ष्ण जे बाण हैं तिनकी आली कहे पंक्तिसमूह इति तिनको लिये हैं सो रामचन्द्रके संग्राममों मोसों कहे हम ऐसो प्राणी कैसे जुरैं अर्थ हम उनके युद्ध करिबे लायक नहीं हैं। 'रस्तीक्ष्णे दहने इत्यभिधानचिंतामणिः।' 'पुस्यालिविश-दाशये त्रिषु स्त्रियां पस्यायां सेतौ पंक्तौ च कीर्तिता' इत्यभिधान चिंतामणिः॥२६॥ वित्त धन॥२७॥

मू०–रावण–भुजंगप्रयातछंद॥डरैगायविप्रैअनाथैजोभाजै। परद्रव्यछोंडैपरस्त्रीहिलाजै॥परद्रोहजासोंनहोवैरतीको॥सुकैसे लरैवेषकीन्हेंयतीको॥२८॥ दोहा॥ गेंदकरेउमैंखेलको, हरगिरि केशोदास। शीशचढायेआपने, कमलसमानसहास॥ २९॥

टी०–जे रामचन्द्र गाय औ विप्रको डरत हैं अथ अतिदीन गाय औ विप्र तिनहूंको डरात हैं तासों अति कादरहैं औ अनाथ जे प्राणी हैं जिनको नाथ कोऊ नहीं है ताहीको भजै कहे सेवन करत हैं अर्थ ताहीसों संग करत हैं यामों या जनायो कि भयसों रंचकहूं परद्रव्य नहीं लै सकत हमारो राज्य कैसे लें हैं औ पर स्त्रीको लजातहैं यासों या जनायो कि जे स्त्रीको लजात हैं ते वीरनसों कहा धृष्टता करि हैं औ जिनमों परद्रोह कबहूं रत्तीहूभरि नाहीं है सकल आशय कि शत्रुता करते डेरातहैं औ ताहूपर वेष यती तपस्वीको धरेहैं अर्थ वेषहू वीरको नहीं है सो मोसों कैसे लरि हैं सरस्वती उक्तार्थः–मर्यादा पुरुषोत्तम हैं तासों ब्रह्मशाप गोशापको डेरातहैं भृगु लातहू मारयो ताहू पर कछू ना करयो अनाथ जे प्रह्लाद [illegible] तिनके निकट ही रहे जा भांति कष्ट भयो ताही विधि निकट [illegible] औ परद्रव्य परस्त्री हरनमों पाप होत है तासों त्याग करत हैं औ परद्रोह [illegible] रत्तीहूभरि नाहीं होत यासों समदरशी जानों सबको समान हैं तिनसों हम कैसे लरैं अर्थ वै ईश्वर हैं वेष कहे रूप मात्र यती को कीन्हे हैं॥२८॥२९॥

मू०–अंगद–दंडक॥ जैसोतुमकहतउठायोएकगिरिवरऐसे कोटिकपिनकेबालकउठावहीं। काटेजोकहतशीशकाटतवनेर घाघभगरकेखेलेकहाभटपदपावहीं॥ जीत्योजोसुरेशरणशा-पऋषिनारिहीकोसमुझहुहमद्विजनातेसमुझावहीं। गहौराम पायँसुख पाइकरैंतपी तप सीताजूको देहु देव दुंदुभी बजा-

कहीं ॥३०॥ रावण-वंशस्थछंद॥ तपीजपीबिप्रनिछिप्रहीहरौं । अदेवद्वेषीसबदेवसंहरौं ॥ सियानदैहौंयहनेमजीधरौं । अमानुषीभूमिअवानरीकरौं ॥३१॥ अंगद-विजयछंद ॥ पाहनते पतिनीकरिपावनटूककियोहरको धनुको रे । छत्रबिहीनकरे क्षणमेंक्षितिगर्वहत्यौतिनकेबलको रे ॥ पर्वतपुंजपुरैनिकेपात समानतरेअजहूंधरको रे । होइँनरायणहूंपै नयेगुणकौनइहां नरवानरको रे ॥ ३२ ॥ रावण-चंचरीछंद ॥ देहिंअंगदराजतोकहंमारिवानरराजको।बांधिदेहिंबिभीषणै अरुफोरिसेतुसमाजको ॥पूंछजारहिंअक्षरिपुकीपाइंलागहिंरुद्रके । सीयकोतबदेहुंरामहिंपारजाइंसमुद्रके ॥ ३३ ॥

टी०-घाघ कहे नटादि इंद्रजालिका॥ ३०॥सरस्वती उक्तार्थः-हे अंगद !हौं केशव हौं कि तपी औ जपी जे विप्रहैं अथवा तपी औ जपी औ विप्रनको छिप्रहीं हरौं कहों कि तपी औ जपी जे विप्र हैं अथवा तामें कछूविचार नहीं करत औ अदेव जे दैत्य जे राक्षस हैं तिनके द्वेषी शत्रु देवता हैं तिन्हैं क्षिप्रहीं संहरत हौं कहे मारतहौं यातें हौं बडो पापी हौं सो सियाको न देहौं यह नेम जो जीमें धरतहौं सो अब कहे या समयमों अमानुषी कहे नाहीं हैं मानुष्य जहां औ अनरी कहे नाहीं हैं कोऊ काहू को अरि शत्रु जहां ऐसी जो भूमि कहे स्थान है विष्णुलोक ताको करों कहे साधत हौं । 'भूमिः क्षितौ स्थानमात्रे' इति अभिधानचिंतामणिः । ब्रह्मदोष देवदोषादि बडे पातकनसों छूटिबेको उपाव और नहीं है तासों सीताको नहीं देतो कि सीताके लिये आइकै रामचंद्र मोंहिं मारिहैं तौ सब पातकनसों छूटिकै विष्णुलोक जैहौं इति भावार्थः ॥ ३१ ॥ अजहूं कहे अबहूं अर्थ एतेहूपर तौ धरको कहर करौ ॥ ३२ ॥ सरस्वती उक्तार्थः यामें प्रहस्तादि मंत्रिनप्रति काकोक्ति है रावण कहत है कि हे अंगद ! तुमतौ नीकी शिष देतहौ परंतु प्रहस्तादि मंत्रिनकरि दी कर्मवश मेरी ऐसी दुर्मति है कि जब रामचंद्र येती बातें करें तब सीताको देहुं सो ऐसो काहेको कैहैं तासों दुर्मति कृत हमारी मृत्यु विशेष सो है चुको यह निश्चय जानौं ॥ ३३ ॥

मू०-अंगद-लंकलाइगयो बलीहनुमंतसंतनगाइयो ॥ सिंधु बांधतशोधिकैनलक्षीरछीटबहाइयो । ताहितोहिंसमेतअंधउ-

खारिहौंउलटीकरौं। आ[illegible]जकहौंविभीषणबैठिहैं तेहितेडरौं॥ ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ अंगदरावणकोमुकुट, लैकरिउड्योसुजान। मनोचलोयमलोकको, दशशिरकोप्रस्थान ॥ ३५ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायामंगदरावणसंवादवर्णनं नाम शोडशः प्रकाशः ॥ १६ ॥

टी०—क्षीर कहे जल ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां अंगदसंवादवर्णन नाम शोडश प्रकाश ॥ १६ ॥

मू०—दोहा ॥ [illegible]प्रकाशमें, लंकाकोअवरोध। शत्रुचमूवर्णनसमर, लक्ष्मणको[illegible]रबोध ॥१॥ अंगदलैवामुकुटको, परे रामकेपाइ ॥ रामविभीषणकेशिरसि, भूषितकियोबनाइ॥ २ ॥

मू०—पद्धटिकाछंद ॥ दिशिदक्षिणअंगदपूर्वनील ॥ पुनि हनूमंतपश्चिम[illegible]ल ॥ दिशिउत्तरलक्ष्मणसहितराम। सुग्रीव मध्यकीन्हेबिराम॥३॥सँगयूथपयूथपबलबिलास । पुरफिरत विभीषणआसपास ॥ निशिबासरसबकोलेतसोध। यहिभांतिभयो लंकानिरोध ॥४॥ तबरावणसुनिलंकानिरोध । उपजोतनमन अति[illegible]क्रोध ॥ राख्योप्रहस्तहठिपूर्वपौरि । दक्षिणहिंमहोदर[illegible] ॥५॥ भयोइंद्रजीतपश्चिमदुवार। हैउत्तररावणबल[illegible] कियोबिरूपाक्षथितमध्यदेश । करैंनरान्तकचहुंघाप्रवेश ॥६॥ प्रमिताक्षराछंद ॥ अतिद्वारद्वारमहँयुद्धभये । बहुरुच्छकंगूरनलागिगये ॥ तबस्वर्णलंकमहँशोभभई। जनुअग्निज्वालमहँधूममई ॥ ७ ॥

टी०—अवरोध घेरनो औ बिभीषणकरि शत्रु जो रावण है ताके चमूको वर्णन है परमो[illegible] ॥ १ ॥ २ ॥ रामचंद्रके औ लंकाके मध्यमें सुग्रीव बिश्राम कीन्हे हैं ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ छंद उपजातिहै ॥ ७ ॥

मू०-दोहा ॥ मरकतमणिकेशोभिजै, सबैकँगूराचारु ॥ आइगयोजनुवातको,पातककोपरिवारु ॥ ८ ॥ कुसुमविचित्रा छंद ॥ तवनिकसोरावणसुतशूरो । जेहिरनजीत्योहरिबलपूरो ॥ तपबलमायातमउपजायो । कपिदलकेमनसंभ्रमछायो ॥ ॥ ९ ॥ दोधकछंद ॥ काहुनदेखिपरैवहयोधा । यद्यपिहैंसिगरेबुधिबोधा ॥ शायकसोंअहिनायकसाध्यो । सोदरस्योरघुनायकबांध्यो ॥ १० ॥ रामहिंबांधिगयोजबलंका । रावणकी सिगरीगईशंका । देखिबँधेतबसोदरदोऊ । यूथपयूथत्रसेसबकोऊ ॥ ११ ॥ स्वागताछंद ॥ इंद्रजीतजेहिलैउरलायो । आजुकाजसबमोमनभायो ॥ कैबिमानअधिरूढतिधाये । जानकीहिरघुनाथदेखाये ॥ १२ ॥ राजपुत्रयुतनागनिदेख्यो । भूमियुक्ततरुचंदनलेख्यो ॥ पन्नगारिप्रभुपन्नगसाईं । कालचालिकछुजानिनजाई ॥ १३ ॥ दोहा ॥ कालसर्पकेकवलते, छोरतजिनकोनाम ॥ बँधेतेब्राह्मणबचनबश, मायासर्पहिराम ॥ १४ ॥

टी०-कंगूरनमें ऋक्ष लपटे हैं तासों मानों मरकत मणिहींके कंगूरा शोभित हैं पातक देवदोष ब्रह्मदोषादि ॥ ८ ॥ हरि इन्द्र ॥ ९ ॥ बुद्धि बोधाकहे बुद्धियुक्त ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ तेहि रावण इंद्रजीतको उरमें लगायो ॥ १२ ॥ भूमिमें युक्त कहे गिरे चंदन वृक्षहू नागयुक्त रहतहैं दुःखयुक्त सीता यह कहत भई कि हे पन्नगारिप्रभु! हे पन्नगसांई! पन्नग जे सर्प हैं तिनके अरि कहे भक्षक जे गरुड हैं तिनके तुम स्वामी हौ यासों या जनायो कि तुम्हारे वाहनजे गरुड हैं. ते अनेक सर्प भक्षण करतहैं औ पन्नगसांई कहि या जनायो कि तुम सदा सर्प ही पर सोयो करत हौ ते तुम नागपासमें बाँधे हौ तौ काल जो समयहै ताकी चाल कछू जानि नहीं परति बलाबल समय ही नत उन्नतको उन्नत नत करत है इति भावार्थः ॥ १३ ॥ १४ ॥

मू०-स्वागताछंद ॥ पन्नगारितबहींतहँआये । व्यालजालसबमारिभगाये ॥ लंकमांझतबहींगइसीता । [illegible]-

लोकिसुगीता ॥ १५ ॥ गरुड-इंद्रवज्राछंद ॥ श्रीरामनारायणैलोक कर्त्ता । ब्रह्मादिरुद्रादिकेदुःखहर्त्ता ॥ सीतेशमोकोकछूदेहुशिक्षा । नान्हींबडीईशजोहोइइक्षा ॥ १६ ॥ राम ॥ कीबेहुतोकाजसबैसोकीन्हों । आयेइहांमोकहंसुक्खदीन्हों ॥ पांलागिबैकुंठप्रभाविहारी।स्वर्लोकगोतत्क्षणविष्णुधारी॥१७॥ इंद्रबज्राछन्द ॥ धूम्राक्षआयोजनुदंडधारी।ताकोहनूमंनभयेप्रहारी॥जितेअकंपादिबलिष्ठभारे।संग्राममेंअंगदवीरमारे॥१८॥ उपेंद्रवज्राछंद ॥ अकंपधूम्राक्षहिजानिजूझ्यो । महोदरैरावणमंत्रबूझ्यो॥सदाहमारेतुममंत्रबादी।रहेकहाहैअतिही बिषादी॥

टी०-॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ छंद उपजाति है ॥ १८ ॥ बिषादी कहे दुखी उदासीन इति ॥ १९ ॥

मू०—महोदर ॥ कहैजोकोऊहितवंतबानी । कहौसोतासों अतिदुःखदानी ॥ गुनौनदावैबहुधाकुदावै ॥ सुधीतबैसाधतमौनभावै ॥ २० ॥ कहोशुकाचार्य्यसुहौंकहौंजू । सदातुम्हारोहितसंग्रहौंजू ॥ नृपालभूमैविधिचारिजानों । सुनो महांराजसबैबखानों ॥ २१ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ यहैलोकएकैसदासाधिजानै । बलीबेनज्योंआपुहीईशमानै ॥ करैसाधनाएकपरलोकहीको । हरिश्चन्द्रजैसेगयेदैमहीको ॥ २२ ॥ दुहूंलोककोएकसाधैसयाने । बिदेहीनज्योंवेदबानीबखाने ॥ नटैलोकदोऊहठीएकऐसे । त्रिशंकैहँसैंज्यों भलेऊअनैसे ॥ २३ ॥ दोहा ॥ चहूंराजकोमैंकहूँ, तुमसों राजचरित्र ॥ रुचैसोकीजैचित्तमें, चिंतहुमित्र अमित्र ॥ २४ ॥ चारिभांतिमंत्रीकहे, चारिभांतिकेमंत्र ॥ मोहिंसुनायोशुक्रजू, सोधिसोधिसबतंत्र ॥ २५ ॥

टी०-जो कोऊ तुम्हारे हितकी बात कहत है तासों कहे प्राणीको तुम दुखदा कहे दुखदायक कहत हौ अथवा दुखदानी कहे कटुवाद कहतहौ औ दांव कुदांव कहे समय कुसययको गुनत नहीं हौ अर्थ जा समय मोंको करिबो उचित है ताको बिचार नहीं करत हौ आपने मनहींकी करत हौ तासों अथवा दांवको नही गुनत हौ बहुधा कुदांवहीको गुनत हौ तासों सुधी जे सुबुद्धि है मंत्री जन ते मौनभावको साधत हैं कहे चुपह्वै रहत हैं ॥ २० ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ २३ ॥ मित्र कहे हित अमित्र कहे अहितकी चिंता करौ कि कौन चरित्र हमको हित है कौन अहित है अथवा सब मंत्रिन मंत्र कह्यौ है तामें मित्र अमित्रकी चिंता करौ कि कौन हितकी कहत है औ कौन अहितकी कहत है ॥ २४ ॥ चारि भांतिके मंत्री हैं औ चारि भांतिके मंत्र होत हैं तंत्र कहे सिद्धांत अथवा तंत्र शास्त्र ॥ २५ ॥

मू०-छप्पै ॥ एकराजकेकाजहतैंनिजकारजकाजे । जैसेरथनिकारिसबैमंत्रीसुखसाजे ॥ एकराजकेकाजआपनेकाज बिगारत ।जैसेलोचनहानिसहीकविबलिहिनिबारत॥एकप्रभुस मेतअपनोभलोकरतदाशरथिदूतज्यों । एकआपनोप्रभुकोबुरो करतरावरोपूतज्यों ॥ २६ ॥ दोहा ॥ मंत्रजोचारिप्रकारके,- मंत्रिनकेजेप्रमान ॥ बिषसेदाडिमबीजसे, गुडसेनीबसमान ॥ ॥ २७ ॥ चंद्रवर्त्मछंद ॥ राजनीतिमततत्वसमुझिये । देशकालगुणियुद्धअरुझिये ॥ मंत्रिमित्रअरिकोगुणगहिये । लोक लोकअपलोकनबहिये ॥ २८ ॥

टी०-दाशरथि दूत अंगद औ हनुमान सीताको देहु तुमसों इत्यादि संधिकी बातैं कहि आपने प्रभुको काज साधत हैं औ युद्धमें आपनो मरण घातादि बचाइ आपनो हित करत हैं औ रावरो पूत युद्ध कराइ आपनी औ तुम्हारीऊ मृत्यु कियो चाहत है ॥ २६ ॥ विषसे खातहूमें कटु औ गुण जिनको मृत्युदायक है औ दाडिम बीजसे खातहूमें मधुर औ गुण जिनको पुष्टि कर्त्ता है औ गुडसे खातमें मधुर गुण दुखद है औ नीबसे खातमें कटु गुण सुखद है ॥ २७ ॥ कहूं यह पाठ है कि और विचार तत्व सब लहिये तौ उपजाति चंद्रवर्त्म छंद जानौ ॥ २८ ॥

मू०–रावण ॥ चारिभांतिनृपतातुमकहियो ॥ चारिमंत्रिमतमैंनमगहियो ॥ राममारिसुरएकनबचिहैं ॥ इंद्रलोकबसोबासहिरचिहैं ॥ २९ ॥ प्रमिताक्षराछंद ॥ उठिकैप्रहस्तसजिसेनचले । बहुभांतिजाइकपिपुंजदले ॥ तबदौरिनीलउठिमुष्टिहन्यो । असुहीनगिरयोसुवमुंडसन्यो ॥ ३० ॥ वंशस्थछंद ॥ महाबलीजूझतहीप्रहस्तको । चल्योतहींरावणमीडिहस्तको ॥ अनेकभेरीबहुदुंदुभीबजैं । गयंदक्रोधांधजहांतहांगजैं ॥ ३१ ॥ सनीरजीमूतनिकासशोभहीं । बिलोकिजाकोसुरसिद्धक्षोभहीं ॥ प्रचंडनैऋत्यसमेतिदेखिये । सप्रेतमानोंमहकाललेखिये ॥ ३२ ॥ बिभीषण–बसंततिलकाछंद ॥ कोदंडमंडितमहारथवंतजोहै । सिंहध्वजासमरपंडितवृन्दमोहै ॥ माहाबलीप्रबलकालकरालनेता । सामेघनादसुरनायकयुद्धजेता ॥ ३३ ॥

टी०–रामचन्द्रको मारिकै औ सुर देवता येकौ ना मोंसों बचिहैं अर्थ सब देवनहूंको मारिकै इंद्रलोकमें बसोबास रचिहौं सरस्वती उक्तार्थ-रामचंद्र जेहैं ते हमें मारिकै एको देवतान बचिहैं कहे बाकी रहिहैं सब देवतनको बसोबास इंद्रलोकमें रचिहैं अर्थ हमारे भयसों इंद्रलोकसों भागिकै देवता कंदरादिकनमों जाइ बसे हैं तिन्हैं निभय करिकै इंद्रलोकमें बसाइ हैं ॥ २९ ॥ छन्दउपजाति है ॥ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ सनीर कहे सजल जीमूत कहे मेघनके निकास सदृश शोभित है क्षोभहीं कहे डेरात हैं नैऋत्य राक्षस ॥ ३२ ॥ रामचन्द्र पूंछ्यौ है इति कथा शेषः नेता कहे दंड कर्ता ॥ ३३ ॥

मू०–जोव्याघ्रवेषरथव्याघ्रनिकेतधारी । संरक्तलोचनकुबेरविपत्तिकारी ॥ लीन्हेंत्रिशूलसुरशूलसमूलमानों । श्रीराघवेंद्रअतिकायबहैसोजानों ॥ ३४ ॥ जोकांचनीयरथशृंगमयूरमाली । जाकेउदारउरषणमुखशक्तिशाली ॥ स्वर्धामधामहर-

कीरतिकैनजानी । सोईमहोदरवृकोदरबंधुमानी ॥ ३५ ॥ जाकेरथाग्रपरसर्पध्वजाविराजै । श्रीसूर्यमंडलविडंबनज्योति साजै ॥ आखंडलीयवपुजोतनत्राणधारी । देवांतकैसोसुरलोकविपत्तिकारी ॥ ३६ ॥ जोहंसकेतुभुजदंडनिषङ्गधारी । संग्रामसिंधुबहुधाअवगाहकारी ॥ लीन्हीछँडाइजेहिदेवअदेव वामा । सोईखरात्मजबलीमकराक्षनामा ॥ ३७ ॥

टी०-त्रिशूल कैसो है सुर जे देवताहैं तिनको मानौं समूल कहे पूर्णशूल कहे मृत्युहै । "शूलोस्त्री रोगआयुधे मृत्युकेतनयोगेषु" इतिमेदिनी ॥ ३४ ॥ कांचनीयरथ कहे सुवर्णको रथ ताके शृंगमें अग्रभागमें मयूरनकी मालापंगति लगी है अर्थ मयूरध्वजी है जाकी शक्ति बरछी षण्मुख जे स्वामिकार्त्तिक हैं तिनके उदार कहे बडे उरमें शाली कहे लगी है स्वः जो स्वर्ग है ताके धाम धाम कहे वर घरको हर कहे हरणहार है अर्थ लूटनहार है ॥ ३५ ॥ श्रीसूर्यमंडलको विडंबन कहे निंदक ज्योति कहे तेजको साजत है रथ अथवा आप अथवा तनत्राण अखण्डलीय कहे इन्द्रको ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

मू०-भुजंगप्रयातछन्द ॥ लगेस्यंदनैंबाजिराजीविराजैं । जिन्हैंवेगकोपौनकोबेगलाजैं ॥ भलेस्वर्णकीकिंकिणीयूथबाजैं । मिलेदामिनीसोंमनोमेघगाजैं ॥३८॥ पताकाबन्योशुभ्रशार्दूलशोभै । सुरेंद्रादिरुद्रादिकोचित्तछोभै ॥ लसैछत्रमालाहँसैसोमभाको । रमानाथजानौंदशग्रीवताको ॥ ३९॥ पुरद्वारछांड्योसबै आपुआयो । मनोद्वादशादित्यकोराहुधायो ॥ गिरिग्रामलैलैहरिग्राममारै । मनोपद्मिनीपत्रदंतीबिहारै ॥ ४० ॥

टी०-दामिनीसम स्वर्णकिंकिणीके यूथ कहे समूह हैं मेघसम रावणके श्याम घोडे हैं"यथा-वाल्मीकीये ।रथं राक्षसराजस्य नरराजो ददर्शह ॥ कृष्णवाजिसमायुक्तं युक्तं रौद्रेण वर्चसा" ॥ ३८ ॥ शार्दूल कहे व्याघ्र ॥३९॥ पुररक्षाके लिये मेघनादादिको पुरद्वारमें छांडिकै आप लरिबेको आयोहै "यथा-वाल्मिकीये रावणोक्तिः। "ततस्सरक्षोधिपतिर्महात्मा रक्षांसि तान्याह महाबलानि । द्वारेषु चार्या-

गृहगोपुरेषु सुनिर्वृतास्तिष्ठतु निर्विशंकाः ॥ इहागतं मां सहितं भवद्भिर्वनौकसः छिद्रमिदं विदित्वा । शून्यां पुरीं दुःप्रसहां प्रमथ्य प्रधर्षयेयुः सहसा समेताः ॥ विसर्जयित्वा सचिवांस्ततस्तान् गतेषु रक्षस्सु यथा नियोगे ॥" सो गिरिजे पर्वतहैं तिनके ग्राम कहे समूह लै लैकै हरि जे वानरहैं तिनको समूह मारतहै तिन गिरि समूहनमें रावण पद्मिनी कमलिनी पत्रमें दंतीसम विहार कौतुक करतहै अर्थ गिरि ग्राम रावण की देहमें दंतीकी देहमें पद्मिनीपत्र सम लागत है ॥ ४० ॥

मू०–सवैया ॥ देखिबिभीषणकोरणरावणशक्तिगहीकररोष रईहै। छूटतहीहनूमंतसोंबीचहिंपूंछलपेटिकैडारिदईहै ॥ दूसरि ब्रह्मकीशक्तिअमोघचलावतहीहाइहाइभईहै। राख्योभलेशरणागतलक्ष्मणफूलिकैफूलिसीओढिलईहै ॥ ४१ ॥ सृग्विनीछंद ॥ जोरहींलक्ष्मणैलेनलाग्योजहीं।मुष्टिछातीहनूमंतमारयो तहीं ॥ आशुहीप्राणकोनाशसोह्वैगयो । दंडद्वैतीनिमेंचेततोको भयो ॥ ४२ ॥ मरहट्टाछंद ॥ आयोडरिप्राणनिलैधनुबाणनिकपिदलदियोभगाइ ॥ चढिहनूमंतपररामचन्द्रतबरावणरोंक्योजाइ ॥ धरिएकबाणतबसूतछत्रध्वजकाटेमुकुटबनाइ ॥ लागेदूजो शरछूटिगयोबरुलंकगयोअकुलाइ ॥४३॥ दोधकछंद॥यद्यपिहैअतिनिर्गुणताई। मानुषदेहधरेरघुराई ॥लक्ष्मणरामजहीं अवलोक्यो॥ नैननतेनरह्योजलरोंक्यो॥४४॥ राम॥ वारकलक्ष्मणमोहिं बिलोको । मोकहँप्राणचलेतजिरोको ॥ हौंसुमिरौंगुणकेतिकतेरे । सोदरपुत्रसहायकमेरे ॥ ४५ ॥

टी०–फूलिकै प्रसन्न ह्वैकै ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ हनूमानसों प्राणनको डरिकै कपि दलको भगायो जाय तहां हनूमान क्यों न गये तौ जब रावण वा ठौरसों भागो तब लक्ष्मणको लै हनूमान रामचन्द्रके पास गये इतिकथाशेषः ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

मू०–लोचनबाहुतुहींधनुमेरो । तूबलबिक्रमवारकहेरो ॥ तूबिनहौंपलप्राणनराखौं । सत्यकहौंकछुझूंठनभाखौं ॥ ४६ ॥

मोहिंरहीयतनीमनशंका । देननपाइबिभीषणलंका ॥ बोलिउ-ठौप्रभुकोप्रणपारो । नातरुहोतहैमोमुखकारो॥४७॥विभीषण-सुंदरीछंद ॥ मैंबिनऊंरघुनाथकरौअब । देवतजोपरिदेवनको सब ॥ औषधिलैनिशिमैंफिरिआवहि॥केशवसोसबसाथजिआवहि॥४८॥सोदरसूरकोदेखतहीमुख॥रावणकेपुरवैसिगरेसुख॥ बोलसुनेहनुमंतकरयोप्रन । कूदिगयोजहँऔषधिकोबन॥४९॥

टी०-बल कहे सैन विक्रम पराक्रम ॥ ४६ ॥ प्रभु जो मैं हौं ताको विभीषणको लंकदान रूपी जो प्रण है ताको पारोकहे पूरण करौ ॥ ४७ ॥ हे रघुनाथ ! जो मैं बिनऊं कहे बिनती करत हौं सो तुम करो हे देव ! सब मिलकै परिदेवन जो बिलाप है ताको छोंडि देहु ॥ "बिलापः परिदेवनमित्यमरः" ॥४८॥ प्रथम कह्यो है कि औषधि लैकै निशिहीमें फिरि आवै ताको हेतु कहत हैं सोदर जे लक्ष्मण हैं सूर जे सूर्य हैं तिनको मुख देखतही रावणके सिगरे सुख पुरवैं कहे पूरित करिहै अर्थ सूर्योदय भये लक्ष्मण न जीहैं या प्रकारको विभीषणको बोल सुनिकै निशिहीमें हम औषधि ल्याइ हैं हनुमंत यह प्रण करयो ॥ ४९ ॥

मू०-रागषट्पद ॥ करिआदित्यअदृष्टनष्टयमकरौंअष्टबसु । रुद्रनबोरिसमुद्रकरौंगंधर्वसर्वपसु ॥ बलितअबेरकुबेरबलिहिगहिदेउंइन्द्रअब । विद्याधरनिअविद्यकरौंबिनसिद्धिसिद्धसब ॥ निजहोहिदासिदितिकीअदितिअनिलअनलमिटिजाइजल । सुनिसूरजसूरजउदतहींकरौंअसुरसंसारबल ॥ ५० ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ हन्योबिघ्नकारीबलीबीरबामैं । गयोशीघ्रगामीगयेएकधामैं ॥ चल्योलैसबैपर्वतैकैप्रणामैं ॥ नजान्योबिशल्यौषधीकौनतामैं ॥ ५१ ॥

टी०-रामचन्द्र सुग्रीवसों कहत हैं कि जो सूर्य उदयको प्राप्त होइ तौ जेते देवता हैं तिनकी सबकी आयुर्दशा करौं औ देवतनके शत्रु जे असुर दैत्यहैं तिनको बल संसारभरेमों करि देउं अर्थ तीनों लोकमें दैत्यनको राज करि देउं दिति दैत्यनकी माता अदिति देवतनकी माता ॥ ५० ॥ बामकहे कुटिल ऐसा जो

हनुमानके सूर्योदय पर्यंत विलंबाइबेके लिये कपट तपस्वीकोरूप धरे मगमें बैठो कार्यको विघ्नकारी कालनेमि राक्षस है ताको मारिकै एक यामै पहरै गये कहे वीते औषधि पास गयो विशल्यौषधी कहे विशल्यकरनी औषधी ॥ ५१ ॥

मू०—लसैंऔषधीचारुभोव्योमचारी।कहैदेखियोंदेवदेवाधि-कारी ॥ पुरीभौमकीसीलियेशीशराजै । महामंगलार्थीहनूमंत गाजै ॥ ५२ ॥ लगीशक्तिरामानुजेरामसाथी । जडेह्वैगयेज्यों गिरैहेमहाथी ॥ तिन्हैंज्याइबेकोसुनोप्रेमपाली । चल्योज्वाल मालीहिलेकीर्तिमाली॥५३॥ किधौंप्रातहीकालजीमेंबिचारचो चल्योअंशुलैअंशुमालीसँहारचो ॥ किधौंजातज्वालामुखीजोर लीन्हें । महामृत्युजामेंमिटेहोमकीन्हें ॥ ५४ ॥

टी०—वा पर्वतमें ज्वलित औषधी सोहती हैं ताको लै हनुमान व्योमचारी आकश मगगामी भयो देव औ देवाधिकारी गंधर्बादि अथवा देवदेव जे इन्द्र हैं तिनके अधिकारी जे देवता हैं अर्थ औषधिनकी रक्षामों जिनेदेवतनको इंद्र अधिकार दियो है अथवा देवदेव इंद्र औ मंत्रादिमें अधिकारी जे देवता हैं ते कहत हैं कि महामंगल कल्याणके अर्थी जे हनुमान हैं ते भौम जे मंगल हैं तिनकी पुरीहीको लिये जात हैं अनेक मंगल सम ज्वलित औषधी वृंद है मंगल पद श्लेष हैं कल्याण औ भौमको नाम है ॥ ५२ ॥ तिन्हैं कहे तिन लक्ष्मणको ज्याइबेको औषधिनके ज्वालाकी माली कहे समूह हैं जामें सो ज्वालमाली कहावे ऐसा जो पर्वत है ताहीको लैकै चल्यो है अर्थ ज्वलित हैं औषधिवृंद जामें ऐसो जो औषधिपर्वत द्रोणाचल है ताहीको लिये जात हैं अथवा ज्वालकी है माली समूह जामें ऐसी जो विशल्यकरनी औषधि है ताहीको लै चल्यो है अथवा ज्वालमाली जे अग्नि हैं तिनको लै चल्यो है कीर्तिमाली हनूमानको विशेषण है ॥ ५३ ॥ औ प्रातहि कहे सूर्योदय होतही लक्ष्मणको काल कहे मृत्यु जीमें विचारचो है सो अंशुमाली जे सूर्य हैं तिनको संहारि कहे मारिकै सूर्यके अंशु कहे किरण अथवा प्रभाव लिखे जात हैं जामें सूर्योदय ना होइ ॥ "अंशुः प्रभाकिरणयोरिति" मेदिनी ॥५४॥

मू०—बिनापत्रहैयत्रपालाशफूले।रमैंकोकिलासीभ्रमैंभौंरभूले ॥ सदानंदरामैंमहानंदकोलै । हनूमंतआयेबसंतैमनोलै ॥ ५५ ॥

मोटनकछंद ॥ ठाढेभयेलक्ष्मणमूरिछिये । दूनीशुभशोभशरीरलिये ॥ कोदंडलियेयहबातररै । लंकेशनजीवतजाइघरै ॥ ॥ ५६ ॥ श्रीरामतहींउरलाइलियो ॥ सूंघ्योशिरआशिषकोटिदियो ॥ कोलाहलयूथपयूथकियो ॥ लंकाहहलीदशकंठहियो ॥ ५७ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांलक्ष्मणमूर्च्छामोचनं नामसप्तदशः प्रकाशः ॥ १७ ॥

टी०–यत्र जा पर्वतमें औषधीवृंद नहीं हैं बिनापत्र फूले पलाशके वृक्ष हैं या प्रकार भूले कोकिलनकी आली पंगती रमती हैं औ जामैं भ्रमैं कहे घूमत हैं बसंत कैसो है कि यत्र कहे जामें विनापत्र पलाश फूलि रहेहैं औ जामें कोकिलावली रमती हैं औ भूले कहे उन्मत्ततासों देहकी सुधि बिसराये भौंर भ्रमत हैं यामें (श्लेषोत्प्रेक्षा) है सो सदानन्द जे राम हैं तिनके महानंदके लिये हनूमान मानो बसंत ही ल्याये हैं बसंतको देखि सबको आनंद होत है तासों अथवा जैसे राजनके इहां आनंदार्थमाली बसंत बनाइकै लैजात हैं तैसे मानो रामचन्द्रके महाआनंदको हनूमान बसंतको रूपही बनाइ ल्याये हैं ॥५५॥ मूरि जो औषधि है ताको छिये कहे छुये सों ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां सप्तदशः प्रकाशः ॥ १७ ॥

मू०–॥ दोहा ॥ अष्टादशेप्रकाशमें, केशवदासकराल । कुम्भकर्णकोबर्णिबो, मेघनादकोकाल ॥ १ ॥ दोधकछंद ॥ रावणलक्ष्मणकोसुनिनीके । छूटिगयेसबसाधनजीके । रेसुतमंत्रिविलंब न लावो । कुंभकरन्नहिजाइजगावो ॥ २ ॥ राक्षसलक्ष्मणसाधनकीन्हे । दुंदुभिदीहबजाइ नवीने ॥ मत्तअमत्तबडेअरुबारे । कुंजरपुंजजगावतहारे ॥ ३ ॥ आइजहींसुरना-

रिसभागीं । गावनबीनबजावनलागीं ॥ जागिउठोतबहींसुर दोषी । क्षुद्रक्षुधाबहुभक्षणपोषी ॥ ४ ॥

टी०—कुम्भकर्णको औ मेघनादको काल कहे मृत्यु वर्णिवो ॥ १ ॥ साधन कहे जयसिद्धिके उपाय ॥ २ ॥ साधन कहे जगाइबेको यत्न ॥ ३ ॥ यह महादेवसे वर रह्यो हैं कि देवांगननको गान सुनि कुंभकर्ण अकालहूमें जागि है तासों जब देवांगना आइ गावन लागीं तब जाग्यो ॥ यथा ॥ हनुमन्नाटके ॥ "निद्रां तथापि न जहौ यदि कुंभकर्णः श्रीकंठलब्धवरकिन्नरकामिनीनाम् ॥ गंधर्वयक्षसुरसिद्धवरांगनानामाकर्ण्य गीतममृतं परमं विनिद्रः" ॥ ४ ॥

म०—नराचछंद ॥ अमत्तमत्तदंतिपंक्तिएककौरकोकरै । भुजापसारिआसपासमेयबोपसंहरै ॥ बिमानआसमानकेजहां तहांभगाइयो । अमानमानसोदिवानकुंभकर्णआइयो ॥ ५ ॥ रावण ॥ समुद्रसेतुबांधिकैमनुष्यदोइआइयो ॥ लियेकुचालि वानरालिलंकअंकलाइयो ॥ मिल्योबिभीषणौंनमोहिंतोहिंनें- कहूडरेउ । प्रहस्तआदिदैअनेकमंत्रिमित्रसंहरेउ ॥ ६ ॥ करो सोकाजआशुआजचित्तमैंजोभावई । असुख्यहोइजीवजीव शुक्रसुख्यपावई ॥ समेतिरामलक्ष्मणैसोबानरालिभक्षिये । सकोसमंत्रिमित्रपुत्रधामग्रामरक्षिये ॥ ७ ॥

टी०—मान (गर्व) दिवान (सभा) ॥ ५ ॥ वानरालिको लंकके अंक कहे गोदमें लायो है अर्थ लंकके मध्यमें प्राप्त कियो है अथवा जो पुरी काहू कबहूं न घेरचौ ताको घेरिकै अंक कहे कलंक लायो है यामें रामचंद्रके बलको वर्णन है निंदा नहीं हैं तासों सरस्वती उक्तार्था नहीं कियो ॥ ६ ॥ ऐसो काज करौ जासों देवतनको विघ्न हो जीव जे बृहस्पति हैं ते असुख्य होइ औ हमारो जय होइ शुक्र सुख पावैं सरस्वती उक्तार्था राम लक्ष्मण समेत या वानरालिको भक्षिये कहे भक्षण करि सकियत है अर्थ नहीं भक्षण करि सकियत काहेते अनेक नर वानर हम भक्षण करे हैं इनको सेतुबंधनादि कर्म देखिकै हमारो जीव अति डरो है ताते कोष कहे खजाना सहित मंत्र्यादिकनको रक्षिये कहे रक्षण करि सकित है अर्थ नहीं रक्षण करि सकियत अर्थ ये हमको सबको मारि ग्रामादि लेन चाहत हैं ॥ ७ ॥

मू०-कुंभकर्ण-मनोरमाछंद ॥ सुनियेकुलभूषणदेवविदष-
ण । बहुआजिविराजिनकेतुमपूषण ॥ भवभूपजेचारिपदार-
थसाधत । तिनकोकबहूंनहिंबाधकबाधत ॥ ८ ॥ पंकजबा-
टिकाछंद ॥ धर्मकरतअतिअर्थबढावत । संततिहितरतिको-
विदगावत । संततिउपजतहीनिशिबासर ।साधततनमनमुक्ति
महीधर ॥ ९ ॥

टी०-बहुतै जे हैं आजि कहे समरनके बिराजी कहे शोभनहार अर्थ अनेक समरकर्ता तिनके मध्यमें तुम पूषण पाठ है तहाँ अर्थ कि बहुत जे आजिविराजी संग्रामकर्ता हैं तिनके तम पूषण कहे तमको मूषण सम हौ अर्थ सूर्य तमको नाश करत है तैसे तुम संग्रामकर्त्ता जे शत्रु भट हैं तिन्हैं नाश करत हो चारि पदार्थ अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष, ॥ ८ ॥ चारों पदार्थनके साधिबेको समय कहत हैं कि महीधर जे राजा हैं ते सन्तत कहे निरंतर धर्महू करत हैं औ संतति अर्थ द्रव्यहूको बढावत हैं अथवा धर्मको करत अर्थ बढावत हैं अर्थ सतरीतिसों अर्थ बढावत हैं औ संततहित हैं रतिस्त्री भोग अर्थ काम साधन जिनको ऐसे कोविद गावत हैं अर्थ ये तीन्यों एकही समयमों साध्य हैं औ जब संतति कहे पुत्र उत्पन्न भयो तब निशि औ बासर तन औ मन करिकै मुक्तिको साधन करत हैं आजतक तुम अर्थ, धर्म, कामको साधन कीन्हों अब तुम्हारो पुत्र समर्थ है ताको सब राजभार सौंपि सीताको रामचंद्रको दैकै हेतु करि मुक्ति साधन करौ इति भावार्थः ॥ ९ ॥

मू०-दोहा ॥ राजाअरुयुवराजजग, प्रोहितमंत्रीमित्र ।
कामीकुटिलनसेइये, कृपणकृतघ्नअमित्र ॥१०॥ घनाक्षरी ॥
कामीबामीझूंठक्रोधीकोंढ़ीकुलद्वेषीखलुकातरकृतघ्नीमित्रदोष-
द्विजद्रोहिये । कुपुरुषकिंपुरुषकाहलीकलहीक्रूरकुटिलकुमंत्री-
कुलहीनकेशौठोहिये ॥पापीलोभीझठअंधबावरोबधिरगूंगाबौ-
नाअविवेकीहठीछलीनिरमोहिये।सूमसर्बभक्षीदैववादीजोकुबा
दीजड़अपयशीऐसोभूमिभूपतिनसोहिये ॥ ११ ॥

टी०-ये पांचों गजादि इन दूषण सहित होहिं तौ सेवनके योग्य नहीं योग नहीं होत.अथवा यथाक्रममोंजानों राजा कामी काहेते उचितानुचित विचार बिना सुन्दरी देखि प्रजाजनकी स्त्रिनको गहि मंगावतहैं तासों देश उजार होतहै औ युवराज कुटिल काहेते मंत्र्यादिकनमों विरोध राज्यविध्वंस करतहैं औ प्रोहित कृपण कहे दरिद्र काहेते विवाहादि समयमों द्रव्य लोभ वश वेदविहित घट्यादि विताइ अमंगल करत हैं अथवा शत्रुसों कछु द्रव्य पाइ मरणादिके लये राशि नाम बतावत हैं औ मंत्री कृतघ्नी काहेते स्वामीको कृत बिसारि शत्रुसों मिलि राज्य छोंडावैं औ मित्र अमित्र कहे हृदयमों भलो ना चाहै काहेते कछू गूढ मंत्र कहै सो शत्रु पास पहुँचावै ये पाँचों इन पांचहुन दोष सहित सेवन योग नहीं होत यासों या जनायो कि तुम राजा हौ तुम्हें ऐसो काम साधन ना चाहिये जासों ईश्वर जे रामचंद्र हैं तिनकी स्त्रीको हरि ल्यायो हौ ॥ १० ॥ वामी (वाममार्गी) कुपुरुष कहे पुरुषार्थ रहित किंपुरुष कहे कुछुहै पुरुषकी आकृति जिनकी काहला (रोगी) दैववादी कहे जे भाग भरोसे रहत हैं याहूमें या जनायो कि तुमको ऐसो कामसाधन ना चाहिये ॥ ११ ॥

मू०-निशिपालिकाछंद ॥ बानरनजानुसुरजानुशुभगाथहैं ॥ मानुषनजानुरघुनाथजगनाथहैं । जानकिहिदेहुकरि नेहुकुलदेहुसो ॥ आजुरणसाजपुनिगाजुहँसिमेहुसो ॥ १२ ॥ रावण-दोहा ॥ कुंभकरणकरियुद्धकै,सोइरहौघरजाइ।वेगिबिभीषणज्योंमिल्यो,गहौशत्रुकेपाइ॥१३॥ मंदोदरी-दो०॥ इंद्रजीतअतिकायसुनि, नारांतकसुखदाइ।भैयनसोंप्रभुझुकतहैं,-क्यों नकहौसमुझाय ॥ १४ ॥ मंदोदरी--चंचलाछंद ॥ देवकुंभकर्णकेसमानजानियेनआन। इन्द्रचंद्रविष्णुरुद्रब्रह्मकोहरे उरुमान ॥ राजकाजकोकहैजोमानियेसोप्रेमपालि। कचलीनकोचलैनकालकीकुचालिचालि ॥ १५ ॥

टी०-कुल औ देहसों नेह करिकै जानकीको देहु यह कहि या जनायो कि ना देहौ तौ रामचंद्र तुम्हारे कुलके सहित तुम्हारो नाश करि हैं ॥ १२ ॥ कारि कहे करौ ॥ १३ ॥ झुकत कहे रिस करत है भैयनसों बहुवचन कहि या जनायो

कि एक भाई बिभीषण समुझावन लाग्यौ ताको लात मार्यो अब वैसेही कुंभकर्णसों रिस करत हैं ॥ १४ ॥ देव रावणको संबोधन है जो बात कुंभकर्ण कहत है सो राजाके काजके हितको कहत है ताहि प्रेमको पालिकै कहे हित करिकै मानिये अर्थ सीताको दैकै रामचंद्रसों हित करौ काहेते काल जो समय है ताकी जो कुचालि कहे प्रतिकूलता है तामें चालि कहे चाल युद्धादि उत्कृष्ट कर्म रहित विचार युक्त निजहितसाधक कार्य कृत्यकै पूर्व नाहीं चल्यो को अब नाहीं चलत अर्थ जे पूर्व भये हैं तिन चल्यो है अब जे होत जात हैं ते चलत हैं जब आपनो समय टेढो होत है तबशत्रु मिलनादि कार्य करिबो साधिबो अनुचित नहीं है इति भावार्थः ॥ अथवा कालकी जो कुचालि है ताकी जो चलि कहे चालु है अर्थ जब आपनो काल प्रतिकूल भयो ता समयमों जो कार्यसाधक उचित चाल है ॥ १५ ॥

मू०-विष्णुभाजिभाजिजातछोड़िदेवताअशेष । जामदग्न्य देखिदेखिकैंनकीननारिवेष ॥ ईशरामतेबचेबचेकबानरेशबालि । कैंचलीनकोचलैनकालकीकुचालिचालि ॥ १६॥ बिजयाछंद । रामहिंचोरिनदीन्हींसियाजितकेदुखतोतपलीलिलियोहै । रामहिंमारनदीहोंसहोदररामहिंआवनजानदियोहै ॥ देहधरचौतुमहींलगिआजुलोंरामाहिंकेपियज्यायेजियोहै ॥ दूरिकर्योद्विजताद्विजदेवहरेहीहरेआततायीकियोहै ॥ १७ ॥

टी०-कालकी कुचालिमें चालु कैं चली है सोकहत हैं देवदानवनके युद्धमें देवतनके सहायको विष्णु जात हैं परन्तु जब जानत हैं कि दैत्यनको समय सहायक है हमको कुटिल है हम इनसों ना जीति हैं तब यशकी सुधि भुलाइ आपने प्राणनकी रक्षाके लिये भागि जात हैं या प्रकार कयोवारकी कथा पुराणनमें प्रसिद्ध है यासों या जनायो कि विष्णुसों बली कोऊ नहीं है तेऊ समय बिचारि गौं साधि जात हैं औ जामदग्नि जे परशुराम हैं तिनको देखिकै कै क्षत्री नारिको वेष नहीं धर्यो यासों या जनायो कि जब परशुरामको समय रह्यो तब बडे बडे क्षत्री समय बिचारि नारिको वेष धरि जीव बचायो औ तेई परशुराम ताही क्षत्रीवंशमें उत्पन्न जे रामचन्द्र हैं तिनको समय बली बिचारि आपनो धनुषबाण दै हेतु कर्यो तासों हेईश ! रामचन्द्रको समय बली है सो सीताको

देकै हेतुरूपी जो बचिवेको उपाय है तासों बचो काहेते बालि बली रहे तिन बचिबेको उपाय न कियो ते ना बचे मारेही गये चौथो तुमको अर्थ पाछेके छंदमें कह्यो है ॥ १६ ॥ आवन जान दियो अर्थ युद्धमंडलमें आवन दियो फेरि युद्ध मंडलसों फिरि जानदियो स्त्रीहतादिक छह आततायी कहावत हैं यथा भागवते ॥"अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रपाणिर्धनापहः॥ क्षेत्रदारापहश्चैव षडेते आततायिनः "॥ आततायी ब्राह्मणहू होइ ताके वधसों ब्रह्मदोष नहीं है तासों ॥ १७ ॥

मू०—दोहा ॥ संधिकरोविग्रहकरो सीताकोतोदेह । गनौं न पियदेहीनमें, पतिव्रताकीदेह ॥ १८ ॥ रावण-विजयाछंद ॥ हौंसतुछांडिमिलौंमृगलोचनिक्योंक्षमिहैंअपराधनये ॥ नारि हरीसुतबांध्योतिहारेहोंकालिहिसोदरसाँगिहये ॥ बामनमांग्यो त्रिपैंगधरादक्षिणाबलिचौदहलोकदये ॥ रंचकबैरहुतोहरिवंच कबांधिपतालतऊपठये ॥ १९ ॥ दोहा ॥ देवरकुम्भकरन्नसों हरिअरिसोंसुतजाइ । रावणसोंप्रभुकौनको,मंदोदरीडेराइ २०

टी०—पतिव्रता जे स्त्री हैं तिनकी देह स्वरूप देहिनमें न गनौं ॥ १८ ॥ अपराधन ये कह्यो तासों बलिको प्राचीन बैर जानों अर्थ हिरण्यकशिपुके रंचक बैर सों बलिको बांधि पाताल पठायो ॥ १९ ॥ २० ॥

मू०—चामरछन्द ॥ कम्भकर्णरावणैंप्रदक्षिणाहिदैचल्यो । हाइहाइह्वैरह्योअकाशआशुहीहल्यो । मध्यक्षुद्रघंटिकाकिरीट संगशोभनो । लक्षपक्षसोकलिन्द्रइन्द्रकोचढचोमनों ॥ २१ ॥ नाराचछंद ॥ उडैंदिशादिशाकपीशकोरिकोरिश्वासहीं। चपैंचपेटपेटबाहुजानुजंघसोतहीं॥ लियेहैंऔरऐंचिऐंचिबीरबाहुबातहीं। भषेतेअन्तरिक्षरिक्षलक्षलक्षजातहीं॥२२॥कुम्भकर्ण-भुजंगप्रयातछन्द ॥ नहौंताडुकाहौंसुबाहैनमानों । नहौंशंभुकोदंड सांचीबखानों ॥ नहौंतालमालीखरैजाहिमारो। नहौंदूषणैसिन्धुसूधोनिहारो ॥२३॥सुरीआसुरीसुन्दरीभोगकर्णै । महाका-

लकोकालहौंकुम्भकर्णौ॥सुनौरामसंग्रामकोतोहिंबोलौं। बढ़्यो गर्वलंकाहिआयेसोखोलौं ॥ २४ ॥

टी०-लक्ष विधिको जो पक्ष कहे विरोध है तासों अर्थ बड़े विरोधसों अथवा लक्ष विधिको जो पक्ष कहे बलहै तासों अर्थ बड़े बलसों इहां लक्ष शब्द अधिकार्थमें है । "पक्षो मासार्धके पार्श्वगृहे साध्य विरोधयोः ॥ केशादेःपरतो वृंदे बले सखिसहाययोः" इतिमेदिनी ॥ २१ ॥ जे लक्षण ऋक्ष भयसों अन्तरिक्षको जात हैं तिन्हैं बाहँके बात वायुसों खैंचिकै भषे खाइ डारचो ॥ २२ ॥ द्वै छन्दको अन्वय एक है खरै कहे खर राक्षसै सूधो निहारो अर्थ कपिनको मूधो समुझिकै मारन वेधन करचो सरस्वती उक्तार्थः ॥ मेरी ओर इनसम शत्रु दृष्टिसों ना निहारो सूधो कहे कृपा दृष्टिसों निहारो अथवा मोंको सूधो कहे शत्रुभावरहित आपनो दास निहारो सरस्वती उक्तार्थः ॥ लंकामें आयेते जो तुम्हारे गर्व बढ़्यो है ताहि खोलो कहे प्रसिद्ध करौ आशय कि जब मोको मारिहौ तब तुम्हारो बलादिको जो गर्व है सो सब प्राणिनमें प्रसिद्ध ह्वै है ॥ २३ ॥ २४ ॥

मू०-उठ्योकेशरीकेशरीजोरछायो । बलीबालिकोपूतलैनीलधायो ॥ हनूमन्तसुग्रीवसाभसभागे । डसैडांससेअंगमातंग लागे ॥ २५ ॥ दशग्रीवकोबंधुसुग्रीवपायो । चल्योलंकमेंलैभलेअंकलायो । हनूमन्तलातैंहत्योदेहभूल्यो । छुट्योकर्णनाशाहिलैइन्द्रफूल्यो ॥ २६ ॥ सँभारचोघरीएकदूमैमरालै । फिरचो रामहींसामुहैंसोगदालै ॥ हनूमन्तजूपूंछसोंलाइलीन्हों । नजान्योंकबैसिंधुमेंडारिदीन्हों ॥ २७ ॥

टी०-केशरी नामा वानर केशरी कहे सिंहके जोरसों छायो उठ्यो अथ सिंह सम गर्जिकै शीघ्र चल्यो ॥ २५ ॥ इन्द्रसम सुग्रीव फूल्यो सुखी भयो ॥ २६ ॥ २७ ॥

मू०-जहींकालकेकेतुसोंताललीनो । करचोरामजूहस्तपादादिहीनो ॥ चल्योलोटतैधाइबक्रैधाचाली॥उड़्योमुंडलैबाण ज्योंमुंडमाली ॥ २८ ॥ तहींस्वर्गकेदुंदुभीदीहबाजैं । करचो

पुष्पकीवृष्टिजैदेवगाजैं ॥ दशग्रीवशोकग्रस्योलोकहारी । भयो लंकहीमध्यआतंकभारी॥२९॥ दोहा ॥ तवहींगयोनिकुंभिला, होमहेतइन्द्रजीत ॥ कह्योतहांरघुनाथसों, मतोबिभीषणमीत- ॥ ३० ॥ चंचरीछंद ॥ जोरिअंजुलिकोबिभीषणरामसोंविन- तीकरी । इंद्रजीतनिकुंभिलागयोहोमकोरिसजीभरी॥ सिद्धहो मनहोइजौलगिईशतौलगिमारिये । सिद्धहोहिप्रसिद्धहैयहसर्ब- था हम हारिये ॥३१॥ दोहा॥ सोईबाहिहतैकिनर,वानररक्षजो कोइ ॥ बारहवर्षक्षुधातृषा, निद्राजीतेहोइ ॥ ३२ ॥ चंचरीछं द॥ रामचन्द्रविदाकरयोतबवेगिलक्ष्मणवीरको। त्योंबिभीपण जामवंतहिसंगअंगदधीरको ॥ नीललैनलकेशरीहनुमंतअंतक ज्योचले । वेगिजाइनिकुंभिलाथलयज्ञकेसिगरेदले ॥ ३३ ॥

टी०—तालवृक्षआदिपदते आयुधै जानो वक्रै कहे मुखै मुण्डमाली महादेव ॥ २८ ॥ २९ ॥ दोहा क्षेपकहै निकुंभिला राक्षसके देवतनको स्थान वट वृक्षसों युक्तहै तामें यज्ञ कारि इन्द्रजीत अजय होत रह्यो है ॥३०॥३१॥ ३२ ॥ ३३ ॥

मू०—जामवंतहिमारिद्वैशरतीनिअंगदछेदियो । चारिमारि बिभीषणैहनुमंतपंचसुबेधियो॥एकएकअनेकवानरजाइलक्ष्म- णसोंभिरयो।अंधअंधकयुद्धज्योंभवसोंजुरयोभवहीहरयो ३४ गीतिकाछंद॥रणइंद्रजीतअजीतलक्ष्मणअस्त्रशस्त्रनिसंहरै। श- रएकएकअनेकमारतबुंदमंदरज्योंपरै ॥ तबकोपिराघवशत्रुको शिरबाणतत्क्षणकरधरयो।दशकंधसंध्यहिकोकियोशिरजाइअं जुलिमैंपर्यो ॥३५॥ रणमारिलक्ष्मणमेघनादहिस्वच्छशंखब- जाइयो।कहिसाधुसाधुसमेतइंद्रहिदेवतासबआइयो॥कछुमाँगि येबरबीरसत्वरभक्तिश्रीरघुनाथकी । पहिराइमालविशालअर्च- हिकैगयेसबसाथकी ॥ ३६ ॥ कलहंसछंद ॥ हतिइंद्रजीतकहँ लक्ष्मणआये । हँसिरामचन्द्रबहुधाउरलाये॥ सुनिमित्रपुत्रशु-

भसोदरमेरे । कहिकौनकौनसुमिरौंगुणतेरे ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ नींदभूखअरुप्यासको,जोनसाधतेबीर॥ सीतहिक्योंहमपावते, सुनुलक्ष्मणरणधीर ॥ ३८ ॥

इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रच-
न्द्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायामिन्द्रजिद्वधवर्णनं
नामाष्टादशः प्रकाशः ॥ १८ ॥

टी०—लक्ष्मणसों कैसे जाय भिरचो भय जो डरहै साही कहे हृदयसों हरचो कहे दूरि भयो है जाके ऐसो जो गर्वादि करिके अंध कहे आंधरो अंधक नाम दैत्य है सो जैसे भव जे महादेव हैं तिनसों युद्धमें जुरचो है अर्थ जैसे महादेवसों निर्भय अंधक लरचो तैसे लक्ष्मणसों इन्द्रजीत लरतभयो ॥ ३४ ॥ एक एक कहे एकको परस्पर अनेक शर मारत हैं अर्थ लक्ष्मणको मारत हैं ते शर दुहूनके अंगनमें मंदरमें जलबुंदसम परत हैं अर्थ अतिबलीनतासों कछू पीडा नहीं करत उद्धरचो काढचो ॥ ३५ ॥ साथकी कहे जो अर्चाकी बिधि संगमों लै आये रहैं कहूं शुभगाथकी पाठ है तौ शुभगाथ कहे लक्ष्मण ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसाद-
निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायामष्टादशः प्रकाशः ॥ १८ ॥

मू०—॥ दोहा ॥ उनईसयेंप्रकाशमें, रावणदुःखनिधान ॥ जूझैगोमकराक्षपुनि, ह्वैहैदूतबिधान ॥ १ ॥ रावणजैहैगूढथल, रावरलुटैबिशाल ॥ मंदोदरीकढोरिबो, अरुरावणकोकाल॥२॥ मोटनकछंद ॥ देख्योशिरअंजुलिमैंजबहीं । हाहाकरिभूमिपस्योतबहीं ॥ आयेसुतसोदरमंत्रितबै । मंदोदरित्योंतियआई सबै ॥ ३ ॥ कोलाहलमंदिरमांझभयो । मानौंप्रभुकोउडिप्राणगयो ॥ रोवैदशकंठबिलापकरै । कोऊनकहूंतनधीरधरै ॥४॥ रावण—दंडक ॥ आजुआदित्यजलपवनपावकप्रबलचंदआनंदमयतापजगकोहरौं । गानकिन्नरकरहुनृत्यगंधर्वकुलयक्ष बिधिलक्षउरयक्षकर्दमधरौं ॥ ब्रह्मरुद्रादिदैदेवत्रैलोककेराजको

जायअभिषेकइन्द्रहिकरौं । आजुसियरामदैलंककुलदूषणहिं यज्ञकोजायसर्बज्ञबिप्रनवरौं ॥ ५ ॥ महोदर–तोटक ॥ प्रभुशोकतजौतनधीरधरौ । सकशत्रुबधोसोबिचारकरौ ॥ कुलमेंअब जीवतजोरहिहै । सबशोकसमुद्रहिसोबहिहै ॥ ६ ॥

टी०–दुःखको निदान कहे बडो दुःख ॥ १ ॥ रावरे स्त्रिनके रहिबेको घर, कढोरिबो कहे केशादि पकरि निर्दय खैंचिबो ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ इंद्रजीतके मरे रावण बडे दुःखसों संयुक्त ह्वै ऐसे बिलाप वचन कहत भयो कि जो इन्द्रजीत मरचो तो मोंहूं मरतही हौं तासों मेरे डरसों जे बातै जन नाहीं करत रहे ते सब भयको छोडिके आपने आपने भाये काज करौ कपूर औ अगुरु औ कस्तूरी औ कंकोल मिलाइ यक्षकर्दम होत है सो यक्षनको अति प्रिय है अंगनमें लेप करत हैं ॥ "कर्पूरागुरुकस्तूरीकंकोलैर्यक्षकर्दमः" ॥ औ सीता राम मिलिकै कुलदूषण (बिभीषण) को लंका दैकै सर्वज्ञ ब्राह्मणनको यज्ञको निवारो कहे अवकाश देहिं ॥ ५ ॥ अतिदुखमें धैर्य्यके बचन कहिबेको उचित है तासों महोदर, मंदोदरी धीर धराइबेके बचन कहति हैं जा उपायसों शत्रु बधो सक कहे सकैं अर्थ शत्रु मारचो जाय सो विचार करौ सबके मरेको जो शोक है ताके समुद्रमें वह्यो करि है ॥ ६ ॥

मू०–मंदोदरी–चौपाई ॥ सोदरजूझ्योसुतहितकारी । को गहिहैलंकागढभारी ॥ सीतहिदैकैरिपुहिसँहारौ । मोहतिहैविक्रमबलभारौ ॥ ७ ॥ रावण ॥ तुमअबसीतहिदेहुनदेहू । बिन सुतबंधुधरौंनहिंदेहू ॥ यहितनजोतजिलाजहिरैहौं । वनबसि जाइसबैदुखसैहौं ॥ ८ ॥ मकराक्ष–भुजंगप्रयातछंद ॥ कहाँ कुंभकर्णौकहाइन्द्रजीतै । करैसोइबौवैकरैयुद्धभीतै ॥ सुजौलौं जिऔंहौंसदादासतेरो । सियाकोसकैदैसुनौंमंत्रमेरो ॥ ९ ॥

टी०–यह जो तुम्हारो भारी लंकागढ है ताहि कौन गहि है कहे लै सकि है अर्थ लंकागढ शत्रुके लेबे लायक नहीं है विक्रम कहे यत्न बलकहे शक्तिको मोहति है कहे मूर्छित करति है अर्थ तुम्हारो यत्न औ बल निष्फल होतहै सो याहीके दुःख प्रभावसों ॥ ७ ॥ ८ ॥ भीत युद्ध कहि या जनायो कि वाण वेदनादि भय सों अंतरधीन ह्वै युद्ध करि हैं सरस्वती उक्तार्थः ॥ वै आपने बलसों सबको मारि सीताको ले हैं इति व्यंग्यार्थः ॥ ९ ॥

मू०-महाराजलंकासदाराजकीजै । करौंयुद्धमेरीविदावेगि कीजै ॥ हतौंरामस्योबंधुसुग्रीवमारौं । अयोध्याहिलैराजधानी-सुधारौं ॥ १० ॥ बिभीषण-बसंततिलकाछंद ॥ कोदंडहाथ रघुनाथसँभारिलीजै । भागेसबैसमरयूथपदृष्टिदीजै ॥ बेटाब-लिष्ठखरकोमकराक्षआयो । संहारकालजनुकालकरालधायो ॥ ॥ ११ ॥ सुग्रीवअंगदबलीहनुमंतरोंक्यो । रोंक्योरह्योनरघु-बीरजहींबिलोक्यो ॥ मारयोविभीषणगदाउरजोरठेली । का-लीसमानभुजलक्ष्मणकंठमेली ॥ १२ ॥ गाढ़ेगहेप्रबलअंगनि-अंगभारे । काटेकटैंनबहुभांतिनकाटिहारे ॥ ब्रह्मादियोवरहि अस्त्रनशस्त्रनलागै । लैहीचल्यौसमरसिंहहिजोरजागै ॥१३॥ गाढ़ांधकारदिविभूतललीलिलीन्हो । ग्रस्तास्तमानहुंशशीकहँ राहुकीन्हो ॥ हाहादिशब्दसबलोगजहींपुकारे ॥बाढेअशेषअँ-गराक्षसकेबिदारे ॥ श्रीरामचन्द्रपगलागतचित्तहर्षै । देवाधि-देवमिलिसिद्धनपुष्पवर्षै ॥ १४ ॥

टी०-सरस्वती उक्तार्थः ॥ काकूक्तिसों कहत हैं कि हे महाराज ! अब लंकामें तुम सदा राज किया करौ महाराज पद कहि या जनायो कि मंत्रको त्याग करि प्रभुतासों अपने मनहीं की बात करयो औ जैसे कुंभकर्णादिकनकी सबकी बिदा कियो है तैसे मेरीहू बिदा करौ हौं युद्ध करौं जाइ औ तुम्हारी आज्ञा के सदृश जैसे कुंभकर्णादिकन बंधु सहित राम औ सुग्रीवको मारि राज-धानी अयोध्यामें सुधारयो है तैसे हौंहू बंधु सहित राम औ सुग्रीवको मारिकै राजधानी अयोध्यामें सुधारौं जैसे सब मरिगये हैं तैसे हौंहू मरौं जाइ इति व्यंग्यार्थः ॥ १० ॥ ११ ॥ विभीषण गदा मारयो ताको उरके जोरसों ठेलिकै लक्ष्मणके कंठमें कालसर्पके समान भुजा मेलत भयो ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥

मू०-दोहा ॥ जूझतहीमकराक्षके, रावणअतिदुखपाइ । स-त्वरश्रीरघुनाथपै,दियोवसीठपठाइ ॥ १५॥ सुंदरीछंद ॥ दूत-हिदेखतहीरघुनायक । तापहँबोलिउठेसुखदायक ॥ रावणके

कुशलीसुतसादर। कारजकौनकरैअपनेघर ॥ १६ ॥ दूत-वि
जयछन्द ॥ पूजिउठेजबहींशिवकोतबहींविधिशुक्रबृहस्पति
आये। कैविनतीमिसकश्यपकेतिनदेवअदेवसबैबकसाये ॥
होमकीरीतिनईसिखईकछुमंत्रदियोश्रुतिलागिसिखाये। हौंइ-
तकोपठयोउनकोउतलैप्रभुमंदिरमांझसिधाये ॥ १७ ॥

टी०-कि शशीको दिवि आकशते भूतलमें पाइकै अर्थ स्थानच्युत (अवल) जानिकै स्वाभाविक शत्रुतासों गाढो कहे बहुत जो अंधकार है ताने लीलिलियो है औ कि राहूने ग्रस्तास्त कीन्हो है शशीसम लक्ष्मण है अंधकार औ राहुसम मकराक्ष है जब मकराक्षको शस्त्रास्त्रसों मरण ना जान्यो तव हाथनसों कसिकै गाढे जो गहे रहै ताही समय शीघ्रतासों लक्ष्मणजी बाढ कहे स्थूलकाय ह्वै कै राक्षसके अशेष संपूर्ण अंग बिदारे कहे विदीर्ण कीन्हे अर्थ फारि डारे ऐसी शीघ्र तासों लक्ष्मणजू आपने अंगस्थूल किये कि मकराक्ष जो हस्तग्रहण करे रहै सो हस्तग्रहण ना छूटन पायो तासों वक्षस्थल फाटि गयो अधिदेव गन्धर्वादि औ आदि देव पाठ होइ तौ ब्रह्मादि जानौ यह छन्द छै चरणको है ॥१५॥१६॥ सत्वर कहे शीघ्र बसीठ (दूत) पूछौ कि रावण कौन कारज करत हैं ताको जवाव रावणके प्रभावको देखावत चतुरतासों दियो जव रावण देव औ अदेव सबके नाश करिवेके लिये शिव जे महादेव हैं तिनको पूजन करिकै उठे हैं कि ताही क्षण अति डर मानिकै विधि (ब्रह्मा) औ शुक्र औ बृहस्पति ये तीनों आइकै कश्यपके व्याजसों विनती करिकै देव औ अदेव सब बकसाये कहे मांगि लीन्हें अर्थ ब्रह्मादिकन आइ यह कह्यो कि कश्यप यह बिनती करचो है कि देव औ अदेवनको हमको वकसीस देव अर्थ इनको नाश ना करौ इहां अदेव पदते जे देवतनते अतिरिक्त प्राणी हैं दैत्य मनुष्यादि ते सब जानौ यासों या जनायो कि जब रावण शिवकी पूजा करत है तब संहार करिवेकी शक्ति प्राप्ति होति है औ देव अदेवनको वकसाइकै कछू नई होमकी रीति सिखा-यो औ श्रुति (कान) में लागिकै कछू मंत्र दीन्हों याके आगे मोहिं या ओर पठायो औ ब्रह्मादिकनको लैकै प्रभु जो रावण है सो मंदिरको गया कहिवेको हेतु या जामें रामचन्द्र जानैं कि हमप्रति कोपसों रावण सब देव औ अदेवको नाश करिवेको चाह्यो तिनको वकसाइ ब्रह्मादिकन कछु हमारि ही हानि हेत होम औ मंत्र सिखायो ह्वै है ॥ १७ ॥

मू०-दूत-संदेश ॥ सूर्पणखाजोबिरूपकरीतुमतातेकियोह-महूंदुखभारो।बारिधिबंधनकीन्होंहुतोतुममोसुतबंधनकीन्होंतिहारो॥होइजोहोनीसोहोइहीरहैनमिटैजियकोटिबिचारबिचारो। दैभृगुनंदनकोपरशारघुनंदनसीतहिलैपगुधारो ॥१८॥ दोहा ॥ प्रतिउत्तरदूतहिदियो, यहकहिश्रीरघुनाथ ॥ कहियोरावणहोहिं जब, मंदोरिकेसाथ ॥ १९ ॥ रावण-संयुताछंद ॥ कहिधौं बिलंबकहाभयो । रघुनाथपैजबतूगयो ॥ कहिभांतितूअवलो-कियो । कहुतोहिंउत्तरकादियो ॥ २० ॥

टी०-सीताको हरिकै तुमको दुख दीन्हों अथवा सीताहीको भारी दुख दीन्हों पशुराम तौ धनुषबाण दियो है इहां रावण परशा माग्यो तहां या जान्यो कि रावण सुन्यौ है कि रामचंद्र परशुरामको हथियार छोरि लीन्हों है औ परशुरामको मुख्य हथियार परशाही है तासों परशा जान्यों ॥ १८ ॥ रामचंद्र मंदोदरीकी बुद्धिकी स्तुति बिभीषणसों सुन्यौ है तालिये मंदोदरीके साथ कह्यो है अर्थ जो मंदोदरी इन बचननको सुनि है तो समय बिचारि ग्लानि दै रावणको लरिबेको पठाइ है अथवा जा मंदोदरी सहित रावण दुख पावै अथवा कुंभकर्णादिके मरेसों रावण भीत ह्वै संधिके लिये दूत पठायो है ऐसा न होइ कि आपही शरणमों चलि आवै जो हमको शरणागत रक्षकत्वधर्म प्रतिपालन करि रावणको रक्षतही बनै तालिये जो मंदोदरी इन बचनको सुनि है तौ समय बिचारि ग्लानि दै लरिबेहीके लिये पठाइ है संधिके लिये ना पठाइ है ॥१९॥२०॥

मू०-दूत-दंडक ॥ भूतंलकेइंद्रभूमिबैठेहुतेरामचंद्रमारिचक-नकमृगछालहिबिछायेजू । कुंभहरकुंभकर्णनाशाहरगोदशीश चरणअकंपअक्षअरिउरलायेजू । देवांतकनारांतकत्यौंमुसक्यातबिभीषणबैनतनकानरूषबायेजू । मेघनादमकराक्षमहोदर-प्राण हरबाणत्योंबिलोकतपरमसुखपायेजू ॥ २१ ॥ रामसंदे-शबिजयछंद ॥ भूमिदईभुवदेवनकोभृगुनंदनभूपनसोंबरलैकै। वामन स्वर्गदियोमघवैसोबलीबलिबांधिपतालपठैकै । संधि-

कीबातनको प्रतिउत्तरआपुनहींकहिये हितकैकै । दीन्हीं है लंकबिभीषणको अबदेहिंकहांतुमकोयहदैकै ॥ २२ ॥ मंदोदरी-मालिनीछंद ॥ तबसबकहिहारेरामकोदूतआयो । अबसमुझिपरीजोपुत्रभैया जुझायो ॥ दशमुखसुखजीजैरामसोंहौं लरोंयों ॥ हरिहरसबहारेदेबिदुर्गालरीज्यों ॥ २३ ॥

टी०—रावण पूंछेउ कि केहिभांति तू रामचंद्रको देख्यो है ताको उत्तर यामें दियो है कुंभहर औ कुंभकर्ण नाशाहर सुग्रीव अकंप औ अक्षके अरि (हनुमान शत्रु हैं सत्रहें प्रकाशमें कह्यो है कि ॥ जिते अकंपादि बलिष्ठ भारे संग्राममें अंगद वीर मारे ॥ यामें विरोध होत है तासों या जनायो दूसरो अकंप रह्यो ताको हनुमान मारचो है यथा वाल्मीकीये" स चतुर्दशभिर्बाणैर्निशितैर्देहदारणैः। निर्बिभेद महावीरो हनुमंतमकंपनः । ततोवृक्षसमुत्पाटच कृत्वा वेगमनुत्तमम् । शिरस्यभिजघानाशु राक्षसेन्द्रमकंपनम् । यथा पद्मपुराणे ॥ जघान हनुमान्भूयो चतुर्थेहन्यकंपनम् ।" औ देवांतक औ नरांतकके अंतक [अंगद]औ मेघ नाद औ मकराक्ष महोदरके प्राणहार (लक्ष्मण) यह अति निर्भय समय स्वरूप जानौ ॥२१॥ बर कहे बलसों या प्रकार अवतार धरि धरि हम तीनों लोक बांटि दियो अब तुमको यह जो परशा है ताको दैकै कहा कौन स्थान देहिं जामें तुम रहौ परशुरामकी कथा कहि या जनायो कि जिन सहस्रार्जुन तुम्हें बांधि राख्यो तिनको हम क्षणमें मारचो बामनकी कथा कहि या जनायो कि जिन बलिकी दासिन पालसों तुम्हें गहिकै निकारि दीन्हों तिनको बांधिकै हम पाताल पठायो तैसे तुमहूंको मारि बिभीषणको लंका देहैं ॥ २२ ॥ शुम्भ निशुम्भादिके युद्धमें हरिहरादि सब हारि गये हैं तब दुर्गा लरिकै मारचो है यह कथा मार्कंडेयपुराणमें प्रसिद्ध है ॥ २३ ॥

मू०—रावण ॥ छलकरिपठयोतोपावतोजोकुठारै ॥ रघुपति वपुराकोधावतोसिंधुपारै ॥ इतिसुरपतिभर्ताविष्णुमायाविलासी । सुनहिंसुसुखितोकोल्यावतोलक्षिदासी ॥ २४ ॥ चामरछंद ॥ प्रौढरूढिकोसमूढगूढगेहमेंगयो । शुक्रमंत्रशोधि शोधिहोमकोजहींभयो ॥ वायुपुत्रबालिपुत्रजामवंतधाइयो ।

लंकमेंनिशंकअंकलंकनाथपाइयो ॥ २५ ॥ मत्तदंतिपंक्तिबा-
जिराजिछोरिकैदई । भांतिभांतिपक्षिरानिभाजिभाजिकैगई ॥
आसनेबिछावनेबितानतानतूरियो। यत्रतत्रछत्रचारुचौंरचारु-
चूरियो ॥ भुजंगप्रयातछन्द ॥ भगीदेखिकैशंकिलंकेशबाला।
दुरीदौरिमंदोदरीचित्रशाला ॥ तहांदौरिगोबालिकोपूतफूल्यो।
सबैचित्रकीपुत्रिकादेखिभूल्यो ॥ २६ ॥

टी०–सिंधुके पारै धावतो कहे भागि जातो सुरपति (इंद्र) तिनके भर्त्ता रक्षक औ मायाके विलासी जे विष्णु हैं तिनको हति कहे मारिकै तोकों लक्षि जो लक्ष्मी हैं ताको दासी ल्यावतो यासों या जनायो कि रामचंद्र जो करत हैं सो सब परशाहीके बलसों करत हैं यामें रामचंद्रकी शक्ति कछु नहीं है । ॥ २४ ॥ प्रौढ जो धृष्टता है ताकी रूढ़ि कहे परिपक्वता ताको समूढ कहे समूह अर्थ अति धृष्ट ऐसा जो रावण है सो यज्ञ करिबेको गूढगेहमों जात भयो मंदोदरीकी ऐसी कटु बातैं सुनि कछू लाज न कियो तासों अतिधृष्ट कह्यो ॥ "समूढःपुंजिते भुग्ने इति मेदिनी" ॥ सो शुक्रके मंत्रको शोधि कहे शुद्धोच्चार करिकै होमके अर्थ जब उद्यत भयो तब निशंक कहे शंकाते रहित है अंक (हृदय) जिनको ऐसे जे वायुपुत्रादि हैं ते धावत भये तब लंकनाथके जे अंक कहे राजचिह्न हैं छत्र चामरादि तिन्हैं पायो कहे देख्यो तब जान्यो कि याही मंदिरमें रावण ह्वै है तालिये या प्रकारको उपद्रव करचो सो आगे कहत हैं । ॥ २५ ॥ तान (डोरी) ॥ २६ ॥

मू०–गहैदौरिजाकोतजैताकिताको । तजैजादिशाकोभ-
जैबामताको ॥ भलीकैनिहारीसबैचित्रसारी । लहैसुंदरीको
दरीकोबिहारी ॥ २७ ॥ तजैदृष्टिकोचित्रकीसृष्टिधन्या। हँसी-
एकताकोतहींदेवकन्या ॥ तहींहासहीदेवकन्यादिखाई । गही
शंकिकैलंकरानीबताई ॥ २८ ॥

टी०–फूल्यो कहे आनन्दित जा पुतरीको अंगद दौरिकै गहत है ताको पुतरी जानि तजत है औ अंगद जा दिशाको तजत हैं ता दिशाको बाम कहे मंदोदरी भजति है अथवा जा दिशाको अर्थ जा दिशाकी पुतरिनको अंगद गहत

हैं ता दिशामें अंगदको ताकिकै देखिकै ता दिशाको तजै कहे छोडति है अर्थ ता दिशाकी पुतरिनको छोडाति है औ जा दिशाको अंगद तजत हैं ता दिशाको मंदोदरी भजै कहे प्राप्त होतिहै अथवा भागतिहै दरी [कन्दरा] ॥ २७ ॥ धन्या कहे अति निपुण जो चित्रकी सृष्टि है दृष्टिको तजै कहे त्याग कराति है अर्थ मंदोदरी पास दृष्टि नहीं जान देति मंदोदरीको नहीं देखन देति इति अथवा धन्या जो चित्रकी सृष्टिहै तामें मंदोदरीकी दृष्टिको तजै कहे त्याग करतिहै अर्थ अपने पास नहीं आवन देति यह मंदोदरीहै ये तौ ज्ञानदृष्टिमें नहीं होत इति भावार्थः॥ या प्रकार कौतुक देखिकै अंगदको एक देवकन्या हँसत भई सो हांसीसों देवकन्या अंगदको देखाइ कहे देखि परी तब ताहीको मंदोदरी जानि अंगद गही तब शंकिकै ताने लंकरानि जो मंदोदरी है ताको बतायो कहूं तहीं शंकिके पाठहै ॥२८॥

मू०—सुआनीगहेकेशलंकेशरानी। तमश्रीमनोंसूरशोभानिशानी ॥ गहेबाहँऐंचेंचहूंओर ताको । मनोहंसलीन्हेमृणाली लताको ॥ २९ ॥ छुटीकंठमालालुरैंहारटूटे । खसैंफूलफूले लसैं केशछूटे ॥ फटीकंचुकीकिंकिणीचारुछूटी । पुरीकामकीसीमनोरुद्रलूटी ॥ ३० ॥ बिनाकंचुकीस्वच्छबक्षोजराजैं। किधौंसांचहूश्रीफलैशोभसाजैं ॥ किधौंस्वर्णकेकुंभलावण्य पूरे। बशीकर्णकेचूर्णसंपूर्णपूरे ॥ ३१ ॥ मनोइष्टदेवैसदाइष्टहीके। किधौंगुच्छद्वैकामसंजीवनीके ॥ किधौंचित्तचौगान केमूलसोहैं। हियेहेमकेहालगोलाबिमोहैं ॥ ३२ ॥ सुनीलंक रानीनकीदीनबानी । तहींछांडिदीन्होमहामौनमानी ॥ उठ्यो सोगदालैयदालंकवासी । गयेभागिकैसर्बशाखाबिलासी ॥ ॥ ३३॥ मंदोदरी—दोहा ॥ सीतहिदीन्होदुखवृथा, सांचोदेखो आजु ॥ करैजोजैसीत्योंलहै, कहारंककहँराजु॥ ३४ ॥

टी०—सूर्यकी शोभानसों सानी मानों तमश्री [अन्धकारकीश्री] शोभा है तमश्रीसम वार हैं सूरशोभासम सिंदूर है इहां सिंदूर नहीं कह्यो सो उपमानते उपमेयको ग्रहण कियो अथवा सूरशोभासम अंगद हैं मृणाली लतासम बाहु हैं

हंससम अंगदादि बानर हैं ॥ २९ ॥ ३० ॥ लावण्य [सुन्दरता] ॥ ३१ ॥ सदा दुष्ट जो स्वामी रावण है ताके इष्ट देवै हैं अर्थ जैसे सबप्राणी इष्टदेवको हृदयमों बसाये रहत हैं तैसे रावणके मनमों सदा बसत हैं गुच्छ पुंष्प गुच्छ कामसंजीवनी लतासम मंदोदरीहै औ कि चित्त जे मन हैं तिनको जो चौगान खेल है ताको मूल कहे जर अर्थ कारण जो मंदोदरीको हियो कहे वक्षःस्थल है तामें शोहत है कहे सुवर्णके हालगोला कहे गेंद है अर्थ जैसे हालगोलानको खेलनहार आपनी आपनी ओर खैंचत हैं तैसे देखनहारनके चित्त इनकुचनको आपनी आपनी ओर खैंचत हैं मूल कहि या जनायो कि मनुष्य चौगान खेल खेलत हैं चित्त नहीं खेलत सो याहीते चित्तनको चौगान खेल नयो उत्पन्न भयो है सो जानो अथवा चित्त चौगानके मूल हालगोलानहींको विशेषण है चौगान खेल प्रसिद्ध है ॥ ३२ ॥ मौन ह्वै मन्त्रको जो जपत है ताको छोडि दीन्हों मानी कहे गर्वी यदा कहे जब ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

मू०–रावण–बिजयछन्द ॥ कोबपुराजोमिल्योहैबिभीषण हैकुलदूषणजीवैगोकौलौं । कुंभकरन्नमरयोमघवारिपुतौरीक-हानढरौंयमसौलौं । श्रीरघुनाथकेगातनिसुंदरिजानैनतूकुश-लीतनुतौलौं । शालसबैदिगपालनकेकररावणकेकरवालहैजौ-लौं ॥ ३५ ॥ चामरछंद ॥ रावणैंचलेचलेतेधामधामतेसबै । साजिसाजिसाजसूरगाजिगाजिकैतबै ॥ दीहदुंदुभीअपारभां-तिभांतिबाजहीं । युद्धभूमिमध्यक्रुद्धमत्तदंतिराजहीं ॥ ३६ ॥ चंचरीछंद ॥ इन्द्रश्रीरघुनाथकोरथहीनभूतलदेखिकै । बेगि-सारथिसोंकहेउरथजाहिलैसुबिशेषिकै ॥ तूणअक्षयबाणस्वच्छ अभेदलैतनत्राणको । आइयोरणभूमिमेंकरिअप्रमेयप्रणाम को ॥ ३७ ॥ कोटिभांतिनपौनतेमनतेमहालघुतालसै । बैठि कैध्वजअग्रश्रीहनुमंतअंतकज्योंहँसै ॥ रामचन्द्रप्रदक्षिणाक-रिदक्षह्वैजबहींचढे । पुष्पबर्षिबजायदुंदुभिदेवताबहुधाबढे ३८॥

टी०–तनु कहे रंचकहू कुशली ना जानै सरस्वती उक्तार्थाः ॥ हे सुन्दरि ! श्रीरघुनाथके गातनि करिकै मेरे तनको तू कुशली न जानै अर्थ मोकों रामचन्द्र

मारि हैं ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ तूण कहे तर्कस अक्षय कहे जाते बाण ना चुकैं ॥ ॥ ३७ ॥ लघुता शीघ्रता हनूमान ध्वज अग्रमें यासों चढे कि यह रथ कछू राक्षसन माया मा कियो होइ वढे [फूले] अर्थ आनंदित भये ॥ ३८ ॥

मू०—रामकोरथमध्यदेखतक्रोधरावणकेबढ्यो । बीसबाहुनकीशरावलिव्योमभूतलसोंमढ्यो ॥ शैलह्वैसिकतागयेसब दृष्टिकेबलसंहरे । ऋक्षबानरभेदितत्क्षणलक्षधाक्षतनाकरे ॥ ॥ ३९ ॥ सुंदरीछंद ॥ बाणनसाथविधेसबबानर । जायपरेमलयाचलकोधर ॥ सूरजमंडलमेंएकरोवत । एकअकाशनदी मुखधोवत ॥ ४० ॥ एकगयेयमलोकसहेदुख । एककहैंभव भूतनसोंरुख ॥ एकतिसागरमांझमरेमरि । एकगयेबड़वानलमेंजरि ॥ ४१ ॥ मोटनकछंद ॥ श्रीलक्ष्मणकोपकरयोजबहीं । छोड्योशरपावककोतबहीं ॥ जारयोशरपंजरछारकरयो । नैऋत्यनकोअतिचित्तडरयो ॥ ४२॥ दैरैहनुमंतबली बलसों । लैअंगदसंगसबैदलसों ॥ मानोंगिरिराजतजेडरको घेरैचहुंओरपुरंदरको ॥ ४३ ॥

टी०—सिकता [बारू] दृष्टिके बल कहे पराक्रम अर्थ अति बाणांधकारमों काहूको कछू देखि नहीं परत क्षतना कहे मधुमक्षिकादिकनके छाता जामें मधु रहत है ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ नैऋत्य [राक्षस] ॥ ४२ ॥ पुरंदर इन्द्र सम रावण है गिरिराजनके सदृश अंगदादि हैं ॥ ४३ ॥

मू०—हरिच्छंद ॥ अंगदरणअंगनसबअंगनमुरझाइकै । ऋक्षपतिहिअक्षरिपुहिलक्षगतिबुझाइकै ॥ बानरगणबाणनसन केशवजबहींमुरयो । रावणदुखदावनजगपावनसमुहेजुरयो ॥ ॥ ४४ ॥ ब्रह्मरूपकछंद ॥ इंद्रजीतजीतआनिरोंकियोसुबाणतानि । छोंडिदीनवीरबानिकानकेप्रमानआनि ॥ शिवप्रताप काढिचापचर्मबर्ममर्मछेदि । जातभोरसातलैअशेषकंठमाल

भेदि ॥ ४५ ॥ दंडकछंद ॥ सूरजमुसलनीलपट्टिशपरिघनल जामवंतअसिहनूतोमरप्रहारेहैं । परशासुखेनकुंतकेशरीगवय शूलविभीषणगदागजभिंदिपालतारेहैं । मोगराद्विविदतीरकट-राकुमुदनेजाअंगदशिलागवाक्षविटपाबिदारे हैं । अंकुशशरभ चक्रदधिमुखशेषशक्तिबाणातिनरावणश्रीरामचंद्रमारेहैं ॥४६॥ दोहा ॥ द्वैभुजश्रीरघुनाथसों, बिरचेयुद्धबिलास, बाहुअठारह यूथपनि, मारेकेशोदास ॥ ४७ ॥

टी०-रण अंगन कहे रणभूमिके मध्यमें अंगदको सब अंगनसों मुरझाइकै कहे मूर्च्छित करिकै अर्थ सर्वांग शिथिल करिकै लक्ष कहे निशानकी गतिसों बुझाइकै कहे समुझाइकै अर्थ निशानासम बेधिकै औ और जो बानरगणनसों जब मुरे तौ न रामचन्द्रके समुहें जुरयो अर्थ लरन लग्यो ॥ ४४ ॥ बीरबानि कहे बीरस्वभावसों चर्म [ढाल] बर्म [बखतर] नर्म [मर्मस्थल] ॥ ४५ ॥ सूरज [सुग्रीव] शेष [लक्ष्मण] ॥ ४६ ॥ श्रीरामचन्द्रसों धनुर्बाणसों लरत है तासों एक हाथ बाणमें एक धनुषमें लग्यो है तासों द्वै भुज जानों ॥ ४७ ॥

मू०-गंगोदकछंद ॥ युद्धजोईजहांभांतिजैसीकरैताहिता हीदिशारोंकिराखैतहीं । आपनेअस्त्रलैशस्त्रकाढ़ैसबैताहिकेहू कहूंघावलागैनहीं ॥ दौरिसौमित्रलैबाणकोदंडज्योंखंडखंडी ध्वजाधीरछत्रावली । शैलशृंगावलीछोडिमानोंउडीएकहीबेर कैहंसवंशावली ॥ ४८ ॥ त्रिभंगीछंद ॥ लक्ष्मणशुभलक्षण बुद्धिबिचक्षणरावणसोंरिसछोडिदई । बहुबाणनिछंडैजेशिर खंडैतेफिरखंडैशोभनई ॥ यद्यपिनरपंडितगुणगणमंडितरिपु बलखंडितभूलिरहे । तजिमनबचकायकसूरसहायकरघुनाय-कसोंबचनकहे ॥ ४९ ॥ ठाढ़ोरणगाजतकेहुनभाजततनमन लाजतसबलायक । सुनिश्रीरघुनंदनमुनिजनबंदनदुष्टनिकंद-

नसुखदायक॥ अबटरैनटारचोमरैनमारचोहौंहठिहारचोधरि-
शायक । रावणनाँहिमारतदेवपुकारतह्वैअतिआरतजग-
नायक ॥ ५० ॥

टी०—ज्यों धनुषगुण शैलशृंग सदृश रावण शिर हैं हंशवंशावलीसदृश श्वेत छत्र हैं ॥ ४८ ॥ रिपुबल करिकै खंडित हैं रणपांडित्यादि जाके ऐसे जे लक्ष्मण हैं ते भूलि रहे कहे आश्चर्ययुक्त ह्वै रहे हैं तासों मनसा, वाचा, कर्मणा, रावणसों लरिवो तजिकै ॥ ४९ ॥ मैं तन औ मनसों लज्जित होत हौं ॥ ५० ॥

मू०—राम—छप्पै ॥ जेहिंशरमधुमदमरदिमहासुरमर्दनकी-
न्हेंउ। मारेहुकर्कशनर्कशंखरुतिशंखजोलीन्हेंउ ॥निष्कंटकसु-
रकटककरचोकैटभवपुखंड्यो । खरदूषणत्रिशिराकबंधतरुखं-
डविहंड्यो ॥ कुंभकर्णज्यहिसंहरचोपलनप्रतिज्ञातेटरौं । तेहि
बाणप्राणदशकंठकेकंठदशौंखंडितकरौं ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ रघु-
पतिपठयोआसुही,असुहरबुद्धिनिधान॥ दशशिरदशहूदिशन-
को, बलिदैआयोबान ॥ ५२ ॥ मदनमनोरमाछंद॥ भुवभार-
हिसंयुतराकसकोगणजाइरसातलमैंअनुराग्यो । जगमैंजयश-
ब्दसमेतिहिकेशवराजबिभीषणकेशिरजाग्यो । यमदानवनंदि-
निकेसुखसोंमिलिकैसियकेहियकोदुखभाग्यो । सुरदुंदुभिसी
सँगजाशररामकोरावणकोशिरसाथहिलाग्यो ॥ ५३॥ मंदोद-
री-विजयछंद ॥ जीतिलियेदिगपालशचीकेउसासनदेवनदीस-
बसूकी । बासरहूनिशिदेवनकीनरदेवनकीरहेसंपतिहूकी । ती-
निहुंलोकनकीतरुणीनकीबारीबंधीहुतीदंडदुहूकी। सेवतश्वा-
नशृगालसोरावणसोवतसेजपरेअबभूकी ॥ ५४ ॥

टी०—कर्कश (कठोर) तरुखंड [सप्तताल] ॥ ५१ ॥ असुहर [प्राणहर] ॥ ५२ ॥ मयदानवनंदिनि [मंदोदरी] [सहोक्ति अलंकार है]॥ ५३ ॥ सदा रावणके भयसों स्वर्गसों भागे जे इन्द्र हैं तिनके विरहसों शची [इंद्राणीके] जे उष्ण उसासहैं तिनसों देवनदी [आकाशगंगा] सब सूकी कहे सूखि गई ॥५४॥

मू०-राम-तारकछंद ॥ अबजाहुबिभीषणरावणलैकै । सकलत्रसबंधुक्रियासबकैकै ॥ जनसेवकसम्पतिकोशसँभारो । मयनंदिनिकेसिगरेदुखटारो ॥ ५५ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकाया-मिन्द्रजिँद्विरचितायांरावणबधवर्णनंनामैकोनविंशः प्रकाशः ॥१९॥

टी०-जनसेवक कहे सेवक जन अथवा जन [बंधुजन] सेवक [चाकर] संपत्ति अश्व,गज, वस्त्रादि कोष खजाना ॥ ५५ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकाया मेकोनविंशः प्रकाशः ॥ १९ ॥

मू०-दोहा ॥ या बीसयेंप्रकाशमैं, सीतामिलनविशेषि ॥ ब्रह्मादिककीस्तुतिगमन, अवधपुरीकोलेषि ॥ १ ॥ प्रागवरणि अरुवाटिका, भरद्वाजकीजानि ॥ ऋषिरघुनाथमिलापकहि, पूजाकरिसुखमानि ॥ २ ॥ श्रीराम-तारकछंद ॥ जयजायकहो हनुमंतहमारो । सुखदेवहुदीरघदुःखबिदारो ॥ सबभूषणभूषितकैशुभगीता । हमकोतुमबेगिदिखाबहुसीता ॥ ३ ॥ हनुमंतगयेतहहींजहँसीता । तबजायकहीजयकीसबगीता ॥ पग लागिकह्योजननीपगुधारो । मगचाहतहैंरघुनाथतिहारो॥४॥ सिगरेतनभूषणभूषितकीने । धरिकैकुसुमावलिअंगनवीने ॥ द्विजदेवनिबंदिपढ़ीशुभगीता । तबपावकअंकचलीचढिसीता॥ ॥ ५ ॥ भजंगप्रयातछंद ॥ सबस्त्रासबैअंगशृंगारसोहैं । विलोकैरमादेवदेवीबिमोहैं ॥ पिताअंकज्योंधन्यकाशुभ्रगीता । लसैअग्निकेअंकत्योंशुद्धसीता ॥ ६ ॥

टी०-॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ सीताको बंदि कहे बंदना करि कै देवतन, द्विज ब्राह्मण, समान शुभगीता कहे मंगलपाठ पढ्यौ अर्थ जैसे गमन समयमों

ब्राह्मण मंगलपाठ पढत हैं तैसे सीताजूको रामचन्द्रके पास गमनमें देव वढत भये अथवा द्विज औ देवन औ वंदीजन शुभगीता पढत भये औ जो अग्निके अंकमें बैठिकै सीताआई सो लोकके देखाइबेको तौ शुद्धताकी साक्षि दियो औ जो सीताको देह कनककुरंगके आगमनमें रामचन्द्र अग्निको सौंप्यौ रहै ता देहकी थातीसम रामचन्द्रके दीवेको अग्नि ल्याये हैं सो जानौ ॥ ५ ॥ ६ ॥

मू०-महादेवकेनेत्रकीपुत्रिकासी । किसंग्रामकीभूमिमेंचंडिकासी ॥ मनोरत्नसिंहासनस्थाशचीहै । किधौंरागिनीरागपूरेरचीहै ॥ ७ ॥ गिरापूरमेंहैपयोदेवतासी । किधौंकंजकीमंजुशोभाप्रकाशी ॥ किधौंपद्महीमेंसिफाकंदसोहै । किधौंपद्मकेकोषपद्माविमोहै ॥ ८ ॥ किसिन्दूरशैलाग्रमेंसिद्धकन्या । किधौंपद्मिनीसूरसंयुक्तधन्या ॥ सरोचासनाहैमनोचारुबानी । जपापुष्पकेबीचबैठीभवानी ॥ ९ ॥ मनोऔषधीवृन्दमेंरोहिणीसी । किदिग्दाहमेंदेखियेयोगिनीसी ॥ धरापुत्रज्योंस्वर्णमालाप्रकाशै ॥ मनोंज्योतिसीतच्छकाभोगभासै ॥ १० ॥ सुरेन्द्रबज्राछंद ॥ आसावरीप्राणिककुंभशोभै अशोकलग्नाबनदेवतासी॥ पालाशमालाकुसुमालिमध्येवसन्तलक्ष्मीशुभलक्षणासी ॥ आरक्तपत्राशुभचित्रपुत्रीमनोबिराजैअतिचारुवेषा॥ संपूर्णसिन्दूरप्रभावसकैधौंगणेशभालस्थलचंद्ररेखा ॥ ११ ॥

टी०-जहां केवल रत्नपद पाये तहां अरुणही रत्नको बोध होत है यह कवि नियम है रागदीपकादि अथवा अनुराग प्रेम इति ॥ ७ ॥ गिरा सरस्वतीके पूर कहे जलसमूहमेंकी पयो देवता कहे जल देवता है औ कि गिरापूर में कंजकी शोभा है अर्थ कि कमल है सरस्वतीको जल अरुण प्रसिद्ध है ॥ "पूरो जलसमूहे स्यादिति मेदिनी" ॥ ८ ॥ सूर जे सूर्य हैं तिनसों संयुक्त मिली पद्मिनी कमलिनी है सूरसम अग्नि है कमलिनी सम सीता हैं इहां अरुण सरोज जानौ ॥ ॥ ९ ॥ चन्द्रमा औषधीश है औ रोहिणी चंद्रमाकी स्त्री है ता संबंधसों जानों औषधिनको अग्निसम ज्वलन प्रसिद्ध है धरापुत्र मंगलके जैसे स्वर्णमाला प्रकाशै कहे शोभै, धरापुत्र सम अग्नि हैं स्वर्णमाला सम सीता हैं भोगिफण तक्षकको

अरुणवर्ण प्रसिद्ध है ॥ १० ॥ आसावरी रागिनी अशोक वृक्षमें लग्ना कहे संलग्न स्थित इति जो वनदेवता हैं ताके सम हैं अशोक वृक्षको अरुणवर्ण है ॥ ११ ॥

मू०-विजयछंद ॥ हैमणिदर्पणमेंप्रतिबिंबकिप्रीतिहियेंअनुरक्तअभीता। पुंजप्रतापमेंकीरतिसीतपतेजनमेंमनोंसिद्धविनीता। ज्योंरघुनाथतिहारियेभक्तिलसैउरकेशवकेशुभगीता। त्यों अवलोकियआनँदकंदहुताशनमध्यसुवासनसीता॥१२दोहा॥ इन्द्रबरुणयमासिद्धसब,धर्मसहितधनपाल॥ब्रह्मरुद्रलैदशरथहि, आयगयेतेहिकाल ॥१३॥ अग्नि-बसंततिलकाछंद॥ श्री रामचन्द्रयहसंततशुद्धसीता। ब्रह्मादिदेवसबगावतशुभ्रगीता॥ ह्वैजैकृपालगहिजैजनकात्मजाया। योगीशईशतुमहौयहयोगमाया॥ १४ ॥श्रीरामचन्द्रहँसिअंकलगाइलीन्हों। संसारसाक्षिशुभपावकआनिदीन्हों । देवानदुंदुभिबजायसुगीतगाये। त्रैलोक्यलोचनचकोरनिचित्रभाये ॥ १५ ॥

टी०-कि अनुरक्त कहे अनुरागी हृदयमों अभीता (निश्चला) प्रीति है विनीता (उत्तमा) ॥१२॥१३॥ योगीश जे महादेव हैं तिनके ईश कहे स्वामी तुम हौ अर्थ विष्णु हौ औ यह जो सीताहै सो योगमाया [लक्ष्मी] है पुनरुक्ति,'नित्यं वक्षसि योगं प्राप्नोतीति योगमाया लक्ष्मीः' अर्थ विष्णुके वक्षस्थलमें सदा युक्त रहति है तासों योगमाया नाम है योगमाया कहि या जनायो कि यह तौ सदा तुम्हारे वक्षस्थलमें प्राप्त रहति है कहूं रंचहू भिन्न नहीं होति तासों अदोष है ॥ १४ ॥ श्रीरामचन्द्र कह्यो है तासों त्रैलोक्य लोचन चकोर कह्यो ॥ १५ ॥

मू०-ब्रह्मा-दोधकछंद ॥ रामसदातुमअन्तर्यामी। लोकचतुर्दशकेअभिरामी॥निर्गुणएकतुम्हैंजगजानै। एकसदागुणवन्त बखानै ॥ १६ ॥ ज्योतिजगैजगमध्यतिहारी। जाइकहीनसुनी ननिहारी॥कोउकहैपरिमाननताको। आदिनअन्तनरूपनजाको॥१७॥ तारकछंद ॥ तुमहौगुणरूपगुणीतुमठाये। तुमए

कतेरूपअनेकबनाये ॥ एकहैजोरजोगुणरूपतिहारो। त्यहिंसृ-
ष्टिरचीविधिनामबिहारो ॥१८॥ गुणसत्त्वधरेतुमरक्षतजाको ।
अबविष्णुकहैंसिगरेजगताको ॥ तुमहींजगरुद्रस्वरूपसँहारो ।
कहियेतिनमध्यतमोगुणभारो ॥ १९ ॥

टी०-अन्तर्यामी कहे सबके अन्तरमें व्याप्त रहतहौ अभिरामी कहे रमता अर्थ चौदहौं लोकमें रमत हौ या जगके एकै प्राणी (वेदांती) तुमको निर्गुण कहे रक्ष, रज सत्त्व तमोगुण तीनों करिकै रहित ज्योतिरूप जानत हैं औ एकै सदा रज सत्त्व तमोगुण युक्त ब्रह्मादिरूप वखानत हैं ॥ १६ ॥ यामें निर्गुण रूप कहतहैं कहो नहिं जाइ इत्यादिसों या जनायो जहां इन्द्रिनको गमन नहीं ॥ १७ ॥ अब सगुण कहत हैं सत्त्वादि तीनों गुणरूप तुमही हौ औ गुण ब्रह्मा-दिरूपतुमहीं हौ रजोगुणरूप कहे रजोगुणयुक्त रूप ॥ १८ ॥ जाको कहे जा सृष्टिको ॥ १९ ॥

मू०-तुमहींजगहौजगहैतुमहींमैं । तुमहींबिरचीमर्य्याददु-
नीमैं ॥ मर्य्यादहिछोंड़तजानतजाको । तबहींअवतारधरोतुम
ताको॥ २० ॥तुमहींधरकच्छपवेषधरेजू । तुममीनह्वैवेदनको
उधरेजू ॥ तुमहींजगयज्ञबराहभयेजू ।क्षितिछीनिलईहिरण्या-
क्षहयेजू ॥ २१ ॥तुमहींनरसिंहकोरूपसँवारचो । प्रहलादको
दीरघदुःखबिदारचो ॥ तुमहींबलिबावनवेषछल्योजू। भृगुनंद-
नह्वैक्षितिछत्रदल्योजू ॥ २२ ॥ तुमहींयहरावणदुष्टसँहारचो ।
धरणीमहँबूडतधर्म्मउबारचो । तुमहींपुनिकृष्णकोरूपधरौगे।
हतिदुष्टनकोभुवभारहरौगे ॥ २३ ॥ तुमबौद्धस्वरूपदयाहि
धरौगे । पुनिकल्किह्वैम्लेच्छसमूहहरौगे ॥ यहिभाँतिअनेक
स्वरूपतिहारे । अपनीमर्य्यादकेकार्य्यसँवारे॥ २४ ॥महादेव-
पङ्कजबाटिकाछन्द ॥ श्रीरघुवरतुमहौजगनायक । देखहुद-

शरथकोसुखदायक ॥ सोदरसहितपितापदपावन । वंदनकियतबहींमनभावन ॥ २५ ॥

टी०--विराटरूप सो जग तुमहीं हौ और यह जग तुमहींमें बसतहै "यथा कविप्रियायां, शेष धरे धरणी धरणी विधि केशव जीव रचे जग जेते । चौदह लोक समेत तिन्हैं हरिके प्रति रोमनमें चितये ते"॥ ताको कहे ताके बधको ॥२०॥ धर कहे पर्वत अर्थ समुद्र मथन--समय मंदराचलको कच्छरूप ह्वै पृष्ठमें धारण कियो ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ अनेक और स्वरूप व्यासादि जानो ॥ २४ ॥ २५ ॥

मू०—दशरथ—निशिपालिकाछंद ॥ रामसुतधर्म्मयुतसीयमनमानिये । बन्धुजनमातुगनप्रानसमजानिये ॥ ईशसुरईशजगदीशसमदेखिये । रामकहँलक्ष्मणविशेषप्रभुलेखिये ॥२६॥ रामचन्द्र—चञ्चलाछन्द ॥ जूझिजूझिकैगयेबानरालिऋक्षराजि । कुम्भकरणलोकहरणभक्षियोजेगाजिगाजि ॥ रूपरेखस्योविशेषिजीउठैंकरौसोआज । आनिपाइँलागियोतिन्हैंसमेतदेवराज ॥ २७ ॥ दोहा॥ बानरराक्षसऋक्षसब, मित्रकलत्रसमेत ॥ पुष्पकचढ़िरघुनाथजू, चलेअवधिकेहेत ॥ २८ ॥

टी०—हे राम ! सुत ! सीताको धर्म्मयुत मनमें मानों अर्थ सीता निर्दोष हैं जो संदेह करो कि हम ग्रहण करैं हमारे बंधु आदि ग्रहजन कैसे ग्रहण करिहैं तौ बंधुजन भरतादि औ मातुगण कौशल्यादिकनकी सम जानों जैसे कोऊ प्राणनका त्याग आपुसों नहीं करत तैसे सीताको त्याग वे ना करिहैं या प्रकार रामचन्द्रको शिक्षा दै लक्ष्मणसों कहत हैं कि हे लक्ष्मण ! रामचन्द्रको ईश (महादेव) सुरईश (विष्णु) जगदीश (ब्रह्मा) के सम देखौ कहे जानों इनको विशेषिकै प्रभु स्वामी लेखौ अर्थ स्वामी सम इनकी सेवा करौ बंधुसम न जानों इति भावार्थः ॥ २६ ॥ रूप (स्वरूप) रेख (चिह्न) तिनसों स्यो कहे सहित जो उठें सो उपाय करौ या प्रकार रामचन्द्र देवराज जे इंद्र हैं तिनसों कह्यो सो रामचन्द्रकी आज्ञासों संजीवनी आदि उपायसों सबको जियाइकै रामचन्द्रके आइ पाइँ लगे ॥ २७ ॥ भरतकी प्रतिज्ञा है कि जो चौदह वर्षमें रामचन्द्र ना ऐहैं तौ हम नहीं जीहैं ता अवधि कहे मर्यादाके लिये पुष्पकमें चढि अतिशीघ्र अथवा अवधि चले (अयोध्या) ॥ २८ ॥

मू०-चञ्चरीछन्द ॥ सेतुसीतहिशोभनादरशाइपञ्चबटी गये। पाइँलागिअगस्त्यकेपुनिअत्रियैतेविदाभये ॥ चित्रकूट बिलोकिकैतबहीप्रयागबिलोकियो । भरद्वाजबसैंजहांजिनते नपावनहैबियो ॥ २९ ॥ राम-तारकछन्द ॥ चिलकैद्युति सूक्षमशोभतिबारू । तनुह्वैजनुसेवतहैंसुरचारू ॥ प्रति बिम्बतदीपदिपैजलमाहीं । जनुज्वालमुखीनकेजालनहाहीं ॥ ॥३०॥ जलकीद्युतिपीतसितासितसोहै। चहुँपातकघातकरैयककोहै ॥ मदऐणमलैखसिकुंकमनीको । नृपभारतखण्डदियो जनुटीको ॥ ३१ ॥

टी०-वियोग कहे दूसरो ॥ २९ ॥ तनु कहे सूक्ष्म ॥ ३० एक कहे केवल जो बहुत पातक है ताके घात कहे नाश करैको कहे करिवेके अर्थ ऐणमद जो कस्तूरी है औ मलय [चंदन] औ कुंकुम [केशरिको] घसिकै भारतखंडरूपी जो नृप राजा है ताने मानों मारण तिलक दियो है जाको देखतही पातकनको नाश होत है औरों राजा शत्रुक नाश करिवेके मारण तिलक शिरमें देते हैं जाके देखतही शत्रु मरत हैं मारण मोहनोच्चाटनादि षटकर्मकी तिलकादि क्रिया मंत्रशास्त्रमों प्रसिद्ध है भारतखंडवासिनको पातक दरिद्रादि पीडा करतहै सोइ शत्रुता जानों ॥ ३१ ॥

मू०-लक्ष्मण-दंडक ॥ चतुरबदनपंचबदनषटबदनसहस बदनहूसहसगतिगाईहै ॥ सातलोकसातद्वीपसातहूरसातलनिगंगाजीकीशोभासबहीकोसुखदाईहै। यमुनाकोजलरह्योफैलिकैप्रवाहपरकेशोदासबीचबीचगिराकीगोराई है । शोभान शरीरपरकुंकुमविलेपनकोश्यामलदुकूलझीनझलकतिझाईहै॥ ॥ ३२ ॥ सुग्रीव-चंद्रकला ॥ भवसागरकीजनुसेतुउजागरसुंदरता सिगरीसबकी । तिहुँदेवनकीद्युतिसीदरशैगतिशोषैत्रिदोषनके रसकी ॥ कहिकेशववेदत्रयीमतिसीपरितापत्रयी-

तलकोमसकी । सबबंदैंत्रिकालत्रिलोकत्रिवेणिहिंकेतुत्रिविक्रमकेजसकी ॥ ३३ ॥

टी०-चतुरवदन [ब्रह्मा] पंचवदन [शिव] षटवदन [स्वामिकार्तिक] सहस्रवदन [शेष] तिनकरिकै सहसगति कहे सहस्र प्रकारसों गाई है अथवा सहसगति कहे सहस्रधारा सात लोक भू, अंतरिक्षादि, सात द्वीप जंबूद्वीपादि, सात रसातल अतल, बितलादि, ॥ ३२ ॥ सेतुसम जाके मग प्राणी भवसागर पार होत हैं तीनों देव ब्रह्मा, विष्णु, महेश. त्रिदोष बात, पित्त कफको जो रस कहे बल है ताकी गतिको शोषती है अर्थ कफ, पित्त, बात, दुःखद दोषकृत जो मृत्यु है तासों बचावति है ऐसी त्रिदेवनकी द्युतिहू है बेणीहू है वेदत्रयी ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामदेव, त्रयी, परिताप आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविकको तलको अधोभागको मसकी कहे दबायो है अर्थ पठायो है ऐसी वेद मतिहू बेणीहूहै त्रिविक्रम कहे बामनजू तीनि पैगसों तीनों लोक नाप्योहै तिन तीनि पादविक्षेपको त्रिरूप पताकाहै ॥ ३३ ॥

मू०-बिभीषण-दंडक ॥ भूतलकीवेणीसीत्रिवेणीशुभशोभिजतिएककहैंसुरपुरमारगबिभातहै । एककहैंपूरणअनादि जोअनंतकोऊताकोयहकेशोदासद्रवरूपगातहै । सबसुखकर सबशोभाकरमेरेजानकौनोयहअद्भुतसुगंधअवदातहै । दरशपरशहूतेथिरचरजीवनकोकोटिकोटिजन्मकीकुगंधमिटिजातहै ॥ ३४ ॥ भुजंगप्रायतछंद ॥ भरद्वाजकीबाटिकारामदेखी । महादेवकेसीबनीचित्तलेखी ॥ सबैवृक्षमंदारहूतेभलेहैं । छहूकालकेफूलफूलेफलेहैं ॥ ३५ ॥ कहूंहंसिनीहंससोंचित्तचोरैं । चुनैओसकेबुंदमुक्तानिभोरैं ॥ शुकालीकहूँसारिकालीविराजैं । पढैवेदमंत्रावलीभेदसाजैं ॥ ३६ ॥

टी०-कुगंध पदते पातक जानौं ॥ ३४ ॥ महादेवकी बाटिकासी बनी चित्तमें लेप्यो मंदार [कल्पवृक्ष-विशेष] छहू काल [छह ऋतु] ॥ ३५ ॥ कहूं हंससों कहे हंस सहित हंसिनी मुक्तानके भोरे कहे भ्रमसों ओसके बुंद चुनती हैं सो सबके चित्तको चोरावती हैं यासों हंसनकी मदमत्तता जनायो

वेदमंत्रावलीके जे भेद साजें हैं तिन्हें पढती हैं अर्थ अनेक प्रकारके मंत्र ऋषिनके पढत सुनत हैं तिन्हें शिष्य ताही विधि आप पढत हैं ॥ ३६ ॥

मू०—कहूंवृक्षमूलस्थलीतोयपीवें । महामत्तमातंगसीमानछाव ॥ कहूंविप्रपूजाकहूंदेवअर्चा । कहूंयोगशिक्षाकहूँवेदचर्चा ॥३७॥ कहूंसाधुपौराणकीगाथगावैं ।कहूंयज्ञकीशुभ्रशालाबनावैं ॥ कहूंहोममंत्रादिकेधर्मधारैं । कहुंबैठिकैब्रह्मविद्याविचारैं ॥ ३८ ॥ आसु ईजहांदेखियेबक्रारागी । चलैपिप्पलैतिच्छबुध्यैसुभागी ॥ कँपैं श्रीफलैंपत्रहैंपत्रनीके । सुरामानुरागीसबैरामहीके ॥ ३९ ॥

टी०—कहूं महामत्त मातंग वृक्षकी मूलस्थली (थाल्हा) में तोय (जऊ) पीवत हैं परन्तु वृक्षनकी औ थाल्हनकी सीमा (मर्यादा) नहीं छुवत अर्थ वृक्ष औ थाल्हनको तोरते बिदारते नहीं है ॥ ३७ ॥ पौराणसम्बन्धिनी ब्रह्मविद्या (वेदांत) ॥ ३८ ॥ वक्र कहे मुख हैं रागी कहे अरुण जिनके ऐसे शुक हैं और काहू ऋषिको मुख तांबूलके रागयुक्त नहीं है यतीको ताम्बूल भक्षण निषिद्धहै तासों ॥ "विधवानां यतीनां च तांबूलं ब्रह्मचारिणाम् । एकैकं मांसतुल्यं स्यान्मिलितं मदिरासमम् ॥" सभागी कहे भाग्यवान् अर्थ अति वृद्ध युक्त अति बडे इति; श्रीफल कहे कदलीके जे पत्रहैं तेई जहां कांपत है यासों या जनायोकी सभागी तौ सव हैं ये और कोऊ काहू भयसों कंपत नहीं हैं औ सबै रामानुरागी हैं परन्तु रामा जो स्त्री हैं ताके अनुरागी नहीं हैं रामचन्द्रके अनुरागी हैं ॥३९॥

मू०—जहांवारिदैवृन्दवाजानिसाजै । मयूरैजहांनृत्यकारीबिराजैं ॥ भरद्वाजबैठे तहां विप्रमोहैं । मनोंएकहीवक्रलोकेशसोहैं ॥ ४० ॥ लक्ष्मण—दंडक ॥ केशोदासमृगजबछेरूचूषैंबाघिनीनचाटतसुरभिबाघबालकबदनहै । सिंहनकीसटाऐंचैंकलभकरनिकरिसिंहनकोआसनगयंदकोरदनहै । फणीकेफणनपरनाचतमुदितमोरक्रोधनबिराधजहांमदनमदनहै । बानरफिरतडोरेडोरेअंधतापशनिशिवकोसमाजकैधौंऋषिकोसदनहै ॥४१॥

टी०-तहां ता आश्रममों विप्रनके बीचमों बैठे अनेक इतिहासादि कहि विप्रनके मनको मोहतहैं इत्यर्थः लोकेश (ब्रह्मा) ॥४०॥मृग जब छेरू [मृगबालक] सटा [ग्रीवाके बार] डोरे डोरे कहे डोल डोल अंध तापस कहे बडे तपस्वी यासों बानर-को ऋषिनके ताडनसों अति निर्भयता जनायो अथवा अंध कहे आंधरे जो तापस कहे तपस्वी हैं तिनके डोरे कहे हाथको गहे अर्थ जहां जाइबेकी इच्छा करत हैं तहां बानर पठाइ आवतहैं, औ शिवके समाजमें मृगजबछेरू पदते चन्द्रमाके रथके हरिण जानौं अथवा और अनेक गणके मृगबाहन हैं यथा तुलसीकृत रामायणे "नानाबाहननानावेषा । हरषेशिवसमाजनिजदेखा ॥" औ सुरभि पदते महादेवको बाहन वृषभ जानौं औ बाघबालक पदते काहू गणको बाहन बाघ जानौं औ सिंह पदते देवीको बाहन सिंह जानौं अथवा दूनों पदते सिंहही जानौं औ गयंदपदते गणेश जानौं औ फणी महादेव धारण करे हैं मोर स्वामिकार्त्तिकको बाहन है अंधतापस कहे तापस वेषधारी जे आंधरे गण हैं यथा तुलसीकृत रामायणे ॥ "विपुल नयन कोउ नयनबिहीना॥" औ बानर पदते बानरमुखगण जानौ यथातुल-सीकृतरामायणे । खरश्वानशूकरशृगालमुखगण वेषअगणित कोगनै । जैसे शिवके समाजमें स्वाभाविक विरोधी जीव अविरुद्ध रहत हैं तैसे आश्रमहूंमें रहत हैं इति भावार्थः ॥ ४१ ॥

मू०-भुजंगप्रयातछन्द ॥ जहांकोमलैवल्कलैबाससोहैं । जिन्हैंअल्पधीकल्पसाषीबिमोहैं ॥ धरेशृंखलादुःखदाहैदुरंतै । मनोंशम्भुजीसंगलीनेअनंतै ॥ ४२ ॥

टी०-यामें आश्रमके ऋषिजननको वर्णन है जहां जा आश्रममें ऋषिनके कोमल वल्कलहीनके वस्त्र सोहत हैं परन्तु जिनको देखि अल्पधी [लघुबुद्धि] अर्थ स्पर्द्धायुक्त है बुद्धि जिनकी ऐसे जे कल्पशाखी [कल्पवृक्ष] हैं ते बिमोहैं. कहे मोहित होत हैं अथवा अल्पकी धी कहे बुद्धिसों अर्थ हम इनसों लघु हैं या बुद्धिसों मोहत हैं केवल वचनहीसों एतो देत है जे तो कल्पवृक्षनहूंको मोह होत है कि हमहूं इनसम न भये; अथवा [कल्पसाक्षी] पाठ होई तौ जिनको देखि अल्पकी धी करिकै अर्थ हम इनसों लघु हैं या बुद्धिसों कल्पासाक्षी जे कल्पांतयोनि [मार्कंडेय] आदि हैं ते मोहत हैं औ केवल शृंखला जो कठिन बंधन है ताको धारण करे हैं परन्तु दुरंत कहे बडे जे ओरनके दुःख हैं तिनको दाहै कहे नाश करत हैं अर्थ ऐसे ऐसे आचार्य कृत्यनसों युक्त हैं । "शृंखला पुष्कटी वस्त्रबन्धे च निगडे त्रिषु इति मेदिनी ॥" महादेव, अनंत जे शेष हैं

तिनको संगमें लीन्हें हैं धारण करे हैं औ ऋषिजन अनंत जे भगवान हैं तिनके ध्यानसों अथवा कथन सों संगमें लीन रहते हैं ॥ ४२ ॥

मू०—मालिनीछंद ॥ प्रशमितरजराजैहर्षवर्षासमैसे । बिरलजठनशाखीस्वर्नदीकूलकैसे ॥ जगमगदरशाईसूरकेअंशु ऐसे ॥४३॥ गहेकेजपाशैप्रियासीबखानों। कँपैशापकेत्रासतेगातमानों ॥ मनोंचंद्रमाचंद्रिकाचारुसाजैं । जरासोंमिलेयोंभरद्वाजराजैं ॥ ४४ ॥

टी०—फेरि कैसे हैं ऋषिजनसो कहत हैं वर्षासमयमें रज जो धूरि है सो प्रशमित कहे नष्ट रजाति है ऋषिनके रजोगुण सब ऋषि सत्त्वगुणी हैं इति भावार्थः स्वर्नदी [गंगा] के कूलको साखी [वृक्ष] विरल कहे प्रगट जटा जे जरे हैं तिनसहित हैं इहां स्वर्नदीकूलको साखी कहि अति पावन ताहू जनायो अथवा स्वर्नदी उपलक्षणमात्र है नदीमात्रके कूलको जानों नदीके प्रवाहके वेगसों जरै खुलि जाती हैं प्रसिद्ध है औ ऋषिजन जटा जे लग्न भये कच हैं तिन सहित हैं ॥ "जटा लग्नकचे मूले, इति मेदिनी ॥" सूरके अंशु [किरण] जगके जे मग [राह] हैं तिनके दरशाई [देखावनहार] हैं औ ऋषि यमलोकके जे ब्रह्म दोषादि स्वर्गलोक के यज्ञादि इत्यादि सब लोकनके मग दरशाई है राम नामके जपसों स्वर्ग नरकको भोग मिटत है मुक्ति होति है ऋषिजन ज्ञानोपदेश करि स्वर्ग नरकको भोग दूरि करि मोक्षको प्राप्त करत हैं औ जो सब चरणनके अंतमें सो, पाठ होइ तौ केवल भरद्वाजहीको बर्णन है ॥ ४३ ॥ जरा जो वृद्धता है सो भरद्वाजके केशपाश गहे है तासों प्रिया कहे अतिप्रिया स्त्रीसम बखानियत है प्रियाहू अतिप्यारसों धृष्टता करि पतिके केश गहति है सो केश गहिबो अनुचित समुझि ऋषि शाप न देहिं याही त्राससों मानों ताके गात कांपत हैं. जो कहो अंग तौ भरद्वाजके कांपत हैं वृद्धताके कैसे कह्यो तौ भरद्वाजके अंगनमें मिले वृद्धताके अंग कांपत हैं ताहीसों भरद्वाजहूके अंग कांपत हैं काहेते भरद्वाजके अंगनमें प्रथम कंप नहीं रह्यो तासों जानों चंद्रसम ऋषि हैं चंद्रिकासम शुक्ल जरा है अर्थ जरायुक्त शुक्ल बार हैं ॥ ४४ ॥

मू०—दोहा ॥ भस्मत्रिपुंडकशोभिजैं, बरणतबुद्धिउदार ॥ मनोत्रिस्रोतासोतद्युति, बंदतलगीलिलार ॥ ४५ ॥ भुजंगप्र-

यातछन्द ॥ मनोंअंकुरालीलसैसत्यकीसी । किधौंवेदविद्या प्रभाईभ्रमीसी ॥ रमैगंगकीज्योतिज्योंजह्नुनीकी । बिराजैसदाशोभदंतावलीकी ॥ ४६ ॥

टी०-त्रिस्रोता [गंगा] कहूं "बंदति" पाठ है तहां या अर्थ कि त्रिस्रोताके सोतनकी द्युति लिलारमें लगी भरद्वाजको बंदति है अर्थ सेवति है ॥ ४९ ॥ सत्यको रंग श्वेत है प्रभा [शोभा] भ्रमी कहे भरद्वाजको सुखरूपी शुभस्थान पाइके आश्चर्ययुक्त ह्वै रहीहै अर्थ प्रसन्न ह्वै रहीहै ज्यों कहे जानों जन्हु ऋषिके मुखमें नीकी गंगाकी ज्योति रमति है जह्नु ऋषि गंगाको पान कियो है सो कथा प्रसिद्ध है ॥ ४६ ॥

मू०-गीतिकाछन्द ॥ भ्रुकुटीबिराजतिश्वेतमानहुँमंत्रअद्भुत सामके । जिनकेबिलोकतहीबिलातअशेषकर्मजकामके ॥ मुखबासआशप्रकाशकेशवभौंरभीरनसाजहीं । जनुसामके शुभस्वक्षअक्षरह्वैसपक्षबिराजहीं ॥ ४७ ॥ तनुकम्बुकण्ठत्रिरेखराजतिरज्जुसीउनमानिये । अविनीतइंद्रियनिग्रहीतिनके निबंधनजानिये । उपवीतउज्ज्वलशोभिजैउरदेखियोंबरणैसबै । सुरआपगातपसिंधुभेजसश्वेतश्रीदरशैअबै ॥ ४८ ॥

टी०-[सामवेद] काम जो कंदर्प है ताके जे कर्म हैं परस्त्री गमनादि तिनते ज कहे उत्पन्न जे वस्तु हैं अम (पातक) ते अशेष कहे संपूर्ण बिलात हैं अथवा काम जो हैं शुभ अशुभ अभिलाष तिनके जे कर्म हैं तिनते ज कहे उत्पन्न वस्तु हैं अर्थ स्वर्ग नरक भोग शुभ अभिलाषके कर्मनसों स्वर्गभोग उत्पन्न होतहैं, अशुभ अभिलाषके कर्मनसों नरक भोग उत्पन्न होत हैं, ते दुवौ बिलात हैं अर्थ जिनको देखि प्राणी स्वर्ग, नरकभोगसों भिन्न होत हैं अंतमें मुक्तिपावत हैं; प्रथम कह्यो है कि, स्वर्ग नरकहंतानामश्रीरामकैसो । औ सामके मंत्रके पुरश्चरणसों कामके कर्मज बिलात हैं इनके देखतही तासों अद्भुत कर्‍यो बास सुगंध ॥ ४७ ॥ कंबु सदृश कंठमें तनु सूक्ष्म त्रिरेख राजति है ताहि रज्जु कहे जेवरीसम अनुमानियत है सो जेवरी काहेके लिये है अविनीत कहे अशिक्षित अर्थ आज्ञा टारि अभिलषित बात कर्त्ता जे इंद्रिय नेत्रादि हैं तिनके निग्रही

कहे ताडन कर्त्ता अर्थ दुःखद निबंधन कहे बंधन है तपसिंधु (भरद्वाज) हैं सुरआपगा (गंगा) के तीनों सोतसम उपवीनके तीनों सूत्र हैं सिंधुमें मिलिबो नदीको धर्म है ॥ ४८ ॥

मू०—दोहा ॥ फटिकमालशुभशोभिजै,उरऋषिराजउदार ॥ अमलसकलश्रुतिवरणमय, मनोंगिराकोहार ॥ ४९ ॥ सुंदरीछंद ॥ यद्यपिहैरसरूपरस्यौतनु । दंडहिसोअवलंबितहै-मनु ॥ धूमशिखानकेव्याजमनोंगुनि । देवपुरीकहँपंथरच्यौ-मुनि ॥ ५० ॥ रूपधरेबडवानलकोजनु । पोषतहैंपयपान-हिंसोतनु ॥ क्रोधभुजंगममंत्रबखानहुँ । मोहमहातमकेर-विमानहुँ ॥ ५१ ॥

टी०—श्रुतिवर्ण (वेदाक्षर) सम स्फटिक गुरिया हैं औ भरद्वाजकी वाणी (सरस्वती) डोरासम है अर्थ सरस्वतीमें गुहिकै मानों वेदाक्षरनहीकी माला पहिरे हैं ॥ ४९ ॥ वृद्धतासों चलिवेके लिये दंड लियेहैं तामें तर्क करतहैं कि ऋषिको तनुरूप रस पदते रूप, रस, गंध, शब्द, स्पर्श, पांचों इंद्रिनके पांचों विषय जानों तिनकरिकै कहे तिनकी वासना करिकै रह्यो कहे व्यै गयोहै रहित भयो है इति अर्थ वृद्धतासों नेत्रादि इंद्रिनमों रूपादि विषयकी वासना टरि गई है ताहूपर मानों दंडसों अवलंबित कहे युक्त है दंडपद श्लेष है दंड कहे निग्रह औ लकुट औ अग्निहोत्राग्निको आहुतिसों नित्यहीं प्रज्वलित कियो करत हैं तामें तर्क है कि धूमशिखा जो अग्नि है ताके व्याज मानों देवपुरीको पंथ (राह) बनायो है ॥ ५० ॥ पय (दुग्ध) औ (जल) ॥ ५१ ॥

मू०—सत्यसखाअसखाकलिकेजनु । पर्बतऔषधिसिद्धिन-केमनु ॥ पापकलापनकेदिन्दूषण । देखिप्रणामकियोजग-भूषण ॥ ५२ ॥ पद्धटिकाछंद ॥ सीतासमेतशेषावतार । दंड-वत कियेऋषिकेअपार ॥ नरवेषबिभीषणजामवंत । सुग्रीवबा-लिसुतहनूमंत ॥ ५३ ॥ ऋषिराजकरीपूजाअपार । पुनिकुश-लप्रश्न पूंछीउदार ॥ शत्रुघ्नभरतकुशलीनिकेत । सबमित्रम-

न्त्रिमातन समेत ॥ ५४ ॥ भरद्वाज ॥ कहहुकुशलकहौंतुम-आदिदेव। सबजानत हौसंसारभेव ॥ बिधिबिष्णुशंभुरविश-शिउदार। सबपावकादिअंशावतार ॥ ५५ ॥ ब्रह्मादिसकल-परमाणुअंत। तुमहींहौरघुपतिअज अनंत ॥ अबसकलदान-देपूजिविप्र। पुनिकरहुबिजयबैकुंठक्षिप्र ॥ ५६ ॥

इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचंद्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांरामस्यभरद्वाजाश्रमगमनंनामविंशःप्रकाशः ॥ २० ॥

टी०—सत्य कहे सत्ययुग औषधि सम जे आठौं सिद्धि हैं तिनके पर्वत हैं जैसे पर्वतमें औषधी रहती हैं तैसे ऋषिमें आठौं सिद्धि रहती हैं कलाप (समूह) जगभूषण [रामचंद्र] ॥ ५२ ॥ प्रथम दूरसों करनसों प्रणाम कियो यामें निकट जाइ दंडवत्प्रणाम करचौ ॥५३॥ पुनि कहे फिर ऋषिकी पूजा किये पर रामचंद्र कुशलप्रश्न पूछत भये ॥ ५४ ॥ अंशावतार कहे तुम्हारे अंशावतार हैं ॥ ५५ ॥ "जालांतरगते भानौ यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजः। तस्य षष्ठितमो भागः परमाणुः स उच्यते ॥" बिजय कहे हमारे इहां भोजन करौ बैकुंठ ! रामचन्द्रको संबोधन है ॥ " विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुंठो विष्टरश्रवाः इत्यमरः " ॥ ५६ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकाया विंशतितमः प्रकाशः ॥ २० ॥

मू०—दोहा ॥ इकईसयेंप्रकाशमें, कहऋषिदानविधान ॥ भरत मिलनकपिगुणनको, श्रीमुखआपबखान ॥ १ ॥ श्री-राम-सोमराजीछंद ॥ कहादानकीजै।सुकैभांतिकीजै॥ जहांहो-हिंजैसो। कहोविप्रतैसो ॥ २ ॥ भरद्वाज-दोहा ॥ सात्त्विक तामसराजसी, दानतीनिबिधिजानि ॥ उत्तममध्यमअधम-पुनि, केशवदासबखानि ॥ ३ ॥ चंचरी छंद ॥ पूजियेद्वि-जआपनेकरनारिसंयुतजानिये। देवदेवहिथापिकैपुनिवेदमंत्र

बखानिये ॥ हाथलैकुशगोत्रउच्चारिस्वर्णयुक्तप्रमानिये । दान दैकछुऔरदीजहिदानसात्त्विकजानिये ॥ ४ ॥

टी०—॥१॥ कहा कहे कौन वस्तु कै भांति कहे के प्रकारसों दान कीजै दान पदको संबंध याहूमों है ॥ २ ॥ ३ ॥ देवदेव जे विष्णु हैं तिनहिं स्थापिकै कहे तिनके अर्थ फल समर्पण करिकै अथवा ब्राह्मणको देवहि (विष्णुहि) थापिकै कहे मानिकै अथवा देवदेवकी स्थापना करिकै सुवर्णसों युक्त कुश हाथमें लैके गोत्रको उच्चारिकै वेदके मंत्रसों दान फेरि कछू और दीजै अर्थ सांगतादान दीजे दानके बादि जो दान दियो जात है सो सांगतादान कहावतहै ॥ ४ ॥

मू०—दोधकछंद ॥ देहि नहींअपनेकरदानैं । औरकेहाथ जोमंगलजानै ॥ दानहिं देतजोआरसुआवै । सोवहराजसदानकहाव ॥ ५ ॥ बिप्रनदीजतहीनबिधानैं । जानहुँताकहँतामसदानैं ॥ बिप्रनजानहुँजैनररूपै । जानहुँयेसबविष्णुस्वरूपै ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ साचारो वा निराचारो साधुर्वासाधुरेव च । अविद्यो वा सविद्यो वा ब्राह्मणो मामकी तनुः ॥ ७ ॥ तोमरछंद ॥ द्विजधामदेहिं जो जाइ । बहुभाँतिपूजिसुराइ ॥ कछुनाहिंनैपरिमान । कहियेसोउत्तमदान ॥८॥ द्विजकोजोदेतबोलाइ । कहियेसोमध्यमराइ ॥ गुनियाचनामिंसदानु । अतिहीनताकहँजानु ॥ ९ ॥

टी०—॥५॥विप्रनको जग रूपै कहे जगतके सदृशै जै कहे जनि जानहुँ ॥६॥ पाछे कह्यौ कि विप्रनको विष्णुस्वरूपै जानौं ताको विष्णु वाक्यसों पुष्ट करत हैं विष्णु कह्यौ है कि ब्राह्मण कहे आचार सहित होइ और अर्थ सुगम है मामकी कहे हमारो तनु कहा है ॥ ७ ॥ ताकी उत्तमताको कछू प्रमाण नहीं है ॥ ८ ॥ अतिहीन कहे अधम ॥ ९ ॥

मू०—श्लोक ॥ अभिगम्योत्तमं दानमाहूतं चैव मध्यमम् । अधमं याच्यमानं स्यात्सेवादानं तु निष्फलम् ॥१०॥ दोहा॥

प्रतिदिनदीजतनेमसों, ताकहँनित्यबखान ॥ कालहिपाइजो दीजिये, सोनैमित्तिकदान ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ आश्रितं साधु कर्माणं ब्राह्मणं यो व्यतिक्रमेत् । तस्य पुण्यचयोप्याशु क्षयं याति न संशयः ॥ १२ ॥ तोटकछंद ॥ पहिलेनिजबर्तिनदेहु अबै । पुनिपावहिंनागरलोगसबै ॥ पुनिदेहुसबैनिजदेशिनको उबरोधनदेहुबिदेशिनको ॥ १३ ॥ दोधकछंद ॥ दानसकाम अकामकहेहैं । पूरिसबैजगमांझरहेहैं॥इच्छितहीफलहोतसकामैं । रामनिमित्ततेजानिअकामैं ॥ १४ ॥

टी०-अभिगम्य कहे ब्राह्मणके घरमें जाइकै जो दान है सो उत्तम है औ आहूत कहे ब्राह्मणको बोलायकै जो दान है सो मध्यम है औ याच्यमान कहे जब ब्राह्मण माँगे आइ तब जो दान है सो अधम है औ सेवादान कहे जब ब्राह्मण सेवा करै तब जो दान है सो निष्फल है अर्थ वामें कछू पुण्य नहीं है ॥ १० ॥ काल पाइ अर्थ चन्द्र सूर्य ग्रहणादि समयमों ॥ ११ ॥ अपनो आश्रित जो साधुकर्मा ब्राह्मण है ताको जो व्यतिक्रमेत् कहे व्यतिक्रम करत है अर्थ तिन्हैं छोडि औरको दान देत है ताको पुण्यचय कहे पुण्यसमूह आशु कहे शीघ्र ही "क्षयं याति" कहे क्षयको प्राप्त होता है यामें संशय नहीं अपि शब्दते या जनायो कि थोरी पुंण्य तौ क्षयको प्राप्त होतिही है ॥ १२ ॥ आश्रितको व्यतिक्रम न किया चाहिये तासों पहिले निज कहे आपने वर्ती कहे आश्रितनको देहु औ "निजवृत्तिन" पाठ होइ तौ निज कहे आपने इहां है दानहीसों वृत्ति कहे जीविका जिनकी नागर कहे नगरवासी ॥ १३ ॥ १४ ॥

मू०-दानतेदक्षिणबामबखानों । धर्मनिमित्ततेदक्षिणजानों ॥ धर्मबिरुद्धतेबामगुनौजू । दानकुदानसबैतेसुनौजू १५॥ देहुसुदानतेउत्तमलेखो । देहुकुदानतिन्हैंजनिदेखो ॥ छांडिसबै दिनदानहिं दीजै । दानहितेसबकेमतलीजै ॥ १६ ॥ दोहा ॥ केशवदानअनंतहैं,बनैंनकाहूदेत ॥ यहैजानिभुवभूपसब,भूमि दानहीदेत ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ यत्किंचित्कुरुते पापं ज्ञानतोज्ञा-

नतोपि वा ॥ अपि गोचर्ममात्रेण भूमिदानेन शुध्यति ॥१८॥ सप्तहस्तेनदंडेनत्रिंशद्दंडैर्निवर्तनम् । दश तान्येव गोचर्म दत्त्वा स्वर्ग महीयते ॥ १९ ॥ अन्यायेन कृता भूमिर्यैर्नरैरपहारिता। हरंतो हारयंतश्च हन्यते सप्तमं कुलम् ॥ २० ॥ राम-दोहा ॥ कौनहिदीजैदानुभुव, हैंऋषिराजअनेक ॥ देहुसनाढ्यनआदि दै, आयेसहितविवेक ॥ २१ ॥ श्रीराम--उपेंद्रवज्राछन्द ॥कही भरद्वाजसनाढ्यकोहैं । भयेकहांतेसबमध्यसोहैं ॥ हुतेसबैबिप्रप्रभावभीने । तजेतक्यौंयेअतिपूज्यकीने ॥ २२ ॥

टी०—मारणोच्चाटनादिके लिये जो दान है सो धर्मविरुद्ध जानौ अथवा वेश्यादिके अर्थ दान ॥ १५ ॥ सबके मीमांसकादिकनके मत कहे सम्मत अर्थ सम्मत फलको लीजै कहे पाइयत है अर्थ मीमांसकादिकनको मत है कि यज्ञादिसों ऐहिक पारलौकिक फल होत है सो सब फल दाननहीसों पाइयत है तासों सबको यज्ञादिकनको छोडिकै दिनप्रति दानहीको दीजै ॥ १६ ॥ १७ ॥ यत्कहे जो ज्ञानतः कहे जानिकै अज्ञानतः कहे बिनजाने कोऊ प्राणी किंचित्कह कछु पापं कहे पाप जो है ताहि कुरुते कहे करत है, सो प्राणी गोचर्ममात्रेण भूमिदानेन कहे गोचर्ममात्र भूमिदान करत संते शुद्ध होत है अपि शब्दको अर्थ यह कि अधिक भूमिदान करै तासों तौ शुद्ध यामें गोचर्मको लक्षण कहत हैं ॥१८॥ सप्तहस्तेन दंडेन कहे सात हाथके दंडकरिकै त्रिंशद्दंडैःकहे तीसदंड करत संतेनिवर्तन संज्ञक भूमिक्षेत्र होत है हस्तप्रमाण दुइसैदश औ दश तान्येव कहे तेई निवर्त्तनहीं एक गोचर्म संज्ञक क्षेत्र होत है हस्तप्रमाण इकीससै २१०० सो गोचर्म प्रमाणहूं भूमिको दत्त्वा कहे दैकै स्वर्ग कहे स्वर्गको महीयते कहे जात है ॥ १९ ॥ यैर्नरैः कहे जिन नरन करिकै अन्यायेन कहे न्याव विनाही भूमिहृता कहे हरि गई औ जिन नरन करिकै अपहारिता कहे हराई गई ता भूमि करिकै हरंतःकहे हरनहार औ हारयंतः [हरावनहार] ते हन्यते कहे पीडाको प्राप्त होत हैं अर्थ सो भूमि तिनको पीडा करती है औ " तेषां सप्तमं कुलमपि हन्यते " अर्थ ताही भूमि करिकै तिनके सातपुस्त पर्यंत पितर पीडाको प्राप्त होत हैं अर्थ जे दानकी भूमिको निर्दोष छोरत हैं औ वृथापवाद कहि छोरावतहैं सो भूमि तिनको औ तिन दुहुनके सप्तपुस्त पर्यंत पितरनको पितृलोकमें पीडा करति है ॥ २० ॥ ऋषि कह्यो सनाढ्यनको

दान देहु काहेते इन सनाढ्यनको आदिही सों अस अर्थ जबसों इनकी उत्पत्ति है तबहीसों तुम विवेक सहित दै आये हौ ॥ २१ ॥ २२ ॥

मू०–भरद्वाज ॥ गिरीशनारायणपैसुनीत्यों । गिरीशमोसों जो कहीकहौंत्यों ॥ सुनोसोसीतापतिसाधुचर्चा । करीसोजाते तुमब्रह्मअर्चा ॥ २३ ॥ नारायण–मोटनछंद ॥ मोतेजलनाभिसरोजबढ्यो । ऊंचोअतिउग्रअकाशचढ्यो ॥ तातेचतुराननरूपरयो ॥ ब्रह्मायहनामप्रगट्टभयो ॥२४॥ ताकेमनतेसुत चारिभये । सोहैंअतिपावनवेदमये ॥ चौहूंजनकेमनतेउपजे । भुवदेवसनाढ्यतेमोहिंभजे ॥ दीन्हौतुमहीतिनजोहितजू ॥ ह्वै हौ तुमब्रह्मपुरोहितजू ॥ २५ ॥

टी०–गिरीश (महादेव) जाति कहे जाकारणते तुम ब्रह्म अर्चा कहे सनाढ्य ब्राह्मणनकी पूजा करी है अथवा ब्रह्म जे तुम हौ ते सनाढ्यनकी अर्चा आदिहीसों करी है ॥ २३ ॥ २४ ॥ यह छंद छह चरणको है चारि सुत सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार वेदमये कहे वेदस्वरूप ये नारायणके वचन शिव प्रति हैं तिन्हें कहिके द्वै चरणनमों भरद्वाज रामचन्द्रसों कहत हैं कि हे रामचन्द्र ! नारायणरूप जे तुम हौ तिनहीं तिनको हितसों यह वचन दियो है वचन इतिशेषः ॥ कि तुम ब्रह्म कहे परब्रह्मके पुरोहित ह्वै हौ ॥ २५ ॥

मू०–गौरीछंद ॥ तातेऋषिराजसबैतुमछांडो । भूदेवसनाढ्यनकेपदमांडो ॥ दीन्होतुमहीतिनकोबरुरूरे । चौंहूंयुगहोहुतपोबलपूरे ॥ २६ ॥ उपेंद्रवज्राछन्द ॥ सनाढ्यपूजाअघओघ हारी । अखंडआखंडललोकधारी । अशेषलोकावधिभूमिचारी । समूलनाशेनृपदोषकारी ॥ २७ ॥ श्रीराम-तोटकछंद ॥ हनुमन्तबलीतुमजाहुतहां । मुनिवेषभरत्थबसंतजहां ॥ ऋषिकैहमभोजनआजुकरैं । पुनिप्रातभरत्थहिंअंकभरैं ॥२८॥ चतुष्पदीछंद ॥ हनुमंतविलोकेभरतसशोकेअंगसकलमलधारी । बकलापहिरेतनशीशजटागणहैंफल-

मूलअहारी ॥ बहुमंत्रिनगणमें राजकाजमेंसबसुखसोहित-
तोरे । रघुनाथपादुकातनमनप्रभुकारिसेवतअंजुलिजोरे ॥२९॥

टी०—ब्रह्मपुरोहित होवेको इन्हें तुम्हारोई वर है औ तुम ब्रह्म हौ ताते कहे ता हेतुते ॥ २६ ॥ अखंड कहे पूर्ण आखंडललोकधारी कहे इन्द्रलोककी धरण हारी है जौ कोऊ सनाढ्यनकी पूजा करत है ताको पूर्ण इंद्रलोक देतिहै इति भावार्थः अशेषलोकावधि कहे चौदहों लोक पर्यन्त जो भूमि कहे स्थान हैं तिनमें चारी कहे गमनकारी है अर्थ चौदहोंलोकमें सनाढ्यनकी पूजा सब करत है अथवा चौदहोंलोकनमें नैनमारग, श्रवणमारग ह्वै गमन करति हैं अथ चौदहौं लोकनमें विदित है ॥ २७ ॥ बीसयें प्रकाशमें भरद्वाज कह्यो है कि अब करहु बिजय वैकुंठ छिप्र या प्रकार निमंत्रण दियो है तामों रामचन्द्र हनूमानसों कहत हैं कि आज ऋषिको निमंत्रण है तासों ऋषिके इहां भोजन करि प्रात भरतपास नन्दिग्राममें आइ हैं ॥ २८ ॥ २९ ॥

मू०—हनुमान ॥ सबशोकनिछाडौभूषणमांडौकीजेविविधि
बधाये । सुरकाजसँवारेरावणमारेरघुनन्दनघरआये ॥ सुग्री-
वसुयोधनसहितबिभीषणसुनहुँभरतशुभगीता । जयकीरति
ज्योंसँगअमलसकलअँगसोहतलक्ष्मणसीता ॥ ३० ॥ पद्ध-
टिकाछंद ॥ सुनिपरमभावतीभरतबात ।भयेसुखसमुद्रमैंमगन
गात ॥ यह सत्यकिधौंकछुस्वप्नईश । अबकहाकह्योमोसन
कपीश ॥ ३१ ॥ जैसेचकोरलीलैअँगार । त्यहिभूलिजाति
सिगरीसँभार । जीउठतउबतज्योंउदधिनंद । त्योंभरतभये
सुनिरामचन्द्र ॥ ३२ ॥ ज्यों सोइरहतसबशूरहीन । अतिह्वै
अचेतयद्यपिप्रबीन॥ ज्यों उबत उठतहँसिकरतभोग त्यों राम
चन्द्रसुनिअवधिलोग ॥ ३३ ॥ मालिनीछंद ॥ जहँतहँगज-
गाजैंदुंदुभीदीहबाजैं । बहुबरणपताकास्यंदनाश्वादिराजैं ॥
भरतसकलसेनामध्ययोंवेषकीने । सुरपतिजनुआये मेघमा-
लानिलीने ॥ ३४ ॥ सकलनगरबासीभिन्नसेनानिसाजैं ।

रथसुगजपताकाझुंडझुंडानिराजैं ॥ थलथलसब शोभैंशुभ्र शोभानिछाई । रघुपतिसुनिमानोंऔधिसीआजआई ॥ ३५॥ चामरछंद ॥ यत्रतत्रदासईशव्योमतेविलोकहीं । बानरालिरीछराजिदृष्टिसृष्टिरोकहीं । ज्योंचकोरमेघओघमध्यचंद्रलेखहा । भानुकेसमानजानत्योंबिमानदेखहीं ॥३६ ॥ मदनमनोहरदंडक ॥ आवतबिलोकिरघुबीरलघुबीरतजिव्योमगति भूतलबिमानतबआइयो । रामपदपद्मसुखसद्मकहँबंधुयुगदौरि तबषटमदसमानसुखपाइयो ॥चूमिमुखसूंघिशिरअंकरघुनाथधरिअश्रुजललोचननिपेखिउरलाइयो । देवमुनिवृद्धपरसिद्ध सबसिद्धजनहर्षितनपुष्पवर्षानिबरषाइयो ॥ ३७ ॥

टी०–मॉडौ कहे पहिरौ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ उदधिनंद (चन्द्रमा) ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ स्यंदन (रथ) अश्व (घोडे] आदि पदते पालकी आदि और जानौं ॥ ३४ ॥ थल थलमें सकल नगरवासी कैसे शोभित हैं कि अनेक प्रकारके भूषण वस्त्रादिकी शोभानसों छायो रघुपतिको आगमन इतिशेषः सुनिकै मानों अवधपुरीहीसी आई है ॥ ३५ ॥ बानरनकी आलि कहे पंक्ति औ ऋक्षन की राजि पंक्ति है सो पुरबासिनकी दृष्टिकी जो सृष्टि कहे ताको रोकति है अर्थ आगे वानर ऋक्ष उडत आवत हैं तासों रामचंद्र नहीं देखि परत भानु कहे सूर्यरूपी जो यान कहे बाहे वाहन हैं तामों चढ्यो चंद्रमाको जैसे मेघ ओघ कहे मेघ समूहमें चकोर लेखै ताही बिधि भानु (सूर्य) सम जान [पुष्पक] में रामचन्द्रको वानरनके मध्यमें पुरबासी देखत हैं यामें [अभूतोत्प्रेक्षा] है दूसरो अर्थ सुगम है ॥ ३६ ॥ अंक कहे गोदमें धरि लियो कहे बैठारि लियो फेरि लोचननमें अश्रु देखि अति प्रीतिसों उरमें लाइ लियो ॥ ३७ ॥

मू०–दोहा ॥ भरतचरणलक्ष्मणपरे, लक्ष्मणकेशत्रुघ्न ॥ सीतापगलागतदियो, आशिषशुभशत्रुघ्न ॥ ३८ ॥ मिलैभरतअरु शत्रुहन, सुग्रीवहिअकुलाइ ॥ बहुरिबिभीषणकोमिले, अंगदको सुखपाइ ॥ ३९ ॥ आभीरछंद ॥ जामवंतनलनील । मिलेभर

तशुभशील॥गवयगवाक्षगयंद । कपिकुलसबसुखकंद ॥४०॥ ऋषिवशिष्ठकोदेखि । जन्मसफलकरिलेखि ॥ रामपरेउठिपाय लक्ष्मणसहितसुभाय ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ लैसुग्रीवबिभीषणहिं, करिकरिबिनयअनंत ॥ पाँयनपरेवशिष्ठकेकबिकुलबुधिबलवंत ॥ ४२ ॥ श्रीराम-पद्धटिकाछंद ॥ सुनिजैवशिष्ठकुलइष्टदेव । इनकपिनायककेसकलभेव ॥ हमबूड़तहैंबिपदासमुद्र । इन राखिलियोसंग्रामरुद्र ॥ ४३ ॥

टी०-जब भरत शत्रुघ्न सीताके पद लागे तब सीताजू आशिष दियो कि शत्रुघ्न कहे शत्रुनको मारौ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ कपिनायक (सुग्रीव) संग्राममें रुद्र कहे भयंकर ॥ ४३ ॥

मू०-सबआसमुद्रकीभूशोधाइ । तबदईजनकतनयाबताइ ॥ निजभाइभरतज्योंदुखहरण । अतिसमरअमरहत्यो कुँभकरण ॥ ४४ ॥ इनहरेविभीषणसकलशूल । मनमानतहौंशत्रुघ्न तूल ॥ दशकंठहनतसबदेवसाखि । इनलियेएकहनुमंतराखि ॥ ॥ ४५ ॥ तजितियसुतसोदरबंधुईश । मिलेहमहिंकायमनबच ऋषीश ॥ दईमीचुइन्द्रजितकीबताय । अरुमंत्रजपतरावणदेखाय ॥ ४६ ॥ तोटकछंद ॥ इनअंगदशत्रुअनेकहने । हमहेतुसहेदिनदुःखघने ॥ बहुरावणकोसिखहीदुखलै । पुनिआये भलेसियभूषणलै ॥ ४७ ॥

टी०-शोधाइ कहे ढुंढाइके कुंभकर्णको तो रामचन्द्रही मारचो है परंतु कुंभकर्णकी नासा, श्रवण, प्रथम सुग्रीव काटि लियो है ताही समयमें रामचन्द्र मारचो है ताको मारिवो सुग्रीव ही पर स्थापित करत हैं अमर कहे काहूके मारिवे लायक नहीं ॥ ४४ जब मेघनाद ब्रह्मपाशमें हनुमानको बांधि लैगयो है तब रावण हनूमानके वध करिबेकी आज्ञा राक्षसनको दियो है तब बिभीषण "दूत मारिये न राज छोडि दीगई" ऐसे वचन कहि हनूमानको बचायो है सो कथा चौदहें प्रकाशमों है ॥ ४५ ॥ सोदर [कुंभकर्ण] बंधु [ज्ञातिसमूह] ईश-

रावण के मंत्र जपत समय अंगदादि गये हैं ता समय विभीषणके कछू वचन नहीं हैं तौ इहां रामचन्द्रकी उक्तिसों जानो बिभीषणहीके बतायेसों अंगदादि गये हैं ॥ ४६ ॥ हम हेतु कहे हमारे हेतु ॥ ४७ ॥

मू०-दशकंधकेजायजोगूढ़थली । तिनकेतनसोंबहुभांति दली ॥ महिमैंमयकीतनयाकर्षी । मतिमारिअकंपनकोहर्षी ॥ ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ मार्योमैंअपराधबिन,इनकोपितुगुणग्राम ॥ मनसावाचाकर्मणा,कीन्हेमेरेकाम ॥ ४९ ॥ गीतिकाछंद ॥ इनजामवंतअनेकराक्षसलक्षलक्षनहींहने । मृगराजज्यौंबनराजमैंगजराजमारतनीगने ॥ बलभावनाबलवानकोटिकरावणादिकहारहीं । चढ़िव्योमदीहबिमानदेवदिवानआनिनिहारहीं ॥ ५० ॥ दोहा ॥ करैनकरिहैकरतअब, कोऊऐसोकर्म ॥ जैसेबांध्योनल उपल, जलनिधिसेतुसधर्म ॥ ५१ ॥ गीतिकाछंद ॥ हनुमन्त येजिनमित्रतारविपुत्रसोंहमसोंकरी । जलजालकालकरालमालउफालपारधराधरी ॥ निश्शंकलंकनिहारिरावणधामधामनि धाइयो । यकबाटिकातरुमूलसीनहिंदेखिकैदुखपाइयो ॥ ५२ ॥

टी०-गूढस्थली [जयस्थान] तिनके अंगदके तनसों कर्षी कहे खैंची कठोरि इति औ अकंपनको मारिकै इनकी मति हर्षि (प्रसन्न) भई ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ लक्षलक्षनही अर्थ एक एक बारमें लाख लाख मार्योहै बनराज कहे बडो बन बलभावता कहे बलक्रिया हारही कहे हारत भये यहां भूतार्थमों वर्त्तमान प्रत्ययको अर्थ है ॥ ५० ॥ उपल (पाषाण) सधर्म कहे यथोचित ॥ ५१ ॥ कालहूते कराल जे नक्रादि जंतु हैं तिनको है माल कहे समूह जामें ऐसो जो जलजाल कहे समुद्रको जलसमूह है ताके पारकी धरा पृथ्वीको उफाल कहे कूदिबो ताही सों धरी कहे प्राप्त भये अर्थ एतो बडो समुद्र ताके पार कूदिही कै गये काहू पोतादिमें नहीं गये इति भावार्थः ॥ ५२ ॥

मू०-तरुतोरिडारिप्रहारिकिंकरमंत्रिपुत्रसँहारियो । रणमारि अक्षकुमाररावणगर्वसोंपुरजारियो । पुनिसौंपिसीतहिंमुद्रिका-

मणिशीशकीजबपाइयो । बलवन्तनांविअनंतसागरतैसही फिरिआइयो ॥ ५३ ॥ दशकंठदेखिबिभीषणैरणब्रह्मशक्तिच-लाइयो । करिपीठित्यौंशरणागतैतबआपवक्षसिलाइयो । एक यामयामिनिमैंगयोहतिदुष्टपर्वतआनिकै । त्यहिकाललक्ष्मण कोजिआइजियाइयोहमजानिकै ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ अपने प्रभुकोआपनो, कियोहमारोकाज ॥ ऋषिजुकहौहनुमंतसों, भक्तनकोशिरताज ॥ ५५ ॥ चामरछन्द ॥ बीरधीरसाहसी बलीजेबिक्रमीक्षमी । साधुसर्वदासुखीतपीजपीजेसंयमी ॥ भोगभागयोगयागवेगवन्तहैंजिते । वायुपुत्ररामकाजवारिडारि येतिते ॥५६॥ दोहा ॥ सीतापाईरिपुहत्यो, देख्योतुमअरुगेहु रामायणजपसिद्धिको, कपिशिरटीकादेहु ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ यहिबिधिकपिकुलगुणनको, कहतहुतेश्रीराम ॥ देख्योआश्रम भरथको, केशवनन्दीग्राम ॥ ५८ ॥

टी०—अनंत कहे बडो ॥ ५३ ॥ दुष्टपदते कालनेमि जानो लक्ष्मणको जियाइ हम कहे हमैं जिआयो लक्ष्मणके मरे राम न जी हैं यह जानिकै ॥ ५४ ॥ सब भक्तनके शिरताज एई हैं इति भावार्थः ॥ ५५ ॥ विक्रमी (उपायी) भाग कहे (भाग्य) वतुप्रत्ययांतः भोगादिपांचौं शब्द जानौ राजकाजमें वायुपुत्र पर इत्यादिकन (वीरादिकन) को सबन वारि डारियत है अर्थ जो रामकाज वायुपुत्र सँवारयो है सो इन वीरादिकनको काहूको सँवारयो न सँवरतो ॥ ५६ ॥ रामायण कहे रामकथा ॥ ५७॥ ५८ ॥

मू०—सुन्दरीछंद ॥ पुष्पकतेउतरेरघुनायक ॥ यक्षपुरीपठये सुखदायक ॥ सोदरकोअवलोकितपोथलु। भूलिरह्योकपिराक्ष-सकोदलु ॥ ५९ ॥ कंचनकोअतिशुद्धसिंहासन । रामरच्यो त्यहिऊपरआसन ॥ कोपरहीरनकोअतिकोमल । तामहँकुंकु-मचन्दनकोजल ॥६०॥ दोहा ॥ चरणकमलश्रीरामके, भरत

पखारेआप ॥ जातेगंगादिकनको, मिटतसकलसंताप ॥ ६१ ॥ पंकजबाटिकाछंद ॥ सूरजचरणबिभीषणकेअति । आपुहिभरतपखारिमहामति ॥ दुन्दुभिधुनिकरिकैबहुभेवनि । पुष्पबरषिहरषेदिविदेवनि ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ पीछेदुरिशत्रुघ्नसन, लक्ष्मणध्वायेपाइ ॥ चरणसौमित्रिपखारियो, अंगदादिकेआइ ॥ ॥ ६३ ॥ तोमरछन्द ॥ शिरतेजटानिउतारि । अँगअंगराग निधारि ॥ तनभूषिभूषणबस्त्र । कटिसोंकसेसबशस्त्र ॥ ६४ ॥ दोहा ॥ शिरतेपावनपादुका, लेकरिभरतबिचित्र ॥ चरणकमलतरहरिधरी, हँसिपाहिरीजगमित्र ॥ ६५ ॥

टी०—यक्षपुरी कुबेरपुरी ॥ ५९ ॥ कोमल कहे चिक्कण ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ सौमित्रि शत्रुघ्न ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ तरहरि कहे तरे ॥ ६५ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांरामस्यनंदिग्रामप्रवेशोनामैकविंशतितमःप्रकाशः ॥ २१ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मिताया रामभक्तिप्रकाशिकायामेकविंशतितमः प्रकाशः ॥ २१ ॥

मू०—दोहा ॥ याबाइसेंप्रकाशमें, अवधपुरीहिप्रवेश ॥ पुरवासिनमातानिसों, मिलिबोरामनरेश ॥ १ ॥ सुन्दरीछंद ॥ अवधपुरीकहँरामचलेजब । ठौरहिठौर बिराजतहैंसब ॥ भरत भयेशुभसारथिशोभन । चमरधरेरविपुत्रबिभीषन ॥ २ ॥ तोमरछंद ॥ लीनीछरीदुहुंबीर । शत्रुघ्नलक्ष्मणधीर ॥ टौरंजहां तहँभीर । आनन्दयुक्तशरीर ॥ ३ ॥ दोधकछंद ॥ भूतलहूदिविभीरबिराजैं । दीहदुहूंदिशिदुन्दुभिबाजैं ॥ भाटभलेबिरदावलिगावैं । मोदमनोंप्रतिबिम्बबढावैं ॥ ४ ॥ भूतलकीरज

देवनशावैं । फूलनकीबरषाबरषावैं ॥ हीननिमेषसबैअवलोकैं । होडपरीबहुधाहुहुँलोकैं ॥ ५ ॥

टी०—॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ देवतनके प्रतिबिंब सम अवधवासी अवधवासिनके प्रतिबिंब सम देवता मोद बढावत हैं अर्थ जो आनंद क्रिया हास्यादि अवधबासी करत हैं सोई देवता करत हैं ॥ ४ ॥ होड कहे बहस मानो अवधवासी बहस करि देवता लोकको धूरि उडावत हैं औ देवता ता धूरिको फूलनकी अति वृष्टि करि नशाइ देते हैं अर्थ दबाइ लेते हैं औ देवता तो अनिमेषही हैं औ रामचन्द्रके दर्शनमें अवधवासिनहूंकी पलक नहीं लागत सो मानों परस्पर होड किये हैं कि देखिये धौ काकी पलक लागति है यामें (असिद्ध विषय हेतूत्प्रेक्षा) है ॥ ५ ॥

मू०—तारकछंद ॥ सिगरेदलऔधपुरीतबदेखी । अमरावतितेअतिसुन्दरलेखी ॥ चहुंओरबिराजतिदीरघखाई । शुभ देवतरंगिनिसीफिरिआई ॥ ६ ॥ अतिदीरघकंचनकोटबिराजैं । मणिलालकँगूरनकीरुचिराजैं ॥ पुरसुन्दरमध्यलसैछबि छायो । परिवेषमनोरबिकोफिरिआयो ॥ ७ ॥ दोहा ॥ बिबिधिपताकाशोभिजैं, ऊंचेकेशोदास ॥ दिविदेवनकेशोभिजैं, मानहुँब्यजनबिलास ॥ ८ ॥ बिजयछंद ॥ चढीप्रतिमंदिर शोभबढीतरुणीअवलोकनकोरघुनन्दनु । मनोंगृहदीपतिदेह धरेसुकिधौंगृहदेविबिमोहतिहैमनु ॥ किधौंकुलदेविदियेअति केशवकैपुरदेविनकोहुलस्योगनु । जहीं सोतहींयहिभांतिलसैं दिविदेविनकोमदघालतिहैमनु ॥ ९ ॥

टी०—देवतरंगिनी (गंगा) सम कह्यो तासों बिमल जल युक्त जानो ॥ ६॥ रविसम अयोध्यापुरी है परिवेष सम कंचनकोट है ॥ ७ ॥ ब्यजन (पंखा) ॥ ॥ ८ ॥ अपनी सुन्दरतादि देखाइ देविनकी सुन्दरतादिको मद दूरि करती हैं अवधपुरीकी स्त्री देविनहूंसो अधिक सुंदरी हैं इति भावार्थः ॥ ९ ॥

मू०—दोहा ॥ अतिऊंचेमंदिरनपर, चढीसुन्दरीसाधु ॥ दिविदेवनकोकरतिहैं, मनुआतिथ्यअगाधु ॥ १० ॥ तोटकछंद ॥

नरनारिभलीसुरनारिसबै । तिनकोऊपरैपहिंचानिअबै ॥ मिलिफूलनकीबरषैंबरषा । अरुगावतिहैंजयकेकरषा ॥११॥ पद्मावतीछंद ॥ रघुनन्दनआयेसुनिसबधायेपुरजनजैसेतैसे॥ दर्शनरसभूलेतनमनफूलेबरणेजाहिनजैसे ॥ पतिकेसँगनारीसबसुखकारीरामहिंयोंहगजोरी । जहँतहँचहुँओरनिमिलीझकोरनिचाहतिचन्दचकोरी ॥ १२ ॥ पद्धटिकाछंद ॥ बहुभांतिरामप्रतिद्वारद्वार । अतिपूजतलोगसबैउदार ॥ यहिभांतिगयेनृपनाथगेह । युतसुन्दरिसोदरस्योसनेह ॥ १३ ॥ दोहा॥ मिलेजायजननीनकों, जबहीश्रीरघुराइ ॥ करुणारसअद्भुत भयोमोपैकह्योनजाइ ॥ १४ ॥ सीतासीतानाथजू, लक्ष्मण सहितउदार । सबनमिलेसबकेकिये, भोजनएकहिबार ॥१५॥

टी०-अति सुंदर रूप आतिथ्यसम है ॥ १० ॥ यासों या जनायो कि जेती दूरि देविनको बिमान है तेतेई ऊंचे अवध बासिनके गृह हैं ॥ ११ ॥ १२ ॥ नृपनाथ (दशरथ) ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

मू०-सोरठा ॥ पुरजनलोगअपार, यहईसबजानतभये ॥ हमहींमिलेअगार,आयेप्रथमहमारेही ॥१६॥ मदनहराछंद ॥ सँगसीतालक्ष्मणश्रीरघुनन्दनमातनकेशुभपाइपरेसबदुःखहरे॥ आँसुनअन्हवायेभागनिआयेजीवनपायेअंकभरेअरुअंकधरे ॥ तेबदननिहारैंसरबसुवारैंदेहिंसबैसबहीनघनोअरुलेहिंघनो । तनमननसँभारैंयहैबिचारैंभागबडोयहहैअपनोकिधौंहैसपनो ॥ ॥ १७ ॥ स्वागताछन्द ॥ धामधामप्रतिहोतिबधाई । लोकलोकतिनकीधुनिधाई ॥ देखिदेखिकपिअद्भुतलेखैं । जाहिंयत्रतित रामहिंदेखैं ॥ १८ ॥ दौरिदौरिकपिराव-

रआवैं । बारबारप्रतिधामनिधावैं ॥ देखिदेखितिनकोदैतारी । भांतिभांविबिहसैंपुरनारी ॥ १९ ॥

टी०—॥ १६ ॥ रामचन्द्रजू भागनसों आये तासों मातन जीवन समपाये सो अंकमें भरे कहे अति प्रेमसो छातीमें लगाये फेरि अंक जो गोद है तामें धरे कहे बैठारे तब आनंदाश्रुनसों सीता राम लक्ष्मणको अन्हवाये औ ते सबै कौशल्यादि माता रामादिके वदन निहारती हैं औ तिनपर सर्वस्व वारि वारि सबको अर्थ याचक नेगिनको देती हैं औ तिन याचकनसों आशीर्वाद करि घनो लेती हैं पावती हैं अर्थ याचक आशीर्वाद देते हैं कि जो हमको तुम दियो ताको कोटि गुणित तुम्हारे होय अथवा रामादिके वदन दर्शनहीसों घनो लेती हैं पावती हैं अर्थ मुखदर्शन करि घनो पायो सम मानती हैं ॥ १७ ॥ १८ ॥ रावर (स्त्री भवन) ॥ १९ ॥

मू०—श्रीराम—दोहा ॥ इनसुग्रीवबिभीषणै, अंगदअरुहनुमान ॥ सदाभरतशत्रुघ्नसम, माताजीमैंजान ॥ २० ॥ सुमित्रा—सोरठा ॥ प्राणनाथरघुनाथ, जियकीजीवनमूरिहौ॥लक्ष्मणहेतुमसाथ, क्षमियहुचूकपरीजोकछु ॥ २१ ॥ राम-दंडक ॥ पौरियाकहौं कि प्रतीहारकहौंकिधौंप्रभुपुत्रकहौंमित्रकिधौंमंत्रीसुखदानिये । सुभटकहौंकिशिष्यदासकहौंकिधौंदूतकेशोदासहाथकोहथ्यारउरआनिये । नैनकहौंकिधौंतनमनकिधौं तन त्राण बुद्धिकहौंकिधौंबलबिक्रमबखानिये । देखिबेकोएकहैंअनेक भांतिकीन्हीसेवालक्ष्मणकेमातकौनकौनगुणगानिये ॥ २२ ॥

टी०—॥ २० ॥ २१ ॥ पौरियाजो मुख्यद्वारकी रक्षामें रहते हैं प्रतीहार जो राजसभाद्वारमें सुवर्णादिको दंडलै ठाढो रहत है बल जोर विक्रम यत्न ये सब एक एक आपनो आपनो कार्य करि सुख देत हैं सो लक्ष्मणन जहा जाको काज लाग्यो है तहा ताही विधि तौन काज करि हमको परम सुख दीन्हो है ॥ २२ ॥

मू०-मोटनकछंद ॥ शत्रुघ्नबिलोकतरामकहैं ॥ डेरानिस जौजहँसुःखलहैं ॥ मेरेघरसंपतियुक्तसबै । सुग्रीवहिदेहुनिवास अबै ॥ २३ ॥ साजेजोभरत्थसबैधनको । राखौतहँजाइबिभीषणको ॥ नैऋत्यनकोकपिलोगनको । राखौनिजधामनिभोगनको ॥ २४ ॥ दोहा ॥ एकएकनैऋत्यको, जितनेबानरलोग । आगेहीठाढेरहत, अमितइंद्रकेभोग ॥ २५ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांरामस्यायोध्यापुरप्रवेशोनामद्वाविंशः प्रकाशः ॥ २२ ॥

टी०-संपति (अनेक भोग वस्तु) ॥ २३ ॥ २४ ॥ अमित कहे अप्रमाण ॥ २५ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसाद-निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां द्वाविंशः प्रकाशः॥ २२ ॥

मू०-दोहा ॥ या तेइसयेंप्रकाशमें ऋषिजनआगमलेषि ॥ राज्यश्रीनिंदाकही, श्रीमुखरामविशेषि ॥ १ ॥ मल्लिकाछंद॥ एककालरामदेव । सोधुबंधुकरतसेव ॥ शोभिजैसबैसोऔर । मंत्रिमित्रठौरठौर ॥ २ ॥ बानरेशयूथनाथ । लंकनाथबंधुसाथ ॥ शोभिजैसबैसमीप । देशदेशकेमहीप ॥ ३ ॥ दोहा ॥ सरसस्वरूपबिलोकिकै, उपजीमदनहिंलाज ॥ आइगयेताही समय, केशवऋषिऋषिराज ॥ ४ ॥ असितअत्रिभृगुअंगिरा, कश्यपकेशव व्यास॥ विश्वामित्रअगस्त्ययुत, बालमीकिदुर्बास ॥ ५ ॥

टी०-॥ १ ॥ २ ॥ बानरेश [सुग्रीव] यूथनाथ [अंगदादि] लंकनाथ जे बंधु बिभीषण अथवा बंधु जे ज्ञातिवर्ग हैं राक्षस गण इति ते हैं साथ जिनके ऐसे लंकनाथ जे बिभीषण हैं ते ॥ ३ ॥ सरस कहे आपनासों अधिक सुन्दर ॥ ४ ॥ ५ ॥

मू०—दोहा—वामदेवमुनिकण्वजुत, भरद्वाजमतिनिष्ठ। पर्व-तादिदै सकलमुनि, आयेसहितवशिष्ठ ॥ ६ ॥ नगस्वरूपिणी छंद ॥ सबंधुरामचंद्रजूउठेविलोकिकैतबै। सभासमेतिपाँपरे-विशेपिपूजियोसबै ॥ विवेकसोंअनेकधादशेअनूपआसने । अनर्घअर्घआदिदैविनैकियेघनेघने ॥ ७ ॥ राम-रूपमाला-छंद ॥ रावरेमुखकेविलोकतहीभयेदुखदूरि । सुप्रलापनहींरहे उरमध्यआनँदपूरि ॥ देहपावनह्वैगयोपदपद्मकोपयपाइ। पूज तैभयोवंशपूजितआशुहीमुनिराइ ॥ ८ ॥ संनिधानभरेतपोध-नधामधीधनधर्म। अद्यसद्यसबैभयेनिरवद्यबासरकर्म ॥ ईश-यद्यपिदृष्टिहीभइभूरिमंगलसृष्टि। पूंछिबेकहाँहोतिहैसोतथापि-वाकविसृष्टि ॥ ९ ॥

टी०—निष्ठ कहे उत्कृष्ट है मति जिनकी ॥ "निष्ठोत्कर्षव्यवस्थयोरिति अभि-धानचिंतामणिः" ॥ ६ ॥ विवेक (बिचार) सों अर्थ यथोचित अनर्घ कहे अमोल अर्घ पाद्यादि पूजाविधि प्रसिद्ध है ॥ "अर्घः पूजाविधौ मूल्ये इत्यभिधान-चिंतामणिः" ॥ ७ ॥ द्वै छंदको अन्वय एक है तपोधन ! ऋषिनको संबोधन है सुप्रलाप कहे सुवचन ॥ "सुप्रलापः सुवचनमित्यमरः॥" पदपद्मको पय कहे चर-णोदक रावरे पदको संबंध सुप्रलापादिकमों सर्वत्र है संनिधान कहे समीपसों अर्थ रावरे निकट प्राप्त भये सो हमरे धाम (घर) औ धी (बुद्धि) धन औ धर्मसों भरे अर्थ धाम धनसों भरे, बुद्धि धर्मसों भरी, अद्य कहे आज सद्य कहे शीघ्रही सबै जे बासर कर्म कहे रोज रोजके दानकर्म हैं निरवद्य कहे अनिंद्य भये औ हे ईश ! यद्यपि तुम्हारी दृष्टिहीसों अवलोकनहीं सों हमपर भूरि कहे बहुत मंगल कहे कल्याणकी दृष्टि भई अर्थ हमारे बडो कल्याण भयो परंतु कल्याणमें तो काहूकी तृप्ति होति नहीं तासों अधिक कल्याणके लिये तुमसों कछू पूछिबेको हमारे वाक जे बचन हैं तिनकी विसृष्टि कहे उत्पत्ति होति॥ ८ ॥ ९ ॥

मू०—॥ दोहा ॥ गंगासागरसोंबड़ो, साधुनकोसतसंग ॥ पावनकरिउपदेशअति, अद्भुतकरतअभंग ॥ १० ॥

टी०—साधुनको जो सतसंग है सो गंगासागरहूसों वडो है काहेते अति अद्भुत

जो उपदेश शिक्षा है तासों पावन कहे पवित्र करिकै अभंग कहे नाशरहितके अर्थ मुक्त करत है अथवा उपदेशसों अति पावन करि अद्भुत अभंग कहे मुक्त करतहै अर्थ जीवन्मुक्त करत है उपदेश करि अभंगकरिबेकी शक्ति गंगासागरमों नहीं है तासों बडो कह्यौ एतो रामचंद्रके कहतही विरक्त वचन समुझि अगस्त्य बीचहीमें बोलि उठे तासों जो पूछिबो रहै सो नहीं पूछन पाये सो चौबीसयें प्रकाशमें कह्यौ है कि जो कछु जीव उधारनको मत जानत हौ तौ कहौ मनुहै कहिबेको हेतु यह कि हमको कछू ऐसो उपदेश करौ जासों संसार छूटै मुक्ति होइ ॥१०॥

मू०–अगस्त्य–नाराचछंद ॥ कियेबिशेषसोंअशेषकाजदेवरायके । सदात्रिलोकलोकनाथधर्मविप्रगायके ॥ अनादिसिद्धिराजसिद्धिराजआजलीजई ॥ नृदेवतानिदेवतानिदीहसुक्ख दीजई ॥ ११ ॥

टी०–हे त्रिलोक लोकनाथ ! अर्थ तीनों लोकोंके जे लोक कहे जन हैं तिनके नाथ कहे स्वामी हौ अर्थ ईश्वर हौ यासों या जनायो कि तुम्हारो बंधन कौन है जासों छूटिबेकी इच्छा करत हौ रावणको मारिदेवराज जे इन्द्र हैं औ धर्म औ विप्र औ गाय इनके अशेष कहे पूर्ण काज करचौ अब अपनी अनादि सिद्धि अर्थ तुम्हारी परंपराकी सिद्धि है औ राजसिद्धि कहे राजनकी सिद्धि जो राजाति है ताहि लीजै नृदेवता (राजा) ॥ ११ ॥

मू०–दोहा ॥ मारेअरिपारेहितू, कौनहेतरघुनंद ॥ निरानंदसेदेखियत, यद्यपिपरमानंद ॥ १२ ॥ श्रीराम–तोमरछंद ॥ सुनिज्ञानमानसहंस । जपयोगजागप्रशंस ॥ जगमांझहैदुखजाल । सुखहैकहायहिकाल ॥ १३ ॥ तहँराजहैदुखमूल । सबपापको अनुकूल ॥ अबताहिलैऋषिराय । कहेकौननर्कहिजाय ॥१४॥ चौपाई ॥ सोदरमंत्रिनकेजेचरित्र । इनकेहमपैसुनिमखमित्र ॥ इनहींलगेराजकेकाज । इनहींतेसबहोतअकाज॥१५॥

टी०–एक तौ तुम परमानंद रूपही हौ ताहूपर अरि (रावणादि) को मारे औ हितू (इन्द्रादि) को पालत भये ऐसे आनंदवर्द्धक काजऊ करे तहूपर तुम्है

निरानंदसे काहे देखियत है इत्यर्थः ज्ञानरूपी जो मानस (मानसर) है ताके हंस हौ औ जगमें योग औ जागकी है प्रशंसा (स्तुति) जिनकी दूनौ पद संबोधन हैं ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

मू०—राजभारनलभैयनिदयो । छलबलछीनिसबैतिनलयो ॥ जबलीन्होंसबराजबिचारि । नलदमयंतीदियोनिकारि ॥ ॥ १६ ॥ राजासुरथराजकीगाथ । सौंपीसबमंत्रिनकेहाथ ॥ संततमृगयालीनबिचारि । मंत्रिनराजादियोनिकारि ॥ १७ ॥ राजश्रीअतिचंचलतात । ताहूकीसुनिलीजैबात ॥ यौबनअरु अबिबेकीरंग । बिनस्यौकौनराजश्रीसंग ॥ १८ ॥ शास्त्रसुजलहूँधोवततात । मलिनहोतअतिताकेगात ॥ यद्यपिहैअति-उज्ज्वलदृष्टि । तदपिसृजतिरागनकीसृष्टि ॥ १९ ॥

टी०—नलकी कथा पुराणमों प्रसिद्ध है ॥ १६ ॥ मृगया (शिकार) सुरथहूकी कथा मार्कण्डेयपुराणमों प्रसिद्ध है ॥ १७ ॥ अति चंचल जो राजश्री है ताहूमें ऐसो दोष है ते सुनौ कहियत है यौबन औ अविवेकी रंग औ राजश्रीके संगमें को नहीं विनस्यौ ए तीनों सम हैं अथवा यौवन औ अविवेकी रंगयुक्त जो राजश्री है अर्थ सदा यौवन औ अविवेकसों युक्त रहति है ताके संगको नहीं विनस्यौ अथवा हितोपदेशमें कह्यो है कि ॥" यौवनं धनसंपत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता। एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम् ॥"यामें चारि कह्यौ है ता मतसों यह अर्थ—कि यौवन अविवेकी रंग औ राज औ श्री कहे संपत्ति इन चारिके संगमें को नहीं विनंस्यौ ॥ १८ ॥ शास्त्रका उपदेश सुनिकै शास्त्रकी आज्ञा माफिक नहीं करत और तासों मलिन उदास होत है अथवा अनेक शास्त्र सुनावो ताहूपर पातकन कारि ताके गात मलिन होत हैं शास्त्रहू सुनिकै अनेक पातक करत ही है इत्यर्थः औ यद्यपि याकी उज्ज्वल (विमल) दृष्टि है अर्थ उत्तम पदार्थनपर दृष्टि है तौ अति उत्तम जो पदार्थ (ईश्वरपद) है तामें प्रीति वारेसों नहीं करति राग जो स्रक, चंदन, वनितादि विषे अभिलाष है ताको सृजति कहे उत्पन्न कराति है "अभिमतविषयाभिलाषो रागः" ॥ १९ ॥

मू०—महापुरुषसोंजाकीप्रीति । हरतिसोझंझामारुतरीति ॥ बिषयमरीचिकानिकीज्योति ॥ इंद्रीहरिणहारिणीहोति ॥ २० ॥

गुरुकेबचनअमलअनुकूल । सुनतहोतश्रवणनकोशूल ॥ मैन बलितनवबसनसुदेश । भिदतनहींजलज्योंउपदेश ॥ २१ ॥

टी०–जा पुरुषकी प्रीति महापुरुष जे भगवान हैं तिनसों है ताके पास आइ झंझामारुत कहे अति जोर वायुकी रीतिसों हरति कहे तोरति है अर्थ जैसे झंझामारुत वृक्ष लतानिको तोरति है तैसे यह प्रीतिको तोरति है आशय यह कि आपु विष्णुकी स्त्री हैं तासों प्रीतिरूपी स्त्रीको विष्णुके पास जाति देखि सौतिधर्मसों तोरति है अर्थ राजनकी प्रीति ईश्वर पर नहीं होति रूप, रस, गंध, स्पर्श, शब्द, ये जे पांचौं विषयरूपी मरीचिका कहे मृगतृष्णा हैं तिनकी ज्योतिमें इंद्रीरूपी जे हरिण हैं तिनकी हारिणी कहे लैजानहारी होति है अर्थ मृगतृष्णा सम मिथ्या जो पंचधा विषय हैं तामें राजनकी इंद्रिनको भ्रमावति है ॥ २० ॥ मैन कहे (मोम) ॥ २१ ॥

मू०–मित्रनहूकोमतोनलेति । प्रतिशब्दकज्योंउत्तरदेति ॥ पहिलेसुनैनशोरसुनंति । मातीकरनीज्योंनगनंति ॥ २२ ॥ दोहा ॥ धर्मवीरताबिनयता, सत्यशीलआचार । राजश्रीनगनैकछू, वेदपुराणबिचार ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ सागरमेंबहुकालजोरही । सीतवक्रताशशितेलही ॥ सूरतुरँगचरणनितेतात । सीमीचंचलताकीबात ॥ २४ ॥ कालकूटतेमोहनरीति । मणिगणतेअतिनिष्ठुरप्रीति ॥ मदिरातेमादकतालई । मंदरउदरभईभ्रममई ॥ २५ ॥

टी०–प्रति शब्दक कहे झांई शब्द अर्थ जैसे शब्दके साथही प्रति शब्दक होत है तैसे राजा मित्रके वाक्यमें शुभाशुभको विचार नहीं करत साथही उत्तर कहे जवाब देत हैं औ पहिले तौ हित वाक्यको सुनति नहीं शोर करि कहै सो सुनिबो करत है तौ माती करिनी सम गनति नहीं अर्थ जैसे माती करिनी महावतके हितके हित वचन नहीं गनति तैसे राज्यश्री मित्रादिके हित वचन नहीं गनति ॥ २२ ॥ २३ ॥ क्षीरसागरमें बहुत काल रही है तहाँ इनको संग रह्यौ तिनसों ए कर्म सीखे हैं शीतता कहे प्रसन्न ह्वै सेवकादिको धनादि दीबो

वक्रता कुद्ध ह्वै बंधादि कग्बिो सुरतुरंग (उच्चैःश्रवा) चंचलताकी बात कहे क्षणमें और क्षणमें और कहिबो (कग्बिो) ॥ २४ ॥ जैसे कालकूट भक्षणसों मोहित (मूर्छित) भये प्राणीको कछु सुधि नहीं रहति है तैसे राज्यश्रीमें मोहित राजनको ईश्वरादिकी सुधि भूलि जाति है इत्यर्थः निष्ठुरतावश राजनको जीव वधादिमें कछू दया नहीं आवति इत्यर्थः राज्यश्रीके वश मत्त ह्वै राजा हित वस्तुको विचार नहीं करत इत्यर्थः औ विष्णु करिकै भ्रमायो जो मंदर है ताके संगसों राज्यश्रीके उदरमें भ्रममई कहे भ्रमाधिक्य मई अर्थ मंदरको भ्रमत देखिकै भ्रम सिख्यौ राजनके उरमें सदा बंधुमंत्र्यादिकनहूकी प्रतिकूलताको भ्रम रहत है इत्यर्थः ॥ २५ ॥

मू०—दोहा ॥ शेषदईबहुजिह्वता, बहुलोचनताचारु ॥ अप्सरानितैंसीखियो, अपरपुरुषसंचारु॥ २६ ॥ चौपाई ॥ दृढगुनबाँधेहूबहुभाँति । कोजानैकेहिभाँतिबिलाति ॥ गजघो-टकभटकोटिनअरैं । खड्गलतापंजरहूपरैं ॥ २७ ॥ अपनाइ-तिकीन्हेबहुभाँति । कोजानेकितह्वैभजिजाति ॥ धर्मकोसमं-डित शुभदेश । तजतिभ्रमरिज्योंकमलनरेश ॥ २८ ॥

टी०—बहु जिह्वता कहे एक जिह्वासों अनेक जिह्वासम बात कहि बहुलो-चनता कहे द्वै लोचनसों अनेक लोचनसम देखिबो अर्थ राजा चितवत कहा होत हैं औ चार दृष्टिसों सर्वत्र देखत हैं अपर कहे अन्य पुरुष प्रीति संचार अर्थ एक पुरुष राजाको छाँडि एक पास जाइबो ॥ २६ ॥ द्वै छन्दनको अन्वय एक है गुन पद श्लेष है शूरतादि औ डोरी गज औ घोटक (घोंड) औ भट कोटिन रक्षाके अर्थ अरैं कहे हठ करैं औ तिनकी खड्ग (तरवारि) रूपी जो लता हैं ताके पंजरहूमें परैं अर्थ तरवारि हाथमें लैकै अनेक गजादि चौकी दै रक्षा करैं ताहूपर और अनेकविधि आपनाइति कीन्हेंहूं अर्थ प्रीति कीन्हें हूं धर्म (राजधर्म) औ कोमलताकी सब जाना औ सिफा (कंद) तासों मंडित (युक्त) औ शुभदेश कहे सुन्दर है राज्यभूमि जाकी औ सुष्ठु है देश (उत्पत्ति स्थान) जाको औ कमलरूपी जो नरेश राजा है ताको तजति है औ को जानै कहां है भागि जाति है सुंदरतादिहूके वश नहीं होति इति भावार्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥

मू०—यद्यपिहोइशुद्धमतिसत्तु । फिरैपिशाचीज्यौंउनमत्तु ॥
गुनवंतनिआलिंगतिनहीं । अपवित्रनिज्योंछांडतितहीं॥२९॥
शूरनिनाशतिज्योंअहिदेखि । कंटकज्योंबहुसाधुनलेखि ॥
सुधासोदरायद्यपिआप । सबहीतेअतिकटकप्रताप ॥ ३० ॥
यद्यपिपुरुषोत्तमकीनारि । तदपिसकलखलजनअनुहारि ॥
हित कारिनकीअतिद्वेषिनी । अहितलोगकोअन्वैषिनी
॥ ३१ ॥ मनमृगकोसुबधिककीगीति । विषयबेलिकीबारि-
दरीति ॥ मदपिशाचिकाकीसीअली । मोहनींदकीशय्या-
भली ॥ ३२ ॥

टी०—सत्तु (प्राणी) अथ राजासों राज्यश्री युक्त ह्वै पिशाचाक्रांत पुरुष-सम उन्मत्त फिरत हैं गुणवंतन कहे विद्यादि अनेक गुणको अपवित्र सम त्याग करति है इत्यर्थः ॥ "पंडिते निर्द्धनत्वमित्युक्तं माधवानलनाटके" ॥ २९ ॥ नाशति कहे छोडति है शूर औ साधुनको राज्यश्री नहीं प्राप्त होति अथवा शूर औ साधुनको संग्रह राजा नहीं करते इत्यर्थः सुधा जो अमृत है ताकी सोदरा (बहिन) ॥ ३० ॥ पुरुषोत्तम (विष्णु) द्वेषिणी कहे शत्रु है अन्वेषिणी कहे ढूंढनहारी है ॥ ३१ ॥ बधिकसम मनरूपी मृगको बांधि लेति है कहे काबू करि लेति है इत्यर्थः ॥ औ बारिद कहे मेघसम विषयरूपी बेलिको हरित करति है इत्यर्थः मदरूपी जो पिशाचिका (प्रेतिन) है ताकी अली कहे सखी है अर्थ सहायक है पठावनहारी इति मोह कहे अज्ञानरूपी जो नींद है ताकी शय्या जैसे शय्यामें नींद बढति है तैसे राज्यमें मोह बढ़त है इत्यर्थः ॥ ३२ ॥

मू०—आशीविषदोषनकीदरी । गुणसतपुरुषनकारणछरी ॥
कलहंसनकीमेघावली । कपटनृत्यकारीकीथली ॥ ३३ ॥
दोहा॥ बामकामकरिकीकिधौं, कोमलकदलिसुवेष। धीरधर्म-
द्विजराजको, मनोराहुकीरेष । ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ मुखरोगी
ज्योंमौनेरहै । बात बलायएकद्वैकहै ॥ बंधुबर्गपहिचानैंनहीं ।
मानोंसन्निपातहैगही ॥ ३५ ॥

टी०--दरी-(कंद्रा) में आशीविष (सर्प) सम अनेक प्रजा पीडनादि दोष जामें वास करत हैं इत्यर्थः औ अनेक जे विद्यादिगुणरूपी सत्पुरुष हैं तिनके कारण कहे अर्थ छरी कहे ताडन दंड है जैसे राजद्वारमें ताडन दंड देखि सत्पुरुष नहीं आवत तैसे राज्यश्री युक्त पुरुषके पास विद्यादि गुण नहीं आवत तासों सत्पुरुष लोभवश दंडपात हंसहि भूप द्वारादि स्थलमें जातहीहैं कुपुरुष कह्यो राज्यसुखालस्यसों राजा गुणनको अभ्यास नहीं करत इति भावार्थः कल कहे अविघ्नतासों चित्तइति हंसनको मेघावलीसम राजनके कलको राज्यश्री दूरि करति है इत्यर्थः अनेक शत्रु भयादि युक्त राजनको चित्र सदा रहत हैं इति भावार्थः शत्रुसैन्यभेदादि अनेक कपटयुक्त राजा होत हैं इति भावार्थः ॥ ३३ ॥ बाम कहे कुटिल जो काम (कंदर्प) रूपी करि, (हाथी) है ताको सुवेष कहे हरित कोमल कदली (केरा) है अर्थ गजको कदली सम कामको बलकर्ता है अथवा सुखद है राजा अति कामी होत हैं इति भावार्थः । कदली भक्षणसों गजको बल औ सुख होतहै यह प्रसिद्ध है औ धीर औ धर्मरूपी द्विजराज (चंद्रमा) को राहुरेखसम पीडाकर्ती है इत्यर्थः राजा बंधु-मंत्रीआदिमें भेद भय मानि सदा अधीर रहते हैं औ आलस्यवश दानादि धर्म विधिपूर्वक नहीं करत इति भावार्थः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

मू०महामंत्रहूहोतनबोध । डसीकालअहिकरिजनुक्रोध ॥ पानबिलासउदितआतुरी । परदारागमनैचातुरी ॥ ३६ ॥ मृगया यहैशूरताबढी । बंदीमुखनिचापसोंपढी ॥ जोकेहूंचित-वैयहदया । बातकहैतौबड़ीएमया ॥ ३७ ॥ दरशनदीबोईअ-तिदान । हँसि बोलैतौबड़सनमान ॥ जोकेहूसोंअपनोकहै । सपनेकीसीपदवी लहै ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ जोईअतिहितकीकहै, सोईपरमअमित्र । सुखवक्ताईजानिये, संततमंत्रीमित्र ॥ ३९ ॥

टी०-मंत्रिन करि दीन्हे जे महा कहे बडेबडे मंत्र हैं तिनहुसों जाको बोध ज्ञान नहीं होत सो मानों काल अहि कहे कालसर्प करिकै डसी कहे काटी गई है अर्थ मानों क्रोध करि कालसर्प काट्यो है जा प्राणीको कालसर्प काटत है ताहूको झारिबेके जे महामंत्र हैं तिनसों बोध (ज्ञान) नहीं होत अर्थ मूर्च्छा नहीं जागति पान कहे मद्यपानको जो बिलास है ताहीमें उदित कहे प्रगट है आतुरी

शीघ्रता जाकी ॥ ३६ ॥ मृगया यहै शूरता बडी इत्यादिमों या जनाओ कि यांही विधि राजा थोरो करत हैं ताको बहुत मानि लेत हैं ॥ ३७ ॥ पदवी (राज्य) ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

मू०--चौपाई ॥ कहौंकहांलगिताकेसाज । तुमसबजानतहौ-ऋषिराज ॥ जैसीशिवमूरतिमानिये । तैसीराजश्रीजानिये ॥४०॥ सावधानह्वैसेबैजाहि ॥ सांचीदेतपरमपदताहि । जित-नेनृपयाकेबशभये । पेलिस्वर्गमगनर्कहिगये ॥ ४१ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्र
चंद्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांराज्यश्रीदूषणव-
र्णनंनामत्रयोविंशःप्रकाशः ॥ २३ ॥

टी०-॥ ४० ॥ शिवमूरतिहूको सावधान ह्वै विधिपूर्वक सेवनो बनि परै तो स्वर्गप्राप्ति होत है ना बनै तौ चित्तविक्षेपादि ह्वै अंतमें नरकप्राप्ति होतहै तैसे याहूको सावधान ह्वै जनकादि सम सेवन करै तौ स्वर्ग जाई परंतु सावधान ह्वै सेवन नहीं बनि परत तासों केतने भूप बेनु आदिक स्वर्गमगसों पेलिकै नरकको गये हैं तासों हम राज्यश्री ग्रहण ना करि हैं इति भावार्थः ॥ ४१ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसाद-
निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां त्रयोविंशः प्रकाशः ॥ २३ ॥

मू०-दोहा ॥ चौबीसयेंप्रकाशमें, रामबिरक्तिबखानि ॥ बि-श्वामित्रबशिष्ठसों, बोधकहीशुभआनि ॥१॥ राम-अमृतगति-छंद ॥ सुमतिमहाऋषिसुनिये ।जगमहँसुक्खनगुनिये॥मरणहिं जीवनतजहीं। मरिमरिजन्मनभजहीं ॥ २ ॥ उदरनिजीवपरत है । बहुदुखसोंनिसरतहै ॥ अंतहुपीरअनतहीं। तनउपचारसहतहीं ॥ ३॥ दोधकछंद ॥ पोचमलीनकछूजियजानै। लेसबब-स्तुनआननआनै॥शैशवतेकछुहोतबडेई।खेलतहैंतेअयानचढे

ई॥ ४॥ हैपितुमातनितेदुखभारे। श्रीगुरुतेअतिहोतदुखारे ॥
भूखनप्यासननींदनजोवैं। खेलनकोबहुभांतिनरोवैं ॥ ५ ॥

टी०-वशिष्ठसों बोध जो ज्ञान है ताके कहिबेको विश्वामित्र कही कहे कह्यो है ॥ १ ॥ राजश्रीको दुख कहि अब यामें संसारको दुख देखावत हैं जीव जे हैं ते मरणको नहीं तजत मरिकै फिरि जन्मनको भजहीं कहे प्राप्त होत हैं ॥२॥ यामें जनन, मरण, जीवनको दुख देखावत हैं प्रथम तौ जीव उदरमें परत हैं गर्भमें आवत हैं तहांसे बहुत दुखसों निसरत हैं अर्थ जन्ममें बडो दुख होत है औ अंत जो मरण है ताहूमें वडी पीर कहे कष्ट होत है औ अनतही कहे जनन मरणते अन्यत्र अर्थ जीवतनमें तनके अनेक जे उपचार कहे व्योहार हैं तिनके सहित जीवको पीर है सो आगे कहैं ॥ "उपचारस्तु सेवायां व्यवहारोपचारयोरि-त्यभिधानचिंतामणिः"॥ ३ ॥ द्वैछंदनमों शिशुता अवस्थाके देहव्यवहारमें प्राप्ति जीवको दुख कहत हैं ते कहे तेई जीव शैशव कहे बाल्य अवस्थामें पोच कहे बुरो विषादि औ भली द्राक्षादि कछू जियमें नहीं जानत जो वस्तु पावत हैं ताको लैकै आनन कहे मुखमें आनै कहे डारि लेत हैं तहां बिषादि ग्रहणमें जीवको पीडा होति है इति भावार्थः फेरि ते कहे तेई जीव कछू बडे होत कहे वडे होते अयान कहे अज्ञानमें चढे चढे गैलनमें खेलत फिरतहैं अज्ञानमें चडे कहि या जनायो कि जैसे वाहनमें चढिकै कोऊ धावै तौ थकत नहीं तैसे अज्ञानरूपी वाहनमें चढि खेलमें धावत जीव थकत नहीं है ॥ ४ ॥ ता खेलिबेके लिये माता पिता मने करत हैं तासों वडो दुख होतहै औ गुरु खेलिबो छडाई पढाइबो चाहत है तासों अति दुखी होतहैं औ भूख औ प्यास औ नींदको नहीं जोवत कहे देखत अर्थ अपने पास आई भूख प्यास नींदको नहीं गनत अथवा भूख प्यास नींदको नहीं जोवत कहे चाहत तैसे सब अवस्थाके ऐसे देहव्यवहारनमें जीवको ऐसी पीडा होतिहै इति भावार्थः॥ "शिशुत्वं शैशवं बाल्यमित्यमरः"॥५॥

मू०-जारतिचित्तचितादुचिताई। दीहत्वचाअहिकोपचवाई।
कामसमुद्रझकोरनिझूल्यो। यौबनजोरमहाप्रभुभूल्यो ॥ ६ ॥
धूमसोनीलनिचोलमैंसोहै। जाइछुईनविलोकतमोहै ॥ पातक
पायशिखाबनचारी। जारतिहैनरकोपरनारी ॥ ७ ॥

टी०-तीनिछंदमें युवा अवस्थाके व्यवहारको दुःख कहतहैं यौवनके जोरमें अर्थ युवा अवस्थामें चित्तरूपी जो चिताहै तामें जीवको कहे दुचिताई जो संशयहै सो

जारति है जैसे चितामें जीवको दुचिताई जारतिहै इत्यर्थः औ अहि कहे सर्पसम जो कोप मरे प्राणीको जारियत है तैसे चित्तरूपी चितामें है सो दीह कहे बहुत अर्थनकी बिधि जीवके त्वचाचर्मकी चबाई कहे चबातहै अर्थ काटतहै अथवा त्वचासम अहिकोप चबातहै अर्थ सर्पत्वचामें काटत है तब जीवको परम पीडा होति है औ कोप तौ जीवहीको काटत है ताको पीडा तौ अकथनीय है औ जब काम अथवा अभिलाषरूपी जो समुद्र है ताके तरंगके झकोरनमें झूलौ इत उत आयो गयो तब हेमहाप्रभु ! जीव जो है सो भूल्यो अर्थ अपनपा को भुलान्यो महाप्रभु ऋषिनको संबोधन है चिता (दाह) सर्प दंश समुद्र तरंगके झकोरनमें सबको बिकलतासों आपनपाकी सुधि भूलि जात है ॥ ६ ॥ यौवन जोरमें और कहा होत है सो कहत हैं धूमसम जो नीलनिचोल कहे श्याम बस्त्र है तामें सोहति है इहां केवल धूमकी समताके लिये नीलनिचोल कह्यौ अग्नि दाहभयसों परनारी लोकभयसों छुई नहीं जाति देखतही मनको दुवौ मोहत हैं परनारी मोहति कहे बश करति है अग्नि मोहिति कहे भयसों अथवा तेजसों मूर्छित करतिहै सो पापरूपी यौवन है तामें चारि कहे गामी अर्थ जैसे अग्नि बनमें बिहरति है तैसे पर नारी पापहीमें बिहरति है ऐसी परनारी रूपी जो पावकशिखा है सो नरको जारति है परस्त्रीको देखि जीव बिकल होत है इत्यर्थः ॥ ७ ॥

मू०-बंकहियेनप्रभासरसीसी । कर्दमकामकछूपरसीसी ॥
कामिनिकामकीडोरिग्रसीसी । मीनमनुष्यनकोबनसीसी ॥८॥

टी०-मनुष्यनके जे हिय हैं तिनकी जो प्रभा (शोभा) है सोई बंक कहे कुटिल अर्थ घाट रहित अथवा गहिर सरसी कहे तडागसी है अर्थ हृदय तडाग सम है औ काम अभिलाषरूपी जो कर्दम (कीच) है तासों कछू कहे कछुअर्थ थोरीहू परसी कहे युक्त है यासों या जनायो कि अधिक कामयुक्तकी कथा है ता सरसी कामिनि कहे स्त्रीरूपी जो काम (कंदर्प) शिकारीकी डोरी है सो ग्रसी है कहे लगी है ते स्त्री मीनरूपी जे मनुष्य हैं इहां मनुष्य पदते मनुष्यनके जीव जानौ तिनको कहे तिनके बसकरिबेकी बनसीसी है जैसे तडागमें कीच बीच बसे मीननको बंसी बश करति है तैसे हृदयरूपी तडागमें कामरूपी कीचमें बसे जे जीव हैं तिनकी बंसी डोरीसम हृदयमों ग्रसी जो कामिनी स्त्री है सो बश करती है इत्यर्थः अथवा बंक (कुटिल) जे हृदय कहे मन हैं तिनकरिकै प्रभा

(शोभा) सरसी कहे बढी है जाके अर्थ जैसे बंसी कुटिल लोहकंटकसों युक्त रहति है तैसे कुटिल हृदय करिकै युक्त स्त्री है औ काम कहे अभिलाष रूपी जो कर्दम कर्दभ कहे पिशानका गंधादि युक्त कीच है सान्यौ पिसान तासों कछू परसी कहे युक्त है अर्थ जैसे कुटिल कंटक गंधादि युक्त साने पिसानसों युक्त होत है तैसे स्त्रीनके मन अभिलाषसों युक्त हैं औ कामिनी जो स्त्री हैं सोई काम (कंदर्प) शिकारीकी डोरीहै सो ग्रसी है कहे लगी है सो मीनसम मनुष्य-नको बंसीसम है अर्थ जैसे सागरमें बंसीके पिसानको गंध पाइ मीन बंसीके वश होतहै तैसे संसारसागरमें स्त्रीनके मनके अभिलाषको गंधपाइ अर्थ स्त्रीनकी अभिलाष समुझि मनुष्य वश होत है ॥ ८॥

मू०—बिजयछंद ॥ खैंचतलोभदशौंदिशिकोमहिमोहमहाइ-तपासिकैडारे । ऊंचेतेगर्वगिरावतक्रोधसोजीवहिलूहरलावत भारे ॥ ऐसेमोंकोढकीखाजुज्योंकेशवमारतकामकेबाणनिनारे। मारतपाँचकरेपँचकूटहिंकासोंकहैंजगजीवबिचारे ॥ ९ ॥

टी०—यामें लोभादिक जो पांच हैं तिन करिकै प्राप्त जीवको दुःख कहते हैं लोभ तौ लक्ष्मीके लिये दशौंदिशिको खैंचत है औ इत कहे इहां स्थलमें स्त्री पुत्रादिकन प्रति जो मोह है सो पासिकै कहे फांसिकै डारेहै कहे डारि राख्योहै तासों जाइ नहीं सकत औ गर्व ऊँचमें संग जीव उन्मत्त ह्वै रह्यो है अपमाना-दिसों चढाइ गिरावतहै अर्थ गर्व संगजीव उन्मत्तह्वै गिरे सम दुःख पावत है तब क्रोध उत्पन्न ह्वै जीवहिजीवमें लूहर कहे लुकेठ लावतहै अधजरचौ ईंधन काठको लूहर कहत हैं अर्थ क्रोधसों जीव जरत है लोभ, मोह, गर्व कोधकी व्यथा कोढ-सम है कामबाण व्यथा खाजुसम है या प्रकार लोभादिक पांचौं पंचभूतको कूट (पर्वत) जो शरीर है तामें करे कहवारि पाये जीवको मारत हैं सो आपनी पीडा जीव विचारे कासों कहैं जैसे पर्वतमें पाइकै ठग बटोहीको मारत हैं तैसे शरीरमें पाइकै लोभादिक जीवको मारत हैं इत्यर्थः ॥ ९ ॥

मू०—भूलतहैकुलधर्मसबैतबहींजबहींबरुआनिग्रसैजू ।केश-ववेदपुराणनकोनसुनैसमुझैनत्रसैनहँसैजू ॥देवनितेनरदेवनिते नरतेबरबानरज्योंबिलसैजू॥यंत्रनमंत्रनमूरिगनैजगयौबनकाम पिशाचबसैजू ॥ १० ॥ ज्ञाननिकेतनत्राननिकोकहिफूलकेबाण

निबेधवकोतो । वाइलगाइबिबेकनकोबहुशोधककोकहिबाधक जोतो । औरकोकेशवलूटतोजन्मअनेकनकेतपसानकोयोतो । तौममलोकसबैजगजातोजोकामबड़ोबटपारनहोतो ॥ ११ ॥

टी०–यामें यौवनकृत दुःख कहत हैं वेद पुराणनको प्रथम तौ सुनत नहीं औ सुनत है तौ समुझत नहीं औ समुझत है तौ त्रसत कहे डरत नहीं और वेद वचनही को निंदाकरि हँसत है वानरसम विलसत कहि या जनायो कि पशुसम बुद्धि ह्वै जाति है ॥ १० ॥ यामें काम व्यौहारकृत पीडा कहत हैं साधक प्राणायामादि एतो कहे जहाज पचीसयें प्रकाशमें यकतालिसयें दोहामें रामचन्द्र कह्यो है मोहि न हतो जानाईबे सबहीं जान्यों आज यासों या जानौं रामचन्द्र ईश्वरत्वको छपाये रहे हैं औ यामें ममलोक सबै जग जातो या उक्तिसों ईश्वरत्व प्रगट होत है तहां कविको भ्रम जानब अथवा तौ ममलोक कहे ममता-विशिष्ठ जे लोक मर्त्य लोकादि हैं तिनसों सबै जग कहे सब जगतके जीव आपने स्थानको ब्रह्मपदको इतिशेषः जातो प्राप्त होतो ॥ ११ ॥

मू०–मकरंदबिजयाछंद ॥ कँपैबरबानीडगैउरडीठितुचा-तिकुचैसकुचैमतिबेली । नवैनवग्रीवथकैगतिकेशवबालकते-सँगहीसँगखेली ॥ लियेसबआधिनव्याधिनसंगजराजबआ-वैज्वराकीसहेली । भगैसबदेहदशाजियसाथरहैदुरिदौरिदुरा-शाअकेली ॥ १२ ॥

टी०–यामें वृद्धताको व्यवहार कहत हैं पुत्रादिके कटुवचनादिसों जनित जो आधि कहे मानसी व्यथा औ व्याधि शरीर व्यथा (ज्वरादि) तिनके संगमें लिये ज्वरा जो मृत्यु है ताकी सहेली सखी जो जरा (वृद्धता) है सो जबदेहमें आवति है तब ताके उरसों बाणी काँपै लागति है अर्थ मुखसों व्यक्त वचन नहीं कढत औ डीठि डगै कहे डगमगाति है औ त्वचा कहे चर्म अति कुचै कहे बहुत सिकुरि जाति है औ मति (बुद्धि) रूपी जो बेली (लता) है सो सकुचै कहे संकोचको प्राप्त होति है अर्थ बुद्धि हीन होति जाति है औ नव कहे नवीन प्रकारसों ग्रीवा नवै कहे नत होति है नवपद यासों कह्यौ कि और जो कोऊ काहूको नवत है अर्थ प्रणाम करत है सो नयोई नहीं रहत ग्रीवा जबसों नवति है तबसों नईही रहति है उठति ही नहीं अथवा भयसों अनित्यको छोंडि नत होति है

औ जो जीवके संगही संगमें बालकहीसे खेली है सो गति गमन जीवकी सहाय छोंडि जराके भयसों थकि रहति है औ देहकी जो दशा कहे शुभदशा है सुंदरतादि सो सब भागति है जियके साथमें दुरिकै केवल दुराशा कहे दुष्ट आशा रहिजाति है वृद्धतामें इनकी,सबको सुभावहीसों यह होति है तामें जराके भयको तर्क है तासों असिद्ध विषय हेतूत्प्रेक्षा है यह वस्तु हमको इते दिनमें मिलि है ऐसी जो बुद्धि है सो दुराशा कहावति है ॥ १२ ॥

मू०–बिलोकिशिरोरुहश्वेतसमेततनोरुहकेसबकोगुणगायो।
उठेकिधौंआयुकेऔधिकेअंकुरशूलकीशुष्कसमूलनशायो ॥
जरैं किधौंकेशवव्याधिनकीकिधौंआधिकेआखरअंतनपायो ।
जराशरपंजरजीवजरेउकिजराजरकंबरसोंपहिरायो॥ १३ ॥
मनोहरबिजयाछंद ॥ दिनहींदिनबाढतजाइहियेजरिजाइस-मूलसोऔषधिखैहै । किधौंयाहिकेसाथअनाथज्यों केशव आवतजातसदादुखसैहै॥ जगजाकीतूज्योतिजगैजडजीवन-पायेतुतापहँजाननपैहै । सुनिबालदशागईज्वानीगईजरि-जैहैजराऊदुराशानजैहै ॥ १४ ॥

टी०–यामें प्रसंगवश वृद्धताको वर्णन है तनोरुह कहे तनके रोम तिन सहित शिरोरुह (शिरके बारनको) श्वेत बिलोकिकै या प्रकारसों गुण गायो है कि आयुर्बलकी अवधि (मर्यादा) जो आई है ताके अंकुर उठे हैं औ कि शूलनामा आयुध विशेष है शूलहू लगै शुष्क समूल कहे पूर्ण नाशको प्राप्त होत है वृद्धता-हूमें तासों जानो औ कि अनेक जे व्याधी शरीरव्यथा हैं तिनकी तिनकी अनेक जरैं हैं औ कि अनेक आधी जे मानसी व्यथा लिखी हैं तिनके आखर (अक्षर) हैं जिनको अंत नहीं पाइयत अर्थ बात हैं वृद्धतामें अनेक आधि, व्याधि होती हैं इतिभावार्थः औ कि जरा जो बुढाई है ताने शर (बाण) तिनके पंजरमें जीवको जरयो कहे डारयो है औ कि जराजर कहे जरबाफी कंबर सो जीवको पहिरायो है ॥ १३ ॥ यामें जीवप्रति काहूको उपदेश है सो उपदेश कहि रामचन्द्र दुराशाकृत पोडा देखावत हैं जाकी कहे जा ब्रह्मकी ॥ १४ ॥

मू०-दोहा ॥ जहांभामिनीभोगतहँ, बिनभामिनिकहँभो-ग ॥ भामिनिछूटेजगछुटै, जगछूटेसुखयोग ॥ १५ ॥ जोई जोईजोकरै, अहंकारकेसाथ ॥ स्नानदानतपहोमजप, निष्फ-लजानौनाथ ॥ १६ ॥ तोटकछंद ॥-जियमांझअहंपदजोद-मिये। जिनहींजिनहींगुणश्रीरमिये ॥ तिनहींतिनहींलखिलो-भडसै। पटतंतुनिउंदुरज्योंतरसै ॥ १७ ॥

टी०-यामें स्त्री व्यवहार कृत पीड़ा कहत हैं तहां भामिनी (स्त्री) है तहांई दुःखरूपी संसारभोग हैं सो भामिनी जब छूटै जब संसार छूटै तब सुखको योग है अर्थ दुःखमय संसारको बंधन दुराशादि सम स्त्रीहू है ॥ १५ ॥ यामें अहंकारको व्यवहार कहत हैं अहंकारके साथ जो करिये सो निष्फल होत है ॥ १६ ॥ ताही अहंकारको जो काहू प्रकारसों दमिये (दूरिये) तो जिन जिन मिथ्याभावनादि गुणसों श्री जो द्रव्य है तासों रमिये अर्थ द्रव्यको प्राप्त हूजियत है तिन गुणनको देखिकै लोभ जो है सो जीवको डसत है (काटत है) अर्थ काहूको अनुत्तमकर्मसों पावत देखि लोभ जीवको प्रेरत है कि यहै कर्म करौ जामें द्रव्य लाभ होइ अहंकारहीन प्राणी योग्यायोग्यको विचार नहीं करत जा प्रकार द्रव्य मिलै सोई ऊंच नीच कर्म करत है इति भावार्थः लोभ कैसे डसत है जैसे पट (वस्त्र) के तंतु कहे सूत्रनको उंदुर कहे मूषक तरसै कहे काटत है आशय कि जैसे मूषक पटतंतुनको वृथा काटत है कछु ताको काम नहीं है तैसे लोभ वृथा जीवको सतावत है ॥ १७ ॥

मू०-बिजयछंद ॥ दानसयाननिकेकलपद्रुमटूटतज्योंऋण ईशकेमांगे। सूखतसागरसेसुखकेशवज्योंदुखश्रीहरिकेअनुरा-गे ॥ पुण्यबिलातपहारनसेपलज्यौंअघराघवकीनिशिजागे। ज्योंद्विजदोषतेसंततिनाशतित्योंगुणभाजतलोभकेआगे ॥१८॥

टी०-सो लोभ कैसो है ताको व्यवहार कहत हैं जैसे ईश (महादेव) हैं तिनके मांगेते ऋण टूटि जात है अर्थ जब महादेव एते द्रव्य देते हैं जामें केतेऊ बड़ो ऋण होइ सो दूरि होतहै तैसे ता लोभके आगे दान औ सयाननके जे

कल्पद्रुमहैं ते टूटि जातहैं अर्थ लोभसों दानको अभिलाष नशि जातहै औ उचिता-नुचितकारिबेमें जो सयानप (चातुरी) है सो नहीं रहति औ जैसे श्रीहरि जे विष्णुहैं तिनके अनुरागेसों भक्ति कियेसों सो सागरसो संसारदुःख सूखत है तैसे ता लोभके आगे जो जीवके सागरसे सुख सूखि जात हैं अर्थ लोभवश इत उत प्राणी धायो धायो फिरत है धन, पुत्र, कलत्रादिको सुख नहीं करन पावत औ जैसे राघवकी निशि कहे राघव संबंधी व्रत दिन रामनौमी आदिकी निशिमें पलहू भरि जागेते अघ (पाप) बिलात हैं तैसे लोभके आगे पहारसे बड़े बड़े पुण्य बिलात हैं अर्थ लोभसों ऐसे ब्रह्मद्रव्यहरणादि पातक प्राणी करत हैं जासों केतेऊ बड़े पुण्य होईं तौ नशि जात हैं यामें केशवको रामोक्तिमें अपनी उक्तिको भ्रम है औ जैसे ब्रह्मदोषते संतति जो वंश है सो नशि जात है तैसे लोभके आगे अनेकगुण भागत हैं अर्थ अनेकगुणको त्याग करि प्राणी लोभवश जन जनसों दीन होत हैं ॥ "गुणशतमप्यर्थिताह-रति इति प्रमाणात्"॥ १८ ॥

मू०—दानदयाशुभशीलसखाबिझुकैगुणभिक्षुककोबिझुका-वैं । साधुसुधीसुरभीसबकेशवभाजिगईभ्रमभूरिभजावैं ॥ सज्ज-नसंगबछेरुडरैंबिडरैंवृषभादिप्रवेशनपावैं ।बारबड़ेअघबाघबँधे उरमंदिरबालगोविन्दनआवैं ॥ १९ ॥

टी०—यामें पापको व्यवहार कहत हैं उर रूपी जो मंदिर (घर) है ताके बार कहे द्वारमें बड़े पापरूपी अनेक बाघ बँधे हैं तासों उरमें जीवको परम सुखद बालगोविंद जे भगवान् हैं ते नहीं आवत युक्ति यह द्वारपै बाघ बँध्यो देखि बालक घरमें कैसे आइसकैं कैसे हैं अघबाघ कि दान औ दया औ शील ये जे जीवके सखा कहे हित हैं तिनको बिझकै कहे डेरवाइकै आवन नहीं देत औ सूरतादि जे अनेक गुणरूपी भिक्षुक हैं तिनको बिझुकावैं क्रोधित करि देतहैं अर्थ ऐसे डेरवावतहैं जासों गुणहूं क्रुद्ध ह्वै फिरिजात हैं औ सुष्ठु जे धी बुद्धिहैं अर्थ पुण्यमार्गमें प्रवृत्त जे बुद्धि हैं तेई साधु सुरभी (गावें) हैं ते सब भाजि गईं ते कहेते भूरि कहे बडो भ्रम देखाइकै भजाइ देते हैं औ सज्जननके सत्संगरूपी जे बछेरू हैं तेऊ जिनको डरत हैं डरिकै उर मंदिर मंदिरमें नहीं आवत औ वृषभपद (श्लेष) है बैल औ धर्म सो जैसे बाघको देखिकै बैल

बिड़रे कहे भागि जात है तैसे अघ बाघनको देखि धर्मादि भागतहैं पापके संयोगते जीवके हितसाधक जे दान दयादि हैं ते सब नशि जात हैं इतिभावार्थः ॥ १९ ॥

मू०–दोहा ॥ आंखिनआछतआंधरो, जीवकरैबहुभांति ॥ धीरनवीरजबिनकरै, तृष्णाकृष्णाराति ॥ २० ॥ तृष्णाकृष्णा षट्पदी, हृदयकमलमोंबास ॥ मत्तदंतिगलगंडयुग, नर्क अनर्कविलास ॥ २१ ॥

टी०–तानि छंदनमें तृष्णाको व्यवहार कहत हैं तृष्णारूपी जो कृष्णाराति कहे कृष्णपक्षकी राति है सो आंखिन अक्षत कहे रहने पर जीवको आँधरो करति है अर्थ तृष्णायुक्त प्राणीको आंखिनसों आपनो अपमानादि नहीं देखि-परत औ कृष्णा रातिहूमें अंधकारमें घटपटादि वस्तु ऑखिनसों नहीं देखि परत औ धीरनको धैर्य्य बिना करिदेति है अर्थ कहूं कछू पाइबो होइ तौ तृष्णायुक्त प्राणी कैसोऊ धीर होइ तौ धीरता छोंडि धावतहै औ रातिमें अंधकारमें चौरादि भयसों बडे धीरऊ धैर्य बिन ह्वै जात हैं ॥ २० ॥ कृष्णा कहे श्याम जो तृष्णा-रूपी षट्पदी (भ्रमरी) है ताको हृदयरूपी कमलमें बासहै ता तृष्णाको नर्क औ अनर्क कहे स्वर्गकी विलास दुवौ मत्तदंतीके गल कहे गलत अर्थ मदसों चुवत दुवौ गंडस्थल हैं अर्थ जैसे भ्रमरी कमलमों बसति है औ गजनके गंड-स्थलन प्रति धायो करतिहै तैसे तृष्णा नरक भोग स्वर्गभोग प्रति धायो करति है सो उपाउ जीवको नहीं करन देति जासों जीव मुक्त होइ ॥ २१ ॥

मू०–बिजयछंद ॥ कौनगनैयहिलोकतरीनबिलोकिबिलो-किजहाजनबोरै । लाजविशालल तालपटीतनधीरजसत्यतमा लनितोरै ॥ वंचकताअपमानअयानअलाभभुजंगभयानक-कृष्णा ॥ पाटुबडोकहूंघाटुनकेशवक्योंतरिजाइतरंगि-नितृष्णा ॥ २२ ॥

टी०–फेरि कैसी है तृष्णा सो कहत हैं कि ऐसी तृष्णारूपी जो तरंगिणी नदी है सो कौनी तरहसे जीवसों तरि कहे उतरि जाइ कैसी है तृष्णा नदी कि यही लोक कहे मृत्युलोककी जे तरी कहे नौका हैं तिन्हैं कौन गनै अर्थ तिनको तो बोरिही देति है ॥ "स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः इत्यमरः ॥"

इहां तरी पदते मनुष्यदेह जानो अर्थ मनुष्य देहको प्राप्त ह्वै के तो जीव तृष्णाको पार पावतही नहीं है मनुष्यदेहमें तृष्णा कैसेहू नहीं मिटति इत्यर्थः ॥ बिलोकि बिलोकि कहे ढूंढि ढूंढि जहाजको बोरति है यहां जहाज पदते देवशरीर जानो अर्थ देवताहू तृष्णाको पार नहीं पावत अथवा लोकनगी पदते लोकव्यवहार युक्त मनुष्य देह जानो औ जहाज पदते संसारको त्यागकिये जे योगीजन हैं तिनके शरीर जानो अर्थ योगीजन तृष्णाको पार नहीं पावते संसारविशिष्ट प्राणिनकी कहा गिनती है औ लाजरूपी जो विशाल लता है सो लपटी हैं तनमें जिनके ऐसे धीर्य्य औ सत्यरूपी तमाल वृक्ष हैं तिन्हें अति वेगसों तोरे कहे उखारि डारति है नदीहू कूलके वृक्ष उखारि डारति है इहां तमालपद उपलक्षण है तासों वृक्षमात्र जानो अर्थ तृष्णासों लाज औ सत्य प्राणीको दूर ह्वै जात है औ वंचकता कहे छल औ अपमान औ अयान (अज्ञानता) औ अलम्भ कहे याचितवस्तुकी अप्राप्तिरूपी जे भुजंग (सर्प) हैं तिन करिकै अति भयानक है नदीहूमें सर्प रहतेहैं अर्थ वंचकतादि जे चारों हैं तिनसों युक्त सदा तृष्णा रहति है औ कृष्णा कहे श्यामरूपाहै औ जाको पाटु बडो है अन्त नहीं पाइयत औ दुहूँ कूलमें कहूं घाट नहीं है जहां विश्रामहू पावैं ॥ २२ ॥

मू०–पैरतपापपयोनिधिमैंमनमूढमनोजजहाजचढोई। पेलतऊनतजैजडजीवजऊबडवानलक्रोधडढोई ॥ झूठतरंगिनिमें उरझैसुइतेपरलोभप्रबाहबढोई ॥ बूडतहैतेहितेउबैरकहिकेशव काहेनपाठपढोई ॥ २३ ॥

टी०–यामें जीवप्रति काहूकी शिक्षा है सो प्रसंग पाइ रामचन्द्र कहत हैं हे मन ! मूढ ! जड ! जीव ! तू मनोज-(कन्दर्प) रूपी जो जहाज है तामें चढचो पापरूपी पयोनिधि समुद्रमें पैरत है अर्थ कामवश परस्त्री गमनादि पाप करत फिरत है तहां अनेक अपमानादिते उत्पन्न जो क्रोधरूपी बडवानल है तामें जऊ कहे यद्यपि डढोई कहे जरिहू गयो है तऊ कहे ताहूपर मनोज जहाजमें चढि कामसमुद्रमें परिबो यह जो खेल है ताको तू नहीं तजतो एतेहूपर लोभ रूप प्रवाह बढचो है जामें ऐसी जो झूठरूपी तरंगिणी नदी पापसमुद्रमें मिली है तामें उरझत है अडिजात है अर्थ लोभवश अनेक झुठाई करत फिरत सो या प्रकार है या

समुद्रमें तुम बूडत हौ सो जासों उबरै कहे निकरै सो केशव यह जो पाठ है ताको आजुतक काहे न पढ्यौ अर्थ भगवानको ना कहे न जप्यो अबहूं भगवानको नाम जपिबो तोंको उचित है इति भावार्थः ॥ केशव पदके कहिबेको आशय यह कि "के जले शेते इति केशवः" अर्थ वे समुद्रके जलहीमें सोयो करत हैं तासों समुद्रसों उबारिबो उनको सहज है और नामके जपहूसों या समुद्रसों ना कढि है इतिभावार्थः ॥ २३ ॥

मू०—दोहा ॥ जोकेहूसुखभावना, काहूकोजगहोति ॥ काल आखुपटतंतुज्यों, तबहींकाढतज्योति ॥ २४ ॥ ब्रह्मविष्णुशिवआदिदै, जेतनेदृश्यशरीर ॥ नाशहेतुधावतसबै, ज्योंबडवानलनीर ॥ २५ ॥

टी०—यामें समयके व्यवहार कहत हैं जो केहु कहे कौनेहू प्रकारसों सुखभावना कहे मोक्षकी बासना जगमें काहू प्राणीके होति है तो काल कहे समयरूपी जो आखु (मूषक) है सो ता भावनाकी ज्योति कहे डोरि अथवा अंकुरको पट वस्त्रके तंतु (सूत्र) सम तबहीं कहे ताही समय काढि देत है अर्थ समौ मति फेरि देत है जासों सुखभावना दूरि ह्वै जाति है ॥ २४ ॥ देह व्यवहार कहि अब यामें मृत्युकृत पीडा कहत हैं ब्रह्मा औ बिष्णु औ शिव आदिक जितने दृश्य शरीर हैं ते अनेक यज्ञादि कर्म करि उत्पत्ति पालन संहार करनादि प्रभुत्व पाइ पुनि पुनि या संसारमें नाशहीके हेतु धावत हैं कहे प्राप्त होत हैं अर्थ या संसारमें इनको सबको नाश होतहै मृत्युकृत पीडाको ये सब प्राप्त होतहैं इतिभावार्थः कैसे धावत हैं जैसे बडवानलमें समुद्रको नीर (जल) नाशके हेतु धावत है यथा योग वाशिष्ठे-"ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च सर्वे ये भूतजातयः। मृत्युर्नेश्यति भूपाल सलिलानीव वाडवः ॥ २५ ॥

मू०—सुन्दरीछन्द ॥ दोषमयीजोदवारिलगीआति । देखतहीत्यहितेजोजरीमति ॥ भोगकीआशनगूढ़उजागर । ज्योंरजसागरमैंमुनिनागर ॥ २६ ॥ बिजयाछन्द ॥ माछीकहैअपनोघरमाछरुमूसोकहैअपनोघरऐसो । कोनेघुसीकहैघूसिचिरैयाबिलारिऔव्यालबिलेमहँवैसो ॥ कीटकश्वानसोपक्षि-

औभिक्षुकभूतकहैभ्रमिजासहजैसो । हौंहूंकहौंअपनोघरतैस्य-हिताघरसों अपनोघर कैसो ॥ २७ ॥

टी०—हे मुनिनागर ! या संसारमें दोषमयी कहे दूषण (अपवाद्)इति तत् स्वरूप जो दवारि डाढा है अथवा दोषमयी कहे दूषणाधिक्यरूपी जो दवारि है सो अति लगी है अति कहि या जनायो कि सब संसारभरेमें लगी है ऐसो स्थान या संसारमें कोऊ नहीं है कि जहां प्राणीको दोष न लगै अथवा जहां कोहूको दोष न लगावै अर्थ या संसारमें वृथा सब सबको दोष लगावत है अथवा दोष कहे परस्पर विरोधमयी जो दवारि लगी है ताको देखतही तासों हमारी मति जरि गई है दवारिके छुयेसों जरियत हैं याके देखतही जरी कहे अति तेज जनायो ता मतिमें या संसारमें राज्यादि भोगकी आश कहे इच्छा न गूढ कहे अंतरमें है न उजागर कहे प्रसिद्ध है जैसे सागर-(समुद्र)में रज धूरि गूढ उजागर नहीं है जा स्थानमें जो जीव दवारिमें जरत है ता स्थानमें ताके भोगकी इच्छा नहीं होति यह रीतिही है ॥ २६ ॥ जैसे ये सब अपनो अपनो घर कहत हैं तैसे ता घरसों कहे ताही घरको होहूं अपनो कहौं सो घर अपनो कैसो कहे कौनविधि है या संसारमें कछु काहूको नहीं है वृथा ममत्व है इति भावार्थः ॥ २७ ॥

मू०—सुन्दरीछन्द ॥ जैसहिहौंअबतैसहिहौंजग । आपद-सम्पदकेनचलौंमग ॥ एकहिदेहतियागबिनामुनि । हौंनकछू अभिलाषकरौंमुनि ॥ २८ ॥ जोकछुजीवउधारणकोमत । जानतहौ तौ कहौ तनुहैरत ॥ यों कहिमौनगहीजगनायक । केशवदासमनोबचकायक ॥ २९ ॥ चामरछन्द ॥ साधुसा-धुकैसभाअशेषहर्षहर्षियो । दीहदेवलोकतेप्रसूनवृष्टिबर्षियो ॥ देखिदेखिराजलोकमोहियोमहाप्रभा । आइयोतहाँतुरन्तदेव-कीसबैसभा ॥ ३० ॥

टी०—राज्यादि जे आपद विपत्ति औ संपद संपत्तिके मग यह हैं तिनमें हौं न चलिहौं हे मुनि ! एक देह त्याग विना और कछू अभिलाष नहीं करतो अर्थ

केवल देह त्याग करिवेहीकी इच्छा है ॥ २८ ॥ रत कहे अनुरक्त ॥ २९ ॥ देवकी सबै सभा आइयो कहे आवत भई सो राजलोक कहे राजभवनकी प्रभा देखि मोहियो कहे मोहित भई ॥ ३० ॥

मू०-विश्वामित्र ॥ व्यासपुत्रकेसमानशुद्धबुद्धिजानिये। ईशकोअशेषतत्त्वतत्त्वसोबखानिये ॥ इष्टहौबशिष्ठशिष्टनित्यवस्तुशोधिये। देवदेवरामदेवकोप्रबोधबोधिये ॥ ३१ ॥

टी०-विश्वामित्र वशिष्ठसों कहत हैं कि हम तुमको व्यासपुत्र जे शुकाचार्य हैं तिनके समान शुद्ध बुद्धि कहे ज्ञानयुक्त है बुद्धि जिनकी ऐसे जानियत हैं अर्थ अतिज्ञानी हौ औ ईश जे ईश्वर हैं तिनको जो अशेष कहे संपूर्ण तत्त्व कहे स्वरूप है ताको तत्त्व कहे सिद्धांत सो अर्थ निश्चयात्मक बखानि एक हेतु कहत हौं ॥ "तत्त्वस्वरूपेपरमात्मनीतिमेदिनी ॥" हे शिष्ट कहे श्रेष्ठ! वशिष्ठ! तुम इष्ट कहे रघुवंशके गुरु हौ औ नित्य जो वस्तु है ताको शोधिये कहे ढूंढो करत हौ सो सब विधिसों तुमको उचित है तासों देवके देव जे राम देव हैं तिनको प्रबोध जो ज्ञान है तासों बोधिये कहे बोध करौ अर्थ जीवोद्धारको मत रामचंद्र पूछत हैं सो कहौ ॥ ३१ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांजगनिन्द्रावर्णनं नाम चतुर्विंशतितमः प्रकाशः ॥ २४ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मिताया रामभक्तिप्रकाशिकायां चतुर्विंशतितमः प्रकाशः ॥ २४ ॥

मू०-दोहा ॥ कथापचीसप्रकाशमें, ऋषिबशिष्ठसुखपाइ ॥ जीवउधारणरीतिसब, रामहिंकह्योसुनाइ ॥१॥ बशिष्ठ-पद्धटिकाछन्द ॥ तुमआदिमध्यअवसानएक। अरुजीवजन्मसमुझौअनेक ॥ तुमहींजोरचीरचनाबिचारि। त्यहिकौनभांतिसमुझौंमुरारि ॥ २ ॥ सबजातिबूझियतमोहिंराम। सुनियेजोकहौंजगब्रह्मनाम ॥ तिनकेअशेषप्रतिबिम्बजाल। त्यइजीवजा

निजगमेंकृपाल ॥३॥ निशिपालिकाछन्द ॥ लोभमदमोहब-शकामजबहींभयो । भूलिगयेरूपनिजबेधितिनसोंगयो ॥ राम ॥ बूझियतबातयहकौनविधिउद्धरै ॥ बशिष्ठ ॥ वेदबिधिशोधिबुधयत्नबहुधाकरै ॥४॥ राम–दोहा ॥ जितलैजैहैबासना, तिततितह्वैहैलीन ॥ यत्नकहौकैसेकरे, जीवबापुरोदीन ॥ ५ ॥ बशिष्ठ–दोधकछन्द ॥ जीवनकीयुगभांतिदुराशा ॥होतिशुभाशुभरूपप्रकाशा । यत्ननसोंशुभपन्थलगावै । तौअपनोतबहींपदपावै ॥ ६ ॥

टी०– १ जीवनके जे अनेक जन्म हैं तिनको समुझौ कहे जानत हौ अथवा अनेक जे जीव हैं तिनके जन्मको अर्थ जा प्रकारसों जीवनकी उत्पत्ति है ताको समुझौ कहे मोसों बूझत हौ ॥ २ ॥ सब वस्तु जानिहूके जो हमसों बूझियत कहे पूंछतहौ तौ सुनौं हम कहियत हैं जगमें जो ब्रह्मनाम कह्यो है अर्थ जिनको ब्रह्मनाम है तिनके जे प्रतिबिंब जा प्रतिबिंब समूह हैं तेई जीव हैं यह मत प्रतिबिंबवादिनको वेदांतमें प्रसिद्ध है ॥ ३ ॥ अपनो जो रूप ब्रह्म है ताको भूलिगये तिनसों लोभादिसों ॥ ४ ॥ वासना (दुराशा) ॥ ५ ॥ शुभ दुराशा जो ईश्वर पूजनादिकी आशा है ताके पंथमें जीवको अथवा मनको लगावै तो अपनो जो पद (स्थान) है ब्रह्मस्थान ताको पावै अर्थ शुभवासनाको ग्रहण करै ताके वाद ताहू वासनाको त्याग करि ब्रह्मपदको प्राप्त होय ॥ ६ ॥

मू०–हौंमनतेनिधिपुत्रउपायो । जीवउधारणमंत्रबतायो ॥ हैपरिपूरणज्योतितिहारी । जाइकहीनसुनीननिहारी ॥ ७ ॥ दोहा ॥ ताकीइच्छातेभये, नारायणमतिनिष्ठ ॥ तिनतेचतुराननभये, तिनतेजगतप्रतिष्ठ ॥ ८ ॥ दोधकछंद ॥ जीवसबैअवलोकिदुखारे । आपनचित्तप्रयोगबिचारे ॥ मोहिंसुनाये तुम्हैंतेसुनाऊं । जीवउधारणगीतशुनाऊं ॥ ९ ॥ दोहा–मुक्तिपुरीदरबारके, चारिचतुरप्रतिहार । साधुनकोसतसंगसम,

अरुसंतोषविचार ॥१०॥ यहजगचक्काब्यूहकिय, कज्जलक-
लितअगाधु ॥ तामहँपैठिजोनीकसै, अकलंकितसोसाधु॥११॥

टी०-ज्योति (ब्रह्मज्योति) ॥ ७ ॥ ८ ॥ तिन चतुरानन जगत्के जीवन-
को संसारमें दुखार देखिकै अपने चित्तमें तिन जीवनके उद्धारको प्रयोग कहे
यत्न बिचार्‌यौ सो सब हमको सुनायो है सो तुमको सुनाइंयतहै ॥ ९ ॥ १०॥
यामें साधुको लक्षण कहत हैं जैसे कज्जल कलित चक्रव्यूहमें शपथार्थ पैठिकै
अकलंकित कहे कज्जल चिह्न रहित निकसे सो साधु कहे दोषरहित होत है तैसे
कज्जल सम दोषयुक्त जो संसार है तामें पैठि अकलंकित कहे अदोष निकसै सो
प्राणी साधु है ॥ ११ ॥

मू०-दोधकछंद ॥ देखतहूंएककालछियेहूं । बातकैहसुनै
भोगकियेहूं ॥ सोवतजागतनेकनक्षोभै । सोसमतासबहीमहँ
शोभै ॥ १२ ॥ जोअभिलाषनकाहुकोआवै । आयेगयेसुख
दुःखनपावै । लैपरमानँदसोंमनलावै । सोसबमांझसँतोषक-
हाव ॥ १३ ॥ आयोकहाँअबहौंकहिकोहौं । ज्योंअपनोपद-
पाऊंसोठोहौं ॥ बंधुअबंधुहियेमहँजानैं । ताकहँलोगाबिचार-
बखानैं ॥ १४ ॥

टी०-यामें समताको लक्षण कहत हैं संसारको जो स्रक् चंदन बनितादि
विषयभोग है ताको देखत हूं औ छुयेहूं औ ताहीकी बात कहै औ सुनै औ भो-
गहू करै परंतु सोवत आ जागते नेकहू तामें क्षोभै नहीं अर्थ लीन न होय औ
सबहीमें कहे अग्नि जलादिमें समता शोभै सोई समता है ॥ १२ ॥ यामें संतोष-
को लक्षण कहतहैं जो काहू बस्तुको अभिलाष जीमें न आवै औ काहू बस्तुके
आयेसों प्राप्त भयेसों सुख न पावै औ गयेसों दुःख न पावै औ मनको लैके परमा-
नंद जो ब्रह्महै तामें लगावै सोई सबमांझ कहे चारोंके मध्यमें संतोष कहावत है॥
॥ १३ ॥ यामें बिचारको लक्षण कहत हैं मैं कौन हौं औ कहां आयो हौं अब
जा उपायसों अपने पद-(स्थान) को पाऊँ सोउ ठोहौं कहे ढूंढौं या प्रकारसों
बिचार करै औ बंधु कहे हित शम दमादि अबंधु कहे अहित काम क्रोधादिको
हियेमें जानै सोई विचार है ॥ १४ ॥

मू०—चारिमेंएकहुजोअपनावै । तौतुमपैप्रभुआवनपावै ॥ राम ॥ ज्योतिनिरीहनिरंजनमानी। तामहँक्योंऋषिइच्छबखानी ॥ १५ ॥ वशिष्ठ-दोहा ॥ सकलशक्तिअनुमानिये, अद्भुत ज्योतिप्रकाश ॥ जातेजगकोहोतहै, उत्पतिस्थितिअरुनाश॥ ॥ १६ ॥ श्रीराम—दोधकछंद ॥ जीवबँधेसबआपनिमाया ॥ कीन्हेंकुकर्ममनोवचकाया ॥ जीवनचित्तप्रबोधनआनो। जीवनमुक्तकेभेदबखानो ॥ १७ ॥

टी०—जैसे चोपदारको अपनाइकै राजाके पास सब जात हैं तैसे इन चारिमें एकहूको अपनावै तौ तुमपै जान पावै फेरि राम ऋषिसों पूंछ्यो कि ज्योतिको तौ निरीह कहे इच्छा रहित औ निरंजन कहे रागरहित मान्यौ औ कह्यो कि "ताकी इच्छाते भये, नारायण मतिनिष्ठ" तौ ज्योतिमें इच्छा क्यों कही सो कहौ ॥ १५ ॥ वशिष्ठ कह्यो कि अद्भुत जो ज्योतिको प्रकाश है तामें इच्छादि कहैं तौ नहीं परंतु इच्छादिकनकी सबकी शक्ति अनुमानियतहै जा शक्तिसों संसारकी उत्पत्ति स्थिति नाश होत है ॥ १६ ॥ जीव जे हैं ते अपनीमायामें बँधे मनसा बाचा कर्मणा कुकर्म (कुत्सितकर्म) कीन्हे हैं तिन जीवनको जो प्रबोधन कहे ज्ञान तुम कह्यो सो हम चित्तमें आन्यो अर्थ भ्यास जान्यो इति अब जीवन्मुक्तके भेद कहौ ॥ १७ ॥

मू०—वशिष्ठ ॥ बाहेरहूंअतिशुद्धहियेहू । जाहिनलागतकर्म कियेहू ॥ बाहेरमूढसोअंतसयानो। ताकहँजीवनमुक्तबखानो॥ ॥ १८ ॥ दोहा ॥ आपुनसोअवलोकिये, सबहीयुक्तायुक्त ॥ अहंभावमिटिजाहिजो,कौनबद्धकोमुक्त ॥ १९ ॥ श्रीराम-दोधक ॥ सोसिगरेगुणहोतसोजानो । स्थावरजीवनमुक्तबखानो ॥ वशिष्ठ ॥ जानिसबैगुणदोषनछंडै । जीवनमुक्तनकेपद-मंडै ॥२०॥ राम—दोहा ॥ साधुकहावतकरतहैं, जगमेंसबव्यौहार ॥ तिनकोमीचुनछ्वैसकै, कहिप्रभुकौनविचार ॥ २१ ॥

टी०—यामें जीवन्मुक्तको लक्षण कहते हैं वाहर कहे तनमें औ हियहूमें कहे मनहूमें शुद्ध होय औ पाप पुण्य कर्म करै सो लागै नहीं औ बाहर मूढ़

अज्ञान रहे अर्थ बावर सम रहै औ अंतमें सयानो रहै ताहीको जीवन्मुक्त कहियत है ॥ १८ ॥ युक्त कहे योग्य मनुष्यादि अयुक्त कहे अयोग्य सूकरादि तिनको आपुनसो कहे आपने सम अवलोकिये (देखिये) अर्थ अपने सम सबको जानिये औ अहंभाव मिटि जाय तौ कौन बद्ध है कौन मुक्त है अर्थ सबही मुक्त हैं ॥१९॥ योग्यके गुण अयोग्यके दोष जानिकै त्याग करै ॥२०॥ रामचन्द्र कहत हैं कि ज्ञानसों जीवनकी मुक्ति कह्यो सो जान्यो अब यह कहौ कि जे प्राणी साधु कहावत हैं औ जगमें स्त्री पुत्रादिके सब व्यौहार करत हैं तिनको मीचु नहीं छुई सकति अर्थ तिनकी मृत्यु नहीं होति है ताको विचार हे प्रभु ! हे वशिष्ठ ! कहौ ॥ २१ ॥

मू०-वशिष्ठ-पद्धटिकाछन्द ॥ जगजिनकोमनतवचरणली-न । तनतिनकोमृत्युनकरतिक्षीन ॥ तेहिक्षणहींक्षणदुखक्षीण होत । जियकरतअमितआनँदउदोत ॥ २२ ॥ जोचाहैजीवन अतिअनंत । सोसाधैप्रणायामयंत्र ॥ शुभरेचकपूरकनामजा-नि । अरुकुम्भकादिसुखदानिमानि ॥ २३ ॥ जोक्रमक्रमसाधै साधुधीर । सोतुमहिंमिलैयाहीशरीर ॥ राम ॥ जगतुमतेनाहिं सर्वज्ञआन । अबकहौदेवपूजाविधान ॥ २४ ॥

टी०-हे राम ! जिन प्राणिनको मन तुम्हारे चरणमें लीन है ते साधु जगमें सब व्यवहारहू करत हैं ताहूपर तिनके तनको मृत्यु क्षीण नहीं करि सकति औ तिहि प्राणीके क्षणमें संसाररूपी दुःख क्षीण होत हैं औ मुक्तिरूपी जो अमित आनन्द है सो उदोत (प्रकाश) करत है ॥ २२ ॥ अंगुष्ठ ते तृतीय अंगुलीको नाम अनामिका है तासों नासाको वाम रंध्र अंगुष्ठसों रोंकि वाम रंध्रसों वायुको छोडिये सो पूरक प्राणायाम है; औ दक्षिण रंध्र अंगुष्ठसों औ वामरंध्र अंगुष्ठसों औ वामरंध्र अनामिकासों साथही रोंकि वायुको हृदयमें स्थापन करिये सो कुम्भक है औ यथा वायुपुराणे। "प्राणायामस्त्रिधा प्रोक्तो रेचकः पूरकस्तथा ॥ कुम्भको रेचकस्तत्र नासारंध्राच्च दक्षिणात् ॥ निरुध्य वामरंध्रश्चानामिकया विसर्जनम् ॥ निरुध्य दक्षिणं रंध्रं वामरंध्राच्च पूरणम् ॥ तथैवानामिकांगुल्या पूरणं तु तदुच्यते ॥ रेचकात्पूरणात्पश्चाद्द्वैपुटनाशयोस्तथा । सन्निरुध्य हृदि-स्थाप्य वायुं तिष्ठत्स कुम्भकः" ॥ २३ ॥ २४ ॥

मू०—वशिष्ठ-तारकछंद ॥ हमएकसमयनिकसेतपसाको । तवजाइभजेहिमवंतरसाको ॥ बहुभांतिकरचोतपक्योंकहि आवै । शितकण्ठप्रसन्नभयेजगगावै ॥ २५ ॥ दंडक ॥ ऊजरे उदारउरबासुकीविराजमान हारकेसमानआनउपमानटोहिये। शोभिजैजटानबीचगंगाजूकेजलबुंदकुंदकीसीकलीकेशोदासम-नमोहिये।नखकीसीरेखाचंद्रचन्दनसीचारुरजअंजनशृंगारहू-गरलरुचिरोहिये। सबसुखसिद्धिशिवासोहैशिवजूकेसाथजाव-कसोपावकलिलारलाग्योसोहिये ॥ २६ ॥

टी०—रसा (पृथ्वी) जग गावै अर्थ जिनको जगत्के प्राणी गान करत हैं ॥ २५ ॥ उजरे औ उदार कहे बडे उरमें हार मालाके समान वासुकी नाम सर्प विराजमानहै और उपमाको नहीं टोहिये कहे ढूंढियत अर्थ और उपमाके सदृश नहीं हैं तासों खोज नाहीं करियत रज कहे विभूति अंजन जो शृंगार है ताकी रुचि गरल जो विष है ता करिके रोहिये कहे धारण करियत है अर्थ लगि-गयो पार्वतीके नेत्रांजन सम गरल शोभित है सब सुखकी सिद्धिशिवा जो पार्वतीजी हैं ते संगमें शोभती हैं औ जावक कहे महाउर सम लिलारमें लाग्यो पावक (अग्नि) शोभित है ऐसे सदा सुरत चिह्नयुक्त प्रसन्न है हमारे समीप आये इतिशेषः ॥ २६ ॥

मू०—महादेव-तारकछन्द ॥ बरमाँगिकछूऋषिराजसयाने । बहुभांतिचलेतपपंथपयाने ॥ वशिष्ठ ॥ पुजवोपरमेश्वरमोमन इच्छा । सिखवोप्रभुदेवप्रपूजनशिक्षा ॥ २७ ॥ शिव-दोहा ॥ रामरमापतिदेवनाहिं, रंगनरूपनभेव ॥ देवकहतऋषिकौनको, सिखऊंजाकीसेव ॥ २८ ॥ वशिष्ठ-तोमरछंद ॥ हमकहाजान-हिंअज्ञ । तुमसर्वदासर्वज्ञ ॥ अबदेवदेहुबताइ । पूजाकहौस-मुझाइ ॥ २९ ॥ शिव ॥ सतचित्प्रकाशप्रभेव । तेहिवेद-मान तदेव ॥ तेहिपूजिऋषिरुचिमंडि । सबप्राकृतनकोछंडि

॥ ३० ॥ पूजायहैउरआनु । निर्व्याजधरियेध्यानु ॥ योंपूजिघटिकाएक । मनुकियोयाजअनेक ॥ ३१ ॥

टी०—चले तपपंथमें अर्थ उचित तपपंथमें तुम बहुभांति पयाने कहे गमन कर्यौ है अर्थ बडो तप कर्यो है ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ सत कहे सत्यरूप चित् कहे चैतन्यरूप जो प्रकाश कहे ज्योति जो रामचन्द्रको प्रभेव कहे भेद है अर्थ रूपांतर है ताको देव वेद मानत हैं प्राकृत कहे लघु गणेशादि ॥ ३० ॥ निर्व्याज कहे निष्कपट ध्यानको धरिये यहै ता देवकी पूजा है अर्थ ताकी पूजा ध्यानही है और नहीं है ॥ ३१ ॥

मू०—जियजानयहईयोग । सबधर्मकर्मप्रयोग ॥ सबरूपपूजिप्रकाश । तबभयेहमसेदास ॥ यहबचनकरिपरमान । प्रभुभयेअंतर्द्धान ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ यहपूजाअद्भुतआगिनि, सुनिप्रभुत्रिभुवननाथ ॥ सबैशुभाशुभबासना, मैंजारीनिजहाथ ॥ ३३ ॥ झलनाछंद ॥ यहिभांतिपूजापूजिजीवजोभक्तपरमकहाइ । भवभक्तिरसभागीरथीमहँदेहिदुबनिबहाइ ॥ पुनिमहाकर्त्तामहात्यागीमहाभोगीहोइ । अतिशुद्धभावरमैंरमापतिपूजिहैसबकोइ ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ रागद्वेषबिनकैसहूं, धर्माधर्मजोहोइ ॥ हर्षशोकउपजैनमन, कर्त्तामहासोलोइ ॥ ३५ ॥

टी०—धर्मके जे दानादि कर्म हैं तिनको प्रयोग कहे यत्न सब प्राणी प्रभु जो रूप है ज्योतिरूप ताको पूजिकै हमारे सम दास भये हैं परिमाण कहे निश्चय ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ जो जीव या प्रकारसों पूजा पूजिकै परमभक्त कहायकै भव जो संसार है ताके दुःखनको भक्तिरसकी जो भागीरथी गंगा हैं तामें बहाइ देइ अर्थ दूरि करै फेरि महाकर्त्ता औ महात्यागी औ महाभोगी होइ औ शुद्धभावसों रमापति (ईश्वर) में रमैं कहे प्राप्त होइ औ ताको सब कोउ पूजन करिहैं ॥ ३४ ॥ महाकर्त्तादिकनकें तीनहूके लक्षण क्रमसों कहत हैं जाके राग कहे प्रीति बिना जीव रक्षणादि कछू धर्म आकस्मात् ह्वै जाइ ताको हर्ष कहे सुख न होइ औ द्वेष कहे विरोध बिना जीवहिंसादि अधर्म होइ ताको शोक दुःख ना होइ सो प्राणी महाकर्त्ता हैं ॥ ३५ ॥

मू०–दोहा ॥ भोजअभोजनरतविरत, नीरससरससमान ॥ भोगहोइअभिलाषबिन, महाभोगतामान ॥ ३६ ॥ जोकछु आंखिनदेखिये, बाणीबर्ण्योंजाहि ॥ महातियागीजानिये, झूठोजानौताहि ॥ ३७ ॥ तोमरछंद ॥ जियज्ञानबहुव्यौहार । अरुयोगभोगबिचार ॥ यहिभांतिहोइजोराम । मिलिहैंसोतेरेधाम ॥ ३८ ॥ सवैया ॥ निशिबासरबस्तुबिचारकरैमुखसांचहियेकरुणाघनुहै । अघनिग्रहसंग्रहधर्मकथानपरिग्रहसाधुनकोगनुहै । कहिकेशवयोगजगैहियभीतरबाहरभोगनसोंतनुहै । मनुहाथसदाजिनकेतिनकोबनहीघरहैघरहीबनुहै ॥ ३९॥

टी०–भोज कहे भक्ष्य औ अभोज (अभक्ष्य) पदार्थमें रत (अनुरक्त) औ विरत (विरक्त) न होइ अर्थ भोज्य अभोज्यको समान भक्षण करै औ निरस कहे स्वादरहित सरस (स्वादयुक्त) वस्तु जाको समान होइँ औ भोग जाको अभिलाष विना होइ सो महाभोक्ता है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ जाके जियमें ज्ञानको बहुत प्रकारको व्यौहार है औ योग औ भोगको बहु विचार है ऐसो जब होइ तब तुम्हारो जो धाम (तेज) है ज्योतिरूप ताको मिलिहै अथवा धाम कहे घर वैकुंठ ताको मिलि है (प्राप्त) ह्वै है ॥ ३८ ॥ वस्तुविचार कहे ब्रह्मविचार अथवा सत् असद्वस्तुको विचार निग्रह (ताडन) परिग्रह कहे परिजन (निकटवासी) इति ॥ " परिग्रहः परिजने इति मेदिनी " ॥ ३९ ॥

मू०–॥ दोहा ॥ लेइजोकहियेसाधुअन, लीन्हेकहियेबाम ॥ सबकोसाधनएकजग, रामतिहारोनाम ॥ ४० ॥ राम ॥ मोहिं नहुतोजनाइबे, सबहीजान्यौआजु ॥ अबजोकहौसोकरिबैनै, कहेतुम्हारेकाज ॥ ४१ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांजीवोद्धारवर्णनं नाम पंचविंशः प्रकाशः ॥ २९ ॥

टी०-वाम कहे कुटिल साधन कहे उपाय अर्थ मुक्तिको उपाय केवल तुम्हारे नामको जप है ।। ४० ।। जो आपनो ईश्वरत्व मोहि काहूको जनाइवोई नहीं रह्यौ सो सबही जान्यौ तासों जो कहौ सो अब करिये अर्थ राज्य लेवेकौ कहत हौ सो लेहैं ।। ४१ ।।

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां पंचविंशः प्रकाशः ।। २५ ।।

मू०-दोहा ।। कथाछबीसप्रकाशमें, कह्योवशिष्ठविवेक ।। रामनामकोतावअरु, रघुबरकोअभिषेक ।।१।। मोटनकछंद ।। बोलेऋषिराजभरत्थतबै । कीजैअभिषेकप्रयोगसबै ।। शत्रुघ्न-कह्योचुपह्वैनरहौ । श्रीरामकेनामकोतत्त्वगहौ ।। २ ।।

टी०-जब रामचन्द्र राज्य अंगीकार करचौ तब ऋषिराज-(वशिष्ठ) सों भरत बोले प्रयोग (यत्न) शत्रुघ्न भरतसों कह्यो कि चुप क्यों नहीं ह्वै रहते अर्थ राज्याभिषेक तौ रामचन्द्र अंगीकार करचौ है तौ ह्वैहैई ।। १ ।। जो ऋषि-राज कह्यौ है कि सबको साधन एक जग, राम तिहारो नाम ।। तारामनामकी तत्त्व ऋषिसों गहौ अर्थ सुनिकै धारण करौ ।। २ ।।

मू०-राम-मोटनकछन्द ।। श्रद्धाबहुधाउरआनिभई।ब्रह्मासु-तसोंबिनतीबिनई ।। श्रीरामकोनामकहौरुचिकै ।मतिमानमहा मनकोशुचिकै ।। ३ ।। वशिष्ठ--स्वागताछंद ।। चित्तमांझजब आनिअरूझी। बाततातकहँमैंयहबूझी ।। योगयागकरि[illegible] आवै । स्नानदानविधिमर्मनपावै ।। हैअशक्तसबभांतिबिचारे कौनभांतिप्रभुताहिउधारो ।। ४ ।।

टी०-शत्रुघ्नके उरमें बडी श्रद्धा भई ।। ३ ।। अरुझी अर्थ संदेह भई ता (ब्रह्मा) मर्म (सिद्धान्त) ।। ४ ।।

मू०-ब्रह्मा-भुजंगप्रयातछन्द ।। जहींसच्चिदानन्दरूपैधरैंगे । सुत्रैलोक्यकोतापतीन्योंहरैंगे । कहैगोसबैनामश्रीरामताको । सदासिद्धहैशुद्धउच्चारजाको ।।५।। कहैनामआधोसोआधोन

शावै। कहैनामपूरोसोबैकुंठपावै॥ सुधारैंदुहूंलोककोवर्णदोऊ। हियेछद्मछांड़ैकहैवर्णकोऊ॥ ६॥ सुनावैसुनैसाधुसंगीकहावै। कहावैकहैपापपुंजैनशावै॥ स्मरावैस्मरैबासनाजारिडारै। तजै छद्मकोदेवलोकैसिधारै ॥७॥ तामरसछंद ॥ जवसबवेदपुराण नशैहैं। जपतपतीरथहूमिटिजैहैं॥ द्विजसुरभीनहिंकोउविचारै। तबजगकेवलनामउधारै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मरणकालकाशीविषे- महादेवनिजधाम॥ जीवनकोउपदेशिहैं,रामचन्द्रकोनाम॥९॥ मरणकालकोऊकहै, पापीहोइपुनीत ॥ सुखहीहरिपुरजाइहै, सबजगगावैगीत ॥ १० ॥

टी०—और मंत्र पुरश्चरणादिसों सिद्ध किये जात हैं औ याके शुद्ध उच्चार सदाही सिद्ध हैं॥ ५॥ आधो नाम रा अथवा म अधोगति (नरक) इति, पूरे नामके जपसों वैकुंठ प्राप्तिहोतिहै मृत्युलोकमें कहा होत है ता लिये फेरि कहत हैं कि राम ये जे दुवौ अंक (वर्ण) हैं ते मृत्युलोक, स्वर्गलोक दुवौ सुधारत हैं मृत्युलोकमें यश गौरवादिको लाभ होत है, वैकुंठमें देवसुख प्राप्त होत है इत्यर्थः॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥

मू०—रामनामकेतत्त्वको, जानतवेदप्रभाव, ॥ गंगाधरकैधरणिधर, बालमीकिमुनिराव ॥ ११ ॥ दोधकछंद ॥ सातहु सिंधुनकेजलल्हूरे। तीरथजालनिकेपयपूरे॥ कंचनकेघटबानर लीने। आइगयेहरिआनँदभीने॥ १२॥ दोहा ॥ सकलरत्न मयमृत्तिका, शुभऔषधीअशेष॥ सातद्वीपकेपुष्पफल, पल्लवरससविशेष ॥ १३ ॥ दोधकछंद॥आंगनहीरनकोमनमोहै॥ कुंकुमचन्दनचर्चितसोहै ॥ हैसरसीसमशोभप्रकाशी । लोचनमीननमनोजविलाशी॥ १४ ॥ दोहा ॥ गजमोतिनयुत शोभिजैं, मरकतमणिकेथार॥ उदकबुन्दसोंजनुलसत, पुरइनिपत्रअपार॥ १५॥ बिशेषकछंद ॥ भांतिनभांतिनभाज-

नराजतकौनगनै । ठौरहिठौररहेजनुफूलिसरोजघनै ॥ भूपन-
केप्रातिबिम्बबिलोकतरूपरसे । खेलतहैजलमांझमनोजलदेव-
बसे ॥ १६ ॥ पद्धटिकाछंद ॥ मृगमदमिलिकुंकुमसुरभिनीर।
घनसारसहितअम्बरउसीर । घसिकेशरिसोंबहुबिधिनीर ।
क्षितिछिरकेचरथावरशरीर ॥ १७ ॥ बहुबर्णफूलफलदलउ-
दार । तहँभरिराखेभाजनअपार ॥ तहँपुष्पवृक्षशोभैंअनेक ।
मणिवृक्षस्वर्णकेवृक्षएक ॥ १८ ॥ त्यहिंउपररच्योएकैबितान।
दिविदेखतदेवनकेबिमान । दुहुँलोकहोतपूजाबिधान ।अरुनृ-
त्यगीतवादित्रगान ॥ १९ ॥

टी०-धरणिधर (शेष) ॥ ११ ॥ हरि जे रामचन्द्र हैं तिनके अभिषेको-
त्सवके आनंदमें भीने इत्यर्थः ॥ १२ ॥ रस (घृतादि) ॥ १३ ॥ भांतिन
भांति तीनि छंदमें एक वाक्यता है सरसी तडाग ता आंगनमें प्रतिबिंबित जे
सबके लोचन हैं तेई मनोजके (कामके) मीन (मत्स्य) हैं अथवा मनोजबि-
लासी कहे कामके खेलिबेके मीन हैं ॥ १४ ॥ ताही तडागमें पात्र पुरइनि पत्र
समहैं ॥ १५ ॥ ताही तडागमें भाजन कहे पात्र सरोज सम फूलि रहे हैं प्रति-
बिंब जलदेव सम हैं ॥ १६ ॥सुरभि (सुगंधित अथवा सुंदर) "सुरभिर्हेम्नि चंप-
के जातीफले मातृभेदे रम्ये चैत्र वसंतयोः॥ सुगंधौ गवि शल्लक्यामिति हेमचंद्रः॥"
अम्बर सुगन्ध वस्तुविशेष ॥"अंबरंनद्वयोर्व्योम्निसुगन्ध्यंतरवस्त्रयोरिति मेदिनी॥"
सरिसों (बराबरिसों) अर्थ मृगमदादि सब सम घसिकै ॥ १७ ॥ दलपत्र
(भाजन पात्र)॥ १८ ॥ एकै अपूर्व वादित्र (बाजने) ॥ १९ ॥

मू०-तरुऊमरिकोआसनअनूप । बहुरचितहेममयविश्वरू-
प ॥ तहँबैठेआपुनआइराम । सियसहितमनोरतिरुचिरकाम
॥ २० ॥ जनुघनदामिनिआनन्ददेत । तरुकल्पकल्पबल्लीस-
मेत । हैकैधौंविद्यासहितज्ञान । कैतपसंयुतमनसिद्धिजान ॥
॥२१॥ कैविक्रमयुतकीरतिप्रवीन । कैश्रीनारायणशोभलीन॥
कैअतिशोभितस्वाहासनाथकैसुन्दरताश्रृंगारसाथ ॥ २२ ॥

सुन्दरीछंद ॥ केशवशोभनछत्रबिराजत । जाकहँदेखिसु-धाधरलाजत ॥ शोभितमोतिनकेमतिकेगन । लोकनकेजनुलागिरहेमन ॥ २३ ॥ दोहा ॥ शीतलताशुभतासबै, सुन्दरताकेसाथ ॥ अपनीरविकीअंशुल, सेवतजनुनिशि-नाथ ॥ २४ ॥

टी०--ऊमरि (गूलरि) हैममय कहे सुवर्णमयी विश्व कहे संसारके रूप अर्थ संसारके वस्तु स्वरूपन करिके रचित है (चित्रित) है ॥ २० ॥ कै तपसंयुत सिद्धि कहे तपसिद्धि यह मनमें जानु इत्यर्थः ॥ २१ ॥ श्री (लक्ष्मी) सनाथ कहे अग्नि सहित शृंगाररस अथवा भूषणको शृंगार कियेसों सुन्दरता बढति है तासों जानों ॥ २२ ॥ २३ ॥ ताही छत्रमें तर्क है शीतलता औ शुभता कहे मांगल्य औ सुन्दरता जो सब कहे पूर्ण है तिनके संग अपनी औ रविकी अंशु (किरणि) लैके मानों निशिनाथ (चन्द्रमा) रामचन्द्रको सेवत है चन्द्रकिरणि सम मुक्तन-की किरणि हैं रविकिरणि सम औ जटित जे माणिकादि मणिहैं तिनकी किरणि हैं औ शीतलतादि हैंही ॥ २४ ॥

मू०--सुन्दरीछन्द ॥ ताहिलियेरविपुत्रसदारत । चमरबिभी-षणअंगदढारत ॥ कीरतिलैजगकीजनुवारत । चन्द्रकचंदन-चंदसवांरत ॥ २५ ॥ लक्ष्मणदर्पणकोदेखरावत । पाननिल-क्ष्मणबंधुखवावत ॥ भर्थलैलैनरदेवसदारत । देवअदेवनिपा-यनपारत ॥ २६ ॥ दोहा ॥ जामवंतहनुमंतनल, नीलमरा-तिबसाथ ॥ छरीछबीलीशोभिजै, दिक्पालनकेहाथ ॥ २७ ॥ रूपबहिक्रमसुरभिसम, वचनरचनबहुभेव ॥ सभामध्यपहिचा-नियो, नरनरदेवनदेव ॥ २८ ॥ आईजबअभिषेककी, घटिका केशवदास ॥ बाजेएकहिबारबहु, दुंदुभिदीहअकाश ॥ २९ ॥

टी०--रत कहे अनुरक्त है कीर्तिसम चमरहै फिरि चमर कैसे हैं कि चंद्रक जो कपूरहै औ चंदन औ चंद्रमा है सदा आर्त कहे पीडित जिनसों अर्थ जिनकी

श्वेततासों अपनी श्वेतताही न समुझि चंद्रकादि दुःखी होतहैं ॥ २५ ॥ २६ ॥ माही (मरातिब) प्रसिद्ध है छरी (आशा) ॥ २७ ॥ सुरभि (सुगंधि) ॥ २८ ॥ २९ ॥

मू०—झूलनाछंद ॥ तबलोकनाथविलोकिकैरघुनाथकोनिजहाथ । सबिशेषसोंअभिषेककीपुनिउच्चरीशुभगाथ ॥ ऋषिराजइष्टवशिष्ठसोंमिलिगाधिनन्दनआइ। पुनिबालमीकिबियासआदिजितेहुतेमुनिराइ ॥ ३० ॥ रघुनाथशंभुस्वयंभुकोनिजभक्तिदीसुखपाइ । सुरलोकक्कोसुरराजकोकियदीहनिर्भयराइ । बिधिसोंऋषीशनसोंबिनयकरिपूजिऔपरिपाइ । बहुधादईंतपवृक्षकीसबासिद्धिसिद्धसुभाइ ॥ ३१ ॥

टी०—लोकनाथ जे ब्रह्मा हैं तिन अभिषेककी घटिका आई बिलोकिकै निज हाथसों रघुनाथको अभिषेक की कहे करचो पुनि फेरि शुभ गाथ कहे वेदविहित गाथको उच्चार करचो इत्यर्थः पुनि कहे ब्रह्माके अभिषेक किये बाद वशिष्ठादिक जेते मुनिराय ता ठौर हुते तिनहुँन अभिषेक कारि शुभगाथ उच्चरी इत्यर्थः ३०॥ स्वयंभू कहे ब्रह्मा ॥ ३१ ॥

मू०—दोहा ॥ दीन्होंमुकुटबिभीषणै,अपनोअपनेहाथ ॥ कंठमालसुग्रीवको,दीन्हीश्रीरघुनाथ॥३२॥चञ्चरीछन्द॥ मालश्रीरघुनाथकेउरशुभ्रसीतहिसोदई । आफियोहनुमन्तकोतिनदृष्टिकैकरुणामई ॥ औरदेवअदेववानरयाचकादिकपाइयो। एकअङ्गदछोड़िकैज्वइजासुकेमनभाइयो ॥ ३३ ॥ अंगद ॥ देवहौनरदेवबानरनैऋतादिकधीरहौ । भरतलक्ष्मणआदिदैरघुवंशकेसबबीरहौ ॥ आजुमोसनयुद्धमाडहुएकएकअनेककै । बापकोतबहौंतिलोदकदीहदेहुबिबेककै ॥३४॥ राम—दोहा ॥ कोऊमेरेवंशमें, करिहैतोसोंयुद्ध ॥ तबतेरोमनहोइगो, अंगदमोसों-

शुद्ध ॥ ३५ ॥ बिधिसोंपाँयपखारिकै,रामजगतकेनाह॥ दीन्हे-उगाउंसनौढियन, मथुरामण्डलमाह ॥ ३६ ॥

इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्र
चंद्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांरामस्यराज्याभिषेकव-
र्णनंनामषड्विंशःप्रकाशः ॥ २६ ॥

टी०–॥ ३२ ॥ आफियो कहे दियो तिन सीताजू ॥ ३३ ॥३४॥३५॥३६॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मिताया
रामभक्तिप्रकाशिकाया षड्विंशः प्रकाशः ॥ २६ ॥

मू०–दोहा ॥ सत्ताइसेंप्रकाशमें, रामचन्द्रसुखसार ॥ ब्रह्मादिकअस्तुतिबिविधि, निजमतिकेअनुसार॥ १॥ ब्रह्मा–झूलना छन्द ॥ तुमहौअनन्तअनादिसर्बगसर्वदासर्वज्ञ । अबएकहौ कि अनेकहौमाहिमानजानतअज्ञ ॥ भ्रमिबोकरैंजगलोकचौदहलो-भमोहसमुद्र । रचनारचीतुमताहिजानतहौंनब्रह्मनरुद्र ॥ २ ॥

टी०–॥ १ ॥ सर्वग कहे सर्वत्र व्याप्त लोभ मोहके समुद्र अर्थ लोभ मोहसों भरे जे चौदहलोक कहे चौदहों लोकके प्राणी जा रचनामें भ्रमिवो करत हैं अर्थ संदेहको प्राप्त भयो करत हैं ता रचनाको नहीं जानत हों न ब्रह्म (वेद) जानत हैं न रुद्र जानत हैं अथवा चौदहलोकमें लोभ औ मोहके समुद्रमें हम भ्रम्यो करत हैं तासों तुम्हारी रचनाको नहीं जानत ॥ २ ॥

मू०–शिव–दण्डक ॥ अमलचरिततुमबैरिनमलिनकरौसाधुकहैंसाधुपरदाराप्रियअतिहौ । एकस्थलस्थितपैबसतजगजनाप्रियकेशोदासद्विपदपैबहुपदगतिहौ ॥ भूषणसकलयुतशीशधरेभूमिभारभूतलफिरतपैअभूतभुवपतिहौ । राखौगाइब्राह्मणनराज सिंहसाथचिरुरामचन्द्रराजकरौअदभुतगतिहौ ॥ ३ ॥ इन्द्र ॥ बैरीगाइब्राह्मणकोग्रन्थनमेंसुनियतुकविकुलहीकेसुबरणहरकाजहै । गुरुशय्यागामीएकबालकैबिलोकियतुमा

गनहींकेमतवारे कैसोसाजहै ॥ अरिनगरीनप्रतिहोतहैअगम्या गौनदुर्गनहिंकेशोदासदुर्गतिसीआजहै । देवताईदेखियतुगढ़ निगढोईजीवो चिरु चिरु रामचन्द्रजाकोऐसोराजहै ॥ ४ ॥

टी०-याहूमें बिरोधाभास है अनल (निर्मल) चरितनसों बैरिनको मलिन करत हौ इत्यर्थः पर कहे उत्कृष्ट दार अर्थ लक्ष्मीजू । "राघवत्वे भवेत्सीता रुक्मिणी कृष्णजन्मनीति पुराणात्॥" जा भूमिको शीशमें धरे हैं ताही पर फिरिबो बिरोध है गाय सदृश जे ब्राह्मण हैं तिनहूंको राखत हौ रक्षा करत अथवा गाय औ ब्राह्मणनको राखत हौ औ राजसिंह कहे राजरूपी जे सिंह हैं तिनसों साथ कहे मित्रता है तौ सिंहसों मित्रता औ गायकी रक्षा यह बिरोध है ॥ ३ ॥ यामें परिसंख्यालंकार है ग्रंथनमें लिख्यो है कि गाइ ब्राह्मणके बैरसों ऐसो पाप होत है सुंदर वर्ण (अक्षर) कवितामें धरिबेको देवताई कहे देवताकी प्रतिमाही ढांकी आदिकी गढनि सों गढी देखियत है और कोऊ प्राणी नहीं गढ्यो जात अर्थ ताडनाको नहीं प्राप्त होत ॥ ४ ॥

मू०-पितर । बैठेएकछत्रतरछाँहसबछितिपरसूरकुलकलश सुराहुहितमतिहौ । त्यक्तबामलोचनकहतसबकेशोदासबिद्य मानलोचनद्वैदेखियतुअतिहौ ॥ अकरकहावतधनुषधरेदेखि-यतुपरमकृपालुपैकृपाणकरपतिहौ । चिरुचिरुराजकरोराजा-रामचंद्रसबलोककहैंनरदेवदेवदेवगतिहौ ॥५॥ अग्नि । चित्र-हीमें आजबर्णसंकरविलोकियतुव्याहहीमेंनारिनकेगारिनसों-काजहै । ध्वजैकंपयोगीनिशिचक्रैहैबियोगीद्विजराजामित्रद्वेषी एकजलदसमाजहै । मेघैतोगगनपरगाजतनगरघेरिअपयश डरयशहीको लोभआजहै । दुःखहीकोखंडनहैमंडनसकल-जगचिरुचिरुराजकरौजाकोऐसोराजहै ॥ ६ ॥

टी०-यामें बिरोधाभास है बिरोधपक्ष राहु (ग्रह) अविरोध सुराह कहे मार्ग त्यक्त कहे त्यागे वामलोचन औ वाम कहे कुटिल लोचन अर्थ काहूसों वंशोचन करि नहीं ताकत विद्यमान [illegible] प्रत्यक्ष अकर कहे दंडरहित अर्थ

काहूको तुम दंड द्रव्य नहीं देते कृपाण जो करवाल है सो है करमें हाथमें जिनके ॥ ५ ॥ यामें परिसंख्या है वर्ण जे अरुणादि हैं तिनको संकर मिलाइबो द्विजराज (चन्द्रमा) मित्र (सूर्य) जाको राज सकल जगको मंडन (भूषण) है ऐसे जे तुम हौ ते चिरु चिरु कहे वहु काल पर्यंत राज करौ ॥ ६ ॥

मू०-वायु । राजारामचंद्रतुमराजहुसुयशजाकोभूतलकेआसपाससागरकोपाससो । सागरमेंबड़भागबेषशेषनागजूकोजपै सुखदानिसोईबिष्णुकोनिवाससो ॥ बिष्णुजूमेंभूरिभावभावकोप्रभावजैसोभवजूकेभालमेंबिभूतिकोबिलाससो । भूतिमाहचंद्रमासोचंद्रमेंसुधाकोअंशुअंशुनिमेंकेशोदासचंद्रिकाप्रकाशसो ॥७॥ देवगण । राजारामचंद्रतुमराजकरोसबकालदीरघदुसहदुखदीननकोदारिये । केशोदासमित्रदोषमंत्रदोषब्रह्मदोष देवदोषराजदोषदेशतेनिकारिये ॥कलहकृतघ्नमहिमंडलकेवरिबंडपाखंडअखंड खंडखंडकरिडारिये। वंचककठोरठेलिकीजैबाटआटझूठपाठकंठ पाठकारीकाठमाहिंमारिये॥८॥ऋषिगण। भोगभारभागभारकेशवविभूतिभारभूमिभारभूरिअभिषेकनके जलसे ।दानभारगानभार सकलसयानभारघनभारधर्मभारअक्षतअमलसे ॥ जयभारयशभारराजभारराजतहैरामशिरआशिषअशेषमंत्रबलसे । देशदेश यत्रतत्रदेखिदेखितेहिदुखफाटतहैं दुष्टनकेशीशदाह्योफलसे ॥ ९ ॥

टी०-पास कहे फांस अंशु (किरणि) ॥ ७ ॥ दारिये कहे नाश करत हौ वंचक (ठग) कठोर (निर्दय) झूंठरूपी जो पाठहै ताके जे कंठपाठकारी हैं अर्थ जे गूढ़ही कह्यौ करत हैं विभूति (ऐश्वर्य) ॥ ८ ॥ ९ ॥

मू०-केशव-विजयाछंद ॥ जाइनहींकरतूतिकहीसबश्रीसविताकविताकरिहारो । याहीतेकेशवदासअशीषपढ़ैअपनोकरिनेकुनिहारो।कीरतिदेवनिकीदुलहीयशदूलहश्रीरघुनाथति-